सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयीयज्योतिषविभागान्तर्गतपञ्चांगविभागद्वारासंपादितम्

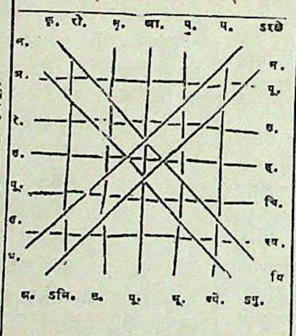
महामहोपाध्याय श्रीबापूदेवशास्त्री
सी. आई. ई.



जन्म समय सं. १८७६ कार्तिक शुक्ल ६ रविवार (ता. २४-१०-१८१९)
निर्वाण समय सं. १९४७ आषाढ़ कृष्ण ४ शुक्रवार (ता. ६-६-१८९०)

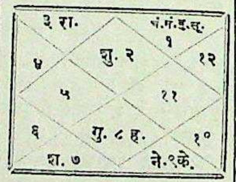
दृक्तुल्यगणितद्वारा यैरुच्चैर्निर्मितं नवम् ।
वस्वभ्रेन्दु(१०८)वर्षपर्यन्तं यल्लोके प्रचलत्यलम् ॥१॥
तिथ्यादिगणितं तद्वद्ग्रहणादिकमप्युत ।
यत्र व्यभिचरन्त्येते लेशतोऽपि न जातु चित् ॥२॥
तेऽमी बुधवरा अस्य पञ्चाङ्गस्य प्रवर्त्तकाः ।
श्रीबापूदेवशास्त्रीन्द्रा जयन्ति सुकृतोज्ज्वलाः ॥३॥

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्



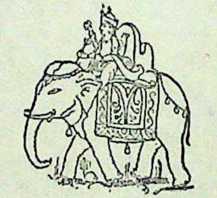
पञ्चशलाकाचक्रे पाणिग्रहणे भवेद्विधिरुक्तः।
शस्तः शुभमित्रकृतः सप्तशलाकाज इतरत्र॥

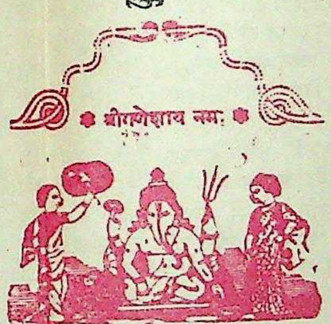
जगल्लग्नम् ११२।५९।३६



जन्मलग्नाज्जग जातकस्य यदा भवेत ।
अष्टमं द्वादशं वापि तद्दर्शनशुभावहम् ॥

राजा गुरुः

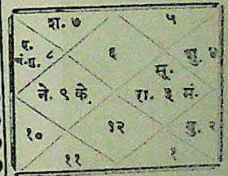


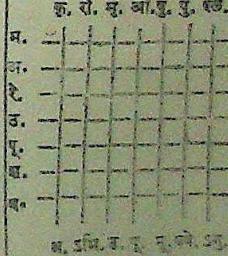


मन्त्री गुरुः



आर्द्रा प्रवेशलग्नम् ५।५।२९।२७





समयशुद्धिः

गुरुः—मार्गशीर्षकृष्ण ११ बुधे (ता. ३०।११।८३) पश्चिमास्तः
पौषकृष्ण ७ चन्द्रे (ता. २६।१२।८३) पूर्वोदयः ।

शुक्रः—श्रावण शुक्ल ६ रवी (ता. १४।८।८३) पश्चिमास्तः ।
भाद्र कृष्ण ६ चन्द्रे (२९।८।८३) पूर्वोदयः ।

राहुः—वर्षारम्भतः आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवासरं (दि. १३।७।८३) यावत् मिथुने राहुः धनुषि केतुश्च ।
तदग्रे वर्षान्तं [illegible] वृषे राहुः वृश्चिके केतुश्च ।

बाणानयनप्रकारः—

संक्रान्तियातांशकनन्दशेषास्तर्काग्निरूपाष्टयुगैः समेताः ।
तष्टा ग्रहे रोगहुताशभूपस्तेना मृतिश्चेति च पंच बाणाः ।

श्रीमद्बापूदेवशास्त्रिप्रवर्तितं दृक्सिद्धपञ्चाङ्गम्

श्रीमद्गणपतिदेवशास्त्रिप्रवर्द्धितम्

श्री संवत् २०४० धातानामसंवत्सरः । शालिवाहन शकः १९०५ । हिजरी सन् १४०३—१४०४ । फसली १३९०—९१ राष्ट्रियशकः १९०५—६ ईस्वी सन् १९८३—८४ । वङ्ग संवत् १३८६—९० । वीर नि० सं० २५०९—१०

प्रधानसम्पादकः—
विद्यावारिधिः कृष्णचन्द्र द्विवेदी,
ज्योतिषविभागाध्यक्षः

श्रुतम् मे गोपाय
सम्पूर्णानन्द
संस्कृत
विश्वविद्यालय
वाराणसी

सहायकसंपादकौ—
पं० श्री रामकृष्ण तिवारी, ज्योतिषाचार्यः
पं० श्री रविशङ्करभार्गवः, ज्योतिषाचार्यः
पं० श्री हरिशङ्करपाठकः ज्यो०(कार्यकारी)

सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालयमुद्रणालय.

श्री कैलाशवासी श्री पं० गणपतिदेव शास्त्री,
सिद्धान्तवागीश, साहित्यचार्य ।



यत्पञ्चाङ्गं सकलविदितं नूतनं वृष्टिसिद्धं
बापूदेवः समभवदसौ मण्डनं पण्डितानाम् ।
तारारब्धं सुकृतमखिलं वर्धयन् कीर्तिशेष—
स्तत्पुत्रः श्रीगणपतिपदो राजते शास्त्रिवयः ॥

जन्म संवत् १९४४ मार्गशीर्षशुक्ल ४ (ता० ४-१२-१८८७ ई०)
मृत्यु संवत् २०३० पौषशुक्ल ६ (ता० ३१-१२-१९७३ ई०)

भूमिका

नत्वा देवं गणपतिं तथाऽवधविहारिणम् । धात्राख्यनामजैवेऽब्दे भूमिकेयं विलिख्यते ।

आजकल मकरन्द, ग्रहलाघव आदि प्रसिद्धकरणग्रन्थों से बनाये हुए ग्रह ग्रहण इत्यादि ठीक ठीक नहीं मिलते । अतः उन ग्रन्थों से जो पञ्चाग बनेगा वह ठीक न होगा यह अल्पज्ञ भी जान सकता है । उन दिनों में ग्रामीण लोग भी कहते थे कि अब ज्योतिषी लोग पत्रा अशुद्ध बनाते हैं ये सब बातें सुनकर और पञ्चाङ्गों की दुर्दशा जानकर परम गुरुवर ज्यौतिषाचार्य श्रीमद् बापूदेव शास्त्री जी श्री ५ काशीराज आदि अनेक शिष्ट लोगों की अनुमति से संवत् १९३३ से प्रतिवर्ष पञ्चाङ्ग बनाने में प्रवृत्त हुए । उनका कैलासवास होने पर उनके शिष्य ज्यौतिः शास्त्रमार्तण्ड श्री चन्द्रदेव शास्त्री, स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति श्री विनायक शास्त्री वेताल, तथा ज्योतिर्वेदविशारद श्री महादेव शास्त्री घाटे आदि गुरुजन, उनके बताये हुए प्रकार से प्रत्येक वर्ष का पञ्चाङ्ग बनाकर श्रीगणपति देव शास्त्री जी को समर्पण कर संवत् १९८० तक छपाते रहे । तत्पश्चात् पं० श्री गणपति देव शास्त्री जी इसको परिवर्द्धित करके संवत् २०२४ तक छपाते रहे । इसलिए मैं इन महानुभावों का ऋणी हूं । इस पञ्चाङ्ग के सम्पादनादि कार्य में भारतीय नॉटिकल आल्मनाक के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक डा० निर्मलचन्द्र लाहिरी एम० ए०, तथा वर्तमान प्रधान सम्पादक श्री ए० वंद्योपाध्याय, तथा ग्रीन्विच राजकीय वेधशाला के अधिकारी वर्ग, जो सहायता कर रहे हैं अतः इसके लिए उन महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद है यह पञ्चाङ्ग का संक्षिप्त इतिहास है ।

अब प्राचीन मतानुसारी पञ्चाङ्गों में स्वीकृत वर्तमान ३६५ दि० १५ घ० ३१ प० इत्यादि होने से यह वेध सिद्ध वर्ष मान से करीब ८॥ पल अधिक हैं अर्थात् हमारा प्राचीन आरम्भस्थान प्रति वर्ष करीब ८॥ विकला पूर्व की ओर विचलित होता है । यदि यही क्रम रहा तो हमारी नक्षत्र प्रधान निरयण गणना ही दूषित हो जायेगी । अतः इस आपत्ति को दूर करने के लिए तथा दृक्तुल्यता को चिरस्थायिनी और अबाधित रखने के लिए वेध सिद्ध नक्षत्र सौर वर्षमान ३६५ दि० १५ घ० २२ प० और ५७॥ विप० और वेध सिद्ध वार्षिक अयनगति ५०·२७ विकला परिमित स्वीकृत की गई है तथा इस संवत् २०४० के वर्षादि में चित्रा नक्षत्र का सायन भोग तथा ६ राशि इनके अन्तर तुल्य अयनांश स्वीकार किये गये हैं । इन अयनांशों को मध्यम अयनांश समझना चाहिए । वेधादि के लिए न्यूटेशन संस्कार की परमता केवल १८ विकला तक होती हैं । अतः व्यवहार के लिए मध्यम अयनांश को लिए जाते हैं । एवं चित्रानक्षत्र स्वयं गतिमान होने से २८६ ई० से अब तक वह ० कला ५५ विकला पूर्व की ओर विचलित हुआ उपलब्ध होता है । अतः इन अयनांशों में ० कला ५५ विकला की वृद्धि करके जो ग्रहों के गणित करने के ऐसे प्रकार है जिससे सिद्ध किए

हुए ग्रह अपने-अपने स्थानों प्रतिदिन देख पड़ते हैं, उन्हीं सूक्ष्म प्रकारों से सिद्ध किये हुए सूर्य आदि ग्रहों से तिथि, नक्षत्र आदि और निरयण ग्रह सब बहुत परिश्रम से सिद्ध करके इसमें लिखे गये हैं । प्रत्येक कृष्णपक्ष में चन्द्र का उदयकाल और शुक्लपक्ष में अस्तकाल, महापात और प्रतिदिन के सूर्य के स्टण्डर्ड मान से उदय और अस्त के काल, रविक्रान्ति, ग्रहों के भोग और शुक्रादि पांच ग्रहों के उदय अस्त भी लिखे गये हैं । एवं प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम चन्द्रदर्शन का उल्लेख किया गया है । काशी में निरयण लग्न जानने के लिए एक सूक्ष्म लग्न सारिणी, निरयण दशमभाव जानने के लिए दूसरी दशल लग्न सारिणी, ऐसे ही इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र आदि की घटी यद्यपि सब काशी के स्टॅण्डर्ड सूर्योदय से ठहराकर लिखी हैं तथापि उनसे जिस किसी नगर के अक्षांश और देशान्तर ज्ञात हों, वहां के स्टॅण्डर्ड सूर्योदय से भी उन तिथि आदि के घटीपल तुरन्त सिद्ध हो सकते हैं, इसी काम के लिए तीसरी देशांतर सारिणी और चौथी चरांतर सारिणी, ऐसी चार सारणी श्री ६ बापूदेव शास्त्री जी की बनाई हुई ही इसमें लिखी गई हैं । तीसरी सारिणी में भारतवर्ष में प्रायः जितने प्रसिद्ध नगर हैं—उनके अक्षांश, पलभा पलकर्ण और भूमि की मध्य रेखा जो लङ्का, उज्जयिनी और कुरुक्षेत्र आदि नगरों पर से गई हुई मानते हैं यहां से और श्री काशी से भी प्रत्येक नगर की देशान्तर घटी और काशी से वे नगर तथा उन नगरों से काशी जिस दिशा में है उनके दिगंश ठीक ठीक ठहरा कर लिखे हैं । चौथी सारिणी में श्री काशी के चरकालों के अन्तर दिखलाये गये हैं । इस प्रकार से यहां का एक ही पञ्चाङ्ग सब नगरों में काम दे सकता है इसलिए एक दो नगरों के उदाहरण भी दिखलाये गए हैं । इसमें शुक्र आदि ग्रहों के सूर्य के पास होने से जो उदय और अस्त के काल लिखे गये हैं वे सब पूर्व आचार्यों ने जो कालांश कल्पना किये हैं उतने ही कालांश मानकर सूक्ष्म ग्रहगणित के प्रकार से सूर्य और ग्रह का अन्तर जानकर ठीक-ठीक ठहराये गए हैं । इन बिम्बों का आकाश में दिखलाई देना यह उस काल में जैसा आकाश स्वच्छ या मलिन हो, उसके अनुसार होता है । इसलिए उन ठहराये हुए उद-यास्त कालों में कदाचित् कुछ अन्तर भी हों, तो वह सिद्धान्त के जानकार जो बड़े-बड़े पण्डित गणक हैं, उनके आगे स्पष्ट है इस पञ्चाङ्ग का तिथ्यादि गणित ऐसे सूक्ष्म प्रकार से किया है, जिससे वेध सिद्ध तिथि और इस पञ्चाङ्ग की तिथि में कहीं-कहीं एक या दो मिनट से अधिक अन्तर कभी न रह सकेगा । एवं इस पञ्चाङ्ग में लोगों के आग्रह से हर्शल और नेप्च्युन इन दो नवीन ग्रहों के सहित जो दैनिक चन्द्रादि ग्रह स्टॅ. टा. प्रातः घं. ५ मि. २६ ४ के समय के सिद्ध कर लिखे हैं, उनसे और वेध सिद्ध ग्रहों में भी कहीं-कहीं एक कला से अधिक अन्तर न रहेगा । केवल प्लूटो ग्रह के स्पष्ट निरयण भोगांश आठ दिन के अन्तर से लिखे गये हैं । एवं पञ्चाङ्ग में ग्रहों के वक्र मार्ग के दिनों का निश्चय उनके भोगांश पर से ही किया गया है विषुवांशों पर से नहीं । इस पञ्चाङ्ग में काशी के निशीथ काल का दैनिक साम्पातिक काल तथा दैनिक औदयिक स्पष्ट सूर्य भी लिखा गया है । एवं पञ्चाङ्ग में चन्द्र के राशिप्रवेश काल लिखे हैं राशि समाप्ति काल तथा गृहनिर्माणोपयोगी सिद्ध पिण्डसारिणी आदि [illegible]

के लिये उपयोगी होगा इस प्रकार पञ्चाङ्ग के आरम्भ से एक सौ आठ १०८ वां शुद्ध और सूक्ष्म उन्हीं के बतलाये हुए प्रकार से पहले उत्तर प्रदेशीय शासन द्वारा तथा वर्तमान समय में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित होनेवाला ३१ वां यह पञ्चाङ्ग ज्यो. आ. पं. श्री रामकृष्ण तिवारी, पं० श्री रविशंकर भार्गव इन सहयोगी पण्डितों के निरन्तर परिश्रम और सहयोग से प्रस्तुत किया है । ज्यो. आ पं. इन्दुशेखर पाण्डेय जी भी सहयोग समय-समय पर सहयोग देते रहे हैं ।

इस पञ्चाङ्ग के आरम्भ से ही काशी के उच्चकोटि के विद्वानों ने इसकी मौलिकता तथा धार्मिकता को स्वीकार किया है, जो निम्नलिखित है—

यस्मिन् पक्षे यत्काले येन [illegible] ।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।
संसाध्य स्पष्टतरं बीजं [illegible] ।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ [illegible] ।

इति ब्रह्मवसिष्ठप्रभृतिवचनेभ्यो [illegible] येन प्रकारेण स्यात् तेन प्रकारेण सिद्धैरितथ्यादिभिरेव धर्मनिर्णयादिक [illegible] सिद्धान्तकार-मुन्यादिसम्मतं तथा च तेन प्रकारेण [illegible] मननीयमिति ।

भट्टसखारामशर्मणः सम्मतिरत्र [illegible], [illegible] द्विवेद पण्डित बस्तीराम शर्मा. सम्मतिरत्र [illegible], [illegible], भवानीप्रसादशर्मणः, [illegible], सम्मतिरत्र नारायणदेव-शास्त्रिणः, सम्मतिरत्र [illegible], महामहोपाध्याय पं० सुधाकरशर्मणः, [illegible] पण्डित वेणीशंकरशर्मणः, [illegible], [illegible] सी. आई. ई. महामहोपाध्याय पं० [illegible] ।

अब यह सूचित करने में परम हर्ष है कि वाराणसीस्थ श्री गोपाल मन्दिर संस्थान वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य स्व० गोस्वामी श्री १०८ मुरलीधरजी महाराज ने अपने सम्प्रदाय के [illegible] के निर्णयार्थ इसी दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग को मान्यता प्रदान की है । जिसके लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद है । अन्त में निवेदन है कि श्री ६ म. म. स्व. शास्त्री जी ने ४८ वर्ष तक राज्य सरकार की सेवा की तथा श्री पं० स्व. गणपतिदेव शास्त्री ने भी अपने जीवन के २९ वर्ष सरकारी सेवा में ही व्यतीत किए थे । अतः उन्हें यह उन्हें यह प्रतीत हुआ कि हमारी बौद्धिक सेवायें राज्य सरकार को ही समर्पित की जायें । इस अभिप्राय से तथा अपनी वृद्धावस्था के कारण श्रीगणपतिदेव शास्त्री जी की यह प्रबल इच्छा हुई कि मेरे पूज्य पितृचरण का यह पञ्चाङ्ग उनकी प्रदर्शित पद्धत्यानुसार बनकर अविच्छिन्न रूप से चलता रहे । उन्होंने अपनी इच्छा अपने मित्र स्व० महामहोपाध्याय पण्डित नारायण शास्त्री खिस्ते, भूतपूर्व प्रिंसिपल राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी से प्रकट की कि

यह पंचाग उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ले ले जिससे अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित होता रहे। स्व० महामहोपाध्याजी के सतत प्रयत्न से माननीय श्रीमान् भूतपूर्व शिक्षामन्त्री तथा भूतपूर्व मुख्यमन्त्री एवं राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल श्रद्धेय स्व० डा० श्री सम्पूर्णानन्द महोदय (जिनका संस्कृत विद्या से बहुत ही प्रेम था और जो मौलिक बातों की रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील रहते थे) की प्रेरणा से राज्य सरकार ने इसे राजाज्ञा संख्या ए १०५३।१५-२०३५-५० दिनांक मई २३, १९५१ द्वारा स्वीकार कर लिया और इसकी रजिस्ट्री दिनांक ४ जुलाई १९५१ ई० को भूतपूर्व प्रिंसिपल स्व० श्री त्रिभुवनप्रसाद उपाध्याय एम. ए व्याकरणाचार्य द्वारा करा ली गयी। अतः अब यह पञ्चाङ्ग उत्तर प्रदेश राज्य सरकार का हो गया। २१ मार्च १९५८ ई० को वाराणसेय राजकीय संस्कृत महाविद्यालय का वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में परिवर्तन होने से संवत् २०४० का यह पञ्चाङ्ग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इस दृकतुल्यगणितानुसारी पंचाग के प्रवर्तक महामहोपाध्याय श्री बापूदेव शास्त्रीजी सी. आई. ई. थे और श्रीगणपति देवशास्त्री जी के वृद्धावस्था के कारण जिगमिषु इस पंचांग का पुनरुद्धार श्रद्धेय डा० स्व० श्री सम्पूर्णानन्द जी ने किया है, अतः वे इस पंचांग के समुद्धारक हैं। जब तक श्री शास्त्री जी कार्य करने में समर्थ रहे अपने सहयोगियों की मदद से इस पंचांग का सम्पादन करते रहे। तत्पश्चात् यह पञ्चाङ्ग सह सम्पादकों द्वारा ज्यो. विभागाध्यक्ष के निर्देशन में सम्पादित हो रहा है; पञ्चाङ्ग में जो त्रुटि होंगी उसे विद्वज्जन क्षमा करें। गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्त्यज्जनास्तत्र समादधति साधवः॥ इति॥

—डॉ० कृष्णचन्द्र द्विवेदी

श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः। स जयति सिन्दुरवदनो देवी यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥ १॥ प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्यात् ध्वजारोपणं स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सार्द्धं सुपूजोत्सवम्। देवानां गुरुयोषिता च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः सपूज्योगणकः फलं च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥ २॥ पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः। सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥ ३॥ मरीचिहिङ्गुलवणं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये॥ ४॥ पञ्चाङ्गस्थं गणेशं द्विजगणकयुत पूजयित्वार्थिवृन्दं सन्तोष्यानेकदानैः परमसुखयुतं भोजयित्वान्नमिष्टम्। शृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं संक्रमेत् क्रीडस्त्रीभिश्च सार्द्धं त्वहनि निशि नरो यावदब्दं सुखी स्यात्॥ ५॥ राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात्कौशलं धान्येशात्कमला स्थिरा च सुरसा वार्णा भवेन्मेघपात्। धर्मे बुद्धिरतिस्थिरा रसपतेर्दीर्घायुरातिभवेत्। सस्येशाद्विमला मतिः शुभकरी राजावलिः श्रूयताम्॥ ६॥ चैत्रे पुण्यमये वसन्तसमये नव्यं फलं वार्षिकं नित्यं यः शृणुयादघौघदलनं चायुर्यशः श्रीकरम्। वेधा विष्णुहरी रवीन्द्ववनिजाः सौम्यो गुरुर्भार्गवो मन्दोऽगुः सशिखी च शत्रुदलनं कुर्वन्तु सर्वे ग्रहाः॥ ७॥ ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःख दारिद्र्यरुजादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः॥ ८॥ आरोग्यं सविता तनोतु भवतामिन्दुर्यशो निर्मलं भूतिं भूमिसुतः सुधांशुतनयः प्रज्ञां गुरुर्गौरवम्। काव्यः कोमलवाग्विलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा राहुर्बाहुबलं विरोधशमनं केतुः कुलस्योन्नतिम्॥ ९॥ राज्यं यादचलं तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिर नक्षत्रं कृतपापक्षयहरं योगाः वियोगापहाः। सर्वाभीष्टकरं तथैव करण पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात् प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम्॥ १०॥ अथ विश्वसृजः कमलोद्भवस्य द्वितीये परार्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे महायुगे कलियुगस्य सन्ध्याया आदितः शालिवाहनशकारम्भकालपर्यन्ते मितानि सौरवर्षाण्यतीतानि। ततो वर्तमाननववत्सरारम्भकालपर्यन्त पञ्चाधिकएकोनविंशतिशत शक १९०५ मितानि सौरवर्षाण्यतीतानि। अमुं वर्तमानवत्सरं नर्मदाया उत्तरेभागे धातानाम्ना व्यवहरन्ति दक्षिणेभागे च ईश्वर नाम्ना व्यवहरन्ति। अस्मिन् वर्षे **राजा गुरुः। मंत्री गुरुः। पूर्वधान्येशो शनिः। मेघेशोः बुधः। पश्चिमधान्येशो शुक्रः। रसेशो चन्द्रः। संवत्सरफलम्**—युद्धकर्मणिरताः पृथ्वीशाः स्युस्वनोपतिरकृताभिनिवेशाः। भूः सुवृष्टिवशातः कण पुष्टा धातृनाम्नि जनता बहु तुष्टा॥ **अथ राजाफलम्**—धेनु वृन्दमति दुग्धसमेतं वर्षणात्फलकणादि नितान्तम्। यज्ञकर्मणि सतामनुरागः पार्थिवे सुरगुरौ न च रोगः॥ अ[illegible]—पाथोधरा भूरि दिशंति पाथो धात्री कणौ वर्जनमुद्धिधात्री। पृथ्वी [illegible]तीव पृथ्वी मंत्री यदा स्यात्सुरराजमंत्री॥ **अथपूर्वधान्येशफलम्**—धान्याभा[illegible] कोशहानिर्नृपाणां मन्दावृष्टिः स्याज्जयस्तस्कराणाम्। रोगाद्वन्हेश्चाति पीडा जनस्य प्राग्धान्येशचेत्सुतोभास्करस्य। **अथमेघेशफलम्**—क्वचिदामयेन विकलं नृकुलं लिपि काव्य विद्गणकबुद्धिरलं॥ जलवृष्टितः सकलधान्य भृतिः शशिनन्दनो यदि पयोदपतिः॥ **अथपश्चिम धान्येशफलम्**—क्षिति सुरामख कर्मणि तत्परा बहुलमंबुनितान्त कणाधरा। तरुषु सत्फलपुष्प समुद्भव चरमधान्य पतिर्यदि भार्गवः॥ **अथरसेशफलम्**—प्रचुरमैक्षवतैलयवादिकं मखकरं क्षिति देव कदंबकम्। दिशति दुग्धमतीव गवान्ततिर्यदिरसाधिपति रजनीपतिः॥ **अथार्द्राप्रवेशः**—ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां १३।१५ परं त्रयोदश्यां तिथौ बुधवासरे विशाखानक्षत्रे सिद्धियोगे कौलवकरणे अस्मिन्दिने मार्तण्ड माण्डलार्धोदयात् १६।४८ एतावत्सावयवघटीमिते काले दिवा रवेरार्द्राप्रवेशः तत्रादौ—**अथतिथिफलम्**—दिवाकरस्य रौद्रभे प्रवेशने त्रयोदशी तिथिर्यदिस्थितातदा पतेदनर्गलं जलम्। **अथवारफलम्**—बुधस्यवासरे रौद्रं धिष्ण्यं भानुः प्रयाति चेत्। तर्हि ब्राह्मणजातिनां कल्याणान्यमितानि च॥ **अथनक्षत्रफलम्**—विशाखा यदि चाम्द्राक्षं भानोरार्द्राप्रवेशने। तदा निखिल रोगाणां विनाशोजायतेध्रुवम्। **अथयोगफलम्**—सिद्धि योगे सहस्रांशौ शिवनक्षत्र यायिनि। कर्मणां हि तदाऽत्यन्तं सिद्धिः सस्यादिकं बहुः। **अथवेलाफलम्**—पार्वती रमणिभं दिवा यदा स्याद्दिवाकरसमन्वितं तदा। जायते वसुमती कणोनिता तस्करादिकभयं जलाल्पता॥ **अस्मिन्वर्षे पुष्कर-नामामेघः** नैव कंदमूलविवृद्धिर्जायते विविध पातक वृद्धिः। रोगतो जनकृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पम्। **अस्मिन्वर्षे वज्रदंष्ट्रनामा नागस्तत्फलम्**—यत्र संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभिधानकः। तदाम्बुवर्षणं नैव सर्व सस्यविनाशनम्। **अस्मिन्वर्षे रोहिणी नक्षत्रं तटोपतितं तत्फलम्**—यदिविधिधिष्ण्यं भवति तटस्थं। बहुजल वृष्टिः धनकण वृद्धिः॥

अथ देशपरत्वेन राजादिफलव्यवस्था—पाञ्चालसौराष्ट्रविदर्भदेशेषु राजफलम्। पौण्ड्रकलिङ्गयोर्मन्त्रिफलम्। गुर्जरयावनयोः सस्येशफलम्। मगधदेशे मेघेशफलम्। कोंकणमालवयोः रसेशफलम्। विन्ध्यादिदक्षिणभागे आर्द्रा प्रवेशफलम्।

अर्थविशोपकाः—वृष्टिः ११ धान्यम् १५ तृणम् १३ शीतम् १७ उष्णम् ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ विनाशः १५ विग्रहः ११ क्षुत ६ तृष्णा ११ निद्रा १३ आलस्यम् ५ उद्यमः ७ शान्तिः ११ क्रोधः ३ दण्डः ३ भेदः १ मैत्री १३ रसनिष्पत्तिः ७ फलनिष्पत्तिः ११ उत्साहः ९ शलमाः १५ शुकाः १९ मूषकाः ७ अतिवृष्टिः ५ अनावृष्टिः ६ स्वचक्रम् १७ परचक्रम् १५ परचक्रनाशः १३ रत्नानि १७ वस्त्राणि ११ घृतम् ७ तैलम् १७ दुकूलम् १७ उर्णावस्त्राणि ११ क्षौमाणि ३ वल्कलम् १५ भूर्जपत्रम् १६ सुवर्णम् १३ ताम्रम् ७ वंगम् ५ रौप्यम् १७ लौहम् १५ खर्परसूत्रम् ५ पित्तलम् ९ नागः १३ घोषकम् १७ उग्रप्रकृतिः ९ सौम्यप्रकृतिः १९ पापप्रकृतिः १९ पुण्यप्रकृतिः ५ व्याधिः १३ भैषजम् ७ आचार ७ अनाचारः १७ मरणम् ७ जननम् १ देशोपद्रवः ११ देशस्वास्थ्यम् १५ चौरभीतिः ५ चौरनाशः १७ अग्निभीतिः १९ अग्निनाशः ११ विषभीतिः १५ विषशमः ३ सेवकत्वम् ५ स्वामित्वम् १६ निजधनम् ११ परधनम् १५ द्यूतम् १५ पुंश्चलीकर्म ११ जारणम् ३ जारणनाशः ९ मारणम् १३ मारणनाशः १५ स्तम्भनम् १५ स्तम्भननाशः १३ मोहनम् ९ मोहननाशः ३ उच्चाटनम् १३ उच्चाटननाशः ५ वशीकरणम् १३ वशीकरणनाशः ३ वातप्रकृतिः ९ पित्तप्रकृतिः १५ कफप्रकृतिः ३ द्वन्द्वजप्रकृतिः ७ सन्निपातः ११ यशः १५ अपयशः ११ गर्वः ५ उग्रता ७ प्रपञ्चः ६ भूतबाधाः ११ भूतनाशः १३ ग्रहदोषः १५ ग्रहदोषनाशः १७ अण्डजः ११ जारजाः ५ स्वेदजाः ६ उद्भिज्जाः १३ पुण्यम् २ पापम् १८ सर्वनिष्पत्तिः ११ इति विंशोपकाः॥

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरे भवेत्॥ १॥

श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः। अथ श्री शुभ संवत् २०४० शके १९०५ अस्मिन्वर्षे वर्षारम्भस्य प्रथमदिवसे मेषसंक्रान्तिः। श्रावणशुक्ल २ गुरुवासरतः भाद्रपदकृष्ण ९ गुरुवासरपर्यन्तं भृगोर्वार्धक्यास्त, बाल्यानि। मार्गशीर्षकृष्ण ८ रविवासरतः पौषकृष्ण १० गुरुवासर पर्यन्त गुरोर्वार्धक्यास्तबाल्यानि। मार्गशीर्ष शुक्ल ११ शुक्रवासरतः पौषशुक्ल ११ शनिवासरपर्यन्तं धनुरर्कः। फाल्गुनशुक्ल १२ बुधवासरतः वर्षान्तं यावत् मीनार्कः।
अतोनिषिद्ध समयं विहाय
शुद्धाः सदोषाश्च मुहूर्त्ताः
लिख्यन्ते। दोषाणां
विवेचनं सुधियः
कुर्वन्तु॥

अथ विवाहमुहूर्त्ताः

चैत्रशुक्लपक्षे

३ शनौ २१।८ उ. रोहिणी भं. शुद्धम्। ४०।४८ उ. भद्राव्याप्तिः। १०।२१ या. मृ. वा. व्या. विष्टेः पूर्वं मृ. वा. परं दिवा सिंहे इ. ५। गोधूलिः। रात्रौ पञ्चेष्टलग्नाभावः।

४ रवौ १९।१५ या. रोहि. भं. शुद्धम्। ८।४८ या. भद्रा व्याप्तिः। विष्टेः परं पञ्चेष्टलग्नाभावः १९।५८ उ. मृग. भं. राहुयुतम्।

५ चन्द्रे १६।२५ या. मृग. भं. पूर्व दोष युक्तम्।

१० शुक्रे ३।२८ उ. मघा भं शुद्धम्। सिंहे इ. ५। गोधूलिः। कुंभे इ. ६। ७ चन्द्रः।

११ शनौ ५६।११ उ. उ. फा. भं. सूर्यवेधावसानं नेन्दुयुतम्।

१२ रवौ ५[illegible] या. उ. फा. भं. पूर्व दोषयुक्तम्। [illegible] उ. मृ. वा. व्याप्तिः।

१३ चन्द्रे [illegible] या. हस्त भं. शुद्धम्। [illegible] या. मृ. वा. व्या.। १९।१५ उ. भं. व्याप्ति.।

१४ भौमे [illegible] उ. स्वाती भं. शनियुतम्।

१५ बुधे ४८।३४ या. स्वातीभं पूर्व दोष युतम्।

वैशाखकृष्णपक्षे

१ गुरौ [illegible] उ. अनु भ. पूर्व भौमयोनिरुद्धम्।

२ शुक्रे ५३।१५ या. अनुभं पूर्व दोष युक्तम्। [illegible] उ. भ. व्याप्तिः।

३ शनौ [illegible] उ. मूलभं. केतु युतम्।

४ रवौ ६।१० या. मूलभं पूर्व दोष युक्तम्।

५ चन्द्रे ३।१३ या. मूल भं पूर्व दोष युक्तम्।

६ भौमे [illegible] उ. उ. षा. भं राहुविद्धम्। [illegible] उ. भद्राव्या.। ३६।२१ उ. मृ. वा.।

७ बुधे [illegible] या. उ. षा. भं पूर्व दोष युतम्। [illegible] मृ. वा.।

११ रवौ [illegible]

[illegible]

वैशाखशुक्लपक्षे

१ [illegible] रोहिणी भं भौम[illegible]

[illegible]

२ [illegible] या. रोहिणी भं पूर्व दोष युतं परं मृगभं राहुयुतम्।

४ रवौ [illegible] या. मृग. भं पूर्व दोष युतम्।

७ गुरौ [illegible] या. मघाभं शुद्धम्। ३६।२२ या. भ. व्या.। भद्रोपरान्त रात्रौ पञ्चेष्टलग्नाभावः।

८ शुक्रे १४।२०या.मघा भं शुद्धम्। पञ्चेष्टलग्नाभावः।
१० शनौ ११।३५ उ., उ. फा. भं शुद्धम्। दिवा कर्के इ.६। गोधूलिः। मीने इ.६। ७ चं.।
११ रवौ ९।३० या. उ. फा. भं परं हस्त भं शुद्धम्। दिवा कर्के इ.६। २३।३ उ. भ. व्या.। भद्रोपरान्त मीने इ.६। ७ चं.।
१२ चन्द्रे ८।१० या. ह. भं शुद्धम्। पञ्चेष्टलग्नाभावः।
१३ भौमे १२।५५ या. व्यतीपात व्याप्तिः। व्यतीपातात् परं स्वातीभं शनि युतम्।
१४ बुधे ८।२३ या. स्वातीभं पूर्वदोष युक्तम्।
१५ गुरौ १०।८ उ. अनु. भं शुद्धम्। १७।१४ या. भद्रा व्याप्तिः। २७।१८ या.मृ.वा परं गोधूलिः। मीने इ.६।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१ शुक्रे १३।८ या. अनु.भं शुद्धम्। पञ्चेष्टलग्नाभावः।
२ शनौ १७।२३ उ. मूले केतु युतिः।
३ रवौ २२।५३ या. मूले पूर्वदोषः। २५।२८ उ.भद्रा।
४ चन्द्रे २९।२३ उ. उ.षा. भं राहु विद्धम्।
४ भौमे ३६।३८ या. उ षा. भं पूर्वदोष युक्तम्।
९ रवौ ३।३५ उ. उ.भा. भं शुद्धम्। दिवा पञ्चेष्टलग्नाभावः। गोधूलिः। कुम्भे इ. ६। ६ शु.। मीने ३।५। १ चं.।
१० चन्द्रे ०।५ उ. ३०।३८ या. भद्रा व्याप्तिः। भद्रोपरान्त रेवतीभं शुद्धम्। गोधूलिः। मीने इ.६।
११ भौमे ९।३०या. रेवतीभ शुद्धम्।पञ्चेष्टलग्नाभावः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

५ बुधे ३३।३० उ. मघाभं शुभम्। गोधूलिः। रात्रौ पञ्चेष्टलग्नाभावः।
६ गुरौ २०।१ या. मघाभं शुद्धम। २३।२८ या. मृ. वा. परं कर्के इ. ६। १ शु.।
७ शुक्रे २५।३३ उ. उ फा. भं शुद्धम्। २२।२८ उ. ५०।१८ या. भद्राव्याप्तिः। भद्रोपरान्त मीने इ.५।
८ शनौ २३।१० या. उ. फा. भं शुद्धम्। ३८।२३ या व्य.। परं हस्तभं शुद्धम्। मीने इ ५।
९ रवौ २२।० या.हस्तभ शुद्धम्। दिवा कर्के इ.६।१शु.।
१० चन्द्रे १२।८ उ. स्वातीभं शुद्धम्। गोधूलिः। २२।४५ उ. भद्रा व्याप्तिः।
११ भौमे २३।३३ या. स्वातीभं शुद्धम्। १२।३५ या. भ. व्याप्तिः। भद्रोपरान्त पञ्चेष्टलग्नाभावः।
१२ बुधे २६।१०उ.अनु.भं शुद्धम्। गोधूलिः। मकरे इ.५।

१३ गुरौ २९।५८ या. अनु.भं शुद्धम्। दिवा सिंहे इ. ६। १२ शु.।
१४ शुक्रे ३४।४५ उ. मूलभं केतुयुतम्।
१५ शनौ ४०।३५ या मूलभं पूर्वदोष युक्तम्।

आषाढ़कृष्णपक्षे

२ चन्द्रे ५४।२० या. उ.षा.भं सूर्यवेधावसानं नेन्दुभुक्तमशुद्धम्।
७ शनौ २२।४३ उ. उ.भा.भं शुद्धम्। २७।५२ या. भद्राव्याप्तिः। भद्रोपरान्त गोधूलिः। मकरे इ. ६। ८ शु.। मेषे इ. ५।७ श. ८ गु.।
८ रवौ २७।४३ या.उ.भा.भं शुद्धं परं रेवतीभं शुद्धम्। दिवा सिंहे इ. ५। गोधूलिः। मकरे इ ६।८ शु. चं.। मेषे इ. ५।७ श. ८ गु.।
८. चन्द्रे ३१।१० या. रेवतीभं शुद्धम्। दिवा सिंहे. इ. ७। ८ चं.।
१२ गुरौ ३०।३२ उ. रोहिणीभं शुद्धम्। गोधूलिः। मकरे इ. ५। ८ शु। अग्रे मासान्तादि दोषः।

आषाढ़शुक्लपक्षे

३ बुधे ४७।५५ या. मघा भं शुद्धम्। २०।३५ उ. व्यतीपातः। २९।५३ उ. भद्राव्याप्तिः। व्यतीपातात्परं भद्राप्राक् दिवा सिंहे इ. ५।१ चं १२ सू. बु.।
५ गुरौ ४२।४३ उ., उ.फा.भं शुद्धम्। ३८।४९ उ. मृ. वा पञ्चेष्टलग्नाभावश्च।
६ शुक्रे ३८।४८ या. उ.फा. भं शुद्धम्। ४१।४२ या. मृ.वा पर हस्ते लग्नं चिन्त्यम्।
७ शनौ ३६।२८ या. हस्तभं शुद्धम्। दिवा सिंहे इ. ५।१२ सू. बु.। गोधूलिः। ३९।० उ. भद्रा व्याप्तिः।
अतः परं हरिशयनत्वात् विवाह मुहूर्त्ता भावः।

कार्तिकशुक्लपक्षे

१२ गुरौ ५३।२० या. रेवतीभं भौमविद्धम्।
१५ रवौ ५५।५३ उ रोहिणीभं राहुयुतम्।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

१ चन्द्रे ५४।२३ या. रोहिणी भं राहु युतं परं मृग. भं राहु भुक्तं नेन्दुभुक्तमशुभम्। ५०।५०उ.भद्रा व्याप्तिः।
२ भौमे ५२।३ या. मृग. भं पूर्वदोषयुक्तम्।
६ शनौ ३८।२३ उ. मघा भं शुद्धम्। २६।१५ उ. मृ. वा. व्याप्तिः।
अतः परं गुरोरस्तादिदोषात् धनुरर्कत्वाच्च विवाह मुहूर्त्तभावः।

माघकृष्णपक्षे

२ शुक्रे १५।२१ उ. मघाभं शुद्धम्। गोधूलिः। सिंहे इ. ६।१ चं.। ४०।१९ उ. भद्रा व्याप्तिः।
३ शनौ ८।३५ या. मघा भं शुद्धम्। ५।५० या. भद्रा व्याप्तिः। भद्रोपरान्त पञ्चेष्टलग्ना भावः।
५ रवौ २।२० उ., उ.फा. भं शुद्धम्। दिवा पञ्चेष्ट लग्ना भावः। गोधूलिः। सिंहे इ. ७। धनुषि इ. ६। ४४।४३ उ. भद्रा व्याप्तिः।
७ भौमे ५०।४८ उ. स्वाती भं भौमयुतम्।
८ बुधे ५०।० या. स्वातीभं पूर्वदोषयुक्तम्। २२।४१ या. मृ. वा. व्याप्तिः।
९ गुरौ ५०।४८ उ.अनु. भं शुद्धम्। धनुषि इ.६। १२के.।
१० शुक्रे ५३।५ या. अनु. भं शुद्धम्। ६।४२ उ. ३७।८ या भ. व्या. परं पञ्चेष्टलग्नाभावः।
११ शनौ ५६।३८ उ.मूलभं शुद्धम्। पञ्चेष्टलग्नाभावः।
१२ रवौ ६०।० या. मूलभं शुद्धम्। दिवा मीने इ ५। ८ भौ०। गोधूलिः। सिंहे इ.६। धनु. इ.५। १ चं.।
१३ चन्द्रे १।१८ या. मूलभं शुद्धम्। स्वल्पकालः।

माघशुक्लपक्षे

३ रवौ ४१।४८ उ., उ.भाद्र. भं शुद्धम्। ८।१५ उ. भ. व्याप्तिः।
४ चन्द्रे ४९।५ या. उ. भाद्र भं शुद्धम्। २१।२३ या. भद्रा व्याप्ति परं गोधूलिः। सिंहे इ.५। १२ चं.।
५ भौमे ५५।४८ या. रेवतीभं शुद्धम्। दिवा मीने इ. ५। १ चं., ८ मं.। गोधूलिः। सिंहे इ. ५।८ चं.। धनुषि इ. ६। लग्नेशः गुरुः लग्ने।
९ शनौ ८।५ उ. रोहि. भं राहु युतं, सूर्यवेधावसानं नेन्दुभुक्तञ्च। ८।१२ उ. मृ.वा.।
१० रवौ ८।३० या. रोहि. भं पूर्वदोषयुक्तं परं मृग भं शुद्धम्। ७।३१ या.मृ.वा., ३१।५५ या. वैधृतिः। परं धनुषि इ. ६। १ गु., ७ चं.।
१४ गुरौ ४३।४३ उ. मघाभं सूर्य वेधावसानं नेन्दुभुक्तमशुभम्।

फाल्गुनकृष्णपक्षे

१ शुक्रे ४९।१३ या. मघा भं सूर्य वेधावसानं नेन्दुभुक्तमशुभम्।
२ शनौ २८।८ उ. उ.फा. भं शुद्धम्। कन्यायां इ.५। धनुषि इ. ७। १ गु.।

३ रवौ २१।३ या. उ.फा. भं शुद्धं परं हस्तभं शुद्धम्। ५।११ या. भद्राव्याप्तिः। भद्रोपरान्त गोधूलिः। कन्यायां इ. ६। १ चं.। धनुषि इ. ७। १ गु.।
४ चन्द्रे १३।५या. हस्त भं शुद्धम्। पञ्चेष्टलग्नाभावः।
५ भौमे १०।३५ उ. स्वाती भं सूर्यविद्धम्। भौमभुक्तंनेन्दुभुक्तमशुभम्।
६ बुधे ७।५५ या. स्वाती भं पूर्वदोष युक्तम्।
७ गुरौ ७।१३ उ. अनु. भं शुद्धम्। १।५६ उ मृ. वा. व्याप्तिः।
९ शनौ ११।३० उ. मूल भं शुद्धम्। गोधूलिः। कन्यायां इ. ५। ६ बुधः।
११ चन्द्रे २१।५३ उ. उ.षा. भं शुद्धम्। ४७।४८ या. व्यतीपातः परं धनुषि इ. ८। १ गु.।
१२ भौमे २८।३० या. उ.षा. भं शुद्धम्। दिवा मेषे इ. ५। ७ रा. भौ.।

फाल्गुनशुक्लपक्षे

१ शनौ ५७।५० उ., उ. भा. भं शुद्धम्। ५९।२८ या. मृ. वा. व्याप्तिः।
२ रवौ ६०।० या. उ. भा. भं शुद्धम्। वृषे इ. ६। १ राहुः, ७ केतुः, ८ गुरुः।
३ चन्द्रे ५।० या. उ.भा. भं शुद्धंपरं रेवती भं शुद्धम्। दिवा वृषे इ. ५। १ राहुः, ७ भौमः केतुश्च। गोधूलिः। धनुषि इ. ६। १ गुरुः।
३ भौमे ११।४३ या. रेवती भं शुद्धम्। दिवा वृषे इ. ५। १ राहुः, ७ भौमः केतुश्च।
६ शुक्रे २६।३० उ. रोहि.भं राहुयुतम्।
७ शनौ २८।४० या. रोहि.भं पूर्वदोष युक्तं परं मृग. भं शुद्धम्। १४।२८ उ. ४४।१७ या. भद्रा व्याप्तिः परं मकरे इ. ५।१२ गु.।
८ रवौ २९।० या. मृग. भं शुद्धम्। दिवा वृषे इ.५। १ राहुः, ७ केतुः भौमश्च। अग्रे पञ्चेष्टलग्नाभावः।
अतः परं मीनार्कत्वात् विवाहमुहूर्ताभावः।

अथ उपनयन मुहूर्त्ताः

चैत्रशुक्लपक्षे

१० शुक्रे ३।२८ या. आश्लेषायां स्वल्पकालः लग्नाभावश्च।
१२ रवौ ५३।८ उ., उ.फा. भं शुद्धम्। सिंहे इ. ६। ५ केतुः।

वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुक्रे ५२।१५ या. अनु.भं शुद्धम्। सिंहे इ.५। ४ केतुः।
५ चन्द्रे २।१३ या. मूले केतुयुतिः परं उ.षा. भं ३६।२४ या. रो. वा. व्याप्तिः।

वैशाखशुक्लपक्षे

३ रवौ ३३।४८ या. मृग. भं, संक्रान्ति दोषः।
११ रवौ ६।३० या. उ.फा. भं शुद्धं परं हस्तभं शुद्धम्। २३।३ उ. ५१।२८ या. भद्रा व्या.। विष्टेः पूर्वं सिंहे इ. ५। १ चन्द्रः ५ केतुश्च।
१२ चन्द्रे ८।१० या. हस्त भं शुद्धं परं चित्राभं शनियुतम्। २२।२ उ.रो.वा. व्याप्तिः पञ्चेष्टलग्नाभावश्च।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

३ रवौ २२।५३ या. मूले केतुयुतिः।
५ बुधे ९।२३ या.श्रवणभं शुद्धम्। पंचेष्टलग्नाभावः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे ४४।२३ या. पुन. भं केतुविद्धम्।
५ बुधे ३३।३० या. आश्लेषाभं संक्रान्तिदोषयुक्तम्।
१० चन्द्रे २२।८ या. चित्राभं शनि युतं परं स्वातीभं शुद्धम्। लग्नं चिन्त्यम्।

आषाढकृष्णपक्षे

२ चन्द्रे ५४।२० या. उ.षा. भं राहुविद्धम्।
५ गुरौ ९।२० उ. स्वातीभं शुद्धम्। सिंहे इ.७। ५ के., १२ शु. त्याज्यः।

आषाढशुक्लपक्षे

५ गुरौ ४२।४३ या. पू.फा.भं शुद्धम्। [illegible] या व्य. पा. दोषः परं पञ्चेष्टलग्नाभावः।

माघकृष्णपक्षे

२ शुक्रे १४।३३ या. आश्ले. भं शुद्धम्। मीने इ. ६। ८ श. मं. अशुभौ।
५ रवौ २।२० या. पू. फा. भं परं उ.फा. भं शुद्धम्। मीने इ. ५। ६ चन्द्रः, ८ मं. श.। मिथुने इ. ५। ५ श. मं. ८ सू.।

माघशुक्लपक्षे

१ शुक्रे २। ८ उ. २६।१२ या. धनि. भं शनिविद्धम्।
२ रवौ १५।३ या. पू.भा.भं शुद्धम्। मीने इ.५। १ चं., ८ श. मं.।
१० रवौ ८।३० या. रोहिणी भं राहु युतं परं मृग. भं शुद्धम्। २९।५५ या. वैधृतिः।

फाल्गुनशुक्लपक्षे

२ रवौ ६०।० या. उ.भा. भं शुद्धम्। वृषे इ. ६। १ रा. ८ गु.। सिंहे इ. ५। ८ सू. चं.।
३ चन्द्रे ५।७ या. उ.भा. भं परं रेवती भं शुद्धम्। वृषे इ. ६। १ रा. ८ गु.। सिंहे इ. ५। ८ सू. चं.।
९ चन्द्रे १०।५१ उ. आर्द्राभं परं पुन. भं शुद्धम्। वृषे इ. ५। ८ गु.। १ रा.।
१२ बुधे १८।२५ या. पुष्य भं केतुविद्धम्।

अथ चौल मुहूर्त्ताः

वैशाखशुक्लपक्षे

११ रवौ ६।३० या. उ. फा. भं परं हस्तभं शुद्धम्। २३।३ उ. भ. व्या.। विष्टेः पूर्वं पञ्चेष्टलग्नाभावः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

[illegible]

१० चन्द्रे [illegible] या. उ भा.भं परं रेवतीभं शुद्धम्। [illegible] उ. [illegible] या. [illegible]

आषाढकृष्णपक्षे

५ गुरौ ९।२० या. धनिष्ठाभं परं शत. भं शुद्धम्। सिंहे इ. ६।

माघशुक्लपक्षे

१ शुक्रे [illegible] उ. २६।१२ या. धनिष्ठाभं शनिविद्धम्।
१० रवौ ८।३० उ. मृग. भं शुद्धम्। २९।५५ या. वैधृतिः।
११ चन्द्रे ६।५० या. मृग. भं शुद्धम्। ३।४४ उ. भद्रा व्या.। स्वल्प काले पञ्चेष्ट लग्नाभावः।
१३ बुधे ३३।२३ या. मघाभं शुद्धम्। वृषे इ.५। ८ गु.।

फाल्गुनशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे ५।० उ. रेवतीभं शुद्धम्। मिथुने इ. ५।

४ बुधे ६।५३ या. भद्रा व्या.परं. पञ्चम्यां १७।४३या. अश्विनीभं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ ।

अथ द्विरागमनमुहूर्त्ताः

चैत्रशुक्लपक्षे

८ बुधे २२।१४ या. भ. व्या. परं पुष्यभं शुद्धम् । कन्यायां पंचेष्टलग्नाभावः ।

१३ चन्द्रे ५०।३८ या हस्तभं शुद्धम् । १९।१५ उ. भ. व्या. । विष्टेः पूर्वं पञ्चेष्टलग्नाभावः ।

वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुक्रेः ५२।१५ या. अनु. भं भौमविद्धं परं मूल भं केतुयुतम् ।

७ बुधे १६।३३ या. उ.षा. भं राहुविद्धं परं श्रवण-भं शुद्धम् । लग्नं चित्यम् ।

८ गुरौ २४।५ या. श्रवण भं परं ४२।३८ या धनिष्ठा-भं शुद्धम् । पञ्चेष्टलग्नाभावः ।

१२ चन्द्रे ४४।३० या.उ.भा.भंशुद्धम् ।पञ्चेष्टलग्नाभावः।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

१ चन्द्रे ५४।२३ या. रोहिणी भं शुद्धम् । वृषे इ. ५ ।

४ गुरौ १३।३५ उ. पुन. भं शुद्धम । वृषे इ. ५ ।

५ शुक्रे ४२।५ या. पुष्यभं केतुविद्धम् ।

फाल्गुनकृष्णपक्षे

७ गुरौ ६।१३ उ. अनु. भं शुद्धम् । मीने इ. ५ । ८ श. म. । कन्यायां इ. ६ ।

८ शुक्रे ८।२८ या.अनु.भं शुद्धम् । मीने इ.५। ८ श.मं.।

११ चन्द्रे २१।१३ उ. उ.षा. भं शुद्धम् । ४७।४८ या. व्य. व्याप्तिः परं पञ्चेष्टलग्नाभावः ।

१३ बुधे ३१।३३या.श्रवणभंशुद्धम् ।मीने इ.५।८ श.म.।

फाल्गुनशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे ५।० उ. रेवतीभं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ ।

४ बुधे १७।४३ या.अश्विनीभं शुद्धम् । ६।५३ या. भ. व्या. परं पञ्चम्यां मिथुने इ. ५ ।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्त्ताः

वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुक्रे ५२।१५ या. अनु. भं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ । ८गु. ।

वैशाखशुक्लपक्षे

४ चन्द्रे २९।३८ या. आर्द्रा भं शुद्धम् । ०।५ उ. भद्रा व्याप्तिः ।

६ बुधे २१।२३ या. पुष्य भं शुद्धम् । कर्के इ. ६ । १२ शु. के. ।

११ रवौ ६।३० या. उ. फा. भं परं हस्तभं शुद्धम् । कर्के इ. ६ । १२ शु. के. श्च. । २३।३ उ. भद्रा व्याप्तिः ।

१२ चन्द्रे ८।१० या. हस्तभं शुद्धम् । लग्नं चिन्त्यम् ।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१ शुक्रे १३।८ या. अनु. भं शुद्धम् । कर्के इ. ५।१२ शु. रा. श्च ।

५ बुधे ४४।१० या. श्रवणभं शुद्धम् । ६।५ या. वै. नि. परं कर्के इ. ७।१२ रा. ।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

८ शनौ १८।१५या.उ.फा. भं शुद्धम् । ३८।२३या. व्य.।

१३ गुरौ १५।१० या. अनु.भं शुद्धम् । सिंहे इ.६। १२शु.।

आषाढ़कृष्णपक्षे

५ गुरौ ९।२० या. धनिष्ठाभं परं शत.भं शुद्धम् । सिंहे इ. ७।१२ शु. ।

आषाढ़शुक्लपक्षे

६ शुक्रे ३८।४८ या. उ.फा. भं शुद्धम् । कर्के इ. ५।१२ भौ. । सिंहे इ. ५।१२ सू. बु. ।

माघकृष्णपक्षे

५ रवौ २।२० उ. उ.फा. भं शुद्धम् । मीने इ. ६ ।

माघशुक्लपक्षे

३ रवौ २१।३ या. उ.फा.भं शुद्धम् । ५।११ उ. भद्रा व्या. परं पञ्चेष्टलग्नाभावः ।

फाल्गुनशुक्लपक्षे

२ रवौ ६०।० या. उ.भा.भं शुद्धम् । वृषे इ. ५।१ राहु ८ गु. ।

३ चन्द्रे ५।० या. उ.भा.भं शुद्धम् । पंचेष्टलग्नाभावः ।

४ बुधे १७।४३ या. अश्विनीभं शुद्धम् । ६।५३ या. भद्रा व्या. परं मिथुने इ. ५।१२ रा. ।

८ रवौ १३।३८ या. मृग.भं शुद्धम् । पंचेष्टलग्नाभावः ।

अथ गृहारम्भमुहूर्ताः

चैत्रशुक्लपक्षे

८ बुधे १०।३० उ. पुष्यभं शुद्धम् । २२।१४ या. भद्रा व्या. । भद्रोपरान्त वृ.च.शु. सिंहे इ. ५। १२ चं. ।

१५ बुधे १६।२ या. स्वातीभं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च. शु. । पंचेष्टलग्नाभावः ।

वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुक्रे अनु. भं शुद्धम् । ४५।३१ उ.भ.व्या. । वृ. च. शु. । व.च.शु. । विष्टेः पूर्वं सिंहे इ. ५ ।

वैशाखशुक्लपक्षे

१२ चन्द्रे ८।१० उ. चित्राभ शुद्धम् । वृ. च शु. । व. च. शु. । नात्रप्रद्योतना शुद्धि। सिंहे इ. ६।१२ सू. ।

श्रावणकृष्णपक्षे

२ बुधे २४।४० या. धनिष्ठाभं परं शत. भं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च.शु.। व. चं.शु.।लग्नं चिन्त्यम् । ४४।० उ. भद्रा. व्या. ।

३ गुरौ १६।५० या. भद्रा. व्या. परं शत.भं शुभम् । वृ. च. शु. । लग्नं चित्यम् ।

फाल्गुनकृष्णपक्षे

२ शनौ २८।८ उ. उ. फा. भं. शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च. शु. । कन्यायां इ. ५।१२ चं. ।

४ चन्द्रे २३।२० उ. चित्राभं शुद्धम् । वृ.च.शु. । व. च. शु. कन्यायां इ. ५ ।

अथ गृहप्रवेश मुहूर्ताः ।

वैशाखकृष्णपक्षे

१२ चन्द्रे ४४।३० या. उ. भा. भं शुद्धम् । क.च.शु. । सिंहे इ. ५।८ चं. ।

वैशाखशुक्लपक्षे

१० शनौ ११।३५ उ. उ.फा.भं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ६ ।

१२ चन्द्रे ८।१० उ. चित्राभं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ६ ।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१० चन्द्रे ०।५ उ. ३०।३८ या. भ. व्या. परं रेवती शुद्धम् । क. च. शु. । लग्नं चिन्त्यम् ।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

१० चन्द्रे २२।८ या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । ४२।४५ उ. भ. व्या. । क.च.शु. । विष्टेः पूर्वं सिं. इ. ७। १२ शु. ।

१३ गुरौ १५।१० या. अनु. भं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ७ । १२ शु. ।

फाल्गुनकृष्णपक्षे

६ शुक्रे २६।३० उ. रोहिणीभं राहु विद्धं मात्र क. च. शु. ।

अथ जीर्णगृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽपि ।

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

६ गुरौ ५१।३० या. धनि.भं परं शत.भं शुद्धम् । १५।३० उ. ४८।२८ या. भ.व्या. । नात्र के.च.शु ।

७ शुक्रे ५८।१० या. शत.भं शुद्धम् । १५।५३ या. वै.। नात्र क. च. शु. ।

श्रावणकृष्णपक्षे

२ बुधे २४।४० या. धनिष्ठाभं परं शत.भं शुद्धम् । नात्र क. च. शु. ।

३ गुरौ १६।५० या. शत.भं शुद्धम् । नात्र क.च.शु. ।

१० गुरौ ५०।३८ या. रोहिणीभं शुद्धम् । २७।१३ या. भ. व्या. । क.च.शु. । कुम्भे इ. ५ ।

श्रावणशुक्लपक्षे

३ गुरौ २।१० उ. उ.फा.भं शुद्धम् । नात्र क. च. शु. ।

५ शनौ ५३।० या. चित्राभं पर स्वातीभं शुद्धम् । क. च. शु. सिंहे इ. ५।१२ सू.मं. । कुम्भे इ. ६ ।

कार्त्तिकशुक्लपक्षे

६ गुरौ १०।२५ उ. उ.षा.भं राहु विद्धम् ।

११ बुधे ४०।४३ या. उ.भा भं शुद्धम् । २५।३५ या. भ. व्या. । क. च. शु. । वृषे इ. ५ ।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

११ बुधे २५।१३ उ. चित्राभ शुद्धम् । क. च. शु. । पंचेष्ट लग्नाभावः ।

१२ गुरौ २३।३ या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । पंचेष्टलग्नाभावः ।

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे

६ शनौ धनिष्ठाभं शुद्धम् । क.च.शु.। पंचेष्टलग्नाभावः ।

१० गुरौ १५।४५ या. रेवतीभं शुद्धम् । क. च. शु. । पञ्चेष्टलग्नाभावः ।

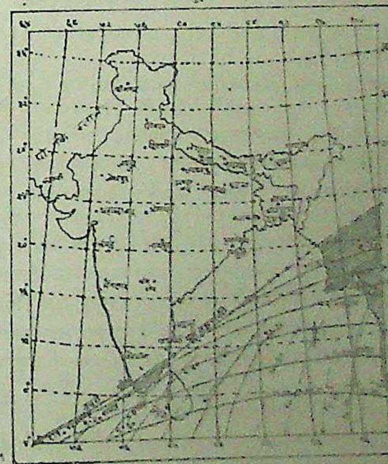
श्री शुभ संवत् २०४० शाके १९०५ ई० सन् १९८३ में ग्रहणों का विवरण ।

१. ज्येष्ठ कृष्ण ३० (अमा) शनिवार, दिनाङ्क ११ जून १९८३ ई० को पूर्ण सूर्य ग्रहण भारत के दक्षिण भाग में दृश्य होगा। इसके अतिरिक्त यह श्रीलङ्का, अण्डमन द्वीपसमूह, बङ्गलादेश के दक्षिणी भाग, चीन, इण्डोनेशिया आदि देशों में दृश्य होगा ।

२. ज्येष्ठ शुक्ल१५ (पूर्णिमा) शनिवार, दिनाङ्क२५जून१९८३ ई. खण्ड चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा।

३. मार्गशीर्ष कृष्ण ३०(अमा.) रविवार, दिनाङ्क४दिस.१९८३ई.को कंकण सूर्यग्रहण। भारत में दृश्य नहीं होगा।

भारत के दक्षिण भाग में दृश्य होने वाले सूर्यग्रहण का विवरण



नोटः – सूर्य बिम्ब के व्यास को १ अङ्गुल मानकर अङ्गुलादि ग्रासमान नीचे दिये हैं।

नगर	ग्रहण का स्पर्शकाल स्टै. टा. घं. मि.	ग्रहण का मध्यकाल स्टै. टा. घं. मि.	ग्रहण का मोक्षकाल स्टै. टा. घं. मि.	अङ्गुलादि ग्रासमान अं. व्यं.
कन्याकुमारी	८-४६'५	[illegible]	[illegible]	०- ३'४०
करैकल	९- ४'३	[illegible]	[illegible]	०- ०'४२
मदुरै	९- ३'६	[illegible]	[illegible]	०- ०'२४
नागापट्टनम्	९- १'८	[illegible]	[illegible]	०- ०'.६
पोर्टब्लेयर	८-४४'८	[illegible]	[illegible]	०-२२' १
रामेश्वरम्	८-४१'२	[illegible]	[illegible]	०- ०'५२
तिरुनेवली	८-५०'४	[illegible]	[illegible]	०- १'७६
त्रिवेंद्रम्	८-५१'४	[illegible]	[illegible]	०- १'३१
तूतीकोरीन	८-४१'२	[illegible]	[illegible]	०- २'९०
कोलम्बो	८-३३'१	[illegible]	[illegible]	०- ७' ७
रंगून	९- ८'५	[illegible]	[illegible]	०- ७'२०

दृक् सिद्धपंचांग की प्रामाणिकता

तथा

"सप्तवृद्धिर्दशक्षयः" की प्रामाणिकता

[निम्नलिखित लेख का अंश, सन् १८७४ ई० में पूना के ज्ञानप्रकाश मुद्रणालय में मुद्रित दक्षिण देश के श्रीचिन्तामणि रघुनाथाचार्य प्रणीत "शुक्रग्रस्तविचित्रसूर्योपराग" पुस्तक से उद्धृत किया गया है। उक्त पुस्तक ज्योतिष सिद्धान्तसूक्ष्मदर्शी गोविन्दपुरवास्तव्य सुन्दरेश्वर श्रौत द्वारा द्राविड़ भाषा से संस्कृत भाषा में अनूदित है। प्रस्तुत लेख में प्रसंगवशात् परिपुष्ट प्रमाणों द्वारा यह अच्छी तरह प्रतिपादित किया गया है कि **दृक्गणित-सिद्धपञ्चाङ्ग ही धर्मशास्त्र सम्मत है तथा इतर पञ्चाङ्ग धर्मशास्त्र विरुद्ध है।** अतः इसको लोकोपकारार्थ प्रकाशित किया जाता है।—सम्पादक]

दृक् सिद्धपञ्चाङ्गसाधनस्य मूलभूतान् प्रमाणोपपत्तिसंप्रदायांश्च प्रदर्शयामः। अत्र तावत् **"संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि"** इत्यादिवेदोक्तस्य विष्णुपुराणद्वितीयांशाष्टमाध्याये **"संवत्सरोदयः पञ्च"** इत्यादिना, वायुपुराणे **"शतान्यष्टादश"** इत्यादिना, वृद्धगर्गेण **'यदामाघस्य"** इत्यादिना, लगधाचार्येण **'माघशुक्ल प्रवृत्तस्य"** इत्यादिना, वाराहमिहिरेण **"संवत्सरोऽग्निः परिवत्सरोऽर्कः" 'विष्णुस्सुरेज्य"** इत्यादिनां च विशदीकृतस्य पंच संवत्सरयुगस्य केवलं सूर्यसिद्धान्तान्यानीतं पञ्चाङ्गेषु कदाचिदप्यसम्भावितत्वेन पञ्चसम्वत्सरयुगादिरूप श्रौत स्मार्तानुष्ठानकालविधायक श्रुतिस्मृतिपुराणप्राक्तनाचार्यवचनविरोधात्तस्सर्वमप्रमाणमेव। दृक् संस्कारपक्षे तु कालभेदेन गतिभेदसम्भवात् पूर्वोक्त श्रुतिस्मृत्यादीनां कालान्तरविषयतया प्रामाण्य संभवेन दृक्सिद्धपञ्चाङ्गस्यैव शास्त्रानुगुणत्वात्तदेव प्रामाणिकम्। तथा चोक्तम् विष्णुचित्ताचार्यैः श्री विष्णुपुराणद्वितीयांशाष्टमाध्यायगत **"तदा तुल्यमहोरात्र"** मिति श्लोक व्याख्याने **"यत्तु मानसोत्तरे दक्षिणवीधी क्षीरोदमध्ये विषुव शाकद्वीपोत्तरान्ते चोदक्काष्ठेति वायुप्रोक्ते प्रपञ्चितमत्रापि सूचितम्। तत्र तपःस्तपस्यावित्यादिना माघश्रावणयोरयनद्वयं वक्ष्यमाणं प्रथमेकृत्तिकाभाग इति वैशाखकार्त्तिकयोर्विषुवद्वयञ्च पंचसंवत्सरकल्पनानुगुणं यत्काले प्रत्यक्षसंवादि तत्काल विषयं ज्ञेय"** मिति दृक्संस्कारस्यावश्यकत्वाङ्गीकारेण कालभेदेन गतिभेदं स्वीकृत्य सर्वशास्त्राऽविरोधस्सिद्धान्तितः। पंचसंवत्सर युगादेस्तिथिवारनक्षत्रैकमूलत्वात्तिथ्यादीनां दृक्संस्काराभावे पूर्वोक्त सर्वशास्त्रविरोधो दुष्परिहार एवेत्यदृक् सिद्धपञ्चाङ्गं सर्वमप्रमाणमेव। किंच ग्रहलाघवेऽपि **"सौरोऽर्कोऽपिविधूच्चमङ्कुलिकोनाब्ज'** इत्यादि श्लोकस्य मल्लारि व्याख्या—**'एतैरेव ग्रहैरिहास्मिन् सिद्धान्ते सिद्धैः पर्वधर्मनयसत्कार्यादिकं, पर्वग्रहणं, धर्मोयज्ञानुष्ठानैकादशी व्रतादिः, नयोनीतीराजनीतिदण्डनीत्यादिकः, सत्कार्यं शुभकार्यं व्रतबन्धविवाहादि, एभ्यो ग्रहेभ्य उत्पन्नतिथ्यादिकमेवादिशेत्"।** अत्रायं भावः एकादश्यादस्यादेव तिथेः कार्यम् जातकादिषु सर्वत्रात्रत्या एव ग्रहा ग्राह्याः। **"यतो यस्मिन् काले यद् दृग्गणितैक्यं तस्मिन् काले तदेव ग्राह्य"** मिति। एतदर्थं कान्येव सिद्धान्तशिरोमणीयमरीच्याख्यटीकास्य वचनानि काशिकराजकीयपाठशालायां ज्यौतिश्शास्त्राध्यापकैर्ब्रह्म **श्री वापूदेवशास्त्रिभिर्मदर्थं** प्रेषितानि। यथा,

> यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम्। दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥
> ससाध्य स्पष्टतरं बीजं नालिकादियन्त्रेभ्यः। तत्संस्कृतास्तु सर्वे पक्षास्साम्य भजन्त्येव॥
> व्यानग्रहोपदेशाद्बीजं ज्ञात्वा च देवज्ञैः। तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ॥
> किं तेनापि सुवर्णेन कर्णघातं करोति यत्। तथा किं तेन शास्त्रेण यन्न प्रत्यक्षतः स्फुटम्॥

एभिर्वसिष्ठसूर्यशाकल्यवचनैर्यस्मिन् काले यत्पक्षानीतो ग्रह आकाशे दृश्योग्यस्तस्मिन् काले तत्पक्षस्य तद्विषये प्रामाण्यं प्रतिपाद्यते। तथा सूर्यसिद्धान्तस्य कामदोग्घ्री व्याख्यायाम् **"मध्यग्रहानीततिथ्यादिषु शुभाशुभकर्मणी न कुर्यात्। यतो मध्यग्रहानीतग्रहणग्रहसमागमादयो न दृश्या भवन्तीति।"**

अथ भास्कराचार्यप्रणीत सिद्धान्तशिरोमणिस्थ वचनानि स्पष्टाधिकारे—

> यात्रा विवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
> स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुट क्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥

फलोपपत्तौ च गोलाध्याये—

> भूमध्ये खलु भवलयस्यापि मध्यं यतः स्यादस्मिन् वृत्ते भ्रमति खचरो नास्य मध्य कुमध्ये।
> भूस्थो द्रष्टा न हि भवलये मध्यतुल्यं प्रपश्येत्तस्मात्तज्ज्ञैः क्रियत इह तद्दो फलं मध्यखेटे॥

लम्बनस्य भूपृष्ठ प्रयुक्तताप्रतिपादकवचनं तत्रैव—

> यतः पदर्धोच्छ्रितो द्रष्टा चन्द्रं पश्यति लम्बितम्। साध्यते कुदलेनातो लम्बनं च नतिस्तथा॥
> एकं भूमध्यतस्सूत्रं नयेच्चण्डांशुमण्डलम्। द्रष्टुर्भूपृष्ठगादन्यद्दृष्टिसूत्रं तदुच्यते॥
> दृक्सूत्राल्लम्बितश्चन्द्रस्तेन तल्लम्बनं स्मृतम्। दृग्गर्भसूत्रयोरैक्यात् खमध्य नास्ति लम्बनम्॥

अथ भास्कराचार्येणैव प्रणीतानि बीजोपनयग्रन्थवचनानि। येषु तिथ्यादीनां भूपृष्ठप्रयुक्त लम्बन संस्कार निषेधकवचने लम्बनसंस्कृतग्रहस्यैवातिसूक्ष्मत्वात्तेनैव तिथ्यादिक साधनीयमिति शङ्कामुपहसन्नाह—

> यदि च लम्बनसंस्कृतखेटतस्तिथिमुखानयनं परिचोद्यते।
> वधिर! तर्हि तव श्रुतिगोचरं वितथमेव हि लम्बनशासनम्॥

भूमध्यदृक्तुल्यग्रहस्यैव पारमार्थिकत्वप्रतिपादकवचनम्—

> अतः कुमध्यादगतखादूर्ध्वसूत्रे दृक्तुल्यतामेति नभश्चरो यः।
> स एव शुद्धः परमार्थतः स्यात् स्फुटस्ततोऽन्ये विहगास्त्वतथ्याः॥

भूमध्यदृक्तुल्यस्फुटानीतानां तिथ्यादीनामेव सार्वत्रिकानुष्ठानार्हत्वे हेतुमाह—**"भूपृष्ठसर्वदेशानां मध्यमेव यतः समम्। तत्तुल्यखेचरानीतं तिथ्यादेव वरं ततः॥"**

अत्र **"वरं"** इत्यस्य सर्वदेशावच्छेदेनाप्यनुष्ठातुं योग्यमित्यर्थः।

अथेदानीं विस्तरतो बीजोपनयारम्भस्य प्रयोजनमाह—

> यद्यपि पूर्वमपीदं संक्षेपादुक्तमागमोक्तदिशा। नैतावतैव कश्चिद्दृक्करणैक्याय कल्पते गणकः॥
> दृक्करणैक्यविहीनाः खेटाः स्थूला न कर्मणामर्हाः। अत इह तदर्हतायै तात्कालिकबीजविस्तरं वक्ष्ये॥

इदानीं चन्द्रमात्रस्य विस्तरतो बीजसंस्कारकथने हेतुमाह—

पातारवेस्तामसकीलकाद्यास्तेषां समाकर्षणतश्शशाङ्कः। तत्तुङ्गशश्चिनिजस्वभावं विहाय नित्यं विषमत्वमेति॥ चन्द्राच्च तद्योगवियोगतश्च साध्यं हि भाद्यं विषमं यतः स्यात्। तस्माद्विधोरत्र विशुद्धिशुद्ध्यै विस्तार्यते बीजफलक्रियेयम्॥

कर्मार्हकालसाधने चन्द्रस्यैव विशेषोपयोग तस्यैव वैशम्यातिरेकाच्च तद्बीजकर्मैवात्र प्रपञ्च्यत इति स्पष्टम्। अथेदानीं चन्द्रस्फुटे स्वोपलब्धं परमवैषम्यमाह—

> लिप्ताविधोरर्कमहीमिता मे दृग्गोचराः प्रत्यहमीक्षितस्य।
> कदम्बगाक्षागतसूत्रपाते क्रान्तौ धनर्णत्वजुषो भमध्यात्॥

समसूत्रग्र वसूत्रयोर्व्यावर्तनाय कदम्बेति, तदिदं दर्शनं निर्लम्बनमिति वक्तुमाह भमध्यादिति, गर्भादित्यर्थः, तत्रैव भमध्यस्य स्थितत्वात्। एतेन भूमध्यदृक्तुल्यचन्द्रस्फुटे एवं द्वादशाधिकशत (११२) लिप्तावैषम्यञ्जातमित्युक्तम्।

अथैवं चरबीजफलेन स्पष्टीकृतस्य चन्द्रस्य प्रयोजनमाह—

> तिथिद्वयं यद्यपराह्णसक्तं स्थूलैर्विवेक्तुं न हि शक्यतेऽतः।
> ज्ञेयं तदेतत् चरबीजसिद्धात् सूक्ष्माद्विधोर्दोषकृदन्यथा स्यात्॥

किंच,

यदा चरं बीजमुपैति योगं तदा स्थिरं तत्प्रतिबन्धशक्तिः। यदा स्थिरं योगमुपैति बीजं तदा चरं नाशयतीति मन्ये॥

अत्र **'मन्ये'** इत्यनेन स्वनिर्णयस्याप्यविश्वसनीयता सूचिता। ततश्चान्तरकालिकैरिदं परीक्ष्यैव विश्वसनीयमिति दर्शितम्। यतोऽस्मिन् शास्त्रे तत्रापि बीज कर्मणि उपलब्धिरेव प्रमाणम्। तत्र एतत् परीक्ष्यैव ग्राह्यमिति भावः।

किं च,

मयाद्य बीजोपनयेन यदन्ते सूर्योक्तमाद्यं परमं रहस्यम्। प्रकाशये गोप्यमपीह देव प्रणम्य बीजं जगतो हितार्थम्॥

अत्र बीजं सूर्योक्तमित्यनेन बीजोपनयस्य सूर्योक्तिरेव मूलमिति दर्शितम्। इदं सर्वमवश्यं परीक्ष्य निर्णेयमित्याह—

> ज्योतिर्गणिते शास्त्रपथातिवृत्तौ यद् ब्रह्महत्या मुनयो वदन्ति। नित्यं ग्रहाणामहर्गणकाले निर्णेयमेतत्तु परीक्ष्य दक्षैः॥

एवम् भूतदृग्गणितसम्प्रदायस्यापकवचनानां मूलप्रमाण सूर्यसिद्धान्त एव। यथा हि, स्फुटाध्याये—

> तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यता ग्रहाः। प्रयान्ति तत्प्रवक्षामि स्फुटीकरणमादरात्॥

अत्र गूढार्थप्रकाशिका ग्रहाः सूर्यादयः, यथायेन प्रकारेण दृक्तुल्यतां वेधितग्रहसमतां गच्छन्ति तत्तादृश स्फुटीकरणमिति। केचित् ग्रहणमात्रस्ये दृक् तुल्यत्वमावश्यकं न तिथ्यादेरेति वाचा केवल वदन्ति तदसत्यम्, स्फुटाध्याये एव दृक्तुल्यताकरणं सूर्यादीनामुक्त्वा तादृश् सूर्यादिभिरेव तिथ्यादि साधनस्य सूर्यसिद्धान्त विहितत्वात् [illegible] बीजक्रियायाः पृथगनुक्तेश्च। किं च दृक्सिद्धि विना तिथ्यादि साधनमशक्यं, तिथि साधनं [illegible] तत्काल साधनञ्च चरदल देशान्तराद्यपेक्षं, चरदलञ्च। दृक्सिद्धस्फुटसूर्यसापेक्षं, देशान्तरं च दृक्सिद्ध[illegible] साधित दृक्तुल्यपूर्णचन्द्रग्रहणसापेक्षम्। तथा च सूर्य सिद्धान्ते चरदलस्य दृक्सिद्धसायनस्फुटसूर्यसापेक्षत्वे वचनं—

> सत्संकृस्ताद्ग्रहात् क्रान्तिच्छाया चरदलादिकम्। स्फुटं दृक्तुल्यतां गच्छेदयने विषुवद्वये॥ इति।

देशान्तरस्य च दृक्तुल्य पूर्णं चन्द्रग्रहण सापेक्षत्वे वचनम्—

> अतीत्योन्मीलनादिन्दोः दृक्सिद्धं गणितागतात्।
> यदाभवेत्तदा प्राच्यां स्वस्थानं मध्यतो भवेत्॥
> अप्राप्य च भवेत् पश्चादेव वापि निमीलनात्।

तथा च रविचन्द्रयोर्दृक्सिध्यभावे देशान्तर चरदलयो [illegible] पञ्चाङ्गान्तरेषु लिखिताः सर्वेऽपि तिथ्यादयः सुतरामशुद्धा एवेति सिद्धम्। न केवलमेतावत्, [illegible] दृग्गणितपञ्चाङ्गमेवाभिमतमिति भाति। तथाहि, जगत्प्रख्यातेन श्री [illegible] दीक्षित [illegible] बीजोपनयनग्रंथस्थनिखिलवचनानुसारेणदृक्तुल्यस्यावश्यकतामंगीकृत्यैव तिथिनिर्णयस्य धर्मशास्त्रस्य प्रणीतः। किं च धर्मशास्त्रनिबंधनग्रंथिकेश्वन्यतमे वैदिक सार्वभौमैः प्रणीते सुधीविलोचनाभिधे [illegible]—

> सायन्तन्यपरत्र चेन्मृततिथिस्सैवाब्दिके मासिके ग्राह्या सा [illegible] मता।
> तुल्या चेदुभयापराह्णसमये पूर्वा न चेत्तद्द्वयोः पूर्वैव [illegible]॥

व्याख्या—"दिनद्वये[illegible]परा[illegible]" [illegible] स्पष्टम्। तस्मिन्नेव ग्रंथे दर्शनिर्णयप्रकारणे गौतमः—

> पूर्वाह्णे चेत्प्रतिपदो भूते सायममा यदि। आरभ्य [illegible]॥

अस्यार्थः—भूते चतुर्दश्यां सायंकाल प्रारम्भे वा [illegible] पूर्वाह्णे [illegible] पूर्वार्द्धे आवर्तनात् प्रागित्यर्थः समाप्ता यदि तदा [illegible] समापयेदित्यर्थः। एताभ्यां वचनाभ्यां तिथि[illegible] सम्भवेदिति, परमक्षयसमये तिथि[illegible] णामाशय इति सर्वैरप्यवश्यमंगीकार्यमेव। अत इदं [illegible] शास्त्राभिमतमिति निर्णयम्। अस्मदीय[illegible]पंचाङ्ग [illegible] कात्वं क्षये आपंचाशद्घटिकात्वञ्च सम्भवति, तद्भिन्न पंचाङ्गरीत्या तु [illegible] न स्यात्, तथैव क्षयेऽपि [illegible] एकादशीनिर्णयविषये तत्काल दृक्सिद्ध[illegible] बहूनि वचनानि सन्ति। तानि च इदानीं समग्रमनुपलब्धानि, तथापि यान्युपलब्धानि तानि लिख्यन्ति—

> प्रतिपत्प्रभृतः सर्वा उदयादुदयाद्रवेः। सम्पूर्णा इति विज्ञेया हरिवासरवर्जिता॥
> आर्कमानेन गणना कर्तव्या विष्णुतत्परैः। अन्यथा दोषभाक् स्यादि [illegible]॥

अतो दृग्गणितपंचाङ्गमेव धर्मशास्त्राभिमतं, तद्भिन्नपंचाङ्गानि तु धर्मशास्त्र[illegible]नीति सिद्धम्। इत्थं सर्वैरपि शिष्टैर्दृक्सिद्धपंचाङ्गमेवाङ्गीकरणीयमिति सर्वमुपपन्नमित्यास्तां विस्तरः।

अवाच्यमुक्तं यदि बालभावादाद्यन्नमुक्तं मम सज्जनैस्तत्। क्षन्तव्यमित्थं विनयोपपन्नसम्प्रार्थयेऽहं रघुनाथनामा॥

दक्षिणाक्षांश देशों में फलघट्यादि साधन का प्रकार——

काशी के स्टॅण्डर्ड सूर्योदय से लिखे हुए दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग के तिथि, नक्षत्र, ग्रहादिकों पर से दक्षिणाक्षांश देश के किसी नगर के स्टॅण्डर्ड सूर्योदय से तिथि, नक्षत्र, ग्रहादि लाना हो तो यहाँ चरान्तर के स्थान में चरयोग लेना चाहिये। अतः दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग में दी हुई चरान्तर सारिणी का उपयोग यहाँ न कर नीचे लिखे हुए प्रकार से गणित करना चाहिये। यहाँ $\frac{\text{स्पअक्ष.} \times \text{स्पक्रां.}}{\text{त्रि.}}$ = ज्या चर इस समीकरण से इष्ट नगर का चर तथा काशी का चर सिद्धकर दोनों का योग करना चाहिये। क्योंकि, एक क्षितिज उन्मण्डल के नीचे तथा दूसरा उसके ऊपर होने से यहाँ चरयोग किया जाता है। अब चरयोग के धनर्ण का नियम इस प्रकार है:- उत्तरक्रान्ति में काशी का क्षितिज इष्टनगर के क्षितिज के नीचे होने से चरयोग ऋण होता है और दक्षिण क्रान्ति में काशी का क्षितिज इष्टनगर के क्षितिज के ऊपर होने से चरयोग धन होता है। काशी से इष्टनगर पूर्व हो तो फलघटी साधनार्थ देशान्तर को धन और पश्चिम हो तो ऋण समझना चाहिये और देशान्तर में चरयोग का संस्कार करने से फलघटी होती है। इस फलघटी का दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गस्थ तिथ्यादि घटी में संस्कार करने से इष्ट नगर की तिथ्यादि घटी सिद्ध होती हैं। दक्षिणाक्षांश देशों में दिनार्ध साधन के लिये उत्तर क्रान्ति मे इष्टनगर का चर ऋण तथा दक्षिण क्रान्ति में धन होता है। अतः इष्टनगर का दिनार्ध=१५ घटी ± चर वेधालय से निश्चित देशान्तर पर रहनेवाले किसी प्रदेश के स्थान विशेष को स्टॅण्डर्ड देश मानकर उस देश के मध्यमकाल को उस सम्पूर्ण प्रदेश के लिये प्रचलित स्टॅण्डर्ड काल माना जाता है। अतः तत्तत्प्रदेशीय स्टॅण्डर्ड काल भिन्न-भिन्न होते हैं। इन स्टॅण्डर्ड कालों को इष्टनगर के स्पष्ट काल में परिणत करने का यह नियम है:—स्टॅण्डर्ड देशीय रेखांश और इष्टनगर के रेखांश इनका अन्तर स्टॅण्डर्ड देश से इष्टनगर का देशान्तर होता है। इस देशान्तर को स्टॅण्डर्ड काल में यदि स्टॅण्डर्ड देश इष्ट नगर से पूर्व हो तो धन तथा पश्चिम हो तो ऋण करने से वह स्टॅण्डर्ड काल इष्ट नगर के मध्यमकाल में परिणत होता है। इस मध्यमकाल में काल समीकरण का संस्कार करने से वह इष्टनगर के स्पष्टकाल में परिवर्तित होगा। पूर्व साधित दिनार्ध को द्विगुणकर उसमें पाँच का भाग देने से वह इष्टनगर का स्पष्ट सूर्यास्तकाल होगा। इस सूर्यास्तकाल को १२ घण्टे में घटाने से स्पष्ट सूर्योदयकाल होगा। यदि इष्टनगर का स्टॅण्डर्ड सूर्योदय जानना हो तो इस स्पष्ट सूर्योदयकाल में काल समीकरण का विपरीत संस्कार करने से यह स्पष्ट सूर्योदयकाल का मध्यमकाल होगा। इस मध्यमकाल में इष्टनगर से इष्टनगर के स्टॅण्डर्ड देश का जो देशान्तर होगा उसको, यदि इष्टनगर इष्टनगर के स्टॅण्डर्ड देश से पूर्व होगा तो ऋण और पश्चिम होगा तो धन करने से वह इष्टनगर का स्टॅण्डर्ड सूर्योदयकाल होगा। इस स्टॅण्डर्ड सूर्योदयकाल का और जन्मेष्ट स्टॅण्डर्डकाल का जो अन्तर होगा अथवा पूर्वसाधित स्पष्ट सूर्योदयकाल और जन्मेष्ट स्पष्टकाल का जो अन्तर होगा वही होरादि सूर्योदयादिष्टकाल होगा। इष्टकालिक स्पष्टसूर्य साधनार्थ, सर्वत्र फलघटी तुल्य ही क्षितिजान्तर होने से पूर्व साधित फलघटी में इष्टनगर के सूर्योदय से जो जन्मेष्टकाल होगा उसको जोड़कर योगफल तुल्य चालनाङ्क से गुणित रवि गति को दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गस्थ औदयिक स्पष्ट सूर्य में, यदि इष्टनगर काशी से पश्चिम हो तो धन और पूर्व हो तो ऋण करने से इष्टनगर में इष्टकालिक सूर्य होगा। जिस तरह वेधालय के निशीथ कालीन ग्रह ही वेधालय से भारतवर्षीय स्टॅण्डर्ड देश के देशान्तर तुल्यकाल के दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गस्थ ग्रह होते हैं उसी तरह वेधालय से भारत वर्षातिरिक्त किसी देश के स्टॅण्डर्ड देशीय देशान्तर तुल्यकाल के दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गस्थ ग्रह होंगे यह स्पष्ट है। अतः वेधालय से भारतवर्षातिरिक्त किसी स्टॅण्डर्ड देश का देशान्तरकाल और जन्म का स्टॅण्डर्डकाल इन दोनों के अन्तर तुल्यकाल को चालन मानकर उससे गुणित दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गस्थ भौमादिग्रहगति को भौमादि ग्रह में यदि ग्रह वक्री होगा तो ऋण औ मार्गी होगा तो धन करने से वह इष्टनगर का इष्टकालिक ग्रह होगा।

लग्न साधन के लिये, इष्टनगर की पलभा से चरखण्ड लाकर उनको क्रम से मेषादि तीन राशियों के लङ्कोदयों में धन तथा कर्कादि राशियों के लङ्कोदयों में विपरीत क्रम से ऋण करने से इष्टनगर के मेषादि ६ राशियों के उदयमान होंगे यही व्युत्क्रम से तुलादि ६ राशियों के उदयमान होते हैं। दक्षिणाक्षांश के नगर में इस प्रकार सिद्ध किये गये स्वदेशीय राश्युदय मानों से लग्न साधन करना चाहिये।

प्लूटो——

गणितज्ञ पर्सिवल लवेल महाशय को हर्शल् ग्रह के गति में विसंवाद का अनुभव होने से उनको विश्वास हुआ कि नेपच्यून ग्रह के बाद कोई ग्रह है जिसका प्रभाव हर्शल् की गति पर होता है। अतः उन्होंने अपने जीवन काल में इस ग्रह के खोज में जो प्रयत्न किये उनके परिणाम स्वरूप लवेल वेधशाला के गणितज्ञ सी० डब्ल्यू टॉम्बू महाशय ने दिनाङ्क २३ जनवरी सन् १९३० ई० को आकाश के आर्द्रा नक्षत्र प्रदेश में इस ग्रह का पता लगाया। यह सूर्य के चारों ओर ऐसे दीर्घवृत्त मे भ्रमण करता है जिसका वृहदक्ष ७९ और लघुअक्ष तीन प्रतिशत छोटा है। इस ग्रह की कक्षा का धरातल क्रान्तिवृत्त के धरातल से १७ अंश का कोण बनाता है और अन्तरिक्ष में इस ग्रह के स्पष्ट मार्ग का क्रान्तिवृत्त के साथ प्रथम संपात आर्द्रा नक्षत्र प्रदेश के समीप तथा द्वितीय संपात उत्तराषाढा नक्षत्र प्रदेश के समीप होता है। इस ग्रह का पता लगने के समय यह अपने प्रथम सम्पात के समीप था। सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को २४८ वर्ष का समय अपेक्षित रहता है। एवं सूर्य की उष्णता इस ग्रह पर इतनी कम पहुँचती है जिससे इस ग्रह का ताप-मान २०० सेण्टिग्रेड नीचे रहता है। सूर्य का पृथ्वी से जो अन्तर, उसका ३९.५ गुना अन्तर सूर्य से प्लूटो का है।

प्रातः स्टॅण्डर्ड टाइम घं० ५ मि. २९.४ के समय के प्लूटो ग्रह के स्पष्ट निरयण भोगांश आठ-आठ दिन के अन्तर से नीचे लिखे गये हैं। सन् १९८३-८४ ई०

तारीख	रा.	अं.	क.	वि.	तारीख	रा.	अं.	क.	वि.	तारीख	रा.	अं.	क.	वि.	तारीख	रा.	अं.	क.	रि.
अ. १४	६	४	३०	५३	जुलाई २६	६	३	११	१७	नवम्बर ७	६	६	२५	१८	फरवरी १७	६	८	२७	३८
,, २१	६	४	२६	१६	अगस्त ३	६	३	१७	२१	,, १५	६	६	४३	५६	,, २५	६	८	२२	५६
,, २९	६	४	१४	३३	,, ११	६	३	२५	३०	,, २३	६	७	१	४८	मार्च, ४	६	८	१६	११
मई ७	६	४	१	३१	,, १९	६	३	३५	५५	दिसम्बर १	६	७	१८	३८	,, १२	६	८	७	३७
,, १५	६	३	४९	१३	,, २७	६	३	४७	३४	,, ९	६	७	३४	१२	,, २०	६	७	५७	२६
,, २३	६	३	३८	०	सितम्बर ४	६	४	१	१२	,, १७	६	७	४८	१५	,, २८	६	७	४५	५७
,, ३१	६	३	२८	६	,, १२	६	४	१६	२०	,, २५	६	८	०	३३	अप्रेल ५	६	७	३३	२७
जून ८	६	३	१९	४६	,, २०	६	४	३२	४७	जन.८४ १	६	८	९	३५					
,, १६	६	३	११	१२	,, २८	६	४	५०	१७	,, ८	६	८	१७	२२					
,, २४	६	३	८	३६	अक्टू. ६	६	५	८	३८	,, १६	६	८	२४	०	वक्र मार्ग	का.		घं.	मि.
जुलाई २	६	३	८	१	,, १४	६	५	२८	३५	,, २४	६	८	२८	२३	जुलाई ७	मा.	दि.	८	१८
,, १०	६	३	५	३५	,, २२	६	५	४६	५१	फरवरी १	६	८	३०	२७	फर. ८४, ४	व.	दि.	८	१३
,, १८	६	३	७	२१	,, ३०	६	६	६	११	,, ९	६	८	३०	१०					

श्रीकाश्यां राश्युदयमानानि।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी
घट्यः	४	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३
पलानि	५	५१	३५	४४	३७	३२	४२	४४	१५	२४	४६	४१

लङ्कायां राश्युदयमानानि।

राशय	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घट्यः	४	५	५	५	४	४	४	५	५	५	४	४
पलानि	५३	१८	२५	५	४२	३७	५३	१८	२५	५	४२	३

अथ सर्वघातचक्रं रोगार्ते गमने रणे नो मंगलेषु

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी
सू.घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ.घा.	५	९	१	६	१०	२	७	४	८	१२	३	७
बु.घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गु.घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु.घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श.घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	९	१०	१	२
रा.घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के.घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा.घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
७ ,,	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घातः	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा.घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	शु.
न.घा.	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो.घा.	वि.	शू.	प.	ह.	प्री.	शु.	शु.	ब.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल.घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्र.घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
घा.घा.	पि.	वा.	स.	क.	वि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
च.घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
संज्ञा	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
संज्ञा	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
संज्ञा	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.
द.घा.	र.	श्वे.	ह.	पा.	धू.	चि.	कृ.	क.	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
[illegible]	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी
दी. घा.	१	८	७	६	४	३	६	२	१०	११	५	१२

दीर्घविस्तारगुद्धादियुता पिण्डसाधनार्थं सारिणी।

दैर्घ्यम्	विस्तार	आयः	वारः	अंशः	धन	ऋण	ऋक्ष	तिथिः	योग	आयु	दैर्घ्यम्	विस्तार	आयः	वारः	अंशः	धन	ऋण	ऋक्ष	तिथि	योग	आयु
२१	१९	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	२१	५	७	९	१२	७	१५	१५	२१	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	२५	३	६	९	१२	१	२७	१५	२७	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	२९	३	६	३	४	१	१०	७	५	११२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३३	२७	३	३	९	१२	१	२७	३	२७	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३५	३३	३	७	९	१२	१	६	१५	३	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	१०	२५	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७	३३	५	६	९	१२	७	२१	३	२४	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	३३	७	५	९	१२	५	९	६	१८	९६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	३५	५	७	९	१२	७	१२	१५	६	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१९	८०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४१	३९	७	६	९	१२	५	२१	१२	२४	७२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	३५	१	७	३	४	३	२५	१०	२९	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	४१	३	५	३	४	१	१०	४	५	९६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५	३७	३	५	९	१२	३	६	१५	१८	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५	४३	७	६	९	१२	५	६	२५	१८	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४७	४१	७	४	६	८	५	२२	१२	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४९	४५	५	७	९	१२	७	६	१५	१८	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५१	४५	७	५	९	१२	५	२७	१५	२७	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५१	४७	५	५	९	१२	७	६	१	३	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५१	४९	३	७	९	१२	१	१९	१२	५	७२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५५	४७	१	४	३	४	३	२५	१०	२९	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५५	४९	७	७	६	८	५	२४	५	१	८०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५५	५३	३	६	३	४	१	२९	१०	२९	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५७	५१	५	४	९	१२	१	९	५	१८	९६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५७	५५	७	५	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५९	[illegible]	३	७	३	४	१	२९	१२	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५९	५३	७	३	६	८	५	२४	२२	७	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गृहारम्भे वत्सचक्रम् गणनासाभिजित्

स्थान	न.	फलानि
शर्षे	३	अग्निभ.
अग्रपादे	४	शून्यम्
पृष्ठपादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्रा.
दक्षकुक्षौ	४	लाभः
पुच्छे	३	स्वा.ना.
वामकुक्षौ	४	दरिद्रता
मुखे	३	पीडा

कूपचक्रं सूर्यभात्।

दिक्	न.	फलानि
मध्ये	३	शीघ्रस्वादु
पूर्वे	३	लष्टजल
अग्नि	३	स्वादुजल
दक्षिणे	३	जलहानि
नैऋति	३	स्वादुजलं
पश्चिमे	३	क्षारोदकम्
वायव्ये	३.	मिश्र [illegible]
उत्तरे	३	मिष्टजलं
ईशान्यां	३	क्षारजलम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं सूर्यनक्षत्राद्गणना।

स्थान	न.	फलानि
मुखे	१	अग्निदा
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	लक्ष्मीप्रा.
उत्तरे	४	कलहः
गर्भे	४	विनाशः
अधः	३	स्थिरता
कण्ठे	३	स्थिरम्

अथेष्टनक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः। आर्द्रादितिगुरुश्चैव सर्पश्चैव पितामहः। शतभं पूर्वयुग्मं च नवैष्टा गृहतारकाः ॥१॥ तत्रराशि कूटादिकं सर्वं सम्पत्यादि च चिन्तयेत् ॥ मैत्रयोश्चैव गृहतत्स्वामिनोरपि। परस्परं मित्रयोरेव एकनाडी प्रशस्यते इति ॥

अथ गृहे गृहस्योच्छ्रायनिर्णयः

विस्तारषोडशांशः सचतुर्हस्तो भवेद्गृहोच्छ्रायः। द्वादशभागेनोर्ध्वो भूमौ वा स्यात्समस्तानाम् ॥ गृहभित्तिप्रमाणम्। व्यासात षोडषभागः सर्वेषां सप्तानां भवति भित्तिः। पक्वेष्टकाकृतानां दारुकृतानान्तु न विकल्पः ॥ तथा च गर्गः ॥ विस्तारषोडशांशेन गृहभित्ति प्रकल्पयेत्। नव त्रयोदशाधश्च करैर्लाट्या प्रकल्पयेत् ॥

गृहे सूर्यचन्द्रवेधनिर्णयः।

चन्द्रविद्धं गृहं कार्यं सूर्यविद्धं जलाशयम् ॥ ह्रदो वा वापिका वापि त्वर्कविद्धा प्रशस्यते। पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो याम्योत्तरदैर्घ्ये चन्द्रवेधः उक्तः।

अन्यच्च — मन्दिरं देवायतनं तत्र विवेधो न कर्तव्यः।

देवालये गेहविधौ जलाशये राहुमुखज्ञानचक्रम्। यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठकोणे खातशुभं भवति 'भूमिशोधनार्थम्'।

	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्नेयां
देवालयारम्भे	मी· मे· वृ· रवौ	मि· क· सिं. रवौ	कं· तु· वृ· रवौ	ध· म· कुं· रवौ
जलाशयारम्भे	म· कुं· मी· रवौ	मे· वृ· मि· रवौ	क· सिं. कं· रवौ	तु· वृ· ध· रवौ
गृहारम्भे	सिं. कं· तु· रवौ	वृ· ध· म· रवौ	कुं· मी· मे· रवौ	वृ· मि· क· रवौ

क्षेत्रभित्तिशिलान्यासस्तम्भस्यारोपणं तथा ॥
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः ॥

अथ चैत्रादिमासे गृहकरणे मासफलज्ञानम् ॥

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
शोकम्	धनलाभम्	पशुवृद्धिः	हानिः	द्रव्यवृद्धिः	नाशः	युद्धम्	भृत्यक्षयं	धनम्	श्रीप्राप्तिः	अग्निभयम्	लक्ष्मीप्रा.

गृहारम्भमुहूर्त्तचक्रम्।

भानि	उत्तरा ३, मृग, पुष्य, अनु ध.श.चि.ह. स्वा. रो. रे. पञ्चकं हित्वा दारशाखःस्थापने शुभानि
मासाः	वै. श्राव. मार्ग. पौष, फाल्गुन, सूर्ये मेष कर्क मिथुन वृश्चिक मकर कुम्भस्थिते सूर्ये च उत्तमः
वाराः	चन्द्र बुध बृह, शुक्र शनयः।
तिथयः	१।२।३।५।७।१०। ११।१२।१३।१५। शुभाः
लग्नानि	२।३।५।६।६।८।११।१२ स्वामिशुभदृष्टे।
लग्नशुद्धिः	लग्नात् १। ४। ७। १०। ५। ६। शुभाः : पापाः ३।६।११। स्थानेषु ८।१२ शुभपापरहितेषु शुक्लपक्षे
त्याज्य	गुरुशुक्रयोरस्तबाल्यवार्द्धक्यनीचराश्यंशादिस्थिति रहितसमये।
	भद्राकुयोगाष्टमचन्द्रचक्रशुद्धिसहितेवत्सचक्रशुद्धौच।

एतेष्वेव नक्षत्रवारतिथिसमयेषु श्रवणर्क्षयुक्तेषु मठ देवालयाद्यारम्भोऽपि शुभः। भौमवारसूर्यवाररिक्तातिथि अमा चरलग्नेषु कदापि न गृहारम्भः कर्त्तव्यः ॥

अथ गृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशःप्रदिष्टं वर्णानुपूर्वेण तथाङ्गुलानाम् ॥ अथैकत्रिंशद्गनविश्वनन्दाविस्तारके व्यासमिदं तदर्धम् ॥ तदर्धमानं त्वथपिण्डकस्यात् ऊर्ध्वाधिकान्यूनतरा न कार्या। नामानि च नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पद्म कुम्भ नामानिपद्म महापद्म शंख मकर समुद्र इति प्रधानशिलाधः पञ्चाधारशिला भवन्ति ॥

सूर्यनक्षत्रात्तडागचक्र. दिनभावधिगण.।

दिशा		फलानि
पूर्वं	२	वारिशोषम्
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षि.	२	जलनाशः
नैऋ.	२	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	स्वादुजलम्
वायव्ये	२	जलशोषम्
उत्तरे	३	स्थिरजलम्
ईशा.	२	नष्टजलम्
मध्ये	५	पूर्णजलम्
वायु	३	अमृतजलम्

रोहिणीभाद्वापीचक्रम्

पृष्ठे	४	शुभम्
नाभौ	४	शुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनप्राप्तिः
पादयोः	८	अनर्थः

ग्राम वासचक्रंगृहभात्वासकर्तृभंयावत

मस्तके	७	धन. मा.ला.
पृष्ठे	७	हानिःनैश्यः
हृदये	७	सुखं लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

रविभात्चुल्हीचक्रम्

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
वामे	८	सुखम्
गर्भे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्तिः
चरणे	२	कलहप्रीतिः

वारवेलाज्ञानाय चक्रम्

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
४।५	७।२	६।२	५।३	७।८	३।४	६.८	दिने
६।४	७।४	२	६।४	५।८	३	।६	रात्रौ

दिने — रवौ वर्ज्यं चतुःपञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठद्वयंचैव बुधे पञ्चतृतीयकम् ॥ गुरौसप्ताष्टकंचैव शुक्रे वेदतृतीयकम्। शनावाद्यन्तषष्ठञ्च वारवेलेति निन्दिता ॥ रात्रौ—रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीये शनौ रसाद्यं निशिवारवेला ॥

अथ भद्रायामुखपुच्छादिपरिज्ञानम्।

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	आसां तिथिनाम्
पू.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	दिग्विदिक्षु मुखं
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेषु आदौ
५	५	५	५	५	५	५	५	घट्यःताराःविष्टेरास्य
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेषु अन्ते
३	३	३	३	३	३	३	३	घटित्रयंपुच्छंशुभकरं

अथ दिनमानस्य १६ कलांशेनदुष्टमुहूर्त्तादिज्ञानम्

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
१४	१४	३/६	८	२/१६	६/४	१/२	दुष्टक्षणः
१४	१२	१०	८	६	४	२	दि. कुलिकः
१३	११	६	७	५		१	रा. कुलिकः
६	४	२	१४	३	११	८	कंटकक्षणः
८	६	४	२	१४	१२	१०	कालवेला
७/८	५/७	४	६/१०	१४/१६	४/५	११/१२	अर्धयाम
१०	८	६	४	२	१४	१२	यमघंटः

अथ दीर्घकलमाहूर्तनिषिद्धः। निषिद्धः मुहूर्ता कुलिके सर्वनाशः। यमघण्टके मृत्युः। स्यादर्धयामके च दोषदाः।

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त्त चक्रम्।

मासाः	वै. ज्ये. माघ फा. जीर्णगृहेश्राव. मार्ग. कार्तिके मासेऽपि नवेऽप्यग्न्यादिभयसत्वे ॥
भानि	उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. चि. रे. कुम्भचक्रशुद्धौ
वाराः	चं.बु.बृ.शु.श. | तिथयः | १ | २ | ३ | ५
तिथयः	६ | ७ | ८ | १० | ११ | १२ | १३
लग्नानि	२ | ५ | ८ | ११ | शुभाः | ३,६,९ | १२ | मध्यमं
लग्नशुद्धि	जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचयराश्यंशयोः स्थिरराशौ लग्नात् १।१।३।५।७।६।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः। पापाः शुभाः। शुभपापरहिते ४।८ स्थाने वामार्कं स्थिताविति।

रोहिणीनक्षत्रात्कूपचक्रम्

दिक्	न.	फलानि
मध्ये	३	शीघ्रस्वादुः
पूर्वे	३	निजलम्
अग्नि	३	अशुजलम्
दक्षि.	३	निर्जलम्
नैऋ.	३	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	निर्मलजलम्
वायव्ये	३	जलहानिः
उत्तरे	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षीरजलम्

जलाशयारम्भमुहूर्त्तः।

भानि। ह. अनु. रे. उत्तरा ३ ध. स. म. रो. पुष्य, मृ. पू.षा. गुरुसितवारस्तादि दोषरहिते चं.बु.बृ.शु.वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवादुर्बलैश्च क्रूरैःशुक्रेवापिमेषूरणस्थे। आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणामारम्भाःस्युःसिद्धये निर्विकल्पम् ॥

आग्नेय्यां खननं कुर्यात्सिंहाद्राशित्रये रवौ।
कुम्भत्रये तु वायव्यां नैऋत्यांवृषभत्रये।
ईशान्यां खननं वास्तौ वृश्चिकादि त्रये शुभाः ॥

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्त्तविचारः।

	उत्तरायणेनमीनसंक्रांतौवृ.शु. चं. दृश्येबलयुक्ते
भानि	मृग. रे. चित्रा. अनु. हस्त अश्वि. पुष्य स्वा पुन. धनि. अभि. शत. उत्तरा ३ रोहिणी।
लग्नशुद्धि	लग्नात् केन्द्रकोणे द्वयाय स्थानेषु शुभाः ॥ ३।६।११ पापाः शुभाः। पञ्चोष्टेखेटोन लग्ने न कार्यम्। कर्तुर्जन्मलग्नयोरष्टमराशि हीनलग्नेसत्। पूर्वोक्तनक्षत्रेऽग्निशुद्धिवास्तवचं नभूतवल्लिगृहप्रवेशे च कुर्यादिति।

द्वारचक्रमर्कभात्

न.	फलानि
४	राज्यलाभः
२	हानिः
४	धनप्राप्तिः
२	भयम्
४	मृत्युभयम्
२	मृत्युः
४	द्रव्यप्राप्तिः
२	शोकभयम्
३	धनलाभः

द्वारशाखाचक्रम्! सूर्यभात्।

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यं
देहल्यां	३	गृहेशनाः.
मध्ये	४	सौख्यं

अथग्रहबलानयनम्।

नीचग्रहान्तरं कार्यं षड्भादल्पं यथा भवेत्। सर्वदा नवनिघ्नंशाः स्पष्टपुच्छबलंभवेत् ॥

तात्कालिककरणवशेन संक्रांतीनां वाहनावस्त्रायुधादिज्ञानाय चक्रम्।

करण	बव.	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निवि.	उपवि.	ऊर्ध्वं	सुप्त	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्वं	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्वं
तत्फलं	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फलं	भीतिः	भयम्	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्यं	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्यं	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	घनाभ
उपव.	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	[illegible]
आयुधं	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भैक्ष	पक्कान	दुग्ध	दधि	चित्रांन	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्ति.	गो.रो.	महावर	ओतु	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कर्पूर
जातयः	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	[illegible]
पुष्प	पुन्नाग	जाति	बकुल	केतकी	बिल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	बेला	पाटल	जपा
मो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खर्पर	पत्र	वस्त्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कंचुकी	विचित्र	पत्ता	हरित	भूजपत्र	सित	पांडु	नील	कृष्ण	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्नान	गङ्गा	यमुना	सरस्व.	मन्दा	नर्मदा	कृष्णा	गोदा.	भागी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वय	बाला	कुमारी	गताल.	युवा.	प्रौढा	प्रगल्भ	वृद्धा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथसंक्रान्तिवाहनादीनां दुष्टफलं तदाह — वाहनाद्यायुधाहारादीनां [illegible] विनाशः स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता ॥ [illegible]

स्थूल चन्द्रशृङ्गोन्नतिज्ञानम्

दैवज्ञरंजनेमीनमेषगतस्तन्वा भवेद्याम्योन्नतः सदा। [illegible] वृषकुम्भे शेषनेपृत्तरोन्नतः। याम्योन्नते च दुर्भिक्षं [illegible] विधौ ॥ सुभिक्षं सौम्यदिग्भागे चोन्नते [illegible] ॥ मूलाधारे विधौ भाति प्रोदिते संहतौ रजः।

अथ संक्रान्तेर्मुहूर्तज्ञानम्।

मु०	संज्ञा	नक्षत्राणि
४५	[illegible]	उ. रो. वि. उ.
१५	[illegible]	[illegible] भ. स्वा. आ.
३०	[illegible]	मृ. रे. चि. अनु.
[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ तिथिवारयोर्योगान्मृत्युयोगज्ञानाचक्र।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५	तिथय

अथहर्षबलानयनम्!

उपरोक्त भावेषुस्थितःप्रथमः ॥ य ग्रहः स्वोच्चस्थः स्वराशौ च सोऽपि हर्षबलाधिकारीद्वितीयः। दिवा प्रवेशेवर्षे पुंसां रात्रौ स्त्रीणां लग्नात् त्रिस्थानेषु स्त्रीणां पुंग्रहाणाञ्च हर्षबलं तृतीयम्। [illegible] बलं स्यात् [illegible] ॥ नाजिकसूर्यभौमगुरुपुरुषग्रहाः शेषाः स्त्रीग्रहा ज्ञेयाः।

अथकेतकीयमध्यमानेन अयनांशज्ञानायचक्रम्। १गुणोत्तरः। १० गुणोत्तरः ॥

१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५२	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२१
०	[illegible]	[illegible]	१००	८३	४४

[illegible]

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टँ. टा. घं. मि.	न.	घ.	प.	स्टँ. टा. घं. मि.	यो.	घ.	प.	स्टँ. टा. स. घं. मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगः	रा. मि.	अ. ता.	ब. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टँ. टा. घं. मि.	चं. अ. स्टँ. टा.	सू. उ. स्टँ. टा.	सू. अ. स्टँ. टा.	र. क्रा. अ. क. +	स्प. मध्याह्न का. स्टँ. टा. घ. मि. से.	साम्पा. का घं. मि. से.	औदयिक स्प. सू. रा. अं. कं. वि.
२१ २७	१ गु	१८ ५	दि. १२ ५३	अ.	२३	२०	दि. २ ५९	वि	२२	१५	दि. २ २३	व	१८	५	बा.	४७	१५	मानस	२४	१४	३१	२९	१७	मे.				७ २५	५ ३९	६ १८	९ ७	११ ५८ ३०	१३ २५ ३१	११ २९ ५२ २२
२१ ३१	२ शु	१६ ८	,, ११ ५५	भ.	२२	३५	,, २ ४०	प्री.	१७	३५	,, १२ ४०	कौ.	१६	८	तै.	४४	२८	मुद्गर	२५	१५	१	१	१८	वृ.	३७	१७	रा. ८ ३३	८ ३५	५ ३८	६ १८	९ २९	११ ५८ १५	१३ २९ २७	० ० ५१ ७
२१ ३४	३ श.	१२ ३३	,, १० ३८	कृ.	२१	८	,, २ ४	आ.	१२	१५	,, १० ३१	ग.	१२	३३	व.	४०	४४	केतु	२६	१६	२	२	१६	वृ.				९ २७	५ ३७	६ १९	९ ५०	११ ५८ ०	१३ ३३ २३	० १ ४९ ५०
२१ ३८	४ र.	८ ४८	,, ९ ७	रो.	१६	५	,, १ १४	सौ.	६	२८	,, ८ ११	भ.	८	४८	बव	३६	३१	धाता	२७	१७	३	३	२०	मि.	४७	५३	रा. १२ १५	३१	५ ३६	६ १९	१० १२	११ ५७ ४५	१३ ३७ २०	० २ ४८ ३१
२१ ४१	५ चं.	४/५४ ३५/१८	,,/रा. ७/४ २४/५२	मृ.	१६	३५	,, १२ १३	शो.	४/५९	१८/२६	प्रा./रा. ५/२ ४२/४	वा.	४	३३	कौ.	३२/४१	१४/४१	आनन्द	२८	१८	४	४	२१	मि.				११ ३३	५ ३५	६ २०	१० ३३	११ ५७ ३१	१३ ४१ १७	० ३ ४७ १०
२१ ४४	७ म.	५४ ५०	रा. ३ ३०	आ.	१३	४३	,, ११ ३	सु.	४७	०	,, १२ २२	ग.	२७	२३	व.	५४	५०	चर	२९	१९	५	५	२२	क.	५६	२१	रा. ४ ६	१२ ३३	५ ३४	६ २०	१० ५४	११ ५७ १८	१३ ४५ १३	० ४ ४५ ४७
२१ ४८	८ बु.	४९ ३३	,, १ २३	पुन.	१०	३०	,, ९ ४६	धृ.	३९	५८	,, ९ ३३	भ.	२२	१४	ब.	४९	३३	गद	३०	२०	६	६	२३	क.				१ २८	५ ३४	६ २१	११ १५	११ ५७ ५	१३ ४९ १०	० ५ ४४ २४
२१ ५१	९ गु.	४४ ८	,, ११ १२	पु.	७	३	,, ८ २२	शू.	३२	४८	,, ६ ४०	बा.	१६	५१	कौ.	४४	८	शुभ	१	२१	७	७	२४	क				२ १८	५ ३३	६ २१	११ ३५	११ ५६ ५२	१३ ५३ ६	० ६ ४२ ५६
२१ ५५	१० शु.	३८ ३५	,, ८ ५८	अश्ले	४/५६	२/१८	रा./,, ६/५ ४५/२६	ग.	२५	३३	दि. ३ ४५	तै.	११	२३	ग.	३८	३५	मृत्यु	२	२२	८	८	२५	सि.	३	२८	दि. ६ ५५	३ २	५ ३२	६ २१	११ ५६	११ ५६ ३९	१३ ५७ ३	० ७ ४१ २६
२१ ५८	११ श.	३३ ५	सा. ६ ४५	पूफा	५६	१५	रा. ४ १	वृ.	१८	१८	,, १२ ५०	व.	५	४१	भ.	३३	५	लुम्ब	३	२३	९	९	२६	सि.				३ ४३	५ ३१	६ २२	१२ १६	११ ५६ २७	१४ १ ०	० ८ ३९ ५४
२२ १	१२ र.	२७ ५३	दि. ४ ३९	उफा	५३	८	,, २ ४५	ध्रु.	११	१३	,, १ ५९	बव	०	२६	वा.	२७/५५	५३/२६	मित्र	४	२४	१०	१०	२७	कं.	१०	२५	दि. ९ ४०	४ २१	५ ३०	६ २२	१२ ३६	११ ५६ १६	१४ ४ ५६	० ९ ३८ १९
२२ ५	१३ चं.	२२ १०	,, २ ४५	ह.	५०	३८	,, १ ४४	व्या	४/४९	१०/५०	रा. ७/४ १७/४१	तै.	२२	१०	ग.	५१	६	वज्र	५	२५	११	११	२८	कं.				४ ५७	५ २९	६ २३	१२ ५६	११ ५६ ५	१४ ८ ५३	० १० ३६ ४३
२२ ८	१४ मं.	१९ १५	,, १ १०	चि.	४९	३	,, १ ५	व.	५२	५८	,, २ ३९	व.	१९	१५	भ.	४७	४०	ध्वांक्ष	६	२६	१२	१२	२९	तु.	१९	४३	दि. १ २१	अ५ ३४	५ २८	६ २३	१३ १५	११ ५५ ५४	१४ १२ ४९	० ११ ३५ ५
२२ ११	१५ बु.	१६ २३	,, १२ १	स्वा.	४८	३५	,, १२ ५४	सि.	४८	३३	,, १२ ५३	बव	१६	२३	बा.	४५	२६	धूम्र	७	२७	१३	१३	३०	तु.				उद ३७	५ २८	६ २४	१३ ३५	११ ५५ ४४	१४ १६ ४६	० १२ ३३ २६

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ चैत्र शुक्ल पक्षः

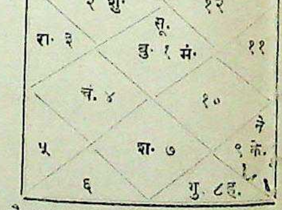
१४ अप्रैल से २७ अप्रैल १९८३ ई० तक उत्तरायणम् । उत्तरगोलः । वसन्तर्तुः । P

चन्द्रदर्शनम् । मु. १५ । फ. महर्घता । अश्विन्योर्मेषे चार्कः ७।४५ (दि. ८।४५) । मु. ३० फ. समता सं. म. पु. का० A
विषुवोत्तरदिनम् । रजब ७ । हि. सन् १४०३ । A | ७।४५ (दि. ८।४५) उ० २२।४५ (दि. ...) या. ।
भ. ४०।४४ (रा. ११।५५) उ. । रोहिण्यां शुक्रः ३२।४५ । * | वत्सरारंभः । वासन्तनवरात्रारंभः । कलश-
भ. ८।४८ (दि ९।७) या. । व. ग. अनुराधासु गुरुः २०।५। | स्थापनम् । ध्वजारोपणम् । कल्पादिः । सर्वार्थ सिद्धि-
सर्वार्थसिद्धियोगः १६।३५ या. । अमृतसिद्धियोगः ४।३३ या. । कल्पादिः ५ । | योगः २३।२० या । भरणीषु भौमः ५।२५ ।
भ. ५४।५५ (रा. ३।३०) उ० । त्रिपुष्कर योगः १३।४३ उ. ५४।५० या । * गौरी ३ । मन्वादिः २ । मत्स्यजयन्ती ३ । गणगौर
भ. २२।१४ (दि. २।२८) या० । सायनवृषेऽर्कः ३३।२५ । S ४ । अमृत सिद्धियोगः २२ ३० ...
राष्ट्रिय वैशाखः । कृत्तिकासु बुधः ४।८ । श्री रामनवमी व्रतं सर्वेषाम् F S अन्नपूर्णा ८ । बुधाष्टमी पर्व ८ ।
मृत्यु योगः । F सर्वार्थ सिद्धियोगः ७।३ या. । यायीजयदयोगः ७।३ उ. ४४।१ या. ।
भ. ५।४९ (दि. ७।५१) उ. ३३।५ (सा. ६।४५) या. । कामदा ११ व्रतं सर्वेषाम् ॥ व्य. प्र. ८।२३ । व्य. नि. २९।२५ ।
सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम् । प्रदोष १३ व्रतम् । अमृत सिद्धियोगः ४।३८ उ. सूर्योदयात् पूर्व ।
वृषे बुधः १०।१३ । यायीजयदयोगः २३।१० या. । श्री महावीरस्वामी का जन्म दिवस । P राष्ट्रिय वैशाख ।
स्थायीजयदयोगः १९।१५ या. । व्रताय १५ । भ. १९।१५ (दि. १।१०) उ. ४७।४० (रा. १२।१४) या. ।
भरणीष्वर्कः ४७।५३ (रा. १२।३७) । मृगशीर्षे गुरुः २८।४५ । वैशाख स्नानारम्भः । मन्वादि १५ । हनुमज्जयन्ती Z
Z १५ । (दाक्षिणात्योप्रसिद्धा) अत्र मतभेदात् दमनक ...

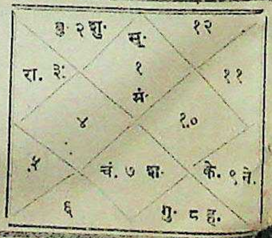
प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून् रा. अं. क. वि.
१ गु.	० ८ २ १५	० १२ ३६ २४	० १७ ३० ४०	७ १६ ५१ २७	१ ६ ५९ ५३	६ ८ ५ ४९	२ ४ ४७ १५	७ १५ ५ ५८	८ ५ ३४ १६
२ शु.	० २१ २८ ३४	० १३ २० ३४	० १९ ३ ०	७ १६ ४८ १४	१ ८ १० ३४	६ ८ १ १८	२ ४ ४४ ३	७ १५ ४ २८	८ ५ ३३ ५०
३ श.	१ ५ ५ ३१	० १४ ४ ४०	० २० ३० ४१	७ १६ ४४ ५०	१ ९ २१ ९	६ ७ ५६ ४६	२ ४ ४० ५४	७ १५ २ ५५	८ ५ ३३ २२
४ र.	१ १८ ५१ ३६	० १४ ४८ ४४	० २१ ५३ ५४	७ १६ ४१ १६	१ १० ३१ ३७	६ ७ ५२ १३	२ ४ ३७ ४३	७ १५ १ १९	८ ५ ३२ ५२
५ चं.	२ २ ४५ ३	० १५ ३२ ४४	० २३ १२ ५	७ १६ ३७ ३२	१ ११ ४२ ०	६ ७ ४७ ४०	२ ४ ३४ ३२	७ १४ ५९ ४१	८ ५ ३२ २१
७ मं.	२ १६ ४४ ३२	० १६ १६ ४२	० २४ २५ १२	७ १६ ३३ ३८	१ १२ ५२ १६	६ ७ ४३ ५	२ ४ ३१ २१	७ १४ ५८ २	८ ५ ३१ ४७
८ बु.	३ ० ४९ ५	० १७ ० ३६	० २५ ३३ ८	७ १६ २९ ३४	१ १४ २ २६	६ ७ ३८ ३१	२ ४ १८ ११	७ १४ ५६ १९	८ ५ ३१ १३
९ गु.	३ १४ ५७ ४७	० १७ ४४ २७	० २६ ३५ ४५	७ १६ २५ २१	१ १५ १२ २९	६ ७ ३३ ५६	२ ४ २५ ०	७ १४ ५४ ३५	८ ५ ३० ३५
१० शु.	३ २९ ९ १९	० १८ २८ १५	० २७ ३२ ५६	७ १६ २० ५८	१ १६ २२ २५	६ ७ २९ २१	२ ४ २१ ४९	७ १४ ५२ ४८	८ ५ २९ ५७
११ श.	४ १३ २१ ३७	० १९ १२ ०	० २८ २४ ३८	७ १६ १६ २५	१ १७ ३२ १४	६ ७ २४ ४६	२ ४ १८ ३८	७ १४ ५० ५८	८ ५ २९ १५
१२ र.	४ २७ ३१ ४२	० १९ ५५ ४२	० २९ १० ४५	७ १६ ११ ४३	१ १८ ४१ ५६	६ ७ २० ११	२ ४ १५ २८	७ १४ ४९ ८	८ ५ २८ ३३
१३ चं.	५ ११ ३५ ४७	० २० २१ २०	० २९ ५१ १३	७ १६ ६ ५२	१ १९ ५१ ३१	६ ७ १५ ३७	२ ४ १२ १७	७ १४ ४७ १५	८ ५ २७ ४९
१४ मं.	५ २५ २९ ४०	० २१ २२ ५५	१ ० २६ ०	७ १६ १ ५२	१ २१ ० ५९	६ ७ ११ ३	२ ४ ९ ६	७ १४ ४५ २०	८ ५ २७ ३
१५ बु.	६ ९ ९ २२	० २२ ६ २८	१ ० ४५ ५	७ १५ ५६ ४८	१ २२ १० १९	६ ७ ६ ३०	२ ४ ५ ५६	७ १४ ४३ २४	८ ५ २६ १६

चैत्र शुक्ल ८ बुधे अयनांशाः २३।३७।७



चैत्र शुक्ल १५ बुधे अयनांशाः २३।३७।७



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम् ।

	१ गु.	रा.	२ शु.	३ श.	४ र.	५ चं.	७ मं.	८ बु.	९ गु.	१० शु.	११ श.	१२ र.	१३ चं.	१४ मं.	१५ बु.
मी.	५ ४१	मे.	७ १५	७ ११	७ ७	७ ३	६ ५९	६ ५६	६ ५२	६ ४८	६ ४४	६ ४०	६ ३६	६ ३२	६ २८
मे.	७ १९	वृ.	९ ११	९ ७	९ ३	८ ५९	८ ५५	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३२	८ २८	८ २४
वृ.	९ १५	मि.	११ २५	११ २१	११ १७	११ १३	११ ९	११ ६	११ २	१० ५८	१० ५४	१० ५०	१० ४६	१० ४२	१० ३८
मि.	११ २९	क.	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३१	१ २७	१ २४	१ २०	१ १६	१ १२	१ ८	१ ४	१ ०	१२ ५६
क.	१ ४७	सि.	३ ५८	३ ५४	३ ५०	३ ४६	३ ४२	३ ३९	३ ३५	३ ३१	३ २७	३ २३	३ १९	३ १५	३ ११
सि.	४ २	कं.	६ ११	६ ७	६ ३	५ ५९	५ ५५	५ ५२	५ ४८	५ ४४	५ ४०	५ ३६	५ ३२	५ २८	५ २४
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कं.	६ १५	तु.	८ २८	८ २४	८ २०	८ १६	८ १२	८ ९	८ ५	८ १	७ ५७	७ ५३	७ ४९	७ ४५	७ ४१
तु.	८ ३२	वृ.	१० ४६	१० ४२	१० ३८	१० ३४	१० ३०	१० २७	१० २३	१० १९	१० १५	१० ११	१० ७	१० ३	९ ५९
वृ.	१० ५०	ध.	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २१	१२ १७	१२ १३	१२ ९	१२ ५
ध.	१२ ५६	म.	२ ३८	२ ३४	२ ३०	२ २६	२ २२	२ १९	२ १५	२ ११	२ ७	२ ३	१ ५९	१ ५५	१ ५१
म.	२ ४२	कुं.	४ ६	४ ५	४ १	३ ५७	३ ५३	३ ५०	३ ४६	३ ४२	३ ३८	३ ३४	३ ३०	३ २६	३ २२
कुं.	४ १३	मी.	५ ३७	५ ३३	५ २९	५ २५	५ २१	५ १८	५ १४	५ १०	५ ६	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ५०

चैत्रशुक्लप्रतिपदि वत्सरारम्भः । औदयिकी प्रतिपद्ग्राह्या । दिनद्वयउदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा । इयमेव प्रति- पत्कल्पादिरपि अस्यां आद्यारथवृत्तिरपि । चैत्रशुक्लनवमी रामनवमी । चैत्रशुक्लनवम्यां पुनर्वसुयुतायां मध्याह्ने कर्क- लग्ने सूर्ये मेषस्थे ग्रहपञ्चके उच्चसंस्थिते श्रीरामजन्मश्रवणात् । अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यामुपोषणं कार्यम् । पूर्वेद्युरेव मध्याह्ने सत्त्वे सैव ग्राह्या । दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तावव्याप्तौ वा परा अष्टमी विद्धा निषेधात् । इदं व्रतं नित्यं काम्यं च । अस्यामेव नवम्यां दमनकेन रघुनाथपूजा कार्या । ... वैशाखस्नान-निर्णयः । चैत्र्या पूर्णिमादारभ्य []

[] गौरीतृतीया ... [illegible]

ता. २४।४।८३ श्री चं. योग चं. से श्री. ४ अं ८ क उ. स्टँ. टा. दि. घं. ११ मि. ३३ पर । ता. १७।४।८३ बु. चं. योग चं. से बु. ३ अं. ९ क. उ. स्टँ. टा. रा. घं. ८ मि. ५१ पर । ता. २१।४।८३ शु. चं. योग चं. से शु ३ अं. ३८ क उ. स्टँ. टा. दि. घं. १२ मि. १७ पर । ता. २५।४।८३ गु. चं. योग चं. से गु. १ अं. ३४ क. द. स्टँ. टा. रा. घं. १२ मि. २३ पर ।

श्री संवत् २०४० शके १९०५ वैशाख कृष्णपक्षः

२८ अप्रैल से १२ मई सन् १९८३ ई० तक उत्तरायणम् । उत्तरगोलः । वसन्तर्तुः ।A

ति.मा. घ.प.	ति	वा.	घ.प.	स्टॅ.टा. घं.मि.	न. घ.प.	स्टॅ.टा. घं.मि.	यो. घ.प.	स्टॅ.टा. घं.मि.	क. घ.प.	क. घ.प.	योगाः	रा.मि.	अं.ता.	चं.सौ.	का.ना.	फ.ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅ.टा. घं.मि.	न.उ. स्टॅ.टा.	सू.उ. स्टॅ.टा.	सू.अ. घं.मि.	र.काउ. अं.क.	स्पष्टमध्याह्नका. स्टॅ.टा.	साम्पा.का. घं.मि.से.	औदयिकस्य सू. रा.अं.क.वि.
३२ १४	१	गु.	१४ ५०	द्वि. ११ २३	वि. ४६ ३८	रा. १ १८	व्य. ४१ २०	रा. ११ ३५	कौ. १४ ५०	तै. ४४ ४०	प्रवर्ध	८	२८	१४	१४	१	वृ. ३४ १४	रा. ७ ६	७ ३६	५ २७	६ २४	१३ ५४	११ ५५ ३४	१४ २० ४२	० १३ ३१ ४४
३२ १८	२	शु.	१४ ५३	" ११ २३	अनु ५२ १५	" २ २०	व. ४३ २३	,, १० ४७	ग. १४ ५३	व. ४५ ३१	रक्ष	९	२९	१५	१५	२	वृ.		८ ३६	५ २६	६ २५	१४ १३	११ ५५ २५	१४ २४ ३९	० १४ ३० ०
३२ २१	३	श.	१६ ३३	" १२ २	ज्ये. ५६ ३०	,, ४ १	प. ४२ ४५	" १० ३१	भ. १६ ३३	ब. ४८ १	मुसल	१०	३०	१६	१६	३	ध. ५६ ३०	रा. ४ १	९ ३	५ २५	६ २५	१४ ३२	११ ५५ १७	१४ २८ ३५	० १५ २८ १५
३२ २४	४	र.	१६ ५०	" १२	मू. ६० ०	× × ×	शि. ४३ २०	" १० ४४	वा. १० ५०	कौ. ५२ १	सिद्धि	११	१	१७	१७	४	ध.		१० २१	५ २४	६ २६	१४ ५०	११ ५५ ९	१४ ३२ ३२	० १६ २६ २८
३२ २७	५	चं.	१४ ३०	" ३ १२	मू. २ १३	द्वि. ६ १०	सि. ४४ ५३	" ११ २०	तै. २४ ३०	ग. ५७ १७	लुम्ब	१२	२	१८	१८	५	ध.		११ १	५ २४	६ २६	१५ ८	११ ५५ १	१४ ३४ २९	० १७ २४ ४१
३२ ३०	६	मं.	३० १५	" ५ २९	पूषा. ९ ३	,, ६ ०	सा. ४७ ८	" १२ १३	व. ३० १५	भ. ६० ०	मित्र	१३	३	१९	१९	६	म. २५ ५१	द्वि. ३ ४३	१२ ४	५ २३	६ २७	१५ २६	११ ५४ ५४	१४ ४० २५	० १८ २२ ५०
३२ ३३	७	बु.	२६ ३३	रा. ७ ५९	उषा. १६ ३३	" ११ ५०	शु. ४९ ३५	" १ १२	भ. ३ २३	ब. ३६ ३३	वज्र	१४	४	२०	२०	७	म.		१२ ४८	५ २२	६ २७	१५ ४४	११ ५४ ४८	१४ ४४ २२	० १९ २० ५९
३२ ३६	८	गु.	४० ३८	" १० २५	श्र. २४ ५	" ३ ०	शु. ५१ ५३	" २ ७	वा. ९ ५१	कौ. ४२ ३८	केतु	१५	५	२१	२१	८	कुं. ५७ ४३	रा. ४ २७	१ २८	५ २२	६ २८	१६ २	११ ५४ ४२	१४ ४८ १८	० २० १९ ८
३२ ३९	९	शु.	४८ ३	" १२ ३४	ध. ३१ ८	" ५ ४८	ब्र. ५३ ३५	" २ ४७	तै. १५ २८	ग. ४८ ३	धाता	१६	६	२२	२२	९	कुं.		२ १४	५ २१	६ २८	१६ १९	११ ५४ ३७	१४ ५२ १५	० २१ १७ १३
३२ ४२	१०	श.	५२ १३	" २ १३	श. ३७ ५	रा. ८ १०	ऐं. ५४ २०	" ३ ४	व. २० १९	भ. ५२ १३	आनन्द	१७	७	२३	२३	१०	कुं.		२ ३१	५ २०	६ २९	१६ ३६	११ ५४ ३२	१४ ५६ ११	० २२ १५ १७
३२ ४५	११	र.	५४ ४८	" ३ १५	पूभा. ४१ ३५	" ० ५८	वै. ५३ ३५	,, २ ५३	बव २३ १९	बा. ५४ ४८	चर	१८	८	२४	२४	११	मी. २५ ३४	द्वि. ३ ३४	३ १२	५ २०	६ २९	१६ ५२	११ ५४ २८	१५ ० ८	० २३ १३ २१
३२ ४८	१२	चं.	५५ ४५	" ३ ३७	उभा. ४४ ३०	,, ११ ७	वि. ५२ ५	" २ ९	कौ. २५ ३०	तै. ५५ ४५	गद	१९	९	२५	२५	१२	मी.		३ ५	५ १९	६ ३०	१७ ९	११ ५४ २५	१५ ४ ४	० २४ ११ २१
३२ ५१	१३	मं.	५५ ०	" ३ १८	रे. ४५ ४५	" ११ ३६	प्री. ४९ ०	" १२ ५४	ग. २५ ३२	व. ५५ ०	शुभ	२०	१०	२६	२६	१३	मे. ४५ ४५	रा. ११ ३६	४ २०	५ १८	६ ३०	१७ २५	११ ५४ २२	१५ ८ १	० २५ ९ २१
३२ ५३	१४	बु.	५३ ४०	" २ २२	अ. ४५ २५	" ११ २८	आ. ४४ ४०	,, ११ १०	भ. २४ ३४	श. ५३ ४०	मृत्यु	२१	११	२७	२७	१४	मे.		३ १७	५ १८	६ ३१	१७ ४१	११ ५४ १९	१५ ११ ५८	० २६ ७ २१
३२ ५६	३०	गु.	४९ ५	" १२ ५५	भ. ४३ ५०	,, १० ४९	सौ. ३९ १५	" ८ ३६	च. २१ ३६	ना. ४९ ५	पद्म	२२	१२	२८	२८	१५	वृ. ५८ १५	रा. ४ ३५	अ. १२	५ १७	६ ३१	१७ ५६	११ ५४ १८	१५ १५ ५४	० २७ ५ १९

सर्वार्थसिद्धियोगः ४९।३८ उ. प्राक् सूर्योदयं यावत् । यायीजयदयोगः ४९।३८ उ. । Aराद्धिय वैशाखः ।
भ. ४५।३१ (रा. ११।३८) उ. ।
भ. १६।३३ (दि. १२।२) या. । संकष्ट ४ । (चं. उ. रा. घं. ९ मि. ३०) ।
मई ५ । सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम् । वक्री बुधः ४२।२० ।
व.ग.चित्रायां शनिः ५३।४३ । अगस्त्यास्तः ४४।४५ ।
भ. ३०।१५ (दि. ५।२९) उ. । मिथुने शुक्रः ४९।४८ । कृत्तिकासु भौमः १८।५० ।
भ. ३।२३ (दि. ६।४३) या. ।
बुधास्तः पश्चिमायाम् ५१।५ । यायी जयदयोगः ४२।३८ उ. । काल ८ । शीतला ८ ।
वै. प्र. १२।५८, वै. नि. २८।८ ।
भ. २०।१९ (दि. ११२८) उ. ५२।१३ (रा. २।१३) या. । वृषे भौमः २९।१३ ।
व.ग.मेषे बुधः ४१।४५ । वरूथिनी ११ व्रतं सर्वेषाम् । सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।३५ उ. प्राक् सूर्योदयं यावत् ।
आर्द्रायां शुक्रः ४३।१३ । [Bसूर्योदयं यावत् ! अमृतसिद्धियोगः ४५।४५ उ. प्राक् सूर्योदयं यावत् ।
भ. ५५।० (रा. ३।१८) उ. । भौमप्रदोष १३ व्रतम् । स्थायी जयदयोगः ५५।० उ. । सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।४५ उ. प्राक् B
भ. २४।३४ (दि. २।५६) या. । कृत्तिकास्वर्कः ३३।४५ । मास शिवरात्रिः १४ व्रतम् ।
दर्शः ।

प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ।

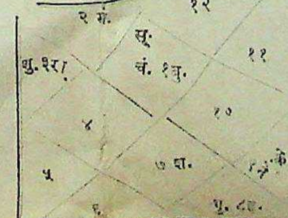
ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हृ. रा. अं. क. वि.	ने. रा. अं. क. वि.
१ गु.	६ २२ ३१ ४६	० २२ ४९ ५७	१ १ १८ २७	७ १५ ५१ २६	१ २३ २१ ३१	६ ७ १ ५७	२ ४ २ ४५	७ १४ ४१ ५५	८ ५ २५ २६
२ शु.	७ ५ ३१ ६	० २३ ३३ २३	१ १ ३६ ७	७ १५ ४६ १	१ २४ २८ ३६	६ ६ ५७ २६	२ ३ ५९ ३४	७ १४ ३९ २८	८ ५ २४ २६
३ श.	७ १८ १९ ८	० २४ १६ ४६	१ १ ४८ ८	७ १५ ४० २७	१ २५ ३५ ३३	६ ६ ५२ ५५	२ ३ ५६ २३	७ १४ ३७ २४	८ ५ २४ २६
४ र.	८ ० ४५ ५२	० २५ ० ६	१ १ ५४ ३६	७ १५ ३४ ४६	१ २६ ४६ २३	६ ६ ४८ २६	२ ३ ५३ २३	७ १४ ३७ २१	८ ५ २३ ४७
५ चं.	८ १२ ३३ ५९	० २५ ४३ २४	१ १ ५५ ३८	७ १५ २८ ५६	१ २७ ५५ ५	६ ६ ४३ ५८	२ ३ ५३ १४	७ १४ ३५ १८	८ ५ २२ ५
६ मं.	८ २४ ५५ १७	० २६ २६ ३८	१ १ ५१ २५	७ १५ २२ ५६	१ २९ ३ ३७	६ ६ ३९ ३१	२ ३ ५० २	७ १४ ३३ १२	८ ५ २१ ५५
७ बु.	९ ६ ४७ ३६	० २७ ९ ४९	१ १ ४२ ८	७ १५ १६ ५४	२ ० १२ २	६ ६ ३५ ६	२ ३ ४६ ५१	७ १४ ३१ ५	८ ५ २० ५७
८ गु.	९ १८ ३७ ५४	० २७ ५२ ५८	१ १ २८ ५	७ १५ १० ४२	२ १ २० १९	६ ६ ३० ४३	२ ३ ४३ ४०	७ १४ २८ ५५	८ ५ १९ ५८
९ शु.	१० ० ३१ २७	० २८ ३६ ३	१ १ ९ ३६	७ १५ ४ २४	२ २ २८ २७	६ ६ २६ २१	२ ३ ४० २९	७ १४ २६ ४५	८ ५ १८ ५९
१० श.	१० १२ ३२ ५२	० २९ १९ ६	१ ० ४७ ४	७ १४ ५७ ५९	२ ३ ३६ २६	६ ६ २२ १	२ ३ ३७ १८	७ १४ २४ ३३	८ ५ १७ ५८
११ र.	१० २४ ४६ ४०	१ ० २ ६	१ ० २० ५५	७ १४ ५१ २७	२ ४ ४४ १७	६ ६ १७ ४३	२ ३ ३२ ८	७ १४ २२ १९	८ ५ १६ ५३
१२ चं.	११ ७ १६ ५६	१ ० ४५ २	० २९ ५१ ०	७ १४ ४४ ४६	२ ५ ५१ ५९	६ ६ १३ २८	२ ३ ३० ५८	७ १४ २० ५	८ ५ १५ ४९
१३ मं.	११ २० १ ५	१ १ २७ ५६	० २८ १९ ४९	७ १४ ३८ ५	२ ६ ५९ ३२	६ ६ ९ १५	२ ३ २६ ४६	७ १४ १७ ४८	८ ५ १४ ४८
१४ बु.	० ३ २५ ३०	१ २ १० ४७	० २८ ४२ ५६	७ १४ ३१ १६	२ ८ ६ ५५	६ ६ ५ ५	२ ३ २३ ३५	७ १४ १५ ३२	८ ५ १३ ३६
३० गु.	० १६ ४० २५	१ २ ५३ ३५	० २८ १० ४९	७ १४ २४ २०	२ ९ ४ ३	६ ६ ० ५७	२ ३ १७ १४	७ १४ १० ५३	८ ५ ११ १७

वैशाखकृष्ण ८ गुरौ अयनांशाः २३।३७।९

वक्री बुधः [illegible]



वैशाखकृष्ण ३० गुरौ अयनांशाः २३।३७।९



गुरुः पूर्वस्याम् ।

॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥

शुक्रः पश्चिमायाम्

रा.	१ गु.	२ शु.	३ श.	४ र.	५ चं.	६ मं.	७ बु.	८ गु.	९ शु.	१० श.	११ र.	१२ चं.	१३ मं.	१४ बु.	३० गु.
मे.	६ २५	६ २०	६ १६	६ १२	६ ९	६ ५	६ ०	५ ५७	५ ५३	५ ४८	५ ४४	५ ४१	५ ३७	५ ३३	[illegible]
वृ.	८ २१	८ १६	८ १२	८ ८	८ ५	८ १	७ ५६	७ ५३	७ ४९	७ ४४	७ ४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	१० ३५	१० ३०	१० २६	१० २२	१० १९	१० १५	१० १०	१० ७	१० ३	९ ५८	९ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४३	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३३	१२ २८	१२ २४	१२ २१	१२ १६	१२ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	३ ८	३ ३	२ ५९	२ ५५	२ ५२	२ ४८	२ ४३	२ ४०	२ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	५ २१	५ १६	५ १२	५ ८	५ ५	५ १	४ ५६	४ ५३	४ ४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
तु.	७ ३८	७ ३३	७ २९	७ २५	७ २२	७ १८	७ १३	७ १०	७ ६	७ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	९ ५६	९ ५१	९ ४७	९ ४३	९ ४०	९ ३६	९ ३१	९ २८	९ २४	९ १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	१२ २	११ ५७	११ ५३	११ ४९	११ ४६	११ ४२	११ ३७	११ ३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	१ ४८	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३२	१ २८	१ २३	१ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	३ १९	३ १४	३ १०	३ ६	३ ३	२ ५९	२ ५४	२ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	४ ४७	४ ४२	४ ३८	४ ३४	४ ३१	४ २७	४ २२	४ १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ प्रस्तार प्रयाणिलग्नमतप्रकारमाह— [illegible] । सौम्यैर्गृहप्राप्ति लग्नागमनं गुरुसिताभ्याम् ॥ जामित्रे त्वथवा षष्ठे ग्रहः केन्द्रेऽपि वाक्पतिः । प्रोषितागमनं विधत्ते त्रिकोणे वा ॥ अष्टमस्थे निशानाथे कण्टके पापवर्जिते । प्रवासी सुखमाप्नोति सौम्यैर्बलसमन्वितः ॥ शुक्रोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तु- लीये रिपु[illegible] । सौम्यैरदृष्टा [illegible] विनष्टा [illegible] वाच्याः । इति ।

आकाश दर्शन

ता. २०।४।८३ ई० च. यो. च.
[illegible] १ अं १० कला उ.
स्टॅ. टा. रा. घं. १० मि. १ पर ।
ता. २९।४।८३ गु. चं. यो. चं. से
गु. ० अं. ३३ कला द. स्टॅ. टा.
रा. घं. १२ मि. १९ पर ।
ता. २।५।८३ मे. चं. यो. चं. से.
मे. १ अंश १३ कला उ. स्टॅ.
टा. दि. घं. २ मि. १३ पर ।
ता. ८।५।८३ बु. भौ. यो. भौ. से.
बु. ० अं. ४९ कला उ. स्टॅ. टा.
दि. घं. ७ मि. ४१ पर ।
ता. १२।५।८३ बु. चं. यो. चं. से
बुध २ अं. ४३ कला उ. स्टॅ. टा.
रा. घं. ११ मि. २५ पर ।

श्री शुभसंवत् २०४० शके १९०५ वैशाखशुक्लपक्षः ।

१३ मई से २६ मई सन् १९८३ ई०)
उत्तरायणम्, उत्तरगोलः – ग्रीष्मर्तुः

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगः	रा.अं. क्रि.	ता.	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	च.अ. स्टँ.टा.		सू.उ. स्टँ.टा.		सू.अ. स्टँ.टा.		र.क्रा.उ. अं.	क.	स्प.मध्याह्न का. स्टँ.टा.			साम्पा.का. घं.	मि.	से.	औदयिकस्पष्टसूर्यः रा.	अं.	क.	वि.
३२	५९	१	शु.	४४	२५	रा.	११	३	कृ.	४१	८	रा.	९	४४	शो.	३२	५८	सा.	६	२८	कि.	१६	४८	बव	४४	२५	छत्र	२३	१३	२०	२९	१६	वृ.						७	१५	५	१७	६	३२	+१८	११	११	५४	१७	१५	१९	५१	०	२८	३	१६
३३	१	२	श.	३९	३	,,	८	५१	रो.	३७	४३	,,	८	२१	अ.	२६	३	दि.	३	४१	बा.	११	१६	कौ.	३९	३	श्रीवत्स	२४	१४	३०	३०	१७	वृ.						८	२०	५	१६	६	३२	१८	२६	११	५४	१६	१५	२३	४७	०	२९	१	१२
३३	४	३	र.	३३	८	सा.	६	३१	मृ.	३३	४८	सा.	६	४७	सु.	१८	३५	,,	१२	४२	तै.	६	६	ग.	३३	८	सौम्य	२५	१५	३१	१	१८	मि.	५	४९	दि.	७	३६	९	२५	५	१६	६	३३	१८	४१	११	५४	१६	१५	२७	४४	०	२९	५९	५
३३	७	४	चं.	२७	३	दि.	४	४	आ.	२९	३८	दि.	५	६	धृ.	१०	५८	,,	९	२८	व.	०	७	भ.	२७ / ५९	३ / ५७	कालदण्ड	२६	१६	१	२	१९	मि.						१०	२७	५	१५	६	३३	१८	५५	११	५४	१६	१५	३१	४०	१	०	५६	५५
३३	९	५	मं.	२०	५०	,,	१	३५	पुन.	२५	२५	,,	३	२५	शू.	५ / ४२	१३ / २०	,, रा.	६ / ५	१२ / २६	वा.	२०	५०	कौ.	४७	४८	सुस्थिर	२७	१७	२	३	२०	क.	९	५९	दि.	९	१५	११	२५	५	१५	६	३४	१९	०	११	५४	१७	१५	३५	३७	१	१	५४	४५
३३	१२	६	बु.	१४	५०	,,	११	१०	पु.	२१	२३	,,	१	४७	वृ.	४८	८	,,	१२	२९	तै.	१४	५०	ग.	४१	५५	मातङ्ग	२८	१८	३	४	२१	क.						१२	१७	५	१४	६	३५	१९	२३	११	५४	१६	१५	३९	३३	१	२	५२	३३
३३	१४	७	गु.	९	५	,,	८	५२	अ.	१७	३८	,,	१२	१७	ध्रु.	४०	५८	,,	९	३७	व.	९	५	भ.	३६	२३	अमृत	२९	१९	४	५	२२	सिं.	१७	३८	दि.	१२	१७	१	२	५	१४	६	३५	१०	३६	११	५४	२१	१५	४३	३०	१	३	५०	२१
३३	१६	८	शु.	५ / ४५	१० / ५६	,, रा.		४ / ४६	म.	१४	२०	,,	१०	५७	व्या.	३४	१५	सा.	६	५५	बव	२	४८	वा.	३१ / ५६	२२ / १	काण	३०	२०	५	६	२३	सिं.						१	४३	५	१३	६	३६	१३	४९	११	५४	२४	१५	४७	२७	१	४	४८	५
३३	१८	१०	श.	५४	५०	,,	३	१	पूफा.	११	३५	,,	९	५१	ह.	२७	५८	दि.	४	२४	तै.	२६	५१	ग.	५४	५०	लुम्ब	३१	२१	६	७	२४	कं.	२६	४	दि.	३	३९	२	२१	५	१३	६	३६	२०	१	११	५४	२७	१५	५१	२३	१	५	४५	४९
३३	२१	११	र.	५१	२८	,,	१	४७	उफा.	९	३०	,,	९	०	व.	२२	१८	,,	२	७	व.	२३	३	भ.	५१	२८	मित्र	१	२२	७	८	२५	कं.						२	१७	५	१२	६	३७	२०	१४	११	५४	३१	१५	५५	२०	१	६	४३	२६
३३	२३	१२	चं.	४८	५३	,,	१२	४५	ह.	८	१०	,,	८	२८	सि.	१७	१३	,,	१२	५	बव	१९	४	वा.	४८	५३	वज्र	२	२३	८	९	२६	तु.	३७	५१	रा.	८	२०	३	३३	५	१२	६	३७	२०	२६	११	५४	३५	१५	५६	१६	१	७	४१	९
३३	२५	१३	मं.	४७	२०	,,	१२	८	चि.	७	४५	,,	८	१८	व्य.	१२	१५	,,	१०	२२	कौ.	१७	५६	तै.	४७	२०	ध्वांक्ष	३	२४	९	१०	२७	तु.						४	९	५	१२	६	३८	२०	३७	११	५४	३९	१६	३	१३	१	८	३८	४१
३३	२७	१४	बु.	४६	५८	,,	११	५८	स्वा	८	२३	,,	८	३२	व.	९	३०	,,	८	५९	ग.	१७	०	व.	४६	५८	धूम्र	४	२५	१०	११	२८	वृ.	५५	२९	रा.	३	२३	अ४	४८	५	११	६	३८	२०	४८	११	५४	४४	१६	७	९	१	९	३६	२५
३३	२९	१५	गु.	४७	४८	,,	१२	१८	वि.	१०	८	,,	९	१४	प.	६	५८	,,	७	५८	भ.	१७	१४	बव	४७	४८	प्रवर्ध	५	२६	११	१२	२९	वृ.						उ६	२२	५	११	६	३९	२०	५६	११	५४	५०	१६	११	६	१	१०	३४	१

इष्टिः । [A सर्वार्थसिद्धि योगः ३७।४३ या. । अमृतसिद्धि योगः ३७।४३ या. । राष्ट्रिय ज्येष्ठः ।
चन्द्रदर्शनम् । मु. ४५ । फ. समर्घता । व.ग. भरणीषुबुधः ३२।२८ । मासान्तः । द्विपुष्कर योगः ३७।४३ उ. ३९।३ या. ।A
वृषेऽर्कः ०।५८ (प्रा. ५।२९) । मु. ३० । फ. समता । सं. ज.पु. का. ०।५८ (प्रा. ५।२९) उ. १६।५८ (दि. १२।१२) या. ।B
भ. ०।७ (प्रा. ५।१८) उ. २७।३ (दि. ४।४) या. । वैनायकी ४ । [B (प्रभातेघटिकाद्वयाल्पत्वात्तद्युक्तकालः) C
श्रीं शङ्कराचार्यजयन्ती ५ । [Cअक्षय ३ । त्रेतायुगादिः ३ । कल्पादि ३ । परशुरामजयन्ती ३ । [illegible]
गङ्गा ७ (मध्याह्ने गंगोत्पत्तिः । व्य० प्र० ४५।१५ । व्य० नि० ५१।३ ।
भ. ९।५ (दि. ८।५२) उ. ३६।२३ (रा. ७।४७) या. । अन्नपूर्णा ८ । यायीजयद योगः ९।५ या. ।
स्थायीजयद योगः ३।४८ या. । सर्वार्थसिद्धियोगः १४।२० उ. ।
सायनमिथुनेऽर्कः ३८।२८ । पुनर्वस्वोः शुक्रः ४५।५३ ।
भ. २३।३ दि. (२।२५) उ.५१।२८ (रा. १।४७) या. । मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषाम् । राष्ट्रिय ज्येष्ठः । रोहिण्यांD
वज्र योगः । [Dभौमः २।२५ । यायीजयदयोगः ९।३० या. । सर्वार्थसिद्धियोगः ९।३० या. । अमृतसिद्धियोगः ९।३० उ. ।
बुधोदयः पूर्वस्याम् २६।३० । प्रदोष १३ व्रतम् । भौमप्रदोषः ।
भ. ४६।५८ (रा. ११।५८) उ. । रोहिण्यामर्कः २४।३८ (दि. ३।२) । नृसिंह १४ । मार्गी बुधः ३२।४० ।
भ. १७।१४ (दि. १२।७) या. । वैशाखस्नान समाप्तिः । कूर्मजयन्ती १५ । बुद्धजयन्ती १५ । यायीजयद योगः X
[X [illegible]

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाःस्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

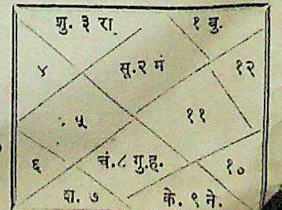
ति.	वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेपच्यून रा.	अं.	क.	वि.
१	शु.	१	०	३१	२०	१	३	३६	२०	०	२७	३४	४५	७	१४	१७	२१	२	१०	२१	१३	६	५	५६	५२	२	३	१५	३	७	१४	८	३२	८	५	१०	५
२	श.	१	१४	३२	५६	१	४	१९	२	०	२६	५८	५३	७	१४	१०	१६	२	११	२८	६	६	५	५२	४९	२	३	११	५२	७	१४	६	१०	८	५	८	५३
३	र.	१	२८	४५	८	१	५	१	४१	०	२६	२३	२४	७	१४	३	७	२	१२	३४	५०	६	५	४८	५०	२	३	८	४१	७	१४	३	४७	८	५	७	३४
४	चं.	२	१३	११	३९	१	५	४४	१७	०	२५	४६	२	७	१३	५५	५४	२	१३	४१	२२	६	५	४४	५४	२	३	५	३१	७	१४	१	२३	८	५	६	२३
५	मं.	२	२७	२४	२०	१	६	२६	४९	०	२५	१६	२४	७	१३	४८	३७	२	१४	४७	४४	६	५	४१	१	२	३	२	२०	७	१३	५८	५१	८	५	५	७
६	बु.	३	११	४३	४१	१	७	९	१९	०	२४	४५	५६	७	१३	४१	१७	२	१५	५३	५४	६	५	३७	१२	२	२	५९	६	७	१३	५६	३४	८	५	३	५०
७	गु.	३	२५	५८	५१	१	७	५१	४६	०	२४	१८	१७	७	१३	३३	५३	२	१६	५६	५२	६	५	३३	२६	२	२	५५	५८	७	१३	५४	८	८	५	२	३०
८	शु.	४	१०	७	३६	१	८	३४	१०	०	२३	५३	४३	७	१३	२६	२६	२	१८	५	३८	६	५	२९	४४	२	२	५२	४८	७	१३	५१	४२	८	५	१	११
१०	श.	४	२४	८	११	१	९	१६	३०	०	२३	३२	४०	७	१३	१८	५८	२	१९	११	१२	६	५	२६	६	२	२	४९	३७	७	१३	४९	१५	८	४	५९	५०
११	र.	५	६	५९	४	१	९	५८	४८	०	२३	१५	२४	७	१३	११	१६	२	२०	१६	३३	६	५	२२	३१	२	२	४६	२६	७	१३	४६	४७	८	४	५८	२८
१२	चं.	५	२१	३८	५०	१	१०	४१	२	०	२३	२	११	७	१३	३	५३	२	२१	२१	४१	६	५	१९	०	२	२	४३	१५	७	१३	४४	१९	८	४	५७	६
१३	मं.	६	५	५	११	१	११	२३	१४	०	२२	५३	१३	७	१२	५६	२८	२	२२	२६	३५	६	५	१५	३४	२	२	४०	४	७	१३	४१	५१	८	४	५५	४१
१४	बु.	६	१८	१९	५७	१	१२	५	२२	०	२२	४८	३६	७	१२	४८	४२	२	२३	३१	१६	६	५	१२	११	२	२	३६	५४	७	१३	३९	२२	८	४	५४	१६
१५	गु.	७	१	१९	२०	१	१२	४७	२७	०	२२	४८	२५	७	१२	४१	५	२	२४	३५	४२	६	५	८	५३	२	२	३३	४३	७	१३	३६	५३	८	४	५२	५१

वैशाख शु. ८ शुक्रे अयनांशाः २३।३७।११



वैशाख शु. १५ गुरौ अयनांशाः २३।३७।१२

मार्गी बुधः ०।२२।४०।२४



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम् ।

रा.	१ शु.	२ श.	३ र.	रा.	४ चं.	५ मं.	६ बु.	७ गु.	८ शु.	१० श.	११ र.	१२ चं.	१३ मं.	१४ बु.	१५ गु.
मे.	५ २६	५ २२	५ १८	तु.	७ १४	७ ६	७ २	६ ५८	६ ५३	६ ५०	६ ४५	६ ४२	६ ३९	६ ३४	६ ३०
वृ.	७ २२	७ १८	७ १४	सिं.	९ २४	९ २०	९ १६	९ १२	९ ९	९ ४	८ ५६	८ ५६	८ ५३	८ ४८	८ ४४
मि.	९ ३६	९ ३२	९ २८	क.	११ ४२	११ ३८	११ ३४	११ ३०	११ २५	११ २२	११ १७	११ १४	११ ११	११ ६	११ २
क.	११ ५४	११ ५०	११ ४६	सिं.	१ ५७	१ ५३	१ ४९	१ ४५	१ ४०	१ ३७	१ ३२	१ २९	१ २६	१ २१	१ १७
सिं.	२ ९	२ ५	२ १	कं.	४ १०	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५३	३ ५०	३ ४५	३ ४२	३ ३९	३ ३४	३ ३०
कं.	४ २२	४ १८	४ १४	तु.	६ २७	६ २३	६ १९	६ १५	६ १०	६ ७	६ २	५ ५९	५ ५६	५ ५१	५ ४७
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
तु.	६ ३९	६ ३५	६ ३१	वृ.	८ ४५	८ ४१	८ ३७	८ ३३	८ २८	८ २५	८ २०	८ १७	८ १४	८ ९	८ ५
वृ.	८ ५७	८ ५३	८ ४९	ध.	१० ५१	१० ४७	१० ४३	१० ३९	१० ३४	१० ३१	१० २६	१० २३	१० २०	१० १५	१० ११
ध.	११ ३	१० ५९	१० ५५	मं.	१२ ३७	१२ ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २०	१२ १७	१२ १२	१२ ९	१२ ६	१२ १	११ ५७
म.	१२ ४९	१२ ४५	१२ ४१	कुं.	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५१	१ ४८	१ ४३	१ ४०	१ ३७	१ ३२	१ २८
कुं.	२ २०	२ १६	२ १२	मी.	३ ३६	३ ३२	३ २८	३ २४	३ १९	३ १६	३ ११	३ ८	३ ५	३ १	२ ५६
मी.	३ ४८	३ ४४	३ ४०	मे.	५ १४	५ १०	५ ६	५ २	४ ५७	४ ५४	४ ४९	४ ४६	४ ४२	४ ३८	४ ३४

अथ वैशाखशुक्लतृतीया अक्षयतृतीयासंज्ञिका । अस्यां यत्किंचिज्जपहोमपितृतर्पणदानादि क्रियते तत्सर्वमक्षयम् ।
इयं रोहिणी बुधयोगे महापुण्या । इयं पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या । पूर्वाह्णो द्वेधा विभक्तदिनपूर्वार्धः । दिनद्वयेऽपि तद्व्याप्तौ परैव । इयं युगादिश्च । साऽपि पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या । यथा चोक्तं "पूर्वाह्णे तु सदाकार्याः शुक्ला मनुयुगादयः ।

आकाश दर्शन

ता. १३।५।८३ मं. चं. यो. चन्द्र से मं. २ अं. ४८ क. उत्तर, स्टँ. टा. दि. घं. १० मि. ५४ पर ।

ता. १४।५।८३ बु. चं. यो., चं. से बु. १ अं. २७ क. उत्तर, स्टँ. टा. दि. घं. ६ मि. ४६ पर ।

ता. १६।५।८३ शु. चं. योग, चं. से शु. ० अं. ५० कला उत्तर, स्टँ. टा. रा. घं. ६ मि. ३२ पर ।

ता. २३।५।८३ श. चं. योग, चं. से श. १ अं. ४१ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. ४ मि. ३६ पर ।

ता. २५।५।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. ० अं. ४२ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. २ मि. २२ पर ।

ता. २६।५।८३, हृ. चं. यो., चं. से हृ. १ अं. ३४ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. ४ मि. २ पर ।

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः।

२८ मई से ११ जून १९८३ ई० तक उत्तरायणम्। उत्तरे गोलः। ग्रीष्मर्तुः। D

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	प. घ.		स्टँ. टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टँ. टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टँ. टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
३३	३१	१	शु.	४९	५३	रा.	१	८	अनु.	१३	८	दि.	१०	२६	शि.	५	५८	दि.	७	२२	वा.	१८	४१	कौ.	४९	५३	रक्ष
३३	३३	२	श.	५३	१८	,,	२	३६	ज्ये.	१७	२३	,,	१२	८	सि.	४	५५	,,	७	९	तै.	२१	२७	ग.	५३	१८	मुसल
३३	३५	३	र.	५७	५३	,,	४	१९	मू.	२२	५२	,,	२	१९	सा.	५	५८	,,	७	२१	व.	५५	२८	भ.	५७	५३	सिद्धि
३३	३६	४	चं.	६०	०	,,	×	×	पूषा	२०	२३	,,	४	५५	शु.	६	४८	,,	७	५३	बव	३०	३१	बा.	६०	०	उत्पात
३३	३८	४	मं.	३	२०	दि.	६	३०	उषा	३६	३८	रा.	७	४९	शु.	८	४८	,,	८	४१	बा.	३	२०	कौ.	३६	१६	मानस
३३	४०	५	बु.	९	२३	,,	८	५५	श्र.	४४	१०	,,	१०	५०	ब्र.	११	१३	,,	९	३९	तै.	९	२३	ग.	४२	२८	छत्र
३३	४१	६	गु.	१५	३०	,,	११	२२	ध.	५१	३०	,,	१	४६	ऐं.	१३	४३	,,	१०	३९	व.	१५	३०	भ.	४८	२८	श्रीवत्स
३३	४३	७	शु.	२१	१३	,,	१	३८	श.	५८	१०	,,	४	२५	वै.	१५	५३	,,	११	३०	बव.	२१	१३	बा.	५३	३३	सौम्य
३३	४४	८	श.	२५	५३	,,	३	३०	पूभा	६०	०	,,	×	×	वि.	१७	१८	,,	१२	४	कौ.	२५	५३	तै.	५७	४१	कालदण्ड
३३	४५	९	र.	२९	५	,,	४	४७	पूभा	३	३५	दि.	६	३५	प्री.	१८	३८	,,	१२	१२	ग.	२९	५	व.	६०	०	चर
३३	४७	१०	चं.	३०	३८	,,	५	२४	उभा	७	२८	,,	८	८	आ.	१६	४०	,,	११	४९	व.	०	५	भ.	३०	३८	गद
३३	४८	११	मं.	३०	१८	,,	५	१६	रेव.	९	३३	,,	८	५८	सौ.	१४	१८	,,	१०	५२	बव	०	४२	बा.	[illegible]	[illegible]	शुभ
३३	४९	१२	बु.	२८	३	,,	४	२२	अ.	९	४५	,,	९	३	शो.	१०	२५	,,	९	१९	तै.	२८	३	ग.	५६	२०	मृत्यु
३३	५०	१३	गु.	२४	१३	,,	२	१०	भ.	८	१८	,,	८	२८	अ.	[illegible]	[illegible]	,, रा.	[illegible]	[illegible]	व.	२४	१३	भ.	५१	४४	पद्म
३३	५१	१४	शु.	१८	५५	,,	१२	४३	कृ.	५	१५	,,	७	१५	धृ.	५०	०	,,	१	२३	श.	१८	५५	चं.	४५	४७	छत्र
३३	५२	३०	श.	१२	२५	,,	१०	७	रो.	[illegible]	[illegible]	मा. रा.	[illegible]	[illegible]	शू.	४२	३८	,,	१०	१२	ना.	१२	२५	किं.	३८	५३	श्रीवत्स

ति. वा.	रा. मि.	अं. ता.	य. ता.	फा. ता.	फ. फा.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टँ. टा.	घं.	मि.	च. उ. स्टँ. टा.		सू. उ. स्टँ. टा.		सू. अ. स्टँ. टा.		र.का.उ. अं. +	क.	स्प. मध्याह्न का. स्टँ. टा. घ.	मि.	से.	साम्पा काल घ.	मि.	से.	औदा. स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
१ शु.	६	२७	१२	१३	१	वृ.						७	२०	५	११	६	३९	२१	१०	११	५४	५६	१६	१५	२	१	११	३१	३७
२ श.	७	२८	१३	१४	२	ध.	१७	२३	दि.	१२	८	८	१५	५	११	६	४०	२१	२०	११	५५	२	१६	१८	५९	१	१२	२९	११
३ र.	८	२९	१४	१५	३	ध.						९	०	५	१०	६	४०	२१	३०	११	५५	१०	१६	२२	५६	१	१३	२६	४५
४ चं.	९	३०	१५	१६	४	म.	४६	९	रा.	[illegible]	३८	९	५८	५	१०	६	४१	२१	३९	११	५५	१८	१६	२६	५२	१	१४	२४	१६
४ मं.	१०	३१	१६	१७	५	म.						१०	३	५	१०	६	४१	२१	४८	११	५५	२६	१६	३०	४९	१	१५	२२	४७
५ बु.	११	१	१७	१८	६	म.						११	२५	५	१०	६	४१	२१	५७	११	५५	३५	१६	३४	४५	१	१६	१९	१८
६ गु.	१२	२	१८	१९	७	कुं.	१७	५३	दि.	[illegible]	१९	१२	२	५	१०	६	४२	२२	५	११	५५	४४	१६	३८	४२	१	१७	१६	४५
७ शु.	१३	३	१९	२०	८	कुं.						१२	३७	५	९	६	४२	२२	१३	११	५५	५३	१६	४२	३८	१	१८	१४	१३
८ श.	१४	४	२०	२१	९	मी.	४६	५१	रा.	११	५३	१	१०	५	९	६	४३	२२	२०	११	५६	३	१६	४६	३५	१	१९	११	४०
९ र.	१५	५	२१	२२	१०	मी.						१	४३	५	९	६	४३	२२	२७	११	५६	१३	१६	५०	३१	१	२०	९	७
१० चं.	१६	६	२२	२३	११	मी.						२	१६	५	९	६	४४	२२	३४	११	५६	२४	१६	५४	२८	१	२१	६	३४
११ मं.	१७	७	२३	२४	१२	मे.	९	३३	दि.	८	५८	२	५१	५	९	६	४४	२२	४०	११	५६	३५	१६	५८	२५	१	२२	३	५९
१२ बु.	१८	८	२४	२५	१३	मे.						३	२०	५	९	६	४५	२२	४६	११	५६	४६	१७	२	२१	१	२३	१	२४
१३ गु.	१९	९	२५	२६	१४	वृ.	२२	४०	दि.	२	१३	४	१३	५	९	६	४५	२२	५२	११	५६	५७	१७	६	१८	१	२३	५८	४९
१४ शु.	२०	१०	२६	२७	१५	वृ.						३५	३	५	९	६	४५	२२	५७	११	५७	०	१७	१०	१४	१	२४	५६	१३
३० श.	२१	११	२७	२८	१६	मि.	२८	३४	दि.	४	३५	अ७	८	५	९	६	४६	२३	२	११	५७	२१	१७	१४	११	१	२५	५३	३६

इष्टिः। — D राष्ट्रिय ज्येष्ठः।

शबेरात्। — A कार्येजयद योगः २३।५३ उ०।

भ. २५।२८ (दि. ३।२१) उ० ५७।५३ (रा. ४।१९) या०। सर्वार्थ सिद्धि योगः २२।५२ या०। A

संकष्ट ४। चं० उ० गा० घं० ९।५८।

कर्के शुक्रः ६।२३। अङ्गारिकी ४। वै० प्र० ४०।२५।

जून ६। वै० नि० ६।५।

भ. १५।३० (दि. ११।२२) उ० ४८।२८ (रा. १२।३३) या०।

पुष्ये शुक्रः १८।१३। काल ८। साम्राज्यो जन्मदिनम् पञ्चमजार्ज।

पुनः मार्गगत्या कृत्तिकासु बुधः ४८।३३। शीतला ८।

सर्वार्थसिद्धि योगः ३।३५ उ०।

भ० ०।५ (प्रा० ५।११) उ० ३०।३८ (दि. ५।२४) या०।

अपरा ११ व्रतं सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धि योगः ६।३३ उ०। अमृतसिद्धि योगः ६।३३ उ०।

मृगशीर्षेऽर्कः १९।२५ (दि. १२।५५)। मार्गगत्या कृत्ते बुधः ४९।३३। प्रदोष १३ व्रतम्।

भ० २४।१३ (दि. २।५०) उ० ५१।४१ (रा. १।११) या०। मास शिवरात्रि १४ व्रतम्। कार्येजयद योगः ८।१८ B

मृगशीर्षे भौमः १०।४३। स्थायीजयद योगः ५।१५ या०। B उ० २४।१३ या०।

दर्श। गोडानांबटसाविश्री व्रतम्। भावुका ३०। इष्टिः। सर्वार्थसिद्धि योगः ११२ या०। अमृतसिद्धि योगः ११२ या०।

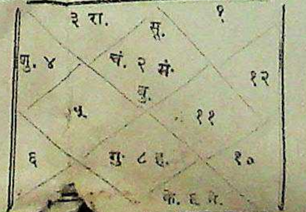
प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्षल् रा.	अं.	क.	वि.	नेप्चून रा.	अं.	क.	वि.
१ शु.	७	१४	४	२	१	१३	२९	३०	०	२२	५२	४७	७	१२	३३	२७	२	२५	३६	५४	६	५	५	३८	२	२	३०	३२	७	१३	३४	२४	८	४	५१	२४
२ श.	७	२६	३४	२४	१	१४	११	३०	०	२३	१	३९	७	१२	२५	४९	२	२६	४३	५२	६	५	२	२८	२	२	२७	२१	७	१३	३१	४५	८	४	४९	५७
३ र.	८	८	५१	३२	१	१४	५३	२६	०	२३	१५	०	७	१२	१८	११	२	२७	४७	३३	६	४	५९	२३	२	२	२४	१०	७	१३	२९	२६	८	४	४८	२०
४ चं.	८	२०	५७	२२	१	१५	३५	२०	०	२३	३२	४८	७	१२	१०	१२	२	२८	५१	०	६	४	५६	२२	२	२	२१	०	७	१३	२६	५६	८	४	४७	०
४ मं.	९	२	५३	३४	१	१६	१७	११	०	२३	५५	०	७	१२	२	५५	२	२९	५४	१०	६	४	५३	२६	२	२	१७	४९	७	१३	२४	२७	८	४	४४	३०
५ बु.	९	१४	४६	३०	१	१६	५९	०	०	२४	२१	३०	७	११	५५	१८	३	०	५७	४	६	४	५०	३४	२	२	१४	३८	७	१३	२१	५८	८	४	४३	५९
६ गु.	९	२६	३७	८	१	१७	४०	४५	०	२४	५२	१३	७	११	४७	४२	३	१	५९	४२	६	४	४७	४७	२	२	११	२७	७	१३	१९	३०	८	४	४२	२८
७ शु.	१०	८	३०	४६	१	१८	२२	२८	०	२५	२७	५	७	११	४०	८	३	३	२	२	६	४	४५	५	२	२	८	१६	७	१३	१७	१	८	४	४०	५६
८ श.	१०	२०	३२	११	१	१९	४	८	०	२६	५	५८	७	११	३२	३६	३	४	४	५	६	४	४२	२८	२	२	५	५	७	१३	१४	३२	८	४	३९	२४
९ र.	११	२	४५	५१	१	१९	४५	४५	०	२६	४८	४८	७	११	२५	५	३	५	५	४९	६	४	३९	५६	२	२	१	५५	७	१३	१२	४	८	४	३७	५१
१० चं.	११	१५	१६	६	१	२०	२७	२०	०	२७	३५	२८	७	११	१७	३७	३	६	७	१६	६	४	३७	२८	२	१	५८	४४	७	१३	९	३६	८	४	३६	१८
११ मं.	११	२८	६	३७	१	२१	८	५२	०	२८	२५	५२	७	११	१०	१२	३	७	८	२३	६	४	३५	६	२	१	५५	३३	७	१३	७	९	८	४	३४	४४
१२ बु.	०	११	१९	५६	१	२१	५०	२१	०	२९	१९	५६	७	११	२	५०	३	८	९	१०	६	४	३२	४९	२	१	५२	२२	७	१३	४	४२	८	४	३३	९
१३ गु.	०	२४	५७	४	१	२२	३१	४८	१	०	१७	३५	७	१०	५५	३१	३	९	९	३८	६	४	३०	३८	२	१	४९	१२	७	१३	२	१६	८	४	३१	३४
१४ शु.	१	८	५७	१०	१	२३	१३	१२	१	१	१८	४३	७	१०	४८	१६	३	१०	९	४४	६	४	२८	३१	२	१	४६	१	७	१२	५९	५१	८	४	२९	५७
३० श.	१	२३	१७	१६	१	२३	५४	३२	१	२	२३	१६	७	१०	४१	४	३	११	९	३३	६	४	२६	३०	२	१	४२	५०	७	१२	५७	२६	८	४	२८	२२

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शनौ अयनांशाः २३।३७।१३



ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनौ अयनांशाः २३।३७।१४



गुरुः पूर्वस्याम्।

॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम) ॥

शुक्रः पश्चिमायाम्।

	१ शु.	२ श.	३ र.	४ चं.	४ मं.	५ बु.	६ गु.	७ शु.	८ श.	९ र.	१० चं.	११ मं.	१२ बु.	१३ गु.	१४ शु.	३० श.
वृ.	६ २७	६ २३	६ १८	६ १५	६ ११	६ ७	६ ३	५ ५९	५ ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	८ ४१	८ ३७	८ ३२	८ २९	८ २५	८ २१	८ १७	८ १३	८ ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	१० ५९	१० ५५	१० ५०	१० ४७	१० ४३	१० ३९	१० ३५	१० ३१	१० २७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	१ १४	१ १०	१ ५	१ २	१२ ५८	१२ ५४	१२ ५०	१२ ४६	१२ ४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	३ २७	३ २३	३ १८	३ १५	३ ११	३ ७	३ ३	२ ५९	२ ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	५ ४४	५ ४०	५ ३५	५ ३२	५ २८	५ २४	५ २०	५ १६	५ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
वृ.	८ २	७ ५८	७ ५३	७ ५०	७ ४६	७ ४२	७ ३८	७ ३४	७ ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	१० ८	१० ४	९ ५९	९ ५६	९ ५२	९ ४८	९ ४४	९ ४०	९ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	११ ५४	११ ५०	११ ४५	११ ४२	११ ३८	११ ३४	११ ३०	११ २६	११ २२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	१ २५	१ २१	१ १६	१ १३	१ ९	१ ५	१ १	१२ ५७	१२ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	२ ५३	२ ४९	२ ४४	२ ४१	२ ३७	२ ३३	२ २९	२ २५	२ २१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	४ ३१	४ २७	४ २२	४ १९	४ १५	४ ११	४ ७	४ ३	३ ५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदि भौम कंधुग्वासराः यदा भवन्ति कोशाना तदा व्याधिर्नं महत् ॥ ज्येष्ठस्य कृष्णप्रतिपत्सु नेत्रानुना यदि। याति बालसङ्घोयो वै भीमेनाधिः प्रजायते ॥ चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं गुरुणा सस्यसंपदः। भार्गवेण सुवृष्टिः स्याच्छनिनाऽऽकुला धरा ॥ शनिना च प्रजानाशस्तत्रक्षुब्धावर्षणम्। जायते नात्र सन्देहः कर्तव्यो दैवचिन्तकैः ॥

ता. २८।५।८३ नै. चं. यो० चं. से नै० १ अं. ३५ क. उ. स्टँ.टा. रा. घं. २ मिनट ३० पर।

ता. ९।६।८३ बु. चं० यो० चं. से बु. ० क.४८ क. द० स्टँ.टा. दि. घं. ३ मि. ४७ पर।

ता. ११।६।८३ मं. चं. यो चं. से मं. १ अं. १२ क. उ. स्टँ. टा. दि. घं. ६ मि. २१ पर।

दि.मा. घं. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	न.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	यो.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	क.	घ. प.	क.	घ. प.	योगाः	रा. मि.	अं. ता.	चं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	लग्नः रा. घ. प.	स्टैं. टा. घ. मि.	च. अ. स्टैं. टा.	सू. उ. स्टैं. टा.	सू. अ. स्टैं. टा.	र.का.उ. अं. क. +	स. मध्याह्न का. स्टैं. टा. घ. मि. से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	औ. स्पष्ट सू. रा. अं. क. वि.
३३ ५३	१ र.	५२/४ १०/१९	वि/रा. ७/४ १६/६	आ.	५० १३	रा. १ १४	ग.	३३ ४५	सा. ६ ३९	बव	५ १०	बा.	५१/५७ १६/२३	ध्वांक्ष	२२	१२	२८	२९	१७	मि		८ १४	५ ९	६ ४६	२३ ६	११ ५७ ३३	१७ १८ ७	१ २६ ५० ५१
३३ ५३	३ चं.	४९ ३	,, १२ ५७	पुन	४४ २३	” १० ५४	वृ.	२४ ३८	दि. ३ ०	तै.	२३ २७	ग.	४९ ३०	धूम्र	२३	१३	२९	१	१८	क. २० ५०	दि. ५ ३६	० १५	५ ९	६ ४६	२३ १०	११ ५७ ४५	१७ २२ ४	१ २७ ४८ २०
३३ ५४	४ मं.	४१ ४८	” ० ५२	पु.	३८ ४३	” ८ ३८	ध्रु.	१५ ३३	” ११ २८	व.	१५ ३६	भ.	४१ ४८	प्रवर्ध	२४	१४	३०	२	१९	क.		१० ११	५ ९	६ ४७	२३ १३	११ ५७ ५७	१७ २६ ०	१ २८ ४५ ४१
३३ ५५	५ बु.	३४ ३५	सा. ६ ५६	श्लेषा	३३ ३०	सा. ६ ३३	व्या	६/५१ २५/२४	,,/रा. ४ ५१/५२	बव	८ ७	बा.	३४ ३५	रक्ष	२५	१५	३१	३	२०	सिं. ३३ ३०	सा. ६ ३३	११ १	५ ९	६ ४७	२३ १६	११ ५८ १०	१७ २९ १७	१ २९ ४३ १
३३ ५५	६ गु.	२८ ८	दि. ४ २४	म.	२१ ३	दि. ४ ४६	वज्र	५० ५३	,, १ ३०	कौ.	१ १५	तै.	२८/५४ ८/३५	मुशल	२६	१६	१	४	२१	सिं.		११ ४४	५ ९	६ ४	२३ १९	११ ५८ २२	१७ ३३ ५४	२ ० ४० २०
३३ ५६	७ शु.	२२ ३८	” २ १२	पूफ	२५ ३३	,, ३ २२	सि.	४४ ८	” १० ४८	व.	२२ ३८	भ.	५० १८	प्रवर्ध	२७	१७	२	५	२२	कं. ३१ ५१	रा. ९ ५	१२ २३	५ ९	६ ४८	२३ २१	११ ५८ ३६	१७ ३७ ५०	२ १ ३७ ३०
३३ ५६	८ श.	१८ १५	” १२ २७	उफ	२३ १०	,, २ २५	व्य.	२८ २३	” ८ ३०	बव	१८ १५	बा.	४६ ३०	उत्पात	२८	१८	३	६	२३	कं.		१ ०	५ १०	६ ४८	२३ २३	११ ५८ ४९	१७ ४१ ४७	२ २ ३४ ५८
३३ ५६	९ र.	१५ ३	,, ११ ११	ह.	२२ ०	., १ ५८	वरि	३३ ३५	सा. ६ ३६	कौ.	१५ ३	तै.	४३ ५७	मानस	२९	१९	४	७	२४	तु. ५१ ५४	रा. १ ५६	१ ३५	५ १०	६ ४८	२३ २५	११ ५९ २	१७ ४५ ४३	२ ३ ३२ १४
३३ ५७	१० चं.	१३ १०	., १० २६	चि.	२२ ८	,, २ १	परि	२९ ५३	दि. ५ ७	गर	१३ १०	व.	४२ ४५	मुद्गर	३०	१७	५	८	२५	तु.		२ १०	५ १०	६ ४९	२३ २६	११ ५९ १५	१७ ४९ ४०	२ ४ २९ ३०
३३ ५७	११ मं.	१२ ३५	” १० १२	स्वा	२३ ३३	,, २ ३५	शि.	२७ १३	,, ४ ३	भ.	१२ ३५	बव.	४३ २२	केतु	३१	२१	६	९	२६	तु.		२ ४७	५ १०	६ ४९	२३ २६	११ ५९ २८	१७ ५३ ३६	२ ५ २६ ४५
३३ ५७	१२ बु.	१३ १५	” १० २८	वि.	२६ १०	,, ३ ३८	सि.	२५ ३०	” ३ २२	बा.	१३ १५	कौ.	४४ ४	धाता	१	२२	७	१०	२७	वृ. १० २४	दि. १ २०	३ २७	५ १०	६ ४९	२३ २७	११ ५९ ४१	१७ ५७ ३३	२ ६ २४ ०
३३ ५७	१३ गु.	१५ १०	” ११ १४	अनु	२९ ५८	,, ५ ९	सा.	२४ ४५	,, ३ ४	तै.	१५ १०	ग.	४६ ३१	आनन्द	२	२३	८	११	२८	वृ.		४ १६	५ ११	६ ४९	२३ २६	११ ५९ ५४	१८ १ २९	२ ७ २१ १४
३३ ५७	१४ शु.	१८ ८	,, १२ २६	ज्ये.	३४ ४५	सा. ७ ५	शुभ	२४ ४८	,, ३ ६	व.	१८ ८	भ.	५० १	चर	३	२४	९	१२	२९	ध. ३४ ४५	सा. ७ ५	४ ५६	५ ११	६ ४९	२३ २६	१२ ० ७	१८ ५ २६	२ ८ १८ २७
३३ ५६	१५ श.	२२ ८	,, २ २	मू.	४० ३५	रा. ९ २५	शु.	२५ ४०	,, ३ २७	ब.	२२ ८	बा.	५४ २८	गद	४	२५	१०	१३	३०	ध.		७ २	५ ११	६ ५०	२३ २५	१२ ० २०	१८ ९ २३	२ ९ १५ ४०

श्री शुभ संवत् २०४० शके १९०५ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः

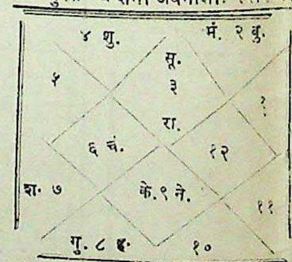
१२ जून से २५ जून १९८३ ई० तक। उत्तरायणम्। उत्तर गोलः। ग्रीष्मर्तुः।G

चन्द्रदर्शनम् । मु. १५। फ. महर्घता । करिदिनम् ।दशाश्वमेधस्नानारम्भः । G राष्ट्रिय आषाढ़ः ।
रमज़ान १ । व्य० प्र० ३६।२० । सर्वार्थसिद्धि योगः ४४।२३ उ० । यायीजयद योगः ४४।२३ या० । C [illegible] ३८।४८ या० ।
भ० १५।३६ (दि, ११।२३) उ० ४१।४८ (रा० ९।५२) या० । वैनायकी ४ । मासान्तः । [illegible] नि० ८।३ । स्थायी C
मिथुनेऽर्कः १७।४८ (दि. १२।१६) । मु० १५ । फ० महर्घता । सं. ज. पु. का० १७।४८ (दि. १२।१६) उ० ३३।४८ (रात्रौ W
आश्लेषासु शुक्रः ४०।८ । W ६।४०) या० । श्रुतपञ्चमी (जैन)
भ० २२।३८ (दि. २।१२) उ० ५०।१८ (रा. ११।६) या० । रोहिण्यां बुधः ११।८ । सर्वार्थसिद्धि योगः २५।३३ या० ।
अन्नपूर्णा ८ ।
मिथुने भौमः २३।४३ । सर्वार्थ सिद्धि योगः २२।० य० । अमृत सिद्धि योगः २२।० या० । यायीजयद योगः १५।३ या० ।
भ० ४२।४५ (रा० १०।१६) उ० । गंगा दशहरा १० । A चन्द्रनाडी, साधारणवृष्टि । राष्ट्रिय आषाढ़ः ।
भ० १२।३५ (दि० १०।१२ या०) । सायन कर्कऽर्कः ५८।४३ । निर्जला ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
प्रदोष १३ व्रतम् । आर्द्रायामर्कः १६।४८ (दि. ११।५३) स्त्री नपु. योगः । वाहन जम्बुकः । [illegible] । सं. श्रु. योगः A
सावित्री व्रतारम्भः । सर्वार्थसिद्धियोगः २६।५८ या०।यायी जयद योगः १५।१० या. ।
भ० १८।८ (दि० १२।२६) उ० ५०।१ (रा. ११।११) या० । व्रताय १५ । वै० प्र० २६।४० । स्थायी जयद योगः [illegible] या० ।
मृगशीर्षे बुधः ११।४० । दक्षिणात्यानां वटसावित्री व्रतम् । मन्वादिः १५ । वै० नि० ७।३० ।

प्रातः स्टैं. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पस्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ र.	२ ७ ५२ ३४	१ २४ ३५ ५१	१ ३ ३१ १	७ १० ३३ ५७	३ १२ ८ ५३	६ ४ २४ ३५	२ १ ३९ ३१	७ १२ ५५ २	८ ४ २६ ४६
३ चं.	२ २२ ३६ ३५	१ २५ १७ ७	१ ४ ४२ २३	७ १० २६ ५५	३ १३ ७ ५३	६ ४ २२ ४५	२ १ ३६ २८	७ १२ ५२ ३९	८ ४ २५ १०
४ मं.	३ ७ २२ ५५	१ २५ ५८ २०	१ ५ ५६ ५१	७ १० १९ ५७	३ १४ ६ ३०	६ ४ २१ ०	२ १ ३३ १७	७ १२ ५० १७	८ ४ २३ ३३
५ बु.	३ २२ ४ २३	१ २६ ३९ ३०	१ ७ १४ ३१	७ १० १३ ५	३ १५ ४ ४१	६ ४ १९ २२	२ १ ३० ७	७ १२ ४७ ५६	८ ४ २२ ५७
६ गु.	४ ६ ३५ ३२	१ २७ २० ३७	१ ८ ३४ २१	७ १० ६ १८	३ १६ २ २८	६ ४ १७ ४६	२ १ २६ ५६	७ १२ ४५ ३६	८ ४ २० ३०
७ शु.	४ २० ५२ १६	१ २८ १ ४१	१ ९ ५९ १६	७ ९ ५८ ३७	३ १६ ५९ ४७	६ ४ १६ २१	२ १ २३ ४५	७ १२ ४३ १७	८ ४ १८ ४३
८ श.	५ ४ ५२ ५	१ २८ ४२ ४३	१ ११ २६ २४	७ ९ ५३ २	३ १७ ५६ ४०	६ ४ १४ ५६	२ १ २० ३४	७ १२ ४० ५९	८ ४ १७ ५
९ र.	५ १८ ३४ ३	१ २९ २३ ४१	१ १२ ५६ ३३	७ ९ ४६ ३२	३ १८ ५३ ४	६ ४ १३ ४३	२ १ १७ २३	७ १२ ३८ ४३	८ ४ १५ २८
१० चं.	६ १ ५८ १६	२ ० ४ ३७	१ १४ २९ ४६	७ ९ ४० १०	३ १९ ४८ ५९	६ ४ १२ ३२	२ १ १४ १३	७ १२ ३६ २८	८ ४ १३ ५१
११ मं.	६ १५ ५ ४९	२ ० ४५ ३०	१ १६ ६ ०	७ ९ ३३ ५४	३ २० ४४ २३	६ ४ ११ २८	२ १ ११ २	७ १२ ३४ १४	८ ४ १२ १३
१२ बु.	६ २७ ५७ १५	२ १ २६ २१	१ १७ ४५ १४	७ ९ २७ ४५	३ २१ ३९ १६	६ ४ १० २९	२ १ ७ ५१	७ १२ ३२ १	८ ४ १० ३६
१३ गु.	७ १० ३६ ९	२ २ ७ ९	१ १९ २७ २५	७ ९ २१ ४४	३ २२ ३३ ३६	६ ४ ९ ३६	२ १ ४ ४०	७ १२ २९ ५०	८ ४ ८ ५९
१४ शु.	७ २३ २ ५	२ २ ४७ ५४	१ २१ १२ ३१	७ ९ १५ ४६	३ २३ २७ २२	६ ४ ८ ४१	२ १ १ ३०	७ १२ २७ ४०	८ ४ ७ २१
१५ श.	८ ५ १७ १८	२ ३ २८ ३७	१ २३ ० २८	७ ९ १० ३	३ २४ २० ३४	६ ४ ८ ८	२ ० ५८ १९	७ १२ २५ ३२	८ ४ ५ ४५

जेष्ठ शुक्ल ८ शनौ अयनांशाः २३।३७।१६



जेष्ठ शुक्ल १५ शनौ अयनांशाः २३।३७।१७



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्न सारिणी (स्टैण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम्

	१ र.	३ चं.	४ मं.	५ बु.	रा.	६ गु.	७ शु.	८ श.	९ र.	१० चं.	११ मं.	१२ बु.	१३ गु.	१४ शु.	१५ श.
वृ.	५ २४	५ २०	५ १५	५ १२	मि.	७ २२	७ १८	७ १५	७ ११	७ ७	७ ३	६ ५८	६ ५५	[illegible]	[illegible]
मि.	७ ३८	७ ३४	७ २९	७ २६	क.	९ ४०	९ ३६	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २०	९ १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	९ ५६	९ ५२	९ ४७	९ ४४	सिं.	११ ५५	११ ५१	११ ४८	११ ४४	११ ४०	११ ३५	११ ३१	११ २८	[illegible]	[illegible]
सिं.	१२ ११	१२ ७	१२ २	११ ५९	कं.	२ ८	२ ४	२ १	१ ५७	१ ५३	१ ४८	१ ४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	२ २४	२ २०	२ १५	२ १२	तु.	४ २५	४ २१	४ १८	४ १४	४ १०	४ ५	४ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	४ ४१	४ ३७	४ ३२	४ २९	वृ.	६ ४३	६ ३९	६ ३६	६ ३२	६ २८	६ २३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	[illegible]
वृ.	६ ५९	६ ५५	६ ५०	६ ४७	ध.	८ ४९	८ ४५	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ २९	८ २५	८ २२	८ १९	८ १४
ध.	९ ५	९ १	८ ५६	८ ५३	म.	१० ३५	१० ३१	१० २८	१० २४	१० २०	१० १५	१० ११	१० ८	१० ५	१० ०
म.	१० ५१	१० ४७	१० ४२	१० ३९	कुं.	१२ ६	१२ २	११ ५९	११ ५५	११ ५१	११ ४६	११ ४२	११ ३९	११ ३६	[illegible]
कुं.	१२ २२	१२ १८	१२ १३	१२ १०	मी.	१ ३४	१ ३०	१ २७	१ २३	१ १९	१ १४	१ १०	१ ७	१ ४	[illegible]
मी.	१ ५०	१ ४६	१ ४१	१ ३८	मे.	३ १२	३ ८	३ ५	३ १	२ ५७	२ ५२	२ ४८	२ ४५	२ ४२	[illegible]
मे.	३ २८	३ २४	३ १९	३ १६	वृ.	५ ८	५ ४	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ४८	४ ४४	४ ४१	४ ३८	४ ३३

ज्येष्ठ शुक्ल १ रवौ दशहरास्नानप्रारम्भः । तदुक्तं काशीखण्डे । ज्येष्ठ मासे सित पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिम् । दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥ एवं सर्वासु तिथिषु क्रमस्नायी भवेन्नरः । आशुक्लदशमी तेन प्रतिजन्माघ- मुत्सृजेत् ॥ ज्येष्ठ शुक्ल १० दशहरा संज्ञिका । तदुक्तं ब्राह्मे । ज्येष्ठ मासे सित पक्षे दशमी हस्तसंयुता । हरते दश A

A [illegible]

आकाश दर्शन

ता. [illegible] बु. चं. यो. चं. से बु. [illegible] क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ४ मि. ३१ पर ।
ता. २०।६ [illegible] चं. यो. चं. से म. २ अं. १ क. [illegible] स्टैं. टा. दि. घं. ८ मि० १३ पर ।
ता. २२।६।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. १ अं. ११ क. द. स्टैं. टा. रा. घं. ४ मि. ३१ पर ।
ता. २३।६।८३ हृ. चं. यो. चं. से हृ. १ अं ४८ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ८ मि. १२ पर ।

श्री शुभ संवत् २०४० शके १९०५ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः

१२ जून से २५ जून १९८३ ई० तक। उत्तरायणम्। उत्तर गोलः। ग्रीष्मर्तुः।G

दि.मा. घं.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		स्टँ.टा. घं.	मि.	न.	घ.	प.		स्टँ.टा. घं.	मि.	यो.	घ.	प.		स्टँ.टा. घं.	सि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः
३३	५३	१	र.	५/५२	१०/१६	दि./रा.	७/४	१६/६	आ.	५०	१३	रा.	१	१४	ग.	३३	४५	मा.	६	३९	बव	५	१०	बा.	५१/५७	१२/२९	ध्वांक्ष
३३	५३	३	चं.	४९	३	,,	१२	५७	पुन	४४	२३	,,	१०	५४	वृ.	२४	३८	दि.	३	०	तै.	२३	२७	ग.	४१	३०	धूम्र
३३	५४	४	मं.	४१	४८	,,	९	५२	पु.	३८	४३	,,	८	३८	ध्रु.	१५	३३	,,	११	२८	व.	१५	३६	भ.	४१	४८	प्रवर्ध
३३	५५	५	बु.	३४	३५	सा.	६	५६	अश्ले	३३	३०	सा.	६	३३	व्या	६/५१	२४/२५	,,/रा.	८/४	५१/५२	बव	८	७	बा.	३४	३५	रक्ष
३३	५५	६	गु.	२८	८	दि.	४	२४	म.	२९	३	दि.	४	४६	वज्र	५०	५३	,,	१	३०	कौ.	१	१५	तै.	२८/५४	०/१५	मुशल
३३	५६	७	शु.	२२	३८	,,	२	१२	पू.फ	२५	३३	,,	३	२२	सि.	४४	८	,,	१०	४८	व.	२२	३८	म.	५०	१८	प्रवर्ध
३३	५६	८	श.	१८	१५	,,	१२	२७	उ.फ	२३	१०	,,	२	२५	व्य.	३८	२३	,,	८	३०	बव	१८	१५	बा.	४६	३०	उत्पात
३३	५६	९	र.	१५	३	,,	११	११	ह.	२२	०	,,	१	५८	वरि	३३	३५	सा.	६	३६	कौ.	१५	३	तै.	४३	५७	मानस
३३	५७	१०	चं.	१३	१०	,,	१०	२६	चि.	२२	८	,,	२	१	परि	२९	५३	दि.	५	७	गर	१३	१०	व.	४२	४५	मुद्गर
३३	५७	११	मं.	१२	३५	,,	१०	१२	स्वा	२३	३३	,,	२	३५	शि.	२७	१३	,,	४	३	भ.	१२	३५	बव.	४३	२२	केतु
३३	५७	१२	बु.	१३	१५	,,	१०	२८	वि.	२६	१०	,,	३	३८	सि.	२५	३०	,,	३	२२	बा.	१३	१५	कौ.	४४	४	धाता
३३	५७	१३	गु.	१५	१०	,,	११	१४	अनु	२९	५८	,,	५	९	सा.	२४	५५	,,	३	४	तै.	१५	१०	ग.	४६	३१	आनन्द
३३	५७	१४	शु.	१८	८	,,	१२	२६	ज्ये.	३४	४५	सा.	७	५	शुभ	२४	४८	,,	३	६	व.	१८	८	भ.	५०	१	चर
३३	५८	१५	श.	२२	८	,,	२	२	मू.	४०	३५	रा.	९	२५	शु.	२५	४०	,,	३	२७	ब.	२२	८	बा.	५४	२८	गद

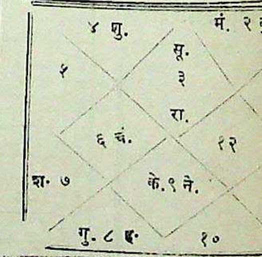
योगाः	रा. मि.	अं. ता.	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.		स्टँ.टा. घ.	मि.	च.अ. स्टँ.	टा.	सू.उ. स्टँ.	टा.	सू.अ. स्टँ.	टा.	र.का.उ. अं.	क. +	स्प. मध्याह्न का. स्टँ.टा. घ.	मि.	से.	साम्पा. काल घं.	मि.	से.	औ. स्पष्ट सू. रा.	अं.	क.	वि.
ध्वांक्ष	२२	१२	२८	२९	१७	मि.						८	१४	५	९	६	४६	२३	६	११	५७	३३	१७	१८	७	१	२६	५०	५९
धूम्र	२३	१३	२९	१	१८	क.	२०	५०	दि.	५	३६	०	१५	५	९	६	४६	२३	१०	११	५७	४५	१७	२२	४	१	२७	४८	२०
प्रवर्ध	२४	१४	३०	२	१९	क.						१०	११	५	९	६	४७	२३	१३	११	५७	५७	१७	२६	०	१	२८	४५	४१
रक्ष	२५	१५	३१	३	२०	सिं.	३३	३०	सा.	६	३३	११	१	५	०	६	४७	२३	१६	११	५८	१०	१७	२९	१७	१	२९	४३	१
मुशल	२६	१६	१	४	२१	सिं.						११	४४	५	९	६	४	२३	१९	११	५८	२३	१७	३३	५४	२	०	४०	२०
प्रवर्ध	२७	१७	२	५	२२	कं.	३१	५१	रा.	९	५	१२	२३	५	९	६	४८	२३	२१	११	५८	३६	१७	३७	५०	२	१	३७	३९
उत्पात	२८	१८	३	६	२३	कं.						१	०	५	१०	६	४८	२३	२३	११	५८	४९	१७	४१	४७	२	२	३४	५८
मानस	२९	१९	४	७	२४	तु.	५१	५४	रा.	१	५६	१	३५	५	१०	६	४८	२३	२५	११	५९	२	१७	४५	४३	२	३	३२	१४
मुद्गर	३०	१७	५	८	२५	तु.						२	१०	५	१०	६	४९	२३	२६	११	५९	१५	१७	४९	४०	२	४	२६	३०
केतु	३१	२१	६	९	२६	तु.						२	४७	५	१०	६	४९	२३	२६	११	५९	२८	१७	५३	३६	२	५	२६	४५
धाता	१	२२	७	१०	२७	वृ.	१०	२४	दि.	९	२०	३	२७	५	१०	६	४९	२३	२७	११	५९	४१	१७	५७	३३	२	६	२४	०
आनन्द	२	२३	८	११	२८	वृ.						४	१६	५	११	६	४९	२३	२६	११	५९	५४	१८	१	२९	२	७	२१	१४
चर	३	२४	९	१२	२९	ध.	३४	४५	सा.	७	५	४	५६	५	११	६	४९	२३	२६	१२	००	७	१८	५	२६	२	८	१८	२७
गद	४	२५	१०	१३	३०	ध.						७	२	५	११	६	५०	२३	२५	१२	००	२०	१८	९	२३	२	९	१५	४०

चन्द्रदर्शनम्। मु. १५। फ. महर्घता। करिदिनम्। दशास्वमेधस्नानारम्भः। G राष्ट्रिय आषाढः।
रमज़ान १। व्य० प्र० ३६।२०। सर्वार्थसिद्धि योगः ४४।२३ उ०। यायीजयद योगः ४४।२३ या०। Cजयदयोगः २८।४४ या०।
भ० १५।३६ (दि, ११।२३) उ० ४१।४८ (रा० ९।५२) या०। वैनायकी ४। मासान्तः। व्य० नि० ८।३। स्वाती C
मिथुनेऽर्कः १७।४८ (दि. १२।१६)। मु० १५। फ० महर्घता। सं. ज. पु. का० १७।४८ (दि. १२।१६) उ० ३३।४८ (सा० W
आश्लेषासु शुक्रः ४०।८। W ६।४०) या०। धूमावती जयन्ती (जैन
भ० २२।३८ (दि. २।१२) उ० ५०।१८ (रा. ९।६) या०। रोहिण्यां बुधः १।१८। सर्वार्थसिद्धि योगः २५।३३ या०।
अन्नपूर्णा ८।
मिथुने भौमः २३।४३। सर्वार्थ सिद्धि योगः २२।० य ०। अमृत सिद्धि योगः २२।० या०। यायीजयद योगः [illegible] या०।
भ० ४२।४५ (रा० १०।१६) उ०। गंगा दशहरा १०। A चण्डनाडी, साम्राज्यसृष्टिः। राष्ट्रिय आषाढः।
भ० १२।३५ (दि० १०।१२ या०)। सायन कर्केऽर्कः ५८।४३। निर्जला ११ व्रतं सर्वेषाम्।
प्रदोष १३ व्रतम्। आर्द्रायामर्कः १६।४८ (दि. ११।५३) स्त्री नपु. योगः। वाहनं जम्बुकः। [illegible] A
सावित्री व्रतारम्भः। सर्वार्थ सिद्धि योगः २६।५८ या०। यायी जयद योगः २५।१० या.।
भ० १८।८ (दि० १२।२६) उ० ५०।१ (रा. १।११) या०। व्रताय १५। वै० प्र० २६।४०। स्थायी जयदयोग: [illegible] या०।
मृगशीर्षे बुधः ११।४०। दक्षिणात्यानां वटसावित्री व्रतम्। मन्वादिः १५। वै० नि० ७।३०।

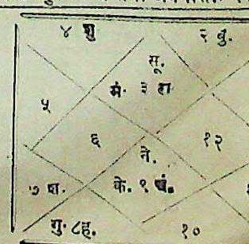
प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पस्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति. वा.	सू. रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेप्च्यून रा.	अं.	क.	वि.
१ र.	२	७	५२	३४	१	२४	३५	५१	१	३	३१	१	७	१०	३३	५७	३	१२	८	५३	६	४	२४	३५	२	१	३९	३९	७	१२	५५	२	८	४	२६	४६
३ चं.	२	२२	३६	३५	१	२५	१७	७	१	४	४२	२३	७	१०	२६	५५	३	१३	७	५३	६	४	२२	४५	२	१	३६	२८	७	१२	५२	३९	८	४	२५	१०
४ मं.	३	७	२२	५५	१	२५	५८	२०	१	५	५६	५१	७	१०	१९	५७	३	१४	६	३०	६	४	२१	०	२	१	३३	१७	७	१२	५०	१७	८	४	२३	३३
५ बु.	३	२२	४	२३	१	२६	३९	३०	१	७	१४	३१	७	१०	१३	५	३	१५	४	४१	६	४	१९	२२	२	१	३०	७	७	१२	४७	५६	८	४	२२	५७
६ गु.	४	६	३५	३२	१	२७	२०	३७	१	८	३५	२१	७	१०	६	१८	३	१६	२	२८	६	४	१७	४६	२	१	२६	५६	७	१२	४५	३६	८	४	२०	३०
७ शु.	४	२०	५२	१६	१	२८	१	४१	१	९	५०	१६	७	९	५८	३७	३	१६	५९	४७	६	४	१६	२१	२	१	२३	४५	७	१२	४३	१७	८	४	१८	४३
८ श.	५	४	५२	५	१	२८	४२	४३	१	११	२६	२४	७	९	५३	२	३	१७	५६	४०	६	४	१४	५६	२	१	२०	३४	७	१२	४०	५९	८	४	१७	५
९ र.	५	१८	३४	३	१	२९	२३	४१	१	१२	५६	३३	७	९	४६	३२	३	१८	५३	४	६	४	१३	४३	२	१	१७	२३	७	१२	३८	४३	८	४	१५	२८
१० चं.	६	१	५८	१६	२	०	४	३७	१	१४	२९	४६	७	९	४०	१०	३	१९	४८	५९	६	४	१२	३२	२	१	१४	१३	७	१२	३६	२८	८	४	१३	५१
११ मं.	६	१५	५	४९	२	०	४५	३०	१	१६	६	०	७	९	३३	५४	३	२०	४४	२३	६	४	११	२८	२	१	११	२	७	१२	३४	१४	८	४	१२	१३
१२ बु.	६	२७	५७	१५	२	१	२६	२१	१	१७	४५	१४	७	९	२७	४५	३	२१	३९	१६	६	४	१०	२९	२	१	७	५१	७	१२	३२	१	८	४	१०	३६
१३ गु.	७	१०	३६	९	२	२	७	९	१	१९	२७	२५	७	९	२१	४४	३	२२	३३	३६	६	४	९	३६	२	१	४	४०	७	१२	२९	५०	८	४	८	५९
१४ शु.	७	२३	२	५	२	२	४७	५४	१	२१	१२	३१	७	९	१५	४६	३	२३	२७	२२	६	४	८	४९	२	१	१	३०	७	१२	२७	४०	८	४	७	२१
१५ श.	८	५	१७	१८	२	३	२८	३७	१	२३	०	२८	७	९	१०	३	३	२४	२०	३४	६	४	८	८	२	०	५८	१९	७	१२	२५	३२	८	४	५	४५

जेष्ठ शुक्ल ८ शनौ अयनांशाः २३।३७।१६



जेष्ठ शुक्ल १५ शनौ अयनांशाः २३।३७।१७



गुरुः पूर्वस्याम्

॥ दैनिक लग्न सारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम) ॥

शुक्रः पश्चिमायाम्

	१ र.	३ चं.	४ मं.	५ बु.	रा.	६ गु.	७ शु.	८ श.	९ र.	१० चं.	११ मं.	१२ बु.	१३ गु.	१४ शु.	१५ श.
वृ.	५ २४	५ २०	५ १५	५ १२	मि.	७ २२	७ १८	७ १५	७ ११	७ ७	७ २	६ ५८	६ ५५	[illegible]	[illegible]
मि.	७ ३८	७ ३४	७ २९	७ २६	क.	९ ४०	९ ३६	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २०	९ १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	९ ५६	९ ५२	९ ४७	९ ४४	सिं.	११ ५५	११ ५१	११ ४८	११ ४४	११ ४०	११ ३५	११ ३१	११ २८	[illegible]	[illegible]
सिं.	१२ ११	१२ ७	१२ २	११ ५९	कं.	२ ८	२ ४	२ १	१ ५७	१ ५३	१ ४८	१ ४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	२ २४	२ २०	२ १५	२ १२	तु.	४ २५	४ २१	४ १८	४ १४	४ १०	४ ५	४ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	४ ४१	४ ३७	४ ३२	४ २९	वृ.	६ ४३	६ ३९	६ ३६	६ ३२	६ २८	६ २३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
वृ.	६ ५९	६ ५५	६ ५०	६ ४७	ध.	८ ४९	८ ४५	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ २९	८ २५	८ २२	८ १९	[illegible]
ध.	९ ५	९ १	८ ५६	८ ५३	म.	१० ३५	१० ३१	१० २८	१० २४	१० २०	१० १५	१० ११	१० ८	१० ५	१० ०
म.	१० ५१	१० ४७	१० ४२	१० ३९	कुं.	१२ ६	१२ २	११ ५९	११ ५५	११ ५१	११ ४६	११ ४२	११ ३९	११ ३६	[illegible]
कुं.	१२ २२	१२ १८	१२ १३	१२ १०	मी.	१ ३४	१ ३०	१ २७	१ २३	१ १९	१ १४	१ १०	१ ७	१ ४	[illegible]
मी.	१ ५०	१ ४६	१ ४१	१ ३८	मे.	३ १२	३ ८	३ ५	३ १	२ ५७	२ ५२	२ ४८	२ ४५	२ ४२	२ ३८
मे.	३ २८	३ २४	३ १९	३ १६	वृ.	५ ८	५ ४	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ४८	४ ४४	४ ४१	४ ३८	४ ३३

ज्येष्ठ शुक्ल १ रवौ दशहरास्नानप्रारम्भः। तदुक्तं काशीखण्डे। ज्येष्ठ मासे सित पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिम्। दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः॥ एवं सर्वासु तिथिषु क्रमस्नायी भवेन्नरः। आशुक्लदशमी तेन प्रतिजन्मोपमुत्सृजेत्॥ ज्येष्ठ शुक्ल १० दशहरा संज्ञका। तदुक्तं ब्राह्मे। ज्येष्ठ मासे सित पक्षे दशमी हस्तसंयुता। हरते दश A

A पापानि [illegible]।

आकाश दर्शन

ता. १२।६।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. [illegible] क. द. स्टँ. टा. दि. घं. ४ मि. ३१ पर।

ता. २०।६।८३ श. चं. यो. चं. से श. २ अं. १ क. द. स्टँ. टा. दि. घं. ८ मि० १३ पर।

ता. २२।६।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. १ अं. १२ क. द. स्टँ. टा. रा. घ. ४ मि. ११ पर।

ता. २३।६।८३ ह. चं. यो. चं. से ह. १अं ४८ क. द. स्टँ. टा. दि. घं. ८ मि. ३२ पर।

१४

दि. मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टँ. टा. घं. मि.	न.	घ. प.	स्टँ. टा. घं. मि.	यो.	घ. प.	स्टँ. टा. घं. मि.	क.	घ. प.	क.	घ. प.	योगा	रा. ता.	अं. ता.	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ. प.	स्टँ. टा. घं. मि.	वं. उ. स्टँ. टा.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	र. क्रां. उ. +अं. क.	स्प. मध्याह्न का स्टँ. टा.	साम्पा. काल घं. मि. से.	औदा. स्प. सू. रा. अं. क. वि.	श्री शुभसंवत्२०४०शके१९०५आषाढ़कृष्णपक्षः। २६ जून से १० जुलाई सन् १९८३ ई० तक। उत्तरायणम्। उत्तरगोलः ग्रीष्मर्तुः A
३३ ५६	१ र.	२७ ०	दि. ३ ५९	पूषा	४७ १०	रा. १२ ३	ब्र.	२७ १३	दि. ४ ४	कौ.	२७ ०	तै.	५९ ४३	शुभ	५	२६	११	१४	१	ध.			७ ५३	५ ११	६ ५०	२३ २२	१२ ० ३३	१८ १३ १९	२ १० १२ ५३	वटसावित्रीव्रतपारणम्। सर्वार्थसिद्धि योगः ४७।१० उ.। Aराष्ट्रिय आषाढः।
३३ ५६	२ चं.	३२ ३३	" ६ १३	उषा	५४ २०	" २ ५६	धृ.	२९ १५	" ४ ५४	ग.	३२ ३३	व.	६० ०	मृत्यु	६	२७	१२	१५	२	म.	४ १	दि. ६ ४८	८ ४०	५ १२	६ ५०	२३ २१	१२ ० ४६	१८ १७ १६	२ ११ १० ६	मृत्यु योगः।
३३ ५५	३ मं.	३८ ३३	रा. ८ ३७	श्र.	६० ०	× × ×	वै.	३१ ४०	,, ५ ५२	व.	५ ३१	भ.	३८ ३३	लुम्ब	७	२८	१३	१६	३	म.			० २२	५ १२	६ ५०	२३ १९	१२ ० ५८	१८ २१ १२	२ १२ ७ १०	भ. ५।३१ (दि. ७।२४) उ. ३८।३३ (रा. ८।३७) या.। मिथुनेबुधः ४०।५२। स्थायीजयद योगः ३८।३३ उ.।
३३ ५५	४ बु.	४४ ३८	,, ११ ३	श्र.	१ १०	दि. ५ ५६	वि.	३४ १०	सा. ६ ५२	ब.	११ ३७	बा.	४४ ३८	छत्र	८	२९	१४	१७	४	कुं.	२५ ३३	रा. ७ २५	१० १	५ १२	६ ५०	२३ १६	१२ १ १०	१८ २५ ९	२ १३ ४ ३२	आर्द्रायांभौमः ४३।३८। बुधास्तः पूर्वस्याम् ३४।१०। संकष्ट ४।
३३ ५४	५ गु.	५० ३०	" १ २५	ध.	९ २०	,, ८ ५७	प्री.	३६ ३३	रा. ७ ५०	कौ.	१७ ३८	तै.	५० ३०	श्रीवत्स	९	३०	१५	१८	५	कुं.			१० ३६	५ १३	६ ५०	२३ १३	१२ १ २२	१८ २९ ५	२ १४ १ ४४	यायीजयद योगः ९।२० या.।
३३ ५३	६ शु.	५५ ४०	,, ३ २९	शत.	१६ २५	, ११ ४७	आ.	३८ २८	,, ८ ३६	ग.	२३ १२	व.	५५ ४०	सौम्य	१०	१	१६	१९	६	कुं.			११ १०	५ १३	६ ५०	२३ १०	१२ १ ३४	१८ ३३ ३	२ १४ ५८ ५६	भ.५५।४०(रा. ३।२९)उ.। जुलाई ७। आर्द्रायांबुधः ५७।१०। मघासुसिंहेच शुक्रः ४२।१३। मार्गीशनिः ३१।१०।
३३ ५३	७ श.	५९ ४३	प्रा. ५ ६	पूभा	२२ ४३	,, २ १८	सौ.	३९ ३५	,, ९ ३	भ.	२७ ५२	ब.	५९ ४३	कालदण्ड	११	२	१७	२०	७	मी.	६ १४	दि. ७ ४३	११ ४२	५ १३	६ ५०	२३ ६	१२ १ ४६	१८ ३६ ५८	२ १५ ५६ ८	भ. २७।५२ (दि. ४।२२) या.। यायीजयद योगः २२।४३ उ.।
३३ ५२	८ र.	६० ०	× × ×	उभा.	२७ ४३	,, ४ १९	शो.	३९ ३८	,, ९ ५	बा.	३१ ११	कौ.	६० ०	सुस्थिर	१२	३	१८	२१	८	मी.			१२ १४	५ १४	६ ५०	२३ १	१२ १ ५७	१८ ४० ५५	२ १६ ५८ २०	काल ८। शीतला ८। सर्वार्थसिद्धि योगः २७।४३ या.।
३३ ५१	८ चं.	२ १५	दि. ६ ८	रे.	३१ १०	,, ५ ४२	अ.	३८ २५	,, ८ ३६	कौ.	२ १५	तै.	३२ ५३	मातङ्ग	१३	४	१९	२२	९	मे.	३१ १०	दि. ५ ४२	१२ ४७	५ १४	६ ५०	२२ ५७	१२ २ ८	१८ ४४ ५२	२ १७ ५० ३३	मातङ्ग योगः। [B व्रतं स्मार्तानाम्। सर्वार्थसिद्धि योगः [illegible] या.।
३३ ५०	९ मं.	३ ३	" ६ २७	अ.	३२ ४८	सा. ६ २१	सु.	३५ ४३	,, ७ ३१	ग.	३ ३	व.	३२ ४२	अमृत	१४	५	२०	२३	१०	मे.			१ १३	५ १४	६ ५०	२२ ५२	१२ २ १९	१८ ४८ ४८	२ १८ ४७ ४६	भ. ३२।४२ (दि. ६।१९) उ.। सर्वार्थसिद्धि योगः ३२।४८ या.। अमृतसिद्धि योगः ३२।४८ या.।
३३ ४९	१० बु.	१/५६ ५४/२८	,,/रा. ६/४ ०/४७	भ.	३२ ३०	दि. ६ १५	धृ.	३१ २३	दि. ५ ४८	भ.	१ ५३	वव	३०/५८	काण	१५	६	२१	२४	११	वृ.	४७ ११	रा. १२ ७	२ ३	५ १५	६ ५०	२२ ४६	१२ २ ३०	१८ ५२ ४५	२ १९ ४५ ०	भ. १।५३ (दि. ६।१०) या.। पुनर्वस्वोऽर्कः १५।४३ (दि. ११।३२)। [illegible] A
३३ ४८	१२ गु.	५४ ०	,, २ ५१	कृ.	३० ३२	, ५ २४	शू.	२५ ३८	" ३ ३०	कौ.	२६ ३९	तै.	५४ ०	लुम्ब	१६	७	२२	२५	१२	वृ.			२ ४१	५ १५	६ ५०	२२ ४०	१२ २ ४१	१८ ५६ ४१	२ २० ४२ २४	योगिनी ११ व्रतं वैष्णवानाम्। [A नं. योगः। [illegible] B
३३ ४७	१३ शु.	४७ ३८	,, १२ १८	रो.	२६ ३५	,, ३ ५३	गं.	१८ २८	,, १२ ३८	ग.	२१ ०	व.	४७ ३८	मित्र	१७	८	२३	२६	१३	मि.	५४ ७	रा. २ ५४	३ ४३	५ १५	६ ५०	२२ ३४	१२ २ ५०	१९ ० ३८	२ २१ ३९ २८	भ. ४७।३८ (रा. १२।१८) उ.। पुनर्वस्वोर्बुधः १०।८। प्रदोष १३ व्रतम्। [illegible] C
३३ ४५	१४ श.	३९ ५५	,, ९ १४	मृ.	२१ २०	,, १ ४८	वृ.	१० ३	,, ० १७	भ.	१३ ५५	श.	३९ ५५	वज्र	१८	९	२४	२७	१४	मि.			३४ ४३	५ १६	६ ५०	२२ २७	१२ २ ५९	१९ ४ ३४	२ २२ ३६ ४२	भ. १३।५५ (दि. १०।५०) या.। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्। [C [illegible]
३३ ३०	३० र.	३१ २०	दि. ५ ४८	आर्द्रा	१५ ८	, ११ १९	ध्रु.	०/४० ४५/४०	मा./रा. ५/१ ३४/५६	च.	५ ४२	ना.	३१/५६ २०/५६	ध्वांक्ष	१९	१०	२५	२८	१५	क.	५४ १५	रा. २ ५८	अ६ ५८	५ १६	६ ५०	२२ २०	१२ ३ ८	१९ ८ ३१	२ २३ ३३ ५६	दर्शः।

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि.२९ कालिका: स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

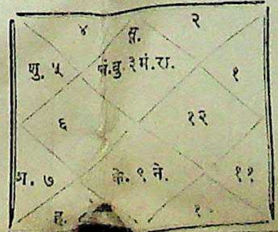
ति. वा.	चन्द्रः रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ र.	८ १७ २३ २५	२ ४ ९ १७	१ २४ ५१ १२	७ ९ ४ २३	३ २५ १३ १०	६ ४ ७ ३२	२ ० ५५ ८	७ १२ २३ २५	८ ४ ४ ८
२ चं.	८ २९ २२ १६	२ ४ ४९ ५४	१ २६ ४४ ३७	७ ८ ५८ ५२	३ २६ ५ ४	६ ४ ७ २	२ ० ५१ ५७	७ १२ २१ १७	८ ४ २ ३२
३ मं.	९ ११ १५ ५२	२ ५ ३० २९	१ २८ ४० ३७	७ ८ ५३ २९	३ २६ ५६ २८	६ ४ ६ ३९	२ ० ४८ ४६	७ १२ १९ १७	८ ४ ० ५६
४ बु.	९ २३ ६ ३९	२ ६ ११ २	२ ० ३९ ३	७ ८ ४८ १५	३ २७ ४७ ८	६ ४ ६ २१	२ ० ४५ ३५	७ १२ १७ १६	८ ३ ५९ २०
५ गु.	१० ४ ५७ २५	२ ६ ५१ २२	२ २ ३९ ४४	७ ८ ४३ ८	३ २८ ३७ ७	६ ४ ६ ८	२ ० ४२ २४	७ १२ १५ १६	८ ३ ५७ ४४
६ शु.	१० १६ ५१ २९	२ ७ ३२ ०	२ ४ ४२ ३१	७ ८ ३८ १०	३ २९ २६ २३	६ ४ ६ २	२ ० ३९ १४	७ १२ १३ १८	८ ३ ५६ [illegible]
७ श.	१० २८ ५२ ३५	२ ८ १२ २५	२ ६ ४७ १०	७ ८ ३३ २१	४ ० १४ ५६	६ ४ ६ २	२ ० ३६ ३	७ १२ ११ २२	८ ३ ५४ ३४
८ र.	११ ११ ४ ४८	२ ८ ५२ ४८	२ ८ ५३ २५	७ ८ २८ ४२	४ १ २ ४२	६ ४ ६ ८	२ ० ३२ ५२	७ १२ ९ २८	८ ३ ५२ ५८
८ चं.	११ २३ ३२ २२	२ ९ ३३ ११	२ ११ १ २	७ ८ २४ ११	४ १ ४९ ४२	६ ४ ६ २०	२ ० २९ ४१	७ १२ ७ ३६	८ ३ ५१ २५
९ मं.	० ६ १९ २८	२ १० १३ २६	२ १३ ९ ४३	७ ८ १९ ५०	४ २ ३५ ५२	६ ४ ६ ३७	२ ० २६ ३१	७ १२ ५ ४५	८ ३ ४९ ५२
१० बु.	० १९ २९ २९	२ १० ५३ ४२	२ १५ २२ ११	७ ८ १५ ३८	४ ३ २१ १२	६ ४ ७ १	२ ० २३ २०	७ १२ ३ ५७	८ ३ ४८ १९
१२ गु.	१ ३ १५ ९	२ ११ ३३ ५५	२ १७ २९ ७	७ ८ ११ ३६	४ ४ ५ ३९	६ ४ ७ ३०	२ ० २० ९	७ १२ २ ११	८ ३ ४६ ४६
१३ शु.	१ १७ ३ १२	२ १२ १४ ६	२ १९ ३२ २८	७ ८ ७ ४४	४ ४ ४९ ११	६ ४ ८ ६	२ ० १६ ५८	७ १२ ० २७	८ ३ ४४ १५
१४ श.	२ १ ३४ १३	२ १२ ५४ १५	२ २१ ४१ २२	७ ८ ४ १	४ ५ ३१ ४९	६ ४ ८ ४७	२ ० १३ ४७	७ १२ ५८ ४५	८ ३ ४३ ४३
३० र.	२ १६ २२ १	२ १३ ३४ २१	२ २३ ५१ ५	७ ८ ० २८	४ ६ १३ २४	६ ४ ९ ३४	२ ० १० ३५	७ १२ ५७ ६	८ ३ ४२ १३

आषाढ़ कृष्ण ८ चन्द्रे अयनांशाः २३।३७।१८



मार्गी शनिः ६।४।६

आषाढ़ कृष्ण ३ रवौ अयनांशाः २३।३७।२०



गुरुः पूर्वस्याम्

॥ दैनिक लग्नसारिणी ॥ (स्टॅंडर्ड टाइम) शुक्रः पश्चिमायाम्।

रा.	१ र.	२ चं.	३ मं.	४ बु.	५ गु.	६ शु.	७ श.	८ र.	८ चं.	९ मं.	१० बु.	१२ गु.	१३ शु.	१४ श.	३० र.
मि.	६ ४३	६ ४०	६ ३५	६ ३१	६ २८	६ २३	६ १९	६ १५	६ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	९ १	८ ५८	८ ५२	८ ४९	८ ४६	८ ४१	८ ३७	८ ३३	८ २९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	११ १६	११ १३	११ ८	११ ४	११ ११	१० ५६	१० ५२	१० ४८	१० ४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	१ २९	१ २६	१ २१	१ १७	१ १४	१ ९	१ ५	१ १	१२ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	३ ४६	३ ४३	३ ३८	३ ३४	३ ३१	३ २६	३ २२	३ १८	३ १४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	६ ४	६ १	५ ५६	५ ५२	५ ४९	५ ४४	५ ४०	५ ३६	५ ३२	५ २८	५ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
ध.	८ १०	८ ७	८ २	७ ५८	७ ५५	७ ५०	७ ४६	७ ४२	७ ३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	९ ५६	९ ५३	९ ४८	९ ४४	९ ४१	९ ३६	९ ३२	९ २८	९ २४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	११ २७	११ २४	११ १९	११ १५	११ १२	११ ७	११ ३	१० ५९	१० ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० २२
मी.	१२ ५५	१२ ५२	१२ ४७	१२ ४३	१२ ४०	१२ ३५	१२ ३१	१२ २७	१२ २३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	२ ३३	२ ३०	२ २५	२ २१	२ १८	२ १३	२ ९	२ ५	२ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	४ २९	४ २६	४ २१	४ १७	४ १४	४ ९	४ ५	४ १	३ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३४

आषाढे मासि संक्रान्तौ यदि वर्षति वारिदः। तदा व्याधिभयं विद्याच्छ्रावणे शोभनं भवेत्॥ आषाढे कृष्णपक्षे च हाष्टम्यां रजनीपतिः। दृश्यते मेघमध्ये तु तदा पृथ्वी जलाप्लुता॥ तस्मिन्नेव यदा रात्रौ निर्मलं शशिमण्डलम्। दृश्यते छिद्रसंयुक्तं तदा वायुप्रवर्षणम्॥ आषाढकृष्णपक्षे तु निरभ्रं रविमण्डलम्। न वारिदाः प्रवर्षन्ति तदा [illegible]॥

आकाश दर्शन

ता. [illegible] बु. म. यो., मं. से बु. [illegible] अ. [illegible] क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. [illegible] मि. [illegible] पर।

ता. [illegible] बु. गु. परमयुति गु. से बु. १ अं. १० क. उत्तर, स्टँ. टा. रा. घं. ९ मि. १९ पर।

ता. ६।७।८३ मं. चं. यो., चं. से मं. ० अं. २१ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. १२ मि. ४४ पर।

ता. १०।७।८३ बु. चं. यो., चं. से बु. ९ अं. २२ क. उत्तर, स्टँ. टा. रा. घं. ७ मि. २२ पर।

श्रीशुभ संवत् २०४० शाके १९०५ आषाढ़ शुक्ल पक्षः। ११ जुलाई से २४ जुलाई १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। उत्तरगोलः। P

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टॅ. टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टॅ. टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टॅ. टा. स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगः
३३	४३	१	चं.	२२	१५	दि.	२	११	पुन.	८	१३	दि.	८	३४	ह.	४०	३५	रा.	९	३१	बव	२२	१५	वा.	४७	२९	धूम्र
३३	४१	२	मं.	१३	५	,,	१०	३१	पु.	२/४१	५/८	मा. रा.	५/२	४१/५८	व.	२०	२५	दि.	५	२७	कौ.	१३	५	तै.	३८	३५	प्रवर्ध
३३	४०	३	बु.	४/५१	१०/५०	,, रा.	६/६	४५/४३	म.	४७	५५	,,	१२	२८	सि.	२०	३५	,,	१	३२	ग.	४	१०	व.	२१/५६	४९/०	चर
३३	३८	५	गु.	४८	५५	,,	१२	५२	पूफा.	४२	४३	,,	१०	२३	व्य.	११	२८	,,	९	५३	बव	२२	१८	वा.	४८	५५	गद
३३	३६	६	शु.	४३	८	,,	१०	३४	उफा.	३८	४८	,,	८	५०	व.	४३/६	१८/३	,, रा.	६/६	४/१८	कौ.	१५	५१	तै.	४३	८	शुभ
३३	३४	७	श.	३९	०	,,	८	५५	ह.	३६	२८	,,	७	५४	शि.	५०	४३	,,	१	३६	ग.	१०	५१	व.	३९	०	मृत्यु
३३	३३	८	र.	३६	३५	,,	७	५७	चि.	३५	५०	,,	७	२९	सि.	४६	३०	,,	११	५५	भ.	७	३५	बव	३६	३५	पद्म
३३	३१	९	चं.	३५	५३	,,	७	४१	स्वा.	३६	५५	,,	८	६	सा.	४३	३८	,,	१०	४७	वा.	६	१	कौ.	३५	५३	छत्र
३३	२९	१०	मं.	३६	५३	,,	८	५	वि.	३९	४०	,,	९	१२	शु.	४२	८	,,	१०	११	तै.	६	१	ग.	३६	५३	श्रीवत्स
३३	२७	११	बु.	३९	१८	,,	९	४	अनु.	४३	१०	,,	१०	५३	शु.	४१	४३	,,	१०	२	व.	७	१६	भ.	३९	१८	सौम्य
३३	२५	१२	गु.	४३	२	,,	१०	२४	ज्ये.	४९	१३	,,	१	२	ब्र.	४२	१८	,,	१०	१६	बव	११	१	वा.	४३	२	कालदण्ड
३३	२३	१३	शु.	४७	४०	,,	१२	२६	मू.	५५	२८	,,	३	३३	ऐं.	४३	३५	,,	१०	४८	कौ.	१५	१४	तै.	४७	४०	सुस्थिर
३३	२१	१४	श.	५३	५	,,	२	३६	पूषा.	६०	०	,,	×	×	वै.	४५	३०	,,	११	३४	ग.	२०	१८	व.	५३	५	मातंग
३३	१९	१५	र.	५८	५५	,,	४	५७	पूषा.	२	२३	दि.	६	२०	वि.	४७	४३	,,	१२	२८	भ.	२५	५८	बव	५८	५५	शुभ

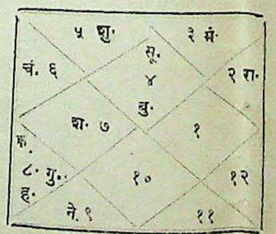
योगः	रा. मि.	सौ. ता.	ब. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टॅ. टा.	घं.	मि.	घं.	मि.	सू. उ. स्टॅ. टा. घं.	मि.	सू. अ. स्टॅ. टा. घं.	मि.	र. क्रा. अं.	क. +	मध्याह्न का. स्टॅ. टा. घं.	मि.	से.	साम्पा. का घं.	मि.	से.	औदयिक स्प. सू. रा.	अं.	कं.	वि.
धूम्र	२०	११	२६	२९	१६	क.						७	५८	५	१७	६	५०	२२	१३	१२	३	२७	१९	१२	२७	२	२४	३१	११
प्रवर्ध	२१	१२	२७	१	१७	सि.	५४	१३	रा.	२	५८	८	५२	५	१७	६	५०	२२	५	१२	३	२५	१९	१६	२४	२	२५	२८	२६
चर	२२	१३	२८	२	१८	सि.						९	३९	५	१८	६	४९	२१	५७	१२	३	३३	१९	२०	२१	२	२६	२५	४१
गद	२३	१४	२९	३	१९	कं.	५६	३७	रा.	३	५७	१०	२१	५	१८	६	४९	२१	४८	१२	३	४०	१९	२४	१७	२	२७	२२	५६
शुभ	२४	१५	३०	४	२०	कं.						११	०	५	१९	६	४९	२१	३९	१२	३	४७	१९	२८	१४	२	२८	२०	१२
मृत्यु	२५	१६	३१	५	२१	कं.						११	३६	५	१९	६	४९	२१	३०	१२	३	५३	१९	३२	१०	२	२९	१७	१८
पद्म	२६	१७	१	६	२२	तु.	५	५६	दि.	७	४१	१२	१२	५	१९	६	४८	२१	२०	१२	३	५९	१९	३६	७	३	०	१४	४४
छत्र	२७	१८	२	७	२३	तु.						१२	४८	५	२०	६	४८	२१	१०	१२	४	४	१९	४०	३	३	१	१२	०
श्रीवत्स	२८	१९	३	८	२४	वृ.	२३	५१	दि.	२	५२	१	२७	५	२०	६	४८	२०	५९	१२	४	९	१९	४४	०	३	२	९	१६
सौम्य	२९	२०	४	९	२५	वृ.						२	८	५	२१	६	४८	२०	४९	१२	४	१३	१९	४७	५६	३	३	६	३२
कालदण्ड	३०	२१	५	१०	२६	ध.	४०	१३	रा.	१	२	२	५३	५	२१	६	४७	२०	३८	१२	४	१६	१९	५१	५३	३	४	३	४८
सुस्थिर	३१	२२	६	११	२७	ध.						३	४१	५	२२	६	४७	२०	२६	१२	४	१९	१९	५५	५०	३	५	१	४
मातंग	१	२३	७	१२	२८	ध.						अ४	३२	५	२२	६	४७	२०	१४	१२	४	२२	१९	५९	४६	३	५	५८	२०
शुभ	२	२४	८	१३	२९	म.	१९	११	दि.	१	३	उ६	३७	५	२३	६	४६	२०	२	१२	४	२४	२०	३	४३	३	६	५५	३६

चन्द्रदर्शनम्। मु० ३०।फ० समता। इष्टिः। सर्वार्थसिद्धि योगः ८।१३ उ०। U P वर्षर्तुः। राष्ट्रिय श्रावणः।
कर्कबुधः ४९।१८। रथयात्रा २। शव्वाल् १०। ईदुलफ़ितर अर्थात् ईद्। सर्वार्थसिद्धि योगः [illegible]।
भ. २९।५३ (दि. ५।१५) उ० ५९।० (रा. ३।४२) या.। वैनायक ४। वृषे राहुः २०।२८। ज्येष्ठायां वृश्चिके F
पुष्येबुधः २४।३०। S १४।३५ (दि० ११।९) उ० सूर्यास्तंयावत्। यायीजयद्योगः T F च केतुः २०।१८।
मासान्तः। T ३६।२८ या०। त्रिपुष्कर योगः ३८।३८ उ० ३९।० या०। U यायीजयद योगः ८।१३ या०।
भ० ३९।० (रा० ८।५५) उ०। कर्केऽर्कः ४४।२५ (रा० ११।९) मु० ३०। फ० समता। सं० व० पु० का० S
भ० ७।३५ (दि० ८।२१) या०। अन्नपूर्णा ८। करिदिनम्। अष्टाह्निका प्रारंभः (जैन)।
यायीजयद योगः ३५।५३ या०। A पुष्येऽर्कः १३।१३ (दि० १०।३४)। [illegible]।
पुनर्वस्वोर्भौमिः १०।१३। मन्वादिः १०। वाहनं घोटकः। उपवाहनं वराहः। [illegible]।
भ० ७।५६ (दि० ८।३१) उ० ३६।१८ (रा० ९।४) या०। A चण्डनाडी। साधारणवृष्टिः। हरिशयिनी ११ व्रतं सर्वे-
आश्लेषासुबुधः ५।८। बुधोदयः पश्चिमायाम् २६।५५। षाम्। चातुर्मास्य प्रारंभः। [illegible]।
पूर्वफल्गुन्योः शुक्रः ५०।५०। प्रदोष १३ व्रतम्। [illegible]।
भ० ५३।५ (रा० २।३६) उ०। सायनसिंहेऽर्कः २५।३०। राष्ट्रिय श्रावणः।
भ० २५।५८ (दि० ३।५३) या०। व्यासपूजा। मन्वादिः १५। सर्वार्थसिद्धि योगः २।२३ उ०। [illegible]।

प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति.	वा.	चं. रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेप्च्यून् रा.	अं.	क.	वि.
१	चं.	३	१	२३	५३	२	१४	१४	२५	२	२६	८	१४	७	७	५७	६	४	६	५४	०	६	४	१०	२७	२	०	७	२५	७	११	५५	२७	८	३	४०	४३
२	मं.	३	१६	३१	६	२	१४	५४	२७	२	२८	१६	३३	७	७	५३	५४	४	७	३३	३२	६	४	११	२६	२	०	४	१५	७	११	५३	५४	८	३	३९	१४
३	बु.	४	१	३४	१४	२	१५	३४	२६	३	०	२३	५२	७	७	५०	५२	४	८	११	५७	६	४	१२	३२	२	०	१	४	७	११	५२	२१	८	३	३७	४६
४	गु.	४	१६	२४	३७	२	१६	१४	२२	३	२	३०	०	७	७	४८	१	४	८	४९	१४	६	४	१३	४३	१	२९	५७	५३	७	११	५०	५१	८	३	३६	१९
५	शु.	५	०	५५	३४	२	१६	५४	१६	३	४	३४	४२	७	७	४५	२१	४	९	२५	२८	६	४	१५	०	१	२९	५४	४२	७	११	४९	२४	८	३	३४	५४
७	श.	५	१५	३	२	२	१७	३४	८	३	६	३८	१२	७	७	४२	५१	४	१०	०	८	६	४	१६	२२	१	२९	५१	३२	७	११	४७	५९	८	३	३३	२७
८	र.	५	२८	४५	४०	२	१८	१३	५७	३	८	४०	३	७	७	४०	३१	४	१०	३३	४०	६	४	१७	५१	१	२९	४८	२१	७	११	४६	३६	८	३	३२	२
९	चं.	६	१२	४	१८	२	१८	५३	४४	३	१०	४०	१८	७	७	३८	२३	४	११	५	५०	६	४	१९	२५	१	२९	४५	१०	७	११	४५	१६	८	३	३०	३९
१०	मं.	६	२५	१	१६	२	१९	३३	२८	३	१२	३८	५२	७	७	३६	२५	४	११	३६	३६	६	४	२१	५	१	२९	४२	०	७	११	४३	५८	८	३	२९	१६
११	बु.	७	७	३९	४६	२	२०	१३	१०	३	१४	३५	४५	७	७	३४	३८	४	१२	६	५५	६	४	२२	५१	१	२९	३८	४९	७	११	४२	४३	८	३	२७	५४
१२	गु.	७	२०	३	१२	२	२०	५२	५०	३	१६	३०	५३	७	७	३३	२	४	१२	३३	४३	६	४	२४	४२	१	२९	३५	३८	७	११	४१	३१	८	३	२६	३३
१३	शु.	८	२	१४	५५	२	२१	३२	२७	३	१८	२४	१७	७	७	३१	३७	४	१२	५९	५७	६	४	२६	३८	१	२९	३२	२८	७	११	४०	२१	८	३	२५	१२
१४	श.	८	१४	१७	५५	२	२२	१२	३	३	२०	१५	४५	७	७	३०	२२	४	१३	२४	३४	६	४	२८	४२	१	२९	२९	१७	७	११	३९	१५	८	३	२३	५५
,,	र.	८	२६	१४	४८	२	२२	५१	३५	३	२२	५	४७	७	७	२९	१९	४	१३	४७	३०	६	४	३०	५०	१	२९	२६	६	७	११	३८	१०	८	३	२२	३७

आषाढ़ शुक्ल ८ रवौ अयनांशाः २३।३७।२१



आषाढ़ शुक्ल १५ रवौ अयनांशाः २३।३७।२२



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम्।

	१ चं.	२ मं.	३ बु.	५ गु.	६ शु.	७ श.	रा.	८ र.	९ चं.	१० मं.	११ बु.	१२ गु.	१३ शु.	१४ श.	१५ र.
मि.	५ ४४	५ ४०	५ ३७	५ ३३	५ २६	५ २४	क.	७ ३८	७ ३५	७ ३०	७ २७	७ २२	७ १९	[illegible]	[illegible]
क.	८ २	७ ५८	७ ५५	७ ५१	७ ४७	७ ४२	सि.	९ ५३	९ ५०	९ ४५	९ ४२	९ ३७	९ ३४	[illegible]	[illegible]
सि.	१० १७	१० १३	१० १०	१० ६	१० २	९ ५७	कं.	१२ ६	१२ ३	११ ५८	११ ५५	११ ५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	१२ ३०	१२ २६	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ १०	तु.	२ ३३	२ ३०	२ २५	२ २२	२ १७	२ १४	[illegible]	[illegible]
तु.	२ ४७	२ ४३	२ ४०	२ ३६	२ ३२	२ २७	वृ.	४ ४१	४ ३८	४ ३३	४ ३०	४ २५	४ २२	[illegible]	[illegible]
वृ.	५ ५	५ १	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४५	ध.	६ ४७	६ ४४	६ ३९	६ ३६	६ ३१	६ २८	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
ध.	७ ११	७ ७	७ ४	७ ०	६ ५६	६ ५१	म.	८ ३३	८ ३०	८ २५	८ २२	८ १७	८ १४	८ १०	[illegible]
म.	८ ५७	८ ५३	८ ५०	८ ४६	८ ४२	८ ३७	कुं.	१० ४	१० १	९ ५६	९ ५३	९ ४८	९ ४५	[illegible]	[illegible]
कुं.	१० २८	१० २४	१० २१	१० १७	१० १३	१० ८	मी.	११ ३२	११ २९	११ २४	११ २१	११ १६	११ १३	[illegible]	[illegible]
मी.	११ ५६	११ ५२	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	मे.	१ १०	१ ७	१ २	१२ ५९	१२ ५४	१२ ५१	[illegible]	[illegible]
मे.	१ ३४	१ ३०	१ २७	१ २३	१ १९	१ १४	वृ.	३ ६	३ ३	२ ५८	२ ५५	२ ५०	२ ४७	२ ४३	२ ३९
वृ.	३ ३०	३ २६	३ २३	३ १९	३ १५	३ १०	मि.	५ २०	५ १७	५ १२	५ ९	५ ४	५ १	४ ५७	४ ५३

आषाढ़शुक्लपूर्णिमायां वायुपरीक्षातः शुभाशुभज्ञानम्। आषाढमासस्य च पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः। पूर्वस्तदा सस्ययुता च मेदिनी नन्दन्ति लोकाजलदायिनो घनाः॥ [illegible] मरणं प्रजानामम्भस्य [illegible] खलु वृष्टिनाशः। याम्ये मही सस्यविवर्जिता [illegible] याति [illegible]॥ नैऋत्यरो वाति यदात्र वातो न [illegible]। आषाढ़ मासे यदि पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले [illegible]। प्रयाति नित्यं सुखिनः प्रजाः [illegible] तदास्यात्।

ता. [illegible] बु. [illegible] योग। चं. से बु. ५ अं. [illegible] क. [illegible] स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. [illegible] पर।
ता. [illegible] श. चं. योग. चं. से श. [illegible] अं. [illegible] क. [illegible] स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. [illegible] पर।
ता. [illegible] गु. चं. योग. चं. से गु. [illegible] अं. [illegible] क. [illegible] स्टॅ. टा. रा. घं. [illegible] मि. [illegible] पर।
ता. [illegible] ह. चं. यो. चं. से ह. १ अं. [illegible] क. द. स्टॅ. स्टॉ. दि. घं. [illegible] मि. ४० पर।
ता. २२।७।८३ ने. चं. यो. च. से ने. १ अं. २८ क. उ. स्टॉ. टा. दि. घं. ७ मि. ५१ पर।

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ श्रावण कृष्णपक्षः।

२५ जुलाई से ८ अगस्त १९८३ ई० तक दक्षिणायनम्। उत्तर गोलः। वर्षर्तुः। E

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टॅं.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टॅं.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टॅं.टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
३३	१६	१	चं.	६०	०	×	×	×	उषा	९	४२	दि.	९	१६	प्री.	५०	१०	रा.	१	२७	वा.	३१	५९	कौ.	६०	०	मृत्यु
३३	१४	१	मं.	४	५८	दि.	७	२३	श्र.	१७	१२	,,	१२	१७	आ.	५२	३८	,,	२	२७	कौ.	४	५८	तै.	३८	२	लुम्ब
३३	१२	२	बु.	११	३	,,	९	४९	ध.	२४	४०	,,	३	१६	सौ.	५४	५८	,,	३	२३	ग.	११	३	व.	४४	०	मित्र
३३	९	३	गु.	१६	५०	,,	१२	९	श.	३१	५०	,,	६	९	शो.	५६	५८	,,	४	१२	भ.	१६	५०	बव	४९	२५	वज्र
३३	७	४	शु.	२२	१०	,,	२	१७	पूभा	३८	२८	रा.	८	४८	अ.	५८	२८	,,	४	४८	बा.	२२	१०	कौ.	५४	३१	ध्वांक्ष
३३	४	५	श.	२६	३८	,,	४	५	उभ	४४	१३	,,	११	७	सु.	५६	१३	प्रा.	५	७	तै.	२६	३८	ग.	५८	२८	धूम्र
३३	२	६	र.	३०	०	,,	५	२६	रेव.	४८	४८	,,	१२	५७	धृ.	५८	५५	,,	५	०	व.	३०	०	भ.	६०	०	प्रवर्ध
३२	५९	७	चं.	३१	५८	सा.	६	१४	अ.	५१	५५	,,	२	१३	शू.	५७	२५	रा.	४	२५	भ.	१	११	बव	३१	५८	रक्ष
३२	५६	८	मं.	३२	१३	,,	६	२०	भ.	५३	२०	,,	२	४७	ग.	५४	३३	,,	३	१६	बा.	२	१९	कौ.	३२	१३	मुशल
३२	५४	९	बु.	३०	४०	दि.	५	४३	कृ.	५२	५५	,,	४	३७	वृ.	५०	१३	,,	१	३२	तै.	१	४१	ग.	३०/५१	४०/११	सिद्ध
३२	५१	१०	गु.	२७	१३	,,	४	२१	रो.	५०	३८	,,	१	४३	ध्रु.	४४	१८	,,	११	११	भ.	२७	१३	बव	५४	५०	उत्पात
३२	४८	११	शु.	२२	०	,,	२	१६	मृ.	४७	०	,,	१२	१६	व्या.	२९	३०	,,	८	१६	वा.	२२	०	कौ.	४८	४५	मानस
३२	४५	१२	श.	१५	८	,,	११	३२	आर्द्रा	४१	८	,,	९	५६	ह.	२८	२३	दि.	४	५०	तै.	१५	८	ग.	४१	१२	मुद्गर
३२	४३	१३	र.	७/५०	०/४५	,,/रा.	८/४	१७/४१	पुन.	३४	३०	,,	७	१७	व.	१८	४८	,,	१	०	व.	७	०	भ.	[illegible]	[illegible]	केतु
३२	४०	३०	चं.	४८	१५	,,	१२	४८	पुष्य	२७	८	दि.	४	२१	सि.	[illegible]	[illegible]	,,/रा.	८/४	[illegible]	च.	२३	७	ना	४८	१५	धाता

योग	रा. मि.	अं. ता.	व. ता.	फा. ता.	फ. फा.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टॅं.टा.	घं.	मि.	चं.उ. स्टॅं.टा.	सू.उ. स्टॅं.टा. घं.	मि.	सू.अ. स्टॅं.टा. घं.	मि.	र.क्रां.उ. अं. +	क.	स्प. मध्याह्न का. स्टॅं.टा. घं.	मि.	से.	साम्पा. काल वं.	मि.	से.	औद. स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
मृत्यु	३	२५	९	१४	१	म.						११	५	२३	६	४६	१९	५०	१२	४	२५	२०	७	३९	३	७	५२	५३
लुम्ब	४	२६	१०	१५	२	कुं.	५१	३	रा.	१	४१	१	५	२४	६	४५	१९	३७	१२	४	२६	२०	११	३६	३	८	५०	११
मित्र	५	२७	११	१६	३	कुं.						३६	५	२४	६	४५	१९	२४	१२	४	२६	२०	१५	३२	३	९	४७	३०
वज्र	६	२८	१२	१७	४	कुं.						११	५	२५	६	४४	१९	१०	१२	४	२५	२०	१९	३०	३	१०	४४	५०
ध्वांक्ष	७	२९	१३	१८	५	मी.	२१	५२	दि.	२	१०	४३	५	२५	६	४४	१८	५६	१२	४	२४	२०	२३	२५	३	११	४२	११
धूम्र	८	३०	१४	१९	६	मी.						१० १४	५	२६	६	४३	१८	४२	१२	४	२२	२०	२७	२२	३	१२	३९	३३
प्रवर्ध	९	३१	१५	२०	७	मे.	४८	४८	रा.	१२	५०	१० ४६	५	२६	६	४३	१८	२८	१२	४	२०	२०	३१	१९	३	१३	३६	५५
रक्ष	१०	१	१६	२१	८	मे.						११ २०	५	२७	६	४२	१८	१३	१२	४	१७	२०	३५	१५	३	१४	३४	१८
मुशल	११	२	१७	२२	९	मे.						११ ५७	५	२७	६	४१	१७	५८	१२	४	१४	२०	३९	१२	३	१५	३१	४३
सिद्ध	१२	३	१८	२३	१०	वृ.	८	२४	दि.	८	४९	१२ २९	५	२७	६	४१	१७	४३	१२	४	१०	२०	४३	८	३	१६	२९	८
उत्पात	१३	४	१९	२४	११	वृ.						१ १७	५	२८	६	४०	१७	२७	१२	४	५	२०	४७	५	३	१७	२६	३६
मानस	१४	५	२०	२५	१२	मि.	१८	५९	दि.	१	४	२ २३	५	२८	६	४०	१७	११	१२	४	०	२०	५१	१	३	१८	२४	४
मुद्गर	१५	६	२१	२६	१३	मि.						३ २६	५	२९	६	३९	१६	५५	१२	३	५४	२०	५४	५८	३	१९	२१	३४
केतु	१६	७	२२	२७	१४	क.	२१	१३	दि.	२	५८	३४ ३५	५	२९	६	३८	१६	३९	१२	३	४८	२०	५८	५४	३	२०	१६	४
धाता	१७	८	२३	२८	१५	क.						३६ २७	५	३०	६	३८	१६	२२	१२	३	४१	२१	२	५१	३	२१	१६	३६

भौमोदयः पूर्वस्याम् १४।८। इष्टिः। सर्वार्थसिद्धियोगः ९।४२ उ.। यायीजयद योगः ६।४२ या०।

E राष्ट्रिय श्रावणः।

अशून्यशयनव्रतम्।

भ० ४४।० (रा. ११।०) उ०।

भ० १६।५० (दि. १२।९) या०। **मघासुसिंहे च बुधः** ५५।२०। **संकष्ट ४**। चं. उ० घं० ९ मि० ११।

मार्गी गुरुः १७।२५। स्थायीजयद योगः २२।१० या०।

G **शिवरात्रि १४ व्रतम्**। सर्वार्थसिद्धियोगः १४।३० उ०। यायीजयदयोगः [illegible] या०।

धूम्र योगः।

भ० ३०।० (दि. ५।२६) उ०। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।४८ उ०।

भ० १।११ (प्रा० ५।५५) या०। **अगस्त ८**। यायोजयद योगः ३१।५८ या०।

काल ८। सर्वार्थसिद्धियोगः ५३।२० उ०।

भ० ५९।११ (प्रा० ५।७ उ०)। **आश्लेषास्वर्कः** ११।२० (दि० ९।५९)। स्त्री पु० योगः। A

भ० २७।१३ (दि. ४।२१) या०।

कामिका ११ व्रतं सर्वेषाम्।

पूर्वं फाल्गुन्यांबुधः ३।२०। **प्रदोष १२।** **व्रतम् शनि प्रदोषः।**

भ. ७।० (दि ८।१७) उ० ३२।३४ (सा० ६।३१) या०। G

दर्शः। दीप पूजा। सर्वार्थसिद्धि योगः २७।८ या०।

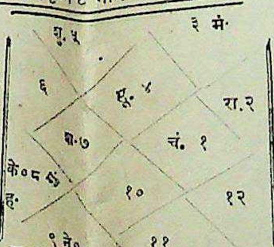
A वाहनमविः। [illegible]। चं. [illegible]। चण्डनाडी। सामान्य वृष्टिः। [illegible]। व्या० नि० २६।४५। सर्वार्थसिद्धि योगः [illegible] उ०। वक्री शुक्रः ४६।७०। [illegible] ५३।३२।

प्रातः स्टॅं. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

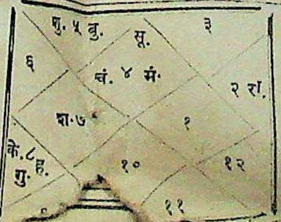
ति.	वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्षल् रा.	अं.	क.	वि.	नेप्चून् रा.	अं.	क.	वि.
१	चं.	९	८	७	४६	२	२३	३१	६	३	२३	५३	५२	७	७	२८	२६	४	१४	८	४१	६	४	३३	४	१	२९	२२	५४	७	११	३७	९	८	३	२१	२१
१	मं.	९	१६	५८	४७	२	२४	१०	३४	३	२५	४०	१२	७	७	२७	४५	४	१४	२८	४	६	४	३५	२४	१	२९	१६	४३	७	११	३६	१०	८	३	२०	६
२	बु.	१०	१	४९	४३	२	२४	५०	१	३	२७	२४	४४	७	७	२७	१४	४	१४	४५	३५	६	४	३७	४८	१	२९	१६	३२	७	११	३५	१४	८	३	१८	५३
३	गु.	१०	१३	४२	२८	२	२५	२९	२५	३	२९	७	३८	७	७	२६	५४	४	१५	१	१२	६	४	४०	१९	१	२९	१३	२२	७	११	३४	२१	८	३	१७	५०
४	शु.	१०	२५	३९	१५	२	२६	८	४७	४	०	४८	४३	७	७	२६	४६	४	१५	१४	५१	६	४	४२	५०	१	२९	१०	११	७	११	३३	३१	८	३	१६	२८
५	श.	११	७	४२	४०	२	२६	४८	७	४	२	२८	५	७	७	२६	४८	४	१५	२६	२८	६	४	४५	३६	१	२९	७	०	७	११	३२	४३	८	३	१५	१८
६	र.	११	१९	५५	३६	२	२७	२७	२५	४	४	५	४३	७	७	२७	१	४	१५	३६	०	६	४	४८	२३	१	२९	३	५०	७	११	३१	५८	८	३	१४	९
७	चं.	०	२	२२	३	२	२८	६	४१	४	५	४१	३८	७	७	२७	२५	४	१५	४३	२४	६	४	५१	१५	१	२९	०	३९	७	११	३१	१७	८	३	१३	२
८	मं.	०	१४	५	२१	२	२८	४५	५५	४	७	१५	४९	७	७	२८	०	४	१५	४८	३८	६	४	५४	१२	१	२८	५७	२८	७	११	३०	३८	८	३	११	५६
९	बु.	०	२८	९	३१	२	२९	२५	६	४	८	४८	१८	७	७	२८	४६	४	१५	५१	३८	६	४	५७	१४	१	२८	५४	१८	७	११	३०	२	८	३	१०	५१
१०	गु.	१	११	३७	५६	३	०	४	१६	४	१०	१९	०	७	७	२९	४३	४	१५	५२	२२	६	५	०	२२	१	२८	५१	७	७	११	२९	२८	८	३	९	५०
११	शु.	१	२५	३२	५२	३	०	४३	२४	४	११	४८	०	७	७	३०	५१	४	१५	५०	४८	६	५	३	३५	१	२८	४७	५६	७	११	२८	५९	८	३	८	४६
१२	श.	२	९	५४	४२	३	१	२२	३०	४	१३	१५	१३	७	७	३२	१०	४	१५	४६	५५	६	५	६	५३	१	२८	४४	४५	७	११	२८	३२	८	३	७	४६
१३	र.	२	२४	४१	३	३	२	१	३४	४	१४	४०	४०	७	७	३३	३९	४	१५	४०	४४	६	५	१०	१७	१	२८	४१	३४	७	११	२८	८	८	३	६	४७
३०	च.	३	९	४६	२१	३	२	४०	३६	४	१६	४	१८	७	७	३५	२०	४	१५	३२	३	६	५	१३	४५	१	२८	३८	२३	७	११	२७	४७	८	३	५	५०

मार्गी गुरुः ७।७।२६।४

श्रावण कृष्ण ८ भौमे अयनांशाः २३।३७।२३



श्रावण कृष्ण ३० चन्द्रे अयनांशाः २३।३७।२३



वक्री शुक्रः ४।१५।५३।१७

गुरुः पूर्वस्याम्। ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम्

	१ चं.		१ मं.		२ बु.		३ गु.		४ शु.		५ श.		६ र.		७ चं.		८ मं.		९ बु.		१० गु.		११ शु.		१२ श.		१३ र.		३० च.	
क.	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५०	६	४७	६	४३	६	४०	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	२०	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	५	९	२	८	५८	८	५३	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१८	११	१५	११	११	११	८	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	[illegible]	१०	[illegible]	१०	[illegible]
तु.	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३५	१	३२	१	२८	१	२५	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	०	[illegible]	[illegible]
वृ.	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५३	३	५०	३	४६	३	४३	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	६	१६	६	१२	६	८	६	४	५	५६	५	५६	५	५२	५	४९	५	४४	५	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		क.	
म.	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४५	७	४२	७	३८	७	३५	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१५	७	१०	७	[illegible]
कुं.	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१६	९	१३	९	९	९	६	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४६	८	४१	८	३८
मी.	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४४	१०	४१	१०	३७	१०	३४	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	९	१०	६
मे.	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२२	१२	१९	१२	१५	१२	१२	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५२	११	४७	११	४४
वृ.	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१८	२	१५	२	११	२	८	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४८	१	४३	१	४०
मि.	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३२	४	२९	४	२५	४	२२	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	२	३	५७	३	५४

ता. ९।८।८२ बु० शु० यो० शु० से बु० ५ अं. ४७ क. व. स्टॅं. टा. दि. घं. ११ मि. २४ पर।

ता. ७।८।८३ मं. चं० यो. चं. से मं. १ अं. ४६ क. व० स्टॅं. टा. दि. घं. ५ मि. ११ पर।

अशून्यशयनव्रतम्:—इदं व्रतं चातुर्मास्ये कृष्णद्वितीयासु कर्तव्यम्, अत्र लक्ष्मीयुतं विष्णुं पर्यङ्के संपूज्य 'पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता भार्यासमुद्भवम्। न लुबन्ति यथा दुःखं दंपत्यानि तथा कुरु'' ॥ इत्यादि[illegible]प्रार्थनामन्त्रैः प्रार्थयेत्। ततश्चन्द्रायार्घ्यं दत्वा नक्तभोजनं कार्यम्। एवं मासचतुष्टये कृष्णद्वितीयासु संपूज्य सपत्नीकाय शय्यादानं कृत्वा वा प्रतिमां च सोपस्करां दद्यात्। अस्मिन्व्रते अक्षय्यं दाम्पत्यसुखं पुत्रकलत्रवियोगो गार्हस्थ्यावियोगश्च सप्तजन्मानि भवति अत्र व्रते चन्द्रोदयव्यापिनी तिथिर्ग्राह्या। चन्द्रोदये पूजायुक्तः। दिनद्वये सत्वेऽसत्वे वा परेत्।

श्री शुभ संवत् २०४० शके १९०५ श्रावण शुक्ल पक्षः

९ अगस्त से २३ अगस्त १९८३ ई० तक दक्षिणायनम् । उत्तरगोलः । वर्षर्तुः ।G

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	न.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	यो.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	क.	घ. प.	क.	घ. प.	योगाः
३२ ३७	१ मं.	३८ २३	रा. ८ ५५	अश्व.	१९ २८	दि. १ १७	व.	४७ ३	रा. १२ १९	कि.	१३ २३	बव.	३८ ३३	आनन्द
३२ ३४	२ बु.	२९ ८	दि. ५ १०	भ.	११ ५८	,, १० १८	परि	३६ ४०	,, ८ ११	बा.	३ ४८	कौ.	२९/४४ ८/४५	चर
३२ ३१	३ गु.	२० २५	,, १ ४५	पू.फ	५/४४ १०/२०	,,/प्रा. ७/५ ५४/११	शि.	२७ ३	दि. ४ २०	गर	२० ३५	व.	४६ ४४	गद
३२ २८	४ शु.	१३ १५	,, १० ५०	ह.	५५ २०	रा. ३ ४०	सि.	१८ ३०	,, १२ ५६	भ.	१३ १५	बव	४० ११	अमृत
३२ २५	५ श.	७ ३३	,, ८ ३३	चि.	५३ ०	,, २ ४१	सा.	११ २०	,, १० ४	बा.	७ ३३	कौ.	३५ २५	शुभ
३२ २१	६ र.	३ ४५	,, ७ २	स्वा	५२ ४३	,, २ ३७	शुभ	५ ४३	,, [illegible] ४९	तै.	३ ४५	ग.	३२ ३५	लुम्ब
३२ १८	७ चं.	१ ५५	,, ६ १६	वि.	५४ २५	,, ३ १९	शु.	१/४७ ५३/४०	,,/प्रा. ६/५ १४/१८	व.	१ ५५	भ.	३१ ४९	मित्र
३२ १५	८ मं.	२ १३	,, ६ २६	अनु	५८ ०	,, ४ ४५	ऐ.	५८ ३३	रा. ४ ५८	बव	२ १३	बा.	३४ ५	वज्र
३२ १२	९ बु.	४ २३	,, ७ १९	ज्ये.	६० ०	× ×	वै.	५८ ५५	प्रा. ५ ८	कौ.	४ २३	तै.	३६ ६	ध्वांक्ष
३२ ९	१० गु.	८ १०	,, ८ ५०	ज्ये.	३ १०	दि. ६ ५०	त्रि.	६० ०	× ×	गर	८ १०	व.	४० ३१	कालदण्ड
३२ ६	११ शु.	१३ ८	,, १० ५०	मू.	९ ३३	,, ९ २४	वि.	० १८	प्रा. ५ ४२	भ.	१३ ८	बव	४५ ५७	सुस्थिर
३२ ३	१२ श.	१८ ५५	,, १ ९	पूषा	१६ ४३	,, १२ १६	प्रो.	२ २०	दि. ६ ३१	बा.	१८ ५५	कौ.	५१ ५८	मातङ्ग
३१ ५९	१३ र.	२५ ५	,, ३ ३७	उषा	२४ १३	,, ३ १६	आ.	४ ४५	,, ७ २१	तै.	२५ ५	ग.	५८ ११	अमृत
३१ ५६	१४ चं.	३१ १५	सा. ६ ६	श्रव	३१ ४५	सा. ६ १८	सौ.	७ १३	,, ८ २९	व.	३१ १५	भ.	६० ०	सिद्धि
३१ ५३	१५ मं.	३७ १३	,, ८ २९	ध.	३९ ८	रा. ९ १५	शो.	६ ३८	,, ९ २७	भ.	४ १६	बव	३७ १३	उत्पात

योगाः	रा. मि.	अं. ता	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टैं. टा. घ. मि.	च. अ. स्टैं. टा.	सू. उ. स्टैं. टा.	सू. अ. स्टैं. टा.	र.का.उ. अं. क. +	स. मध्यह्न का. स्टैं. टा. घ. मि. से.	माम्या. काल घं. मि. से.	औ. स्पष्ट सू. रा. अं. क. वि.
आनन्द	१८	९	२४	२९	१६	सिं. १६ २१	दि. १ १७	७ २८	५ ३०	६ ३७	१६ ५	१२ २ ३३	२१ ६ ४७	३ २२ १४ ९
चर	१९	१०	२५	३०	१७	सिं.		८ १३	५ ३१	६ ३६	१५ ४८	१२ ३ २५	२१ १० ४४	३ २३ ११ ४३
गद	२०	११	२६	१	१८	कं. १८ ३८	दि. १२ ५८	८ ५५	५ ३१	६ ३५	१५ ३०	१२ ३ १६	२१ १४ ४१	३ २४ ९ १८
अमृत	२१	१२	२७	२	१९	कं.		९ ३३	५ ३२	६ ३५	१५ १३	१२ ३ ७	२१ १८ ३७	३ २५ ६ ५४
शुभ	२२	१३	२८	३	२०	तु. २३ ५५	दि. ३ ६	१० १०	५ ३२	६ ३४	१४ ५५	१२ २ ५७	२१ २२ ३४	३ २६ ४ ३१
लुम्ब	२३	१४	२९	४	२१	तु.		१० ४७	५ ३२	६ ३३	१४ ३६	१२ २ ४७	२१ २६ ३०	३ २७ २ ८
मित्र	२४	१५	३०	५	२२	वृ. ३८ ४८	रा. ९ ४	११ २६	५ ३३	६ ३२	१४ १८	१२ २ ३६	२१ ३० २७	३ २७ ५९ ४७
वज्र	२५	१६	३१	६	२३	वृ.		१२ ७	५ ३३	६ ३१	१३ ५९	१२ २ २४	२१ ३४ २३	३ २८ ५७ २६
ध्वांक्ष	२६	१७	३२	७	२४	वृ.		१२ ५१	५ ३४	६ ३१	१३ ४१	१२ २ १२	२१ ३८ २०	३ २९ ५५ ७
कालदण्ड	२७	१८	१	८	२५	ध. ३ १०	दि. ६ ५०	१ ३८	५ ३४	६ ३०	१३ २१	१२ १ ५९	२१ ४२ १६	४ ० ५२ ४९
सुस्थिर	२८	१९	२	९	२६	ध.		२ २८	५ ३५	६ २९	१३ २	१२ १ ४६	२१ ४६ १३	४ १ ५० ३२
मातङ्ग	२९	२०	३	१०	२७	म. ३३ ३५	रा. ७ १	३ २०	५ ३५	६ २८	१२ ४३	१२ १ ३२	२१ ५० ११	४ २ ४८ १५
अमृत	३०	२१	४	११	२८	म.		४ १५	५ ३५	६ २७	१२ २३	१२ १ १८	२१ ५४ ६	४ ३ ४५ ५६
सिद्धि	३१	२२	५	१२	२९	म.		अ५ ६	५ ३६	६ २६	१२ ३	१२ १ ४	२१ ५८ ३	४ ४ ४३ ४६
उत्पात	१	२३	६	१३	३०	कुं. ५ २९	दि. ७ ४८	उ६ ३८	५ ३६	६ २५	११ ४३	१२ ० ४८	२२ १ ५९	४ ५ ४१ ३३

पुष्ये भौमः ०।२३ । इष्टिः । सर्वार्थसिद्धि योगः १९।२९ या० । G राष्ट्रिय श्रावणः ।
चन्द्रदर्शनम् । मु ३० । फ० समता । Z त्रपुष्कर योगः १६।४३ उ० १८।५५ या० । E हयग्रीवोत्पत्तिः १५ ।
भ० ४६।४४ (रा. १२।१३) उ० । वैनायकी ४ । जीकृअदः ११ । यायीजयद योगः ५।१० उ० । R ३१।४५ या० ।
भ० १३।५ (दि. १०।५०) या० । A वै० प्र० ४।४८ । वै० नि० १७।४८ । सर्वार्थसिद्धि योगः ५४।२५ उ० । B
नाग ५ । कल्कि जयन्ती ६ । सर्वार्थसिद्धि योगः ५३।० उ० । B मुकुट सप्तमी व्रत जैन ।
शुक्रास्तः पश्चिमायाम् ३२।५ । मार्गी हर्षल १८।३८ । त्रिपुष्कर योगः ५२।४३ उ० । D वातनाशो । साधारण वृष्टिः ।
भ० १।५५ (दि. ६।१९) उ० ३१।४९ (रा. ६।१७) या० । व० ग. मघासु शुक्रः १४।२५ । स्वतन्त्रता दिवस । A
उत्तरफल्गुन्योर्बुधः ३३।३५ । अन्नपूर्णा ८ । मासान्तः । C स्त्री नपु. योगः । वाहनं कुञ्जरः । उपवाहनं नरः । चं.नृ.योगः D
मघांसु सिंहेचार्कः ५।३० (दि. ७।३५) । मु० १५ । फ० महर्घता । सं. ब. पु. क. सूर्योदयात् ५।३० (दि० ७।३५) या० । C
भ० ४०।३१ (रा. ११।४६) उ० । O पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
भ० १३।८ (दि० १०।५०) या० । कन्यायां बुधः ५०।२८ । O
विष्णोः पवित्रारोपणम् । प्रदोष १३ व्रतम् । शनि प्रदोषः । Z
यायीजयद योगः २४।१३ या० । सर्वार्थ सिद्धि योगः २४।१३ या० ।
भ० ३१।१५ (सा० ६।६) उ. । ऋक् श्रावणी । सर्वार्थसिद्धि योगः R
भ० ४।१६ (दि. ७।१८) या. । सायन कन्यायामर्कः ४२।३५ । राष्ट्रिय भाद्रपदः । यजु. श्रावणी । सम्राजां रक्षाबन्धनम् । E

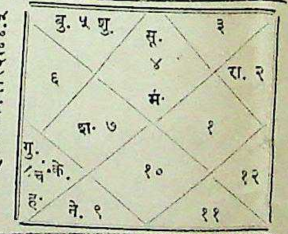
Q सूर्योदये नास्ति यदिने सूर्योदयोत्तर मुहूर्त [illegible] वर्तते तदोत्तरदिने एव उत्तराषाढ़ा [illegible] । यजुर्वेदिनां श्रावणपौर्णमास्यां मुख्यः कालः । पौर्णमास्याः खण्डत्वे यदा पूर्णिमा-पूर्वदिने मुहूर्तत्रयान्तर्गता प्रवृत्ता द्वितीयदिने [illegible] तदा सर्व- [illegible]

प्रातः स्टैं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पस्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ मं.	३ २५ २ १	३ ३ १९ ३५	४ १७ २६ ७	७ ७ ३७ ११	४ १५ २१ ४	६ ५ १७ १८	१ २८ ३५ १३	७ ११ २७ २९	८ ३ ४ ५४
२ बु.	४ १० १७ २७	३ ३ ५८ ३३	४ १८ ४६ ३	७ ७ ३९ १४	४ १५ ७ ४४	६ ५ २० ५७	१ २८ ३२ २	७ ११ २७ १४	८ ३ ३ ५९
३ गु.	४ २५ २१ ५८	३ ४ ३७ २८	४ २० ४ ४	७ ७ ४१ २६	४ १४ ५२ २	६ ५ २४ ४०	१ २८ २८ ११	७ ११ २७ २	८ ३ ३ ७
४ शु.	५ १० ६ १६	३ ५ १६ २२	४ २१ २० ७	७ ७ ४३ ५०	४ १४ ३४ १	६ ५ २८ २९	१ २८ २५ ४१	७ ११ २६ ५३	८ ३ २ १८
५ श.	५ २४ २४ १३	३ ५ ५५ १३	४ २२ ३४ ९	७ ७ ४६ २४	४ १४ १३ ४४	६ ५ ३२ २१	१ २८ २२ ३०	७ ११ २६ ४८	८ ३ १ २६
६ र.	६ ७ १३ २४	३ ६ ३४ २	४ २३ ४६ ५	७ ७ ४९ ९	४ १३ ५१ १४	६ ५ ३६ २०	१ २८ १९ १९	७ ११ २६ ४५	८ ३ ० ३९
७ चं.	६ २१ ३४ ९	३ ७ १२ ४९	४ २४ ५५ ५१	७ ७ ५२ ५	४ १३ २६ ३२	६ ५ ४० २२	१ २८ १६ ८	७ ११ २६ ४५	८ २ ५९ ५३
८ मं.	७ ४ २९ १०	३ ७ ५१ ३४	४ २६ ३ २२	७ ७ ५५ ११	४ १२ ५९ ५९	६ ५ ४४ ३०	१ २८ १२ ५७	७ ११ २६ ४९	८ २ ५९ ८
९ बु.	७ १७ २ ३३	३ ८ ३० १६	४ २७ ८ ३३	७ ७ ५८ २७	४ १२ ३१ २६	६ ५ ४८ ४२	१ २८ ९ ४७	७ ११ २६ ५७	८ २ ५८ २६
१० गु.	७ २९ १८ ५४	३ ९ ८ ५७	४ २८ ११ १६	७ ८ १ ५३	४ १२ १ ८	६ ५ ५२ ५८	१ २८ ६ ३६	७ ११ २७ ६	८ २ ५७ ४५
११ शु.	८ ११ २२ ५५	३ ९ ४७ ३५	४ २९ ११ २६	७ ८ ५ ३०	४ ११ २९ १४	६ ५ ५७ १९	१ २८ ३ २५	७ ११ २७ १६	८ २ ५७ ५
१२ श.	८ २३ १८ ५१	३ १० २६ १२	५ ० ८ ५४	७ ८ ९ १७	४ १० ५५ ५४	६ ६ १ ४५	१ २८ ० १४	७ ११ २७ ३५	८ २ ५६ २८
१३ र.	९ ५ १० २२	३ ११ ४ ४७	५ १ ३ ३१	७ ८ १३ १४	४ १० २१ २१	६ ६ ६ १५	१ २७ ५७ ३	७ ११ २७ ४८	८ २ ५५ ५३
१४ चं.	९ १७ ० ३०	३ ११ ४३ १९	५ १ ५५ २०	७ ८ १७ २१	४ ९ ४५ ४६	६ ६ १० ४९	१ २७ ५३ ५३	७ ११ २८ १८	८ २ ५५ १८
१५ मं.	९ २८ ५९ ३५	३ १२ २१ ५०	५ २ ४३ ३९	७ ८ २१ ३७	४ ९ ६ २३	६ ६ १५ २७	१ २७ ५० ४२	७ ११ २८ ४१	८ २ ५४ ४

मार्गी हर्षल ७।११।२६।४४।५

श्रावण शुक्ल ८ भौमे अयनांशाः २३।३७।२५



श्रावण शुक्ल १५ भौमे अयनांशाः २३।३७।२६



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्न सारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम् दि. १४।८।८३

	१ मं.	२ बु.	३ गु.	४ शु.	५ श.	६ र.	७ च.	८ मं.	९ बु.		१० गु.	११ शु.	१२ श.	१३ र.	१४ चं.	१५ मं.
क.	६ ७	६ ४	६ ०	५ ५६	५ ५२	५ ४७	५ ४४	५ ४०	५ ३६	सिं.	७ ४७	७ ४३	७ ३९	७ ३५	७ ३१	७ २७
सिं.	८ २२	८ १९	८ १५	८ ११	८ ७	८ २	७ ५६	७ ५५	७ ५१	कं.	१० ०	९ ५६	९ ५२	९ ४८	९ ४४	९ ४०
कं.	१० ३५	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २०	१० १५	१० १२	१० ८	१० ४	तु.	१२ १७	१२ १३	१२ ९	१२ ५	१२ १	[illegible]
तु.	१२ ५२	१२ ४९	१२ ४५	१२ ४१	१२ ३७	१२ ३२	१२ २९	१२ २५	१२ २१	वृ.	२ ३५	२ ३१	२ २७	२ २३	२ १९	[illegible]
वृ.	३ १०	३ ७	३ ३	२ ५९	२ ५५	२ ५०	२ ४७	२ ४३	२ ३९	ध.	४ ४१	४ ३७	४ ३३	४ २९	[illegible]	[illegible]
ध.	५ १६	५ १३	५ ९	५ ५	५ १	४ ५६	४ ५३	४ ४९	४ ४५	म.	६ २७	६ २३	६ १९	६ १५	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
म.	७ २	६ ५६	६ ५५	६ ५१	६ ४७	६ ४२	६ ३९	६ ३५	६ ३१	कुं.	७ ५८	७ ५४	७ ५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	८ ३३	८ ३०	८ २६	८ २२	८ १८	८ १३	८ १०	८ ६	८ २	मी.	९ २६	९ २२	९ १८	९ १४	९ १०	९ ६
मी.	१० १	९ ५८	९ ५४	९ ५०	९ ४६	९ ४१	९ ३८	९ ३४	९ ३०	मे.	११ ४	११ ०	१० ५६	१० ५२	१० ४८	१० ४४
मे.	११ ३९	११ ३६	११ ३२	११ २८	११ २४	११ २०	११ १६	११ १२	११ ८	वृ.	१ ०	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०
वृ.	१ ३५	१ ३२	१ २८	१ २४	१ २०	१ १५	१ १२	१ ८	१ ४	मि.	३ १४	३ १०	३ ६	३ २	२ ५८	२ ५४
मि.	३ ४९	३ ४६	३ ४२	३ ३८	३ ३४	३ २९	३ २६	३ २२	३ १८	क.	५ ३२	५ २८	५ २४	५ २०	५ १६	५ १२

सिंहराशिगते सूर्ये यस्य गौः प्रसूयते तेन व्याहृतिभिर्नाक्षत्रायुर्मेधाग्रयवैर्होमं कृत्वा सा गौर्ब्राह्मणाय देया । एवं निशीथे गोः क्रन्दनेऽपि मृत्युञ्जयमन्त्रेण होमादिरूपा शान्तिः कार्या । एवं श्रावणमासे दिवाश्विनीप्रसवोऽपि निषिद्धः । यथा घोडी-माघे भैंस व महिषी श्रावणे बडवा दिया । सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ॥ अतोऽत्रापि शान्तिःशान्तिपत्यतो ज्ञेया । अर्थोपाकर्मकालः -तत्र बह्वृचानां श्रावणशुक्लायां श्रवणनक्षत्रं, पञ्चमी हस्तं इति कालत्रयम् । तत्र श्रवणं मुख्यकालस्तदभावे पञ्चम्यादि । दिनद्वये श्रवणसत्वे यदि पूर्वं सूर्योदयमारभ्य प्रवृत्तं श्रवणं द्वितीयदिने सूर्योदयोत्तरं त्रिमुहूर्तं [illegible]

* [illegible] परदिनव्याप्तिकम्, [illegible] । यदि [illegible] पूर्वदिने Q

ता. १०।८।८३ बु. चं. यो. चं. से बु. १ अं. ३८ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ३ मि. १३ पर ।
ता. ११।८।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. ५ अं. ५२ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ४ मि. १६ पर ।
ता. १३।८।८३ श. चं. यो. चं. से श. १ अं. ५६ क. द. स्टैं. टा. रा. घं. ११ मि. ३८ पर ।
ता. १६।८।८३ गु. चं. यो. चं. से गु. १ अं. १८ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ११ मि. ३० पर ।
ता. १६।८।८३ ह. चं. यो. चं. से ह. १ अं. ३४ क. द. स्टैं. टा. सा. घं. ६ मि. १० पर ।
ता. १८।८।८३ ने. चं. यो. चं. से ने. १ अं. ३२ क. उ. स्टैं. टा. दि. घं. १२ मि. ४५ पर ।

१८

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	स्टॅं. टा. घं. मि.	न. घ. प.	स्टॅं. टा. घं. मि.	यो. घ. प.	स्टॅं. टा. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगाः	रा. मि.	अं. ता.	बं. सौ.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅं. टा. घं. मि.	न.उ. स्टॅं.टा.	सू.उ. स्टॅं.टा.	सू.अ. घं. मि.	र.काउ. अं.क.	स्पष्टमध्याह्न का. स्टॅं. टा.	साम्या.का. घं.मि.से.	औदयिकस्प सू. रा. अं. क. वि.
३१ ४९	१	बु.	४२ ४५	रा. १० ४३	शत ४६ ३	रा. १२ २	अ. ११ ४३	दि. १० १८	बा. १० ३	कौ. ४२ ४५	मानस	२	२४	७	१४	१	कुं.		७ १३	५ ३७	६ २४	११ २३	१२ ० ३२	२२ ५ ५६	४ ६ ३६ २३
३१ ४६	२	गु.	४७ ४८	" १२ ४४	पूभा ५२ २८	" २ ३६	सु. १३ ३०	" ११ १	तै. १५ २२	ग. ४७ ४८	मुद्गर	३	२५	८	१५	२	मी. ३५ ५४	रा. ८ ०	७ ४५	५ ३८	६ २३	११ २	१२ ० १६	२२ ९ ५२	४ ७ ३७ १३
३१ ४२	३	शु.	५१ ५	" २ २८	उभा ५८ १०	" ४ ५४	धृ. १९ ४५	" १ ३२	व. २० २	भ. ५२ ५	केतु	४	२६	९	१६	३	मी.		८ १७	५ ३८	६ २२	१० ४१	१२ ० ०	२२ १३ ४९	४ ८ ३५ ६
३१ ३७	४	श.	५५ ३३	" ३ ५१	रे. ६० ०	× × ×	शू. १५ २८	" ११ ४९	बव २३ ५६	बा. ५५ ३३	धाता	५	२७	१०	१७	४	मी.		८ ४८	५ ३८	६ २१	१० २१	११ ५९ ४३	२२ १७ ४६	४ ९ ३२ ५६
३१ ३६	५	र.	५७ ५८	" ४ ४९	रे. ३ ५	दि. ६ ५२	गं. १५ २८	" ११ ४९	कौ. २६ ५५	तै. ५७ ५८	प्रवर्ध	६	२८	११	१८	५	मे. ३ ५	दि. ६ ५२	९ २१	५ ३९	६ २०	१० ०	११ ५९ २६	२२ २१ ४२	४ १० ३० ५४
३१ ३२	६	चं.	५६ ५	प्रा. ५ १७	अ. ६ ५३	" ८ २४	वृ. १४ ३३	" ११ २८	ग. २८ ४२	व. ५९ ५	रक्ष	७	२९	१२	१९	६	मे.		९ ५६	५ ३९	६ १९	९ ३९	११ ५९ ९	२२ २५ ३९	४ ११ २८ ५२
३१ २९	७	मं.	५८ ४८	" ५ १०	भ. ९ २८	" ९ २६	ध्रु. १२ ३८	" १० ४२	भ. २९ ८	बव ५८ ४८	मुसल	८	३०	१३	२०	७	वृ. २४ ५३	दि. ३ ३७	१० ३५	५ ४०	६ १८	९ १७	११ ५८ ५१	२२ २९ ३५	४ १२ २६ ५०
३१ २५	८	बु.	५६ ५३	रा. ४ २५	कृ. १० ३५	" ९ ५४	व्या. ६ ३०	" ९ २८	बा. २८ ३	कौ. ५६ ५३	सिद्धि	९	३१	१४	२१	८	वृ.		११ १६	५ ४०	६ १७	८ ५६	११ ५८ ३३	२२ ३३ ३२	४ १३ २४ ५१
३१ २२	९	गु.	५३ १८	" २ ५९	रो. १० ८	" ९ ४३	ह. ५४/५८ ४२/२६	" मा. [illegible]	तै. २५ १८	ग. ५३ १८	उत्पात	१०	१	१५	२२	९	मि. ३९ १६	ग. ९ २२	१२ ६	५ ४०	६ १६	८ ३४	११ ५८ १४	२२ ३७ २८	४ १४ २२ ५४
३१ १८	१०	शु.	४८ ४८	" १२ ५५	मृ. ८ ०	" ८ ५२	सि. ५२ २३	रा. २ ३७	व. २१ २०	भ. ४८ ८	मानस	११	२	१६	२३	१०	मि.		१ ८	५ ४१	६ १५	८ १३	११ ५७ ५५	२२ ४१ २५	४ १५ २० ५८
३१ १५	११	श.	४१ २५	" १० १५	आ. [illegible]	मा. [illegible]	व्य. ४४ ५	" ११ १९	बव १४ ५६	बा. ४१ २५	मुद्गर	१२	३	१७	२४	११	क. ४५ ३५	ग. ११ ५५	२ १२	५ ४१	६ १४	७ ५१	११ ५७ ३६	२२ ४५ २१	४ १६ १८ ४
३१ ११	१२	र.	३३ ३०	" ७ ५	पु. ५२ ५३	रा. २ ५०	व. ३४ ४८	" ७ ३६	कौ. ७ ३६	तै. [illegible]	श्रीवत्स	१३	४	१८	२५	१२	क.		३ २२	५ ४१	६ १३	७ २९	११ ५७ १७	२२ ४९ १८	४ १७ १७ १३
३१ ८	१३	च.	२४ ४३	दि. २ ३४	श्ले. ४५ ५३	" १२ २	प. २४ ४८	दि. ३ ३६	ब. २४ ४३	भ. ५० ४	सौम्य	१४	५	१९	२६	१३	सिं. ४५ ५३	रा. १२ २	४ ३०	५ ४१	६ १२	७ ७	११ ५६ ५७	२२ ५३ १५	४ १८ १५ २२
३१ ४	१४	सं.	१५ २०	" ११ ५०	म. ३८ २८	" ९ ५	शि. १४ १८	" ११ २५	श. १५ २०	च. ४० ४१	कालदण्ड	१५	६	२०	२७	१४	सिं.		[illegible] १	५ ४२	६ ११	६ ४४	११ ५६ ३७	२२ ५७ ११	४ १९ १३ ३५
३१ ०	३०	बु.	[illegible]	" रा. [illegible]	पूफा ३१ १५	सा. ६ १२	सि. [illegible]	" रा. [illegible]	ना. ५ ५८	कि. [illegible]	सुस्थिर	१६	७	२१	२८	१५	कं. ४४ ३१	रा. ११ ३०	६ ४५	५ ४२	६ १०	६ २२	११ ५६ १७	२३ १ ८	४ २० ११ ५०

श्री संवत् २०४० शके १९०५ भाद्रपद कृष्णपक्षः

२४ अगस्त से ७ सितम्बर सन् १९८३ ई० तक । दक्षिणायनम् । उत्तरगोलः । वर्षर्तुः A

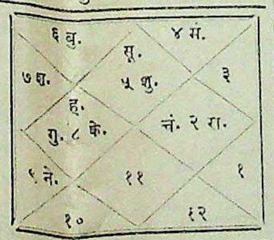
अगस्त्योदयः २२।२६ । इष्टिः । वीरशासन जयन्ती । सोलह कारण व्रतारंभः (जैन) । A राष्ट्रियभाद्रपदः ।
अशून्यशयनव्रतम् ।
भ. २०।२ (दि. १।३९) उ. ५२।५ (रा. २।२८) या. । कज्जली ३ । अमृतसिद्धियोगः ५८।१० उ. ।
संकष्ट ४ । चं. उ. घं. ८ मि. ४८ । बहुला ४ । [D नाम् । यायीजयदयोगः १०।८ या. ।
मा.ग. स्वात्यां शनिः २।५८ । हल ६ । व्य. प्र. ५९।३० । सर्वार्थसिद्धियोगः ३।५ उ. । यायीजयदयोगः ३।५ या. ।
भ. ५९।५ (प्रा. ५।१७) उ. । आश्लेषासु भौमः ४३।३ । शुक्रोदयः पूर्वस्याम ५४।१८ । व्य. नि. ४।५३ ।
भ. २९।८ (दि. ५।१६) या. । पूर्वफल्गुन्योरर्कः ४४।४५ (रा. ३।३३) । स्त्री पु. योगः बाहुल्ये जल्लुकः । [illegible] B
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं सर्वेषाम् (निशीथेरोहिणी बुधयोग सत्वात्) । काल ८ । मन्वादिः ८ । सर्वार्थसिद्धियोगः E
सितम्बर ९ । बुधास्तः पश्चिमायाम् ५९।४३ । श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं औदयिकजन्मयुक्तानां [illegible] D
भ. २१।२० (दि. २।१३) उ. । ४८।८ (रा. १२।५५) या. । वक्रीबुधः १५।४३ । [E १०।१५ उ. यायीजया ।
अजा ११ व्रतं सर्वेषाम् । यायीजयदयोगः ४।१८ उ. ४१।२५ या. ।
सर्वार्थसिद्धियोगः ५२।४३ या. । [B मेषः चं. सू. योगः । चण्डनाडी । मध्यमावृष्टिः । शीतलाः । त्रिपुष्करयोगः [illegible] या. ।
भ. २४।४३ (दि. ३।३४) उ. ५०।४ (रा. १।४३) या. । प्रदोष १३ व्रतम् । लोमशदोषः । [illegible] । C
दर्शः । पिठोरा व्रतम् । स्थायीजयदयोगः १५।२० या. । [C १४ व्रतम् । यायी जयदयोगः [illegible] या. ।
कुशग्रहणम् ३० । इष्टिः ।

प्रातः स्टॅं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ।

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	ह. रा. अं. क. वि.	ने. रा. अं. क. वि.
१ बु.	१० १० ४३ २७	३ १३ ० १९	५ ३ २८ ४७	७ ८ २६ ४	४ ८ ३२ २७	६ ६ २० १८	१ २७ ४७ ३१	७ ११ २६ ९	८ २ ५४ १६
२ गु.	१० २२ ४३ ३२	३ १३ ३८ ४५	५ ४ १० २४	७ ८ ३० ४०	४ ७ ५५ १	६ ६ २४ ५७	१ २७ ४४ २०	७ ११ २९ ४१	८ २ ५३ ४८
३ शु.	११ ४ ४७ १०	३ १४ १७ ४	५ ४ ४८ १४	७ ८ ३५ २६	४ ७ १७ ५०	६ ६ २९ ४९	१ २७ ४१ १०	७ ११ ३० १६	८ २ ५३ २०
४ श.	११ १६ ५७ ५०	३ १४ ५५ ३४	५ ५ २२ ६	७ ८ ४० २२	४ ६ ४० ३९	६ ६ ३४ ४४	१ २७ ३७ ५९	७ ११ ३० ५३	८ २ ५२ ४८
५ र.	११ २९ १७ २०	३ १५ ३३ ५५	५ ५ ५१ ४४	७ ८ ४५ २७	४ ६ ३ ५२	६ ६ ३९ ४३	१ २७ ३४ ४८	७ ११ ३१ ३४	८ २ ५२ ३३
६ चं.	० ११ ४३ ५७	३ १६ १२ १५	५ ६ १६ ५३	७ ८ ५० ४२	४ ५ २७ ४५	६ ६ ४४ ४६	१ २७ ३१ ३८	७ ११ ३२ १८	८ २ ५२ १२
७ मं.	० २४ ३२ ३०	३ १६ ५० ३२	५ ६ ३७ १६	७ ८ ५६ ५	४ ४ ५२ ३०	६ ६ ४९ ५३	१ २७ २८ २७	७ ११ ३३ ४	८ २ ५१ ५२
८ बु.	१ ७ ३१ १०	३ १७ २८ ४८	५ ६ ५२ ३८	७ ९ १ ३८	४ ४ १८ २१	६ ६ ५५ ४	१ २७ २५ १६	७ ११ ३३ ५५	८ २ ५१ ३५
९ गु.	१ २० ५६ १४	३ १८ ७ ३	५ ७ २ ४२	७ ९ ७ २१	४ ३ ४५ ३०	६ ७ ० २०	१ २७ २२ ५	७ ११ ३४ ४७	८ २ ५१ २०
१० शु.	२ ४ ४१ २७	३ १८ ४५ १५	५ ७ ७ ५	७ ९ १३ १३	४ ३ १४ ८	६ ७ ५ ३८	१ २७ १८ ५५	७ ११ ३५ ४४	८ २ ५१ ६
११ श.	२ १८ ५१ १७	३ १९ २३ २६	५ ७ ५ ५४	७ ९ १९ १२	४ २ ४४ २५	६ ७ ११ १	१ २७ १५ ४५	७ ११ ३६ ४३	८ २ ५० ५४
१२ र.	३ ३ २३ ८	३ २० १ ३५	५ ६ ५८ ३१	७ ९ २५ २३	४ २ १६ ३२	६ ७ १६ २७	१ २७ १२ ३५	७ ११ ३७ ४५	८ २ ५० ४५
१३ च.	३ १८ १९ २७	३ २१ ३९ ४२	५ ६ ४४ ५६	७ ९ ३१ ४२	४ १ ५० ३६	६ ७ २१ ५८	१ २७ ९ २२	७ ११ ३८ ५०	८ २ ५० ४७
१४ मं.	४ ३ २७ १२	३ २१ १७ ४६	५ ६ २५ १	७ ९ ३८ ६	४ १ २६ ४२	६ ७ २७ ३१	१ २७ ६ ११	७ ११ ३९ ५८	८ २ ५० ३२
३० बु.	४ १८ ३१ ७	३ २२ ५५ ५०	५ ५ ५८ ४०	७ ९ ४४ ४५	४ १ ४५ ५८	६ ७ ३३ ८	१ २७ ३ १	७ ११ ४१ १	८ २ ५० २७

वक्री बुधः ५।७।८।२

भाद्रपदकृष्ण ८ बुधे अयनांशाः २३।३७।२७



भाद्रपदकृष्ण ३० बुधे अयनांशाः २३।३७।२८



गुरुः पूर्वस्याम् ।

॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥

शुक्रोदयः पूर्वस्याम् (दि. २९।८।८३)

रा.	१ बु.	२ गु.	३ शु.	४ श.	५ र.	६ चं.	७ मं.	८ बु.	९ गु.	१० शु.	११ श.	१२ र.	१३ चं.	१४ मं.	३० बु.
सि.	७ २४	७ २०	७ १६	७ १२	७ ८	७ ४	७ १	६ ५६	६ ५२	६ ४८	६ ४४	६ ४०	६ ३६	६ ३२	[illegible]
कं.	९ ३७	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २१	९ १७	९ १४	९ ९	९ ५	९ १	८ ५७	८ ५३	८ ४९	८ ४५	[illegible]
तु.	११ ५४	११ ५०	११ ४६	११ ४२	११ ३८	११ ३४	११ ३१	११ २६	११ २२	११ १८	११ १४	११ १०	११ ६	११ २	[illegible]
वृ.	२ १२	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५२	१ ४९	१ ४४	१ ४०	१ ३६	१ ३२	१ २८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	४ १८	४ १४	४ १०	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५५	३ ५०	३ ४६	३ ४२	३ ४०	३ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	६ ४	६ ०	५ ५६	५ ५२	५ ४८	५ ४४	५ ४१	५ ३६	५ ३२	५ २८	५ २४	५ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कुं.	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २३	७ १९	७ १५	७ १२	७ ७	७ ३	६ ५९	६ ५५	६ ५१	६ ४७	६ ४३	६ ३९
मी.	९ ३	८ ५९	८ ५५	८ ५१	८ ४७	८ ४३	८ ४०	८ ३५	८ ३१	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ ११	८ ७
मे.	१० ४१	१० ३७	१० ३३	१० २९	१० २५	१० २१	१० १८	१० १३	१० ९	१० ५	१० १	९ ५७	९ ५३	९ ४९	९ ४५
वृ.	१२ ३७	१२ ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २१	१२ १७	१२ १४	१२ ९	१२ ५	१२ १	११ ५७	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४२
मि.	२ ५१	२ ४७	२ ४३	२ ३९	२ ३५	२ ३१	२ २८	२ २३	२ १९	२ १५	२ ११	२ ७	२ ३	१ ५९	१ ५५
क.	५ ९	५ ५	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ४९	४ ४६	४ ४१	४ ३७	४ ३३	४ २९	४ २५	२ २१	[illegible] १७	२ १३

अथ जन्माष्टमी–कृष्णादिमासेन भाद्रकृष्णाष्टमी । सा च द्वेधा, जन्माष्टमी जयन्ती चेति । तत्राद्या केवलाष्टमी सैव रोहिणीयुक्ता जयन्ती । एतद्व्रतपारण तु "तिथिरष्टगुणं हन्ति नक्षत्रं च चतुर्गुणम् । तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभान्ते च पारणम् ॥" इति ब्रह्मवैवर्तात् । बचनतो तु "तिथ्यन्ते तिथिभान्ते वा पारणं यत्र चोदितम् । यामत्रयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेव पारणम् ।" [illegible] । कारणस्थवा G
[illegible] पारणा ॥" इति कालादर्शे, मदनरत्ने स्कान्दे चात्र फलमुक्तं "जन्माष्टमी व्रतं ये वै प्रकुर्वन्ति नरोत्तमाः । कारयन्त्यथवा G

आकाश दर्शन

ता. [illegible] । [illegible] स्टॅं. [illegible] पर ।
ता. [illegible] पर ।
ता. [illegible] स्टॅं. [illegible] ५० पर ।

[G लोकान् [illegible] सदा स्थिरा ॥ सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि इति जन्माष्टमीव्रते ॥" इति । एतद्व्रताकरणे प्रत्यवायो यथा "ये न कुर्वन्ति जानन्तः कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । ते भवन्ति नराःप्राज्ञ ! व्यालाव्याघ्राश्च कानने ॥" इति स्कान्दे । तथा, "श्रावणे बहुले पक्षे कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । न करोति नरो यस्तु भवति क्रूरराक्षसः ॥" इति भविष्योक्तौ ।

दि. मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	न. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	यो. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगा	रा. ता.	अं. ता.	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	चं. अ. स्टॅ. टा.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	र. क्रां. उ + अं. क	स्प. मध्याह्न काल स्टॅ. टा.	साम्पा. काल घं. मि. से.	औदा. स्प. सू. रा. अं. क. वि.
३० ५७	२ गु.	४८ ५०	रा. १ १५	पू.फा. २४ ३८	दि. ३ ३४	शु. ४४ ३	रा. ११ २०	वा. २२ ५३	कौ. ४८ ५०	मातङ्ग	१७	८	२२	२९	१६	कुं.		७ २५	५ ४२	६ ९	६ ०	११ ५५ ५७	२३ ५ ४	४ २१ १० ६
३० ५३	३ शु.	४२ ३	,, १० ३२	ह. १९ १०	,, १ २३	शु. ३५ ३५	,, ७ ५७	तै. १५ १६	ग. ४२ ३	अमृत	१८	९	२३	१	१७	तु. ४७ ०	रा. १२ ३१	८ ४	५ ४३	६ ८	५ ३७	११ ५५ ३७	२३ ९ १	४ २२ ८ २३
३० ५०	४ श.	३६ ५८	,, ८ ३०	चि. १५ १५	,, ११ ४९	ब्र. २८ ३०	दि. ५ ७	व. ९ १९	भ. ३६ ५८	काण	१९	१०	२४	२	१८	तु.		८ ४२	५ ४३	६ ७	५ १४	११ ५५ १६	२३ १२ ५७	४ २३ ६ ४१
३० ४६	५ र.	३३ ४८	,, ७ १५	स्वा. १३ १०	,, ११ ०	ऐं. २३ ०	,, २ ५६	बव ५ ७	बा. ३३ ४८	लुम्ब	२०	११	२५	३	१९	वृ. ५८ ७	रा. ४ ५६	९ २१	५ ४४	६ ६	४ ५२	११ ५४ ५५	२३ १६ ५४	४ २४ ५ २
३० ४२	६ चं.	३२ ५३	,, ६ ५३	वि. १३ १५	,, ११ २	वै. १० १३	,, १ २५	कौ. ३ ५	तै. ३२ ५३	मित्र	२१	१२	२६	४	२०	वृ.		१० २	५ ४४	६ ५	४ २९	११ ५४ ३४	२३ २० ५०	४ २५ ३ २४
३० ३९	७ मं.	३४ ३	,, ७ २१	अनु. १५ २५	,, ११ ५४	वि. १७ ८	,, १२ ३५	ग. ३ १३	व. ३४ ३	वज्र	२२	१३	२७	५	२१	वृ.		१० ४६	५ ४४	६ ४	४ ६	११ ५४ १३	२३ २४ ४७	४ २६ १ ४८
३० ३५	८ बु.	३७ १०	,, ८ ३७	ज्ये. १९ ३०	,, १ ३३	प्री. १६ ३३	,, १२ २२	भ. ५ २४	बव ३७ १०	ध्वांक्ष	२३	१४	२८	६	२२	ध. १९ ३०	दि. १ ३३	११ ३३	५ ४५	६ ३	३ ४३	११ ५३ ५२	२३ २८ ४३	४ २७ ० १४
३० ३२	९ गु.	४१ ५०	,, १० २९	मू. २५ १५	,, ३ ५१	आ. १७ २०	,, १२ ४१	वा. ० २०	कौ. ४१ ५०	धूम्र	२४	१५	२९	७	२३	ध.		१२ २३	५ ४५	६ २	३ २०	११ ५३ ३१	२३ ३२ ४०	४ २७ ५८ ४१
३० २८	१० शु.	४७ ३३	,, १२ ४७	पूषा. ३२ ८	रा. ६ ३७	सौ. १९ ३	,, १ २३	तै. १४ ३६	ग. ४७ ३३	प्रवर्ध	२५	१६	३०	८	२४	म. ४८ ५९	रा. १ २२	१ १४	५ ४६	६ १	२ ५७	११ ५३ ९	२३ ३६ ३७	४ २८ ५७ ११
३० २४	११ श.	५३ ५०	,, ३ १८	उषा. ३९ ३८	,, ६ ३७	शो. २१ २०	,, २ १८	व. २० ४०	भ. ५३ ५०	रक्ष	२६	१७	३१	९	२५	म.		२ ७	५ ४६	५ ५९	२ ३४	११ ५२ ४७	२३ ४० ३३	४ २९ ५५ ४१
३० २१	१२ र.	६० ०	× × ×	श्र. ४७ १३	,, १२ २९	अ. २३ ४८	,, ३ १७	बव २६ ५९	बा. ६० ०	गद	२७	१८	१	१०	२६	म.		३ ०	५ ४६	५ ५८	२ ११	११ ५२ २५	२३ ४४ ३०	५ ० ५४ १२
३० १७	१२ चं.	० ५	प्रा. ५ ४९	ध. ५४ ३०	,, ३ ३५	सु. २६ ५	,, ४ १३	बा. ० ५	कौ. ३३ ७	शुभ	२८	१९	२	११	२७	कुं. २० ५५	दि. २ ५	३ ५३	५ ४७	५ ५७	१ ४८	११ ५२ ३	२३ ४८ २६	५ १ ५२ ४६
३० १३	१३ मं.	६ ०	दि. ८ ११	श. ६० ०	× × ×	धृ. २८ ३	,, ५ ०	तै. ६ ०	ग. ३८ ४५	मृत्यु	२९	२०	३	१२	२८	कुं.		४ ४६	५ ४७	५ ५६	१ २४	११ ५१ ४२	२३ ५२ २३	५ २ ५१ २१
३० १०	१४ बु.	११ १८	,, १० ८	श. १ १५	प्रा. ६ १७	शू. २९ ३०	सा. ५ ३५	व. ११ १८	भ. ४३ ३८	मानस	३०	२१	४	१३	२९	मी. ५० ४९	रा. २ ७	५ ३८	५ ४७	५ ५५	१ १	११ ५१ २१	२३ ५६ १९	५ ३ ४९ ५८
३० ६	१५ गु.	१५ ४५	,, १२ ६	पूभा. ७ १५	दि. ८ ४२	गं. ३० १८	,, ५ ५५	बव १५ ४५	बा. ४७ ४१	मुद्गर	३१	२२	५	१४	३०	मी.		६ ४	५ ४८	५ ५४	० ३८	११ ५१ ०	० ० १६	५ ४ ४८ ३८

श्री संवत् २०४०शके१९०५ भाद्रपद शुक्लपक्षः।

८ सितम्बर से २२ सितम्बर सन् १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। उत्तरगोलः वर्षर्तुः। A

चन्द्रदर्शनम्। मु. ३०। फ. समता। मार्गीनेप्चून् २५।२५। [N ३१।३८ उ. यायीजयद योगः ३१।३८ या.।

मन्वादिः ३। वराहजयन्ती ३। हरितालिका ३। हस्तर्क्षसामगानां श्रावणी। जिल्हिज्ज १२। वे.प्र.४२।३०। वै.नि ५२।५३। १९

भ. ९।१९(दि.९।२४)उ.३६।५८ (रा.८।३०)या.। गणेश ४। वैनायकी ४। अत्रचन्द्रदर्शननिषेधः। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।१५उ.।

व.ग.आश्लेषासुकर्कचशुक्रः ५।५। ऋषि ५। यायीजयदयोगः १३।१० या.। दशलक्षण व्रतारंभः(जैन)। A राष्ट्रिय भाद्रपदः।

स्कन्द ६। सूर्य ६। सर्वार्थसिद्धि योगः १३।१५ उ.। [B सू.सू.योगः। वातनाडी। साधारणवृष्टिः। गौर्याबाहनम्।

भ. ३४।३ (रा.७।२१)उ.। उत्तरफल्गुन्योरर्क ३९।१५ (रा.९।२६)। स्त्री नपुं.योगः। वाहनं महिषः। उपवाहनं मेषः। B

भ. ५।५४ (दि. ७।५५) या.। व. गत्यासिंहे बुधः १८।१८। अन्नपूर्णा ८। महालक्ष्मीयात्रा। दूर्वा ८। पाक्षिक C

मार्गीशुक्रः २३।२८। उदासीनाचार्य भगवानश्रीचन्द्रजयन्ती। [F प्रसुप्तेजनार्दने। बुधाष्टमी [illegible]

मासान्तः। विश्वकर्मापूजा। [C महालक्ष्मी व्रतारंभः। गौरीपूजनम्। बुधाष्टमी। अत्र विशेषः-[illegible] F

भ. २०।४० (दि. २।२) उ.। ५३।५० (रा. ३।१८) या.। कन्यायामर्कः ४।२५ (दि.७।३२)। मु.४५। क. [illegible] G

वामनजयन्ती १२। ईदुज्जुहा अर्थात् बकरीद। द्विपुष्करयोगः ४७।१३ उ.। [K ११ व्रतं सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः N

मघासुसिंहे च भौमः ४७।१३। प्रदोष १३ व्रतम्। सोमप्रदोषः। [M व. गत्यापूर्वफल्गुन्योर्बुधः ३६।१० परिवर्तिनी K

पुनः मार्गगत्यामघासुसिंहे च शुक्रः २४।५८। [G सं.ज.पु.का. ४।२५ (दि. ७।३२)उ. २०।२५ (दि. [illegible]) या. M

भ. ११।१८ (दि. १०।८) उ.। ४३।३८ (रा. ११।१४) या.। बुधोदयः पूर्वस्याम् ४०।४५। व्रतायपूर्णिमा १५ L

प्रौष्ठपदी १५ श्राद्धम्। रत्नत्रयव्रत, सोलहकारणव्रतपूर्ण (जैन)। [L अनन्त १४ व्रतम्। (पूर्णिमोसुखमानाम्)।

प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि.२९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चन्द्रः रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
२ गु.	५ ३ ४४ २१	३ २२ ३५ ५१	५ ५ २६ १	७ ९ ५१ ३०	४ ० ४५ २९	६ ७ ३८ ४८	१ २६ ५९ ५०	७ ११ ४२ २४	८ २ ५० २६
३ शु.	५ १८ ३२ ४९	३ २३ ११ ५०	५ ४ ४७ १३	७ ९ ५८ २४	४ ० २८ १७	६ ७ ४४ ३२	१ २६ ५६ ४०	७ ११ ४३ ४१	८ २ ५० २६
४ श.	६ २ ५६ ५१	३ २३ ४९ ४८	५ ४ २ ३९	७ १० ५ २६	४ ० १३ २५	६ ७ ५० १९	१ २६ ५३ ६	७ ११ ४५ १	८ २ ५० २८
५ र.	६ १६ ५२ १२	३ २४ २७ ४३	५ ३ १२ ४६	७ १० १२ ३६	४ ० ० ५७	६ ७ ५६ १०	१ २६ ५० १८	७ ११ ४६ १४	८ २ ५० ३२
६ चं.	७ ० १८ १	३ २५ ५ ३६	५ २ १८ २२	७ १० १९ ५५	३ २९ ५० ५१	६ ८ २ ४	१ २६ ४७ ७	७ ११ ४७ ५०	८ २ ५० ३८
७ मं.	७ १३ १६ १६	३ २५ ४३ २८	५ १ २० १५	७ १० २७ २२	३ २९ ४३ ९	६ ८ ८ ०	१ २६ ४३ ५७	७ ११ ४९ १९	८ २ ५० ४६
८ बु.	७ २५ ५० ५०	३ २६ २१ १७	५ ० १९ ३६	७ १० ३४ ५७	३ २९ ३७ ५२	६ ८ १४ ०	१ २६ ४० ४६	७ ११ ५० ५१	८ २ ५० ५६
९ गु.	८ ८ ६ ३५	३ २६ ५९ ४	४ २९ १७ ३६	७ १० ४२ ४०	३ २९ ३४ ५८	६ ८ २० ३	१ २६ ३७ ३५	७ ११ ५२ २६	८ २ ५१ ८
१० शु.	८ २० ८ ५१	३ २७ ३६ ५०	४ २८ १५ ३९	७ १० ५० ३०	३ २९ ३४ २६	६ ८ २६ ९	१ २६ ३४ २४	७ ११ ५४ ३	८ २ ५१ २२
११ श.	९ २ २४ ४	३ २८ १४ ३३	४ २७ १५ १४	७ १० ५८ २९	३ २९ ३६ १५	६ ८ ३२ १८	१ २६ ३१ १४	७ ११ ५५ ४४	८ २ ५१ ३८
१२ र.	९ १३ ५२ ५०	३ २८ ५२ १५	४ २६ १७ ५५	७ ११ ६ ३५	३ २९ ४० २१	६ ८ ३८ २९	१ २६ २८ ३	७ ११ ५७ २७	८ २ ५१ ५६
१२ चं.	९ २५ ४३ ८	३ २९ २९ ५५	४ २५ २४ ५२	७ ११ १४ ४९	३ २९ ४६ ४४	६ ८ ४४ ४२	१ २६ २४ ५२	७ ११ ५९ १३	८ २ ५२ १५
१३ मं.	१० ७ ३६ ४४	४ ० ७ ३२	४ २४ ३७ ४५	७ ११ २३ १०	३ २९ ५५ १९	६ ८ ५१ ०	१ २६ २१ ४१	७ १२ १ २	८ २ ५२ ३७
१४ बु.	१० १९ ३५ ५७	४ ० ४५ ८	४ २३ ५७ ४२	७ ११ ३१ ३८	४ ० ६ ५	६ ८ ५७ २०	१ २६ १८ ३१	७ १२ २ ५३	८ २ ५३ १
१५ गु.	११ १ ४२ २१	४ १ २२ ४२	४ २३ २५ ४४	७ ११ ४० १४	४ ० १८ ५८	६ ९ ३ ४२	१ २६ १५ २०	७ १२ ४ ४७	८ २ ५३ २७

मार्गी नेप्चून ८।२।५०।२५

मार्गी शुक्रः ३।२९।३३।२९

भाद्रपद शुक्ल ८ बुधे अयनांशाः २३।३७।२८



भाद्रपद शु. १५ गुरौ अयनांशाः २३।३७।२९



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी ॥ (स्टॅडर्ड टाइम) शुक्रः पूर्वस्याम्।

रा.	२ गु.	३ शु.	४ श.	५ र.	६ चं.	७ मं.	८ बु.	९ गु.	१० शु.	११ श.	रा.	१२ र.	१२ चं.	१३ मं.	१४ बु.	१५ गु.
सिं.	६ २४	६ २०	६ १६	६ १२	६ ८	६ ४	६ ०	५ ५६	५ ५३	५ ४८	कं.	७ ५७	७ ५४	७ ४९	[illegible]	[illegible]
कं.	८ ३७	८ ३३	८ २९	८ २५	८ २१	८ १७	८ १३	८ ९	८ ६	८ १	तु.	१० १४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	१० ५४	१० ५०	१० ४६	१० ४३	११ ३८	११ ३४	११ ३०	११ २६	११ २३	११ १८	वृ.	१२ २२	१२ २०	१२ १५	[illegible]	[illegible]
वृ.	१ १२	१ ८	१ ४	१ १	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६	ध.	२ ३८	२ ३४	२ ३०	२ २६	[illegible]
ध.	३ १८	३ १४	३ १०	३ ७	३ २	२ ५८	२ ५४	२ ५०	२ ४७	२ ४२	मं.	४ २४	४ २१	४ १६	[illegible]	४ ८
म.	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५३	४ ४८	४ ४४	४ ४०	४ ३६	४ ३३	४ २८	कुं.	५ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा	रा.	रा.	रा.	रा.	रा	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कुं.	६ ३५	६ ३१	६ २७	६ २४	६ १९	६ १५	६ ११	६ ७	६ ४	५ ५९	मी.	७ २२	७ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	८ ३	७ ५९	७ ५५	७ ५२	७ ४७	७ ४३	७ ३९	७ ३५	७ ३२	७ २७	मे.	९ १	८ ५८	८ ५३	[illegible]	[illegible]
मे.	९ ४१	९ ३७	९ ३३	९ ३०	९ २५	९ २१	९ १७	९ १३	९ १०	९ ५	वृ.	१० ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	११ ३७	११ ३३	११ २९	११ २६	११ २१	११ १७	११ १३	११ ९	११ ४	१० ५९	मि.	१ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	१ ५१	१ ४७	१ ४३	१ ४०	१ ३५	१ ३१	१ २७	१ २३	१ २०	१ १५	क.	३ २९	३ २६	३ २१	३ १७	३ १३
क.	४ ६	४ ५	४ १	३ ५८	३ ५३	३ ४९	३ ४५	३ ४१	३ ३८	३ ३३	सिं	[illegible]	[illegible]	५ ४६	५ ३२	५ २८

भाद्रशुक्लतृतीयायां हरितालिकाव्रतम्। तत्र मुहूर्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्येति शिष्टसम्प्रदायः। भाद्रशुक्लचतुर्थी गणेशचतुर्थी। सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वये साकल्येन मध्याह्नव्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वा। दिनद्वये साम्येन वैषम्येण वैकदेशव्याप्तावपि पूर्वैव। पूर्वदिने एकदेशेन मध्याह्नव्यापिनी परदिने सम्पूर्णमध्याह्नव्यापिनी तदा परा। अत्र चतुर्थ्यां चन्द्रदर्शने मिथ्याभिदूषणदोषः तेन चतुर्थ्यामुदितस्य पञ्चम्यां दर्शने विनायकव्रतदिनेऽपि न दोषाय। पूर्वदिने सायाह्नमारभ्य प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेऽपि [illegible] चन्द्रदर्शने [illegible]। दर्शने जाते तद्दोषपरिहाराय "सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक! मा रोदीस्तव ह्येषः स्यमन्तकः॥" इति श्लोकपाठः कार्यः।

आकाश दर्शन

ता. १०।९।८३, श. चं. यो., चं. श. १ अं. ४० क. दक्षिण, स्टॅ. टा. दि. घं. १२ मि. ५२ पर।

ता. ११।९।८३, गु. चं. यो., चं. गु. ० अं. ५५ क. दक्षिण, स्टॅ. टा. रा. घं. ११ मि. ५८ पर।

ता. १२।९।८३, ह. चं. यो., चं. ह. १ अं. २७ क. दक्षिण, स्टॅ. टा. रा. घं. १ मि. ११ पर।

ता. १४।९।८३ ने. चं. यो., चं. ने. ० अं. ४५ क. दक्षिण, स्टॅ. टा. रा. घं. ७ मि. १२ पर।

ता. १४।९।८३ शु. मी. यो., मी. शेपु ८ अं. ३३ क. दक्षिण, स्टॅ. टा. रा. घं. १२ मि. २६ पर।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टैं.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टैं.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टैं.टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगः
३०	२	१	शु.	१९	२५	दि.	१	३४	उभा.	१२	२५	दि.	१०	४६	वृ.	३०	२८	सा.	५	५९	कौ.	१६	२५	तै.	५०	५५	केतु
२९	५९	२	श.	२२	१०	,,	२	४१	रेव.	१६	४५	,,	१२	३१	ध्रु.	२१	५५	,,	५	४७	ग.	२२	१०	व.	५३	१४	धाता
२९	५५	३	र.	२४	३	,,	३	२६	अ.	२०	१५	,,	१	५५	व्या.	२८	४०	दि.	५	१७	भ.	२४	३	ब.	५४	३६	आनन्द
२९	५१	४	चं.	२४	५८	,,	३	४८	भ.	२२	४८	,,	२	५६	ह.	२६	४३	,,	४	३०	वा.	२४	५८	कौ.	५५	२	चर
२९	४८	५	मं.	२४	५०	,,	३	४६	कृ.	२४	१८	,,	३	३३	व.	२३	५३	,,	३	२३	तै.	२४	५०	ग.	५४	२२	गद
२९	४४	६	बु.	२३	३५	,,	३	१६	रो.	२४	४५	,,	३	४४	सि.	२०	१०	,,	१	५४	व.	२३	३५	भ.	५२	२८	शुभ
२९	४०	७	गु.	२१	३	,,	२	१६	मृ.	२३	५५	,,	३	२५	व्य.	१५	२८	,,	१२	२	बव	२१	३	बा.	४६	२०	मृत्यु
२९	३६	८	शु.	१७	१८	,,	१२	४६	आ.	२१	५३	"	२	३६	व.	९	४५	,,	९	४१	कौ.	१७	१८	तै.	४४	५७	पद्म
२९	२३	९	श.	१२	१८	,,	१०	४६	पुन.	१८	३८	"	१	१८	प.	५२	२६	,, रा.	७ ४	४ ०	ग.	१२	१८	व.	३६	२१	छत्र
२९	२९	१०	र.	५२	४६	,, मा.	५	११ २६	पु.	१४	१०	"	११	३२	सि.	४६	५०	,,	१२	३६	भ.	६	८	वव	३२ ५६	३१ २	श्रीवत्स
२९	२५	१२	चं.	५१	१०	रा.	२	२०	श्ले.	८	५०	"	९	२४	सा.	३७	४३	,,	८	५७	कौ.	२१	१०	तै.	५१	१०	सौम्य
२९	२२	१३	मं.	४२	५८	,,	११	४	म.	२ ५५	४ ४८	,, रा.	७ ४	० ५१	शु.	२८	१०	दि.	५	९	ग.	१७	५	व.	४२	५८	कालदण्ड
२९	१८	१४	बु.	३४	५०	,,	७	४९	पूफा.	५०	२८	,,	२	४	शु.	१८	३१	,,	१	१९	भ.	८	५२	श.	३४	५०	प्रवर्ध
२९	१४	३०	गु.	२७	१०	दि.	४	४६	ह.	४४	५५	"	११	५२	ब्र.	९	१५	,,	९	२६	च.	०	५५	ना.	२७ ५९	१० ५८	रक्ष

योगः	रा. मि.	अं. ता.	बं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टैं.टा.	घं.	मि.	चं.उ. स्टैं.टा.	सू.उ. स्टैं.टा.	सू.अ. स्टैं.टा.	सू.क्रा. अं.	क.	स्प.मध्याह्न का. स्टैं.टा.			साम्पा. का. घं.	मि.	से.	औदयिकस्पष्टसूर्यः रा.	अं.	क.	वि.
केतु	१	२३	६	१५	१	मी.						६ ५०	५ ४८	५ ५३	उ. ०	+ १४	११	५०	३१	०	४	१३	५	५	४७	१९
धाता	२	२४	७	१६	२	मे.	१६	४५	दि.	१२	३१	७ २२	५ ४९	५ ५२	द. ०	९	११	५०	१८	०	८	८	५	६	४६	२
आनन्द	३	२५	८	१७	३	मे.						७ ५७	५ ४९	५ ५१	०	३३	११	४९	५७	०	१२	५	५	७	४४	४७
चर	४	२६	९	१८	४	वृ.	३८	१७	रा.	९	८	८ ३४	५ ४९	५ ५०	०	५७	११	४९	३६	०	१६	१	५	८	४३	३४
गद	५	२७	१०	१९	५	वृ.						९ १६	५ ५०	५ ४९	१	१९	११	४९	१६	०	१९	५८	५	९	४२	२४
शुभ	६	२८	११	२०	६	मि.	५४	२१	रा.	३	३८	१० ४	५ ५०	५ ४८	१	४३	११	४८	५६	०	२३	५४	५	१०	४१	१६
मृत्यु	७	२९	१२	२१	७	मि.						१० ५८	५ ५१	५ ४६	२	६	११	४८	३६	०	२७	५१	५	११	४०	१०
पद्म	८	३०	१३	२२	८	मि.						१२ ०	५ ५१	५ ४५	२	२९	११	४८	१६	०	३१	४७	५	१२	३९	६
छत्र	९	१	१४	२३	९	क.	४	३४	दि.	७	४१	१ ३	५ ५१	५ ४४	२	५३	११	४७	५६	०	३५	४४	५	१३	३८	४
श्रीवत्स	१०	२	१५	२४	१०	क.						२ १०	५ ५२	५ ४३	३	१६	११	४७	३७	०	३९	४२	५	१४	३७	५
सौम्य	११	३	१६	२५	११	सिं.	८	५०	दि.	९	२४	३ १७	५ ५२	५ ४२	३	३९	११	४७	१८	०	४३	३८	५	१५	३६	९
कालदण्ड	१२	४	१७	२६	१२	सि.						४ २३	५ ५३	५ ४१	४	२	११	४६	५९	०	४७	३५	५	१६	३५	१६
प्रवर्ध	१३	५	१८	२७	१३	कं.	१०	२	दि.	९	५४	३१ २८	५ ५३	५ ४०	४	२५	११	४६	४१	०	५१	३१	५	१७	३४	२४
रक्ष	१४	६	१९	२८	१४	कं.						अ५ १६	५ ५४	५ ३९	४	४६	११	४६	२३	०	५५	२८	५	१८	३३	३४

श्रीशुभसंवत् २०४० शके१९०५ आश्विनकृष्णपक्षः।

२३ सितम्बरसे ६ अक्टूबर सन् १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। उत्तरगोलः। शरदृतुः।

सायनतुलायामर्कः ३६।० । राष्ट्रियआश्विनः । इष्टिः । महालयारंभः । अमृतसिद्धियोगः १२।२१ उ. । सर्वार्थसिद्धि A

भ. ५३।१० (रा. ३।७) उ. । अशून्यशयनव्रतम् । मार्गीबुधः ५१।१० । राष्ट्रिय आश्विनः ।

भ. २४।३ दि. ३।२६) या. । संकष्ट ४ । चं.उ. घं. ७ मि. ५७ । सर्वार्थसिद्धियोगः २०।१५ या. । यायीजयदयोगः २०।१५ B

चर योगः । [X वृष्टिः । सर्वार्थसिद्धियोगः २४।१८ या. । [B उ. २४।३ या. ।

हस्तेऽर्कः १७।५५ (दि. १।०) । स्त्री पु. योगः । वाहनं कुञ्जरः । उपवाहनं वृषभः । चं. सू. योगः । नाड़ी । मध्यमा X

भ. २३।३५ (दि. ३।१६) उ. ५२।२८ (रा. २।४९) या. । सर्वार्थसिद्धियोगः २४।४५ या. । [A योगः २२।३५ उ. ।

काल ८ । जीवत्पुत्रिकाव्रतम् । पाक्षिकमहालक्ष्मीव्रत समाप्तिः ।

श्रीमहालक्ष्मीयात्रा । मातृ ९ । सर्वार्थसिद्धियोगः २१।५३ उ. । बोधनोत्सवः ।

भ ३९।२१ (रा. ११।३४)उ. ।अक्टूबर १० । मा०गत्या पुनः उत्तरफल्गुन्योर्बुधः५३।३ । यायीजयदयोगः १२।१८या. ।

भ. ६।८ (दि.८।१९)या. । इन्दिरा११व्रतं स्मार्त्तानाम् । महात्मागांधी का जन्मदिवस । सर्वार्थसिद्धियोगः ८।१० या. ।

इन्दिरा ११ व्रतं वैष्णवानाम् । यायीजयदयोगः ८।५० या. ।

भ. ४२।५८ (रा. ११।४) उ. । मा० गत्या पुनः कन्यायां बुधः ३८।३३ । प्रदोष १३ व्रतम् । भौमप्रदोष व्रतं C

भ. ८।५२ (दि. ९।२६) या. । वै० प्र० २९।३५ । वै० नि० ३९।१३ । [C युगादिः १३ । महाशिवरात्रि १४ व्रतम् ।

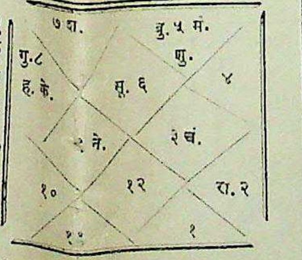
दर्शः । पितृविसर्जनम् ।

प्रातः स्टैं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाःस्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

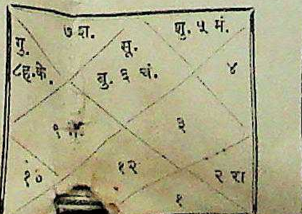
ति.	वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेप्च्यून रा.	अं.	क.	वि.
१	शु.	११	१३	५६	५६	४	२	०	१४	४	२३	२	४१	७	११	४८	५६	४	०	५३	५४	६	६	१०	७	१	२६	१२	९	७	१२	६	४४	८	२	५३	५४
२	श.	११	२६	२०	२०	४	२	३७	४५	४	२२	४९	८	७	११	५७	४७	४	०	५०	५१	६	६	१६	३४	१	२६	८	५९	७	१२	८	४४	८	२	५४	२४
३	र.	०	८	५३	१२	४	३	१५	१३	४	२२	४५	२७	७	१२	६	४४	४	१	६	४५	६	६	२३	३	१	२६	५	४८	७	१२	१०	४६	८	२	५४	५६
४	चं.	०	२१	३६	२२	४	३	५२	४०	४	२२	५१	४७	७	१२	१५	४७	४	१	३०	३२	६	६	२९	३५	१	२६	२	३७	७	१२	१२	५१	८	२	५५	२९
५	मं.	१	४	३१	६	४	४	३०	५	४	२३	८	६	७	१२	२४	५९	४	१	५३	६	६	६	३६	९	१	२५	५९	२६	७	१२	१४	५८	८	२	५६	४
६	बु.	१	१७	३८	७	४	५	७	२९	४	२३	३४	६	७	१२	३४	१६	४	२	१७	३२	६	६	४२	४६	१	२५	५६	१६	७	१२	१७	८	८	२	५६	४३
७	गु.	२	१	२	२९	४	५	४४	५०	४	२४	९	३५	७	१२	४३	४०	४	२	४३	३८	६	६	४९	२४	१	२५	५३	५	७	१२	१९	२१	८	२	५७	२२
८	शु.	२	१४	४२	१२	४	६	२२	१०	४	२४	५३	५४	७	१२	५३	११	४	३	११	२२	६	६	५६	५	१	२५	४९	५४	७	१२	२१	३५	८	२	५८	३
९	श.	२	२८	४२	४०	४	६	५९	२८	४	२५	४६	३०	७	१३	२	४९	४	३	४०	४२	६	७	२	४८	१	२५	४६	४३	७	१२	२३	५३	८	२	५८	४६
१०	र.	३	१३	२	५७	४	७	३६	४४	४	२६	४६	४७	७	१३	१२	३२	४	४	११	३५	६	७	९	३३	१	२५	४३	३३	७	१२	२६	१३	८	२	५९	३२
१२	चं.	३	२७	३६	५	४	८	१३	५८	४	२७	५३	५६	७	१३	२२	२२	४	४	४३	५५	६	७	१६	२०	१	२५	४०	२२	७	१२	२८	३६	८	३	०	१९
१३	मं.	४	१२	२३	३०	४	८	५१	१०	४	२९	७	१९	७	१३	३२	१६	४	५	१७	४१	६	७	२३	१	१	२५	३७	११	७	१२	३१	०	८	३	१	७
१४	बु.	४	२७	१६	११	४	९	२८	२०	५	०	२६	१६	७	१३	४२	२२	४	५	५२	४९	६	७	२९	५०	१	२५	३४	०	७	१२	३३	२८	८	३	१	५८
३०	गु.	५	१२	६	०	४	१०	५	२९	५	१	४९	५६	७	१३	५२	३०	४	६	३६	१६	६	७	३६	५१	१	२५	३०	५०	७	१२	३५	५८	८	३	२	५१

आश्विनकृष्ण ८ शुक्रे अयनांशाः २३।३७।३०

मार्गी बुधः ५१।१०



आश्विनकृष्ण ३० गुरौ अयनांशाः २३।३७।३१



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पूर्वस्याम् ।

रा.	१ शु.		२ श.		३ र.		४ चं.		५ मं.		६ बु.		७ गु.		८ शु.		९ श.		१० र.		१२ चं.		१३ मं.		१४ बु.		३० गु.	
कं.	७	३८	७	३४	७	३१	७	२६	७	२३	७	१८	७	१५	७	१०	७	६	७	३	६	५८	६	५५	६	५०	६	४७
तु.	९	५५	९	५१	९	४८	९	४३	९	४०	९	३५	९	३२	९	२७	९	२३	९	२०	९	१५	९	१२	९	७	९	४
वृ.	१२	१३	१२	९	१२	६	१२	१	११	५८	११	५३	११	५०	११	४५	११	४१	११	३८	११	३३	११	३०	११	२५	११	२२
ध.	२	१९	२	१५	२	१२	२	७	२	४	१	५९	१	५६	१	५१	१	४७	१	४४	१	३९	१	३६	१	३१	१	२८
म.	४	५	४	१	३	५८	३	५३	३	५०	३	४५	३	४२	३	३७	३	३३	३	३०	३	२५	३	२२	३	१७	३	१४
कुं.	५	३६	५	३२	५	२९	५	२४	५	२१	५	१६	५	१३	५	८	५	४	५	१	४	५६	४	५३	४	४८	४	४५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मी.	७	४	७	०	६	५७	६	५२	६	४९	६	४४	६	४१	६	३६	६	३२	६	२९	६	२४	६	२१	६	१६	६	१३
मे.	८	४२	८	३८	८	३५	८	३०	८	२७	८	२२	८	१९	८	१४	८	१०	८	७	८	२	७	५९	७	५४	७	५१
वृ.	१०	३८	१०	३४	१०	३१	१०	२६	१०	२३	१०	१८	१०	१५	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५८	९	५५	९	५०	९	४७
मि.	१२	५२	१२	४८	१२	४५	१२	४०	१२	३७	१२	३२	१२	२९	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१२	१२	९	१२	४	१२	१
क.	३	१०	३	६	३	३	२	५८	२	५५	२	५०	२	४७	२	४२	२	३८	२	३५	२	३०	२	२७	२	२२	२	१९
सि.	५	२५	५	२१	५	१८	५	१३	५	१०	५	५	५	२	४	५७	४	५३	४	५०	४	४५	४	४२	४	३७	४	३४

महालयः--तत्र दर्शान्त भाद्रपदापरपक्षे (आश्विनकृष्णपक्षे) प्रतिपत्समारभ्य दर्शान्तं तिथिवृद्धौ षोडश महालयाः कर्तव्याः । वृद्धिक्षयाभावे पञ्चदशैव महालयाः । तिथिक्षये चतुर्दशैव । अशक्तेन न तु पञ्चम्यादिषु षष्ठ्यादिषु अष्टम्यादिषु दशम्यादिषु, एकादश्यादिषु दर्शान्ततिथिषु कार्याः । अत्राप्यशक्तानानिषिद्धे कस्मिंश्चिदेकस्मिन् दिने सकृन्महालयः कर्तव्यः । प्रति पदादिदशान्तपक्षे चतुर्दशी न वर्ज्या । पञ्चम्यादिदर्शान्तपञ्चपक्षेषु चतुर्दशीवर्जयित्वान्यतिथिषु महालयाः । सकृन्महालयेऽपि चतुर्दशी वर्जनीया । सकृन्महालये प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी चतुर्दशी शुक्रवारो, जन्म-नक्षत्रं, जन्मनक्षत्राद्दशमं, एकोनविंशं नक्षत्रं च, रोहिणी, मघा, रेवती चेति वर्ज्यानि । क्वचित् त्रयोदशी, सप्तमी, रविवारो, भौमवारोऽपि वर्ज्य उक्तः । पितृमृततिथौ सकृन्महालयकरणे नन्दादिनिषेधो नास्ति । अशक्तः पितृपक्षे तु करोत्येकदिने यतः । निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात्पिण्डदानं यथाविधि ॥१॥ इत्यादिवचनात् ॥

आकाश दर्शन

[illegible]

दि.मा घ.प	ति.वा	घ.प	स्टँ.टा. घं.मि	न.	घ.प	स्टँ.टा. घं.मि	यो.	घ.प	स्टँ.टा. घं.मि	क.	घ.प	क.	घ.प	योग	रा.मि	अं.ता	व.ता	फा.ता	फ.फा	चन्द्रः रा. घ.प	स्टँ.टा. घं.मि	च.अ. स्टँ.टा.	सू.उ. स्टँ.टा.	सू.अ. स्टँ.टा.	र.क्रा.द. अं.क	स्प.मध्याह्न स्टँ.टा. घं.मि.से.	साम्पा.काल घं.मि.से.	औद.स्पष्ट सूर्य रा.अं.क.वि.
२९ ११	१ बु.	२० २३	दि. २ ३	चि.	४० २८	रा. १० ५	वै.	[illegible]	[illegible]	बव	२० २३	बा.	४७ ३०	मुशल	१५	७	२०	२९	१५	तु. १२ ३४	दि. १० ५६	६ ३४	५ ५४	५ ३८	५ १२	११ ४६ ५	० ५९ २४	५ १९ ३२ ४६
२९ ७	२ श.	१४ ५८	,, ११ ५३	स्वा	३७ २८	,, ८ ५३	वि.	४६ १८	,, १२ २५	कौ.	१४ ५८	तै.	४२ ५०	सिद्धि	१६	८	२१	१	१७	तु.		७ १३	५ ५४	५ ३७	५ ३५	११ ४५ ४८	१ ३ २१	५ २० ३२ ०
२९ ३	३ र.	११ ८	,, १० २२	वि.	३६ १०	,, ८ २३	प्री.	४० १३	,, १० २४	ग.	११ ८	व.	३९ ५७	उत्पात	१७	९	२२	२	१७	वृ. २१ १९	दि. २ २७	७ ५४	५ ५५	५ ३६	५ ५८	११ ४५ ३१	१ ७ १७	५ २१ ३१ १६
२९ ०	४ चं.	९ १५	,, ९ ३७	अनु	३६ ५०	,, ८ ३९	आ.	३७ ४८	,, ९ २	भ.	९ १५	बव	३९ ९	मानस	१८	१०	२३	३	१८	वृ.		८ ४०	५ ५५	५ ३५	६ २०	११ ४५ १५	१ ११ १४	५ २२ ३० ३४
२८ ५६	५ मं.	९ ८	,, ९ ४२	ज्ये.	२९ ३३	,, ० ४४	सौ.	३५ ५८	,, ८ १८	ग.	९ २८	कौ.	४० २०	मुद्गर	१९	११	२४	४	१९	ध. ३९ ३३	रा. ९ ४४	० २४	५ ५५	५ ३४	६ ४३	११ ४४ ५६	१ १५ ११	५ २३ २९ ५३
२८ ५२	६ बु.	११ ४०	,, १० ३६	मू.	४४ ५	,, ११ ३४	शो.	३५ ३३	,, ८ ९	तै.	११ ४०	ग.	४३ २९	केतु	२०	१२	२५	५	२०	ध.		१० १४	५ ५६	५ ३३	७ ६	११ ४४ ४३	१ १९ ७	५ २४ २९ १५
२८ ४९	७ गु.	१५ ३५	,, १२ ११	पूषा	५० ८	,, २ ०	अ.	३६ २५	,, ८ ३१	व.	१५ ३५	भ.	४८ ७	धाता	२१	१३	२६	६	२१	ध.		११ ६	५ ५७	५ ३२	७ २८	११ ४४ २८	१ २३ ४	५ २५ २८ ४०
२८ ४५	८ शु.	२० ५५	,, २ १६	उषा	५७ १०	,, ४ ४९	सु.	३८ १०	,, ९ १३	बव	२० ५५	बा.	५३ ५४	आनन्द	२२	१४	२७	७	२२	म. ६ ५०	दि. ८ ४२	११ ५९	५ ५७	५ ३१	७ ५१	११ ४४ १४	१ २७ ०	५ २६ २८ ५
२८ ४२	९ श.	२७ ०	,, ४ ४६	श्र.	६० ०	× ×	धृ.	४० २३	,, १० ७	कौ.	२७ ०	तै.	६० ०	सुस्थिर	२३	१५	२८	८	२३	म.		१२ ५३	५ ५८	५ ३०	८ १३	११ ४४ ०	१ ३० ५७	५ २७ २७ ३३
२८ ३८	१० र.	३३ २०	रा. ७ १८	श्र.	४ ३८	दि. ७ ४०	शू.	४२ ३८	,, ११ १	तै.	० ११	ग.	३३ २०	गद	२४	१६	२९	९	२४	कुं. ३८ २०	रा. ९ ८	१ ४६	५ ५८	५ २९	८ ३५	११ ४३ ४६	१ ३४ ५३	५ २८ २७ २
२८ ३४	११ चं.	३६ १५	,, ९ ४१	ध.	११ ५८	,, १० ४६	ग.	४४ ३५	,, ११ ४६	व.	६ २३	भ.	३९ १५	शुभ	२५	१७	३०	१०	२५	कुं.		२ ३८	५ ५९	५ २८	८ ५८	११ ४३ ३३	१ ३८ ५०	५ २९ २६ ३३
२८ ३१	१२ मं.	४४ २८	,, ११ ४६	श.	१८ ४८	,, १ ३०	वृ.	४५ ५८	,, १२ २२	बव	१७ ५९	बा.	४४ २८	मृत्यु	२६	१८	१	११	२६	कुं.		३ ३०	५ ५९	५ २७	९ २०	११ ४३ २१	१ ४२ ४६	६ ० २६ ६
२८ २७	१३ बु.	४८ ३५	,, १ २६	पूभा	२४ ३८	,, ३ ५१	ध्रु.	४६ ३०	,, १२ ३६	कौ.	१६ ४०	तै.	४८ ३५	पद्म	२७	१९	२	१२	२७	मी. ८ १५	दि. ६ १८	४ २३	६ ०	५ २७	९ ४२	११ ४३ ९	१ ४६ ४३	६ १ २५ ४१
२८ २४	१४ गु.	५१ ३५	,, २ ३८	उभा	२९ २८	सा. ५ ४७	व्या.	४६ १३	,, १२ २६	गर	२० १४	व.	५१ ३५	छत्र	२८	२०	३	१३	२८	मी.		५ १६	६ ०	५ २६	१० ३	११ ४२ ५८	१ ५० ४०	६ २ २५ १६
२८ २०	१५ शु.	५३ २५	,, ५ २३	रेव.	३३ ८	रा. ७ १६	ह.	४४ ५८	,, १२ ०	भ.	२२ ३८	बव	५३ २५	श्रीवत्स	२९	२१	४	१४	२९	मे. ३३ ८	रा. ७ १६	६ १०	६ १	५ २५	१० २५	११ ४२ ४८	१ ५४ ३६	६ ३ २४ ५५

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ आश्विनशुक्लपक्षः

७ अक्टूबरसे २१ अक्टूबर १९८३ ई० तक दक्षिणायनम्। उत्तर गोलः। शरदृतुः। E

इष्टिः। मातामहश्राद्धम्। नवरात्रारंभः। चन्द्रदर्शनम्। मु० ३०।फ० समता। E राष्ट्रिय आश्विनः।
मुहर्रम् १। हिज़री सन् १४०४। सर्वार्थसिद्धियोगः ३७।२८ या०। G वृषभः। सू. सू. योगः। [illegible]
भ० ३९।५७ (रा. ११।५४) उ०। वैनायकी ४। वृष्टिः। ललिता ५। सर्वा.सि.योगः ३९।५७ या.।
भ० ९।१५ (दि. ९।३७) या०। चित्रायामर्कः ५०।० (रा. १।५५)। स्त्री नपुं० योगः। वाहनं मयूरः। उपवासं G
हस्ते बुधः ११।१८। पूर्वफल्गुन्योर्भौमः १४।८। T त्रिपुष्करयोगः। १८।४८ उ० ४४।२८ या.। A योगः [illegible] या.।
सरस्वत्यावाहनम्। Q स्तमने मेघाः पर्वताकारसन्निभाः। दृश्यन्ते जलपाताः स्यात्सस्यैस्तेव [illegible]
म० १५।३५ ((दि. १२।११) उ. ४८।७ (रा. २।१२) या.। सरस्वती पूजनम्।
शनिरस्तः पश्चिमायाम् १०।४३। बुधास्तः पूर्वस्याम् ८।१५। अन्नपूर्णा ८। महा८। सरस्वती बलिदानम्।
पुनः मा ग० पूर्वफल्गुन्योः शुक्रः ४०।४३। सरस्वती विसर्जनम्। महा ९। मन्वादि ९। सर्वार्थसिद्धि A
विजया १०। बौधजयन्ती १०। मासान्तः। M दिनम्। स्थावी जयदयोगः [illegible] T
म० ६।२३ (दि. ८।३२) उ० ३९।१५ (रा. ५।४१) या०। तुलायामर्कः ३३।४३ (रा. ७।२८) मु० [illegible] Z
चित्रायां बुधः ५८।३५। विषुवोत्तर M Z महर्घता। सं.ज.पु.का. २३।४३ (दि. ३।२८) [illegible]
प्रदोष १३ व्रतम्। ११ व्रतं सर्वेषाम्। अशरः (ताजिये की मिट्टी देना)। [illegible]
भ० ५१।३५ (रा. २।३८) उ०। व्य० नि० ४४।४५। यायीजयदयोगः। [illegible] या०।
भ० २२।३८ (दि. २।२८) या०। मा० ग० ज्येष्ठायां गुरुः २०।५५। व्रताय पूर्णिमा १५। कोजागरी १५। B
B आग्रयणम्। कार्तिक स्नानारंभः। सर्वार्थसिद्धियोगः २३।८ या०। अमृत सिद्धि यो. [illegible]

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चन्द्रः रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्षल् रा. अं. क. वि.	नेप्चून् रा. अं. क. वि.
१ बु.	५ २६ ४३ ४६	४ १० ४२ ३५	५ ३ १७ ४७	७ १४ २ ४५	४ ७ ६ ५६	६ १० ४३ ४५	१ २५ २७ ३१	७ १२ ३८ ३०	८ ३ ३ ४५
२ श.	६ ११ २ ८	४ ११ १६ ३१	५ ४ ४९ ९	७ १४ १३ ६	४ ७ ४५ ५४	६ १० ५० ४१	१ २५ २४ २८	७ १२ ४१ ४	८ ३ ४ ४३
३ र.	६ २४ ५६ ३	४ ११ ५६ ४१	५ ६ २३ २८	७ १४ २३ ३२	४ ८ २६ ०	६ १० ५७ ३८	१ २५ २१ १९	७ १२ ४३ ४१	८ ३ ५ ४१
४ चं.	७ ८ २३ १९	४ १२ ३३ ४१	५ ८ ० १३	७ १४ ३४ ४	४ ९ ७ १३	६ ११ ४ ३६	१ २५ १८ ९	७ १२ ४६ २०	८ ३ ६ ४१
५ मं.	७ २१ २४ २७	४ १३ १० ३८	५ ९ ३८ ५६	७ १४ ४४ ४२	४ ९ ४९ ३२	६ ११ ११ ३६	१ २५ १४ ५	७ १२ ४९ ०	८ ३ ७ ४३
६ बु.	८ ४ २ ११	४ १३ ४७ ३४	५ ११ १९ १३	७ १४ ५५ २५	४ १० ३२ ५३	६ ११ १८ ३७	१ २५ ११ ४५	७ १२ ५१ ४४	८ ३ ८ ४७
७ गु.	८ १६ २० ३६	४ १४ २४ २७	५ १३ ० ४२	७ १५ ६ १३	४ ११ १७ १५	६ ११ २५ ४०	१ २५ ८ ३४	७ १२ ५४ २९	८ ३ ९ ५३
८ शु.	८ २८ २४ ४२	४ १५ १ १८	५ १४ ४३ ३	७ १५ १७ ८	४ १२ २ ३५	६ ११ ३२ ४३	१ २५ ५ २३	७ १२ ५७ १६	८ ३ ११ ०
९ श.	९ १० १६ ४३	४ १५ ३८ ७	५ १६ २६ २	७ १५ २७ ६	४ १२ ४८ ५१	६ ११ ३९ ४८	१ २५ २ १३	७ १३ ० ६	८ ३ १२ १०
१० र.	९ २२ १० ४५	४ १६ १४ ५४	५ १८ ९ २४	७ १५ ३९ १०	४ १३ ३६ २	६ ११ ४६ ५४	१ २४ ५९ २	७ १३ २ ५७	८ ३ १३ २१
११ चं.	१० ४ २ ३६	४ १६ ५१ २९	५ १९ ३३ ०	७ १५ ५० १९	४ १४ २४ ८	६ ११ ५४ १	१ २४ ५५ ४१	७ १३ ५ ५१	८ ३ १४ ३४
१२ मं.	१० १५ ५९ १३	४ १७ २८ २१	५ २१ ३६ ३८	७ १६ १ ३४	४ १५ १३ ०	६ १२ १ ९	१ २४ ५२ ४१	७ १३ ८ ४६	८ ३ १५ ४८
१३ बु.	१० २८ ३ ५२	४ १८ ५ २	५ २३ २० १३	७ १६ १२ ५२	४ १६ २ ४३	६ १२ ८ १८	१ २४ ४९ ३०	७ १३ ११ ४३	८ ३ १७ ४
१४ गु.	११ १० १८ ५४	४ १८ ४१ ४०	५ २५ ३ ३४	७ १६ २४ १६	४ १६ ५२ १४	६ १२ १५ २७	१ २४ ४६ १९	७ १३ १४ ४२	८ ३ १८ २२
१५ शु.	११ २२ ४५ ४३	४ १९ १८ १६	५ २६ ४६ ४०	७ १६ ३५ ४४	४ १७ ४४ ३१	६ १२ २२ ३७	१ २४ ४३ ६	७ १३ १७ ४३	८ ३ १९ ४१

आश्विनशुक्ल ८ शुक्रे अयनांशाः २३।३७।३१



आश्विनशुक्ल १५ शुक्रे अयनांशाः २३।३७।३२



गुरुः पूर्वस्याम्। ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पश्चिमायाम्

	१ बु.	२ श.	३ र.	४ चं.	५ मं.	६ बु.	७ गु.	८ शु.	९ श.	१० र.	११ चं.	रा.	१२ मं.	१३ बु.	१४ गु.	१५ शु.
कं.	६ ४२	६ ३८	६ ३५	६ ३१	६ २७	६ २३	६ १९	६ १५	६ ११	६ ७	६ ४	तु.	८ १२	८ ८	८ ४	[illegible]
तु.	८ ५९	८ ५५	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३२	८ २८	८ २४	८ २१	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	११ १७	११ १३	११ १०	११ ६	११ २	१० ५८	१० ५४	१० ५०	१० ४६	१० ४२	१० ३९	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	१ २३	१ १९	१ १६	१ १२	१ ८	१ ४	१ ०	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४५	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	३ ९	३ ५	३ २	२ ५८	२ ५४	२ ५०	२ ४६	२ ४२	२ ३८	२ ३४	२ ३१	कुं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	४ ४०	४ ३६	४ ३३	४ २९	४ २५	४ २१	४ १७	४ १३	४ ९	४ ५	४ २	मी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मी.	६ ८	६ ४	६ १	५ ५७	५ ५३	५ ४९	५ ४५	५ ४१	५ ३७	५ ३३	५ ३०	मे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	७ ४६	७ ४२	७ ३९	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २३	७ १९	७ १५	७ ११	७ ८	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	९ ४२	९ ३८	९ ३५	९ ३१	९ २७	९ २३	९ १९	९ १५	९ ११	९ ७	९ ४	मि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	११ ५६	११ ५२	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	११ ३३	११ २९	११ २५	११ २१	११ १८	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	२ १४	२ १०	२ ७	२ ३	१ ५९	१ ५५	१ ५१	१ ४७	१ ४३	१ ३९	१ ३६	सि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सि.	४ २९	४ २५	४ २२	४ १८	४ १४	४ १०	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५४	३ ५१	कं.	५ ५५	५ ५१	५ ४७	५ ४४

K आश्विने शुक्लपक्षे [illegible] Q

ता. ७।१०।८३ [illegible] ४ मि. २१ पर।

ता. १०।१०।८३ ह. [illegible] ० अं. ५८ क. द. स्टँ. टा. दि. घं. ४ मि. ४८ पर।

ता. ११।१०।८३ ने. वं. यो. वं. से ने. २ अं. ० क. द. स्टँ. टा. रा. घं. १ मि. ५१ पर।

अथ विजयादशमी-यदा तु पूर्वदिने श्रवणयोगाभावः परदिने चाल्पापि [illegible] तदा परैव। उक्तं दशमी किञ्चित्सम्पूर्णैकादशी यदि। श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा॥ इति हेमाद्री। [illegible] परदिनेऽपराह्णे श्रवणाभावे तु पूर्वैव। अत्र निर्णयसिन्धुकारमतम्। अपराह्णो मुख्यः कर्मकालः। तत्रैव पूर्वयुक्तः। प्रदोषो गौणः। तत्र दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्तौ पूर्वा, प्रदोषव्याप्तेराधिक्यात्। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परा, अपराह्णव्याप्तेराधिक्यात्। एवं मुख्यौ। [illegible] दिनद्वयेऽपराह्णस्पर्शे तु पूर्वा। तथापि परदिनेऽपराह्णे श्रवणसत्त्वे परैवेति। K

२२

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	न.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	यो.	घ. प.	स्टैं. टा. त. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगः	रा. मि.	अं. ता.	ब. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	सं. उ. स्टैं. ह	सू. उ. स्टैं. टा	सू. अ. स्टैं. टा.	र. क्रा. द. अं. क.	स्प. मध्याह्न का. स्टैं. टा. घ. मि. से.	साम्पा. का घं. मि. से.	औदयिक स्प. सू. रा. अं. कं. वि.
२८ १७	१ श.	५४ १३	प्रा. ५ ४२	अ.	३५ ४५	रा. ८ १९	व.	२२ ५५	रा. ११ ११	वा. २३ ५७	कौ. ५४ १३	सौम्य	३०	२२	५	१५	१	मे.		५ ५७	६ १	५ २४	१० ४६	११ ४२ ३८	१ ५८ ३३	६ ४ २४ ३५
२८ १३	२ र.	५३ ५५	रा. ३ ३६	भ.	३७ १८	,, ८ ५७	सि.	४० ३	रा. १० ३	तै. २४ १५	ग. ५३ ५५	कालदण्ड	१	२३	६	१६	२	वृ. ५२ ३४	रा. ३ ४	६ ३४	६ २	५ २३	११ ७	११ ४२ २९	२ २ २९	६ ५ २४ १८
२८ १०	३ चं.	५२ ४८	,, ३ ९	कृ.	३८ ०	,, ९ १४	व्य.	२६ २८	,, ८ ३७	व. २३ २९	भ. ५२ ४८	सुस्थिर	२	२४	७	१७	३	वृ.		७ १५	६ २	५ २२	११ २८	११ ४२ २०	२ ६ २६	६ ६ २४ १
२८ ६	४ मं.	५० ४५	,, २ २१	रो.	३७ ४८	,, ९ १०	व.	३२ १०	,, ६ ५५	बव २१ ५४	वा. ५० ४५	मातंग	३	२५	८	१८	४	वृ.		८ १	६ ३	५ २१	११ ४९	११ ४१ १२	२ १० २२	६ ७ २३ ४८
२८ ३	५ बु.	४७ ५५	,, १ १४	मृ.	३० १०	,, ८ ४८	प.	२७ १३	दि. ४ १७	कौ. १९ २६	तै. ४७ ५५	अमृत	४	२६	९	१९	५	मि. ७ २५	दि. ६ २	८ ५४	६ ४	५ २१	१२ १०	११ ४१ ५	२ १४ १९	६ ८ २३ ३८
२७ ५९	६ गु.	४४ २०	,, ११ ४८	आ.	३५ ८	,, ८ ७	शि.	२१ ४०	,, २ ४४	ग. १६ १४	व. ४४ २०	काण	५	२७	१०	२०	६	मि.		९ ५१	६ ४	५ २०	१२ ३१	११ ४१ ५९	२ १८ १५	६ ९ २३ २८
२७ ५६	७ शु.	४० ०	,, १० ५	पुन.	३२ ३८	,, ७ ८	सि.	१५ ३०	,, १२ १७	भ. १२ १५	बव ४० ०	लुम्ब	६	२८	११	२१	७	क. १८ १९	दि. १ २५	१० ५४	६ ५	५ १९	१२ ५१	११ ४१ ५३	२ २२ १२	६ १० २३ २२
२७ ५३	८ श.	३५ ०	,, ८ ५	पु.	२६ २८	,, ५ ५२	सा.	८ ४८	,, ९ ३५	वा. ७ २५	कौ. ३५ ०	मित्र	७	२९	१२	२२	८	क.		११ ५९	६ ५	५ १८	१३ ११	११ ४१ ४९	२ २६ ९	६ ११ २३ १७
२७ ४९	९ र.	२९ २०	,, ५ ५०	श्ले.	२५ ४०	दि. ४ २२	शु.	५/२	१०/१८	वि. रा. [illegible]	तै. २ १४	ग. ३१/५६ २०/२०	वज्र	८	३०	१३	२३	९	सिं. २५ ४०	दि. ४ २२	१ ४	६ ६	५ १८	१३ ३१	११ ४१ ४५	२ ३० ५	६ १२ २३ १६
२७ ४६	१० चं.	२३ १३	दि. ३ २४	म.	२१ २३	,, २ ४०	ब्र.	४५ ४५	रा. १२ २५	भ. २३ १२	बव ५० ४	ध्वांक्ष	९	३१	१४	२४	१०	सिं.		२ ९	६ ७	५ १७	१३ ५१	११ ४१ ४१	२ ३४ २	६ १३ २३ १६
२७ ४३	११ मं.	१६ ५३	,, १२ ५२	पूफा	१६ ५३	,, १२ ५२	ऐं.	३७ ३५	,, ६ ९	वा. १६ ५३	कौ. ४३ ४०	धूम्र	१०	१	१५	२५	११	कं. ३० ४३	रा. ६ २४	३ १२	६ ७	५ १६	१४ १०	११ ४१ ३९	२ ३७ ५८	६ १४ २३ १८
२७ ४०	१२ बु.	१० २८	,, १० १९	उफा	१२ १८	,, ११ ३	वै.	२९ २८	,, ५ ५५	तै. १० २८	ग. ३७ २२	प्रवर्ध	११	२	१६	२६	१२	कं.		४ १४	६ ८	५ १५	१४ ३०	११ ४१ ३७	२ ४१ ५५	६ १५ २३ २२
२७ ३६	१३ गु.	४/५४ २१/१०	[illegible]	ह.	८ ३	,, ९ २१	वि.	२१ ४०	दि. २ ४८	व. ४ २३	भ. [illegible]	रक्ष	१२	३	१७	२७	१३	तु. ३६ ६	रा. ८ ३४	५ १५	६ ८	५ १५	१४ ४९	११ ४१ ३६	२ ४५ ५१	६ १६ २३ २७
२७ ३३	३० शु.	५४ १५	,, ३ ५६	चि.	४ २०	,, ७ ५३	प्री.	१४ २५	,, ११ ५५	च. २६ २६	ना. ५४ १५	मुशल	१३	४	१८	२८	१४	तु.		[illegible] १६	६ ९	५ १४	१५ ८	११ ४१ ३५	२ ४९ ४८	६ १७ २३ ३६

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ कार्तिक कृष्ण पक्षः।

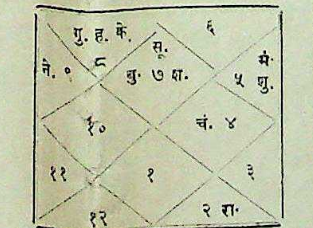
२२ अक्टूबर से ४ नवम्बर १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। उत्तरगोलः।

तुलायां बुधः ५१।०३। इष्टिः। यायीजयदयोगः ३५।५४ उ०। फसली सन् १३९१ प्रारम्भः।
सायन वृश्चिकेऽर्कः ५८।२८। राष्ट्रिय कार्तिकः। अशून्यशयन व्रतम्। त्रिपुष्कर योगः ३७।१८ उ० ५३।५५ या.।
भ. २३।२९ (दि० ३।२६) उ० ५२।४८ (रा० ३।९) या०। स्वात्यामर्कः १६।३ (दि० १२।२७)। स्वो पु. योगः। A
संकष्ट ४। चं. उ. घं. ८ मि. १। करक ४। अङ्गारकी ४। स्थायी जययोगः ३७।४८ उ० ५०।४५ या०।
स्वात्यांबुधः ४८।१०। सर्वार्थसिद्धि योगः ३६।५० या०। F शरदृतुः। राष्ट्रिय कार्तिकः।
भ० ४४।२० (रा० ११।४८) उ०। A वाहनं महिषः। उपवाहनं वराहः। चं. सू. योगः। वत्सनाशी। साभरणयुक्ता। T
भ० १२।१५ (दि० १०।५९) या.। कर ८। अहोई व्रतम्। सर्वार्थसिद्धि योगः ३२।३८ या०।
काल ८। P नरक १४। अरुणोदयेऽभ्यङ्गस्नानम्। हनुमज्जन्म। यायीजयदयोगः ४।२२ या०।
भ० ५६।२० (रा० ४।३८) उ०। उत्तरफल्गुन्योः शुक्रः ४३।४८। यायीजयद योगः २५।४० या०।
भ० २३।१३ (दि० ३।३४) या०। वै० प्र० १२।१८। वै० नि० २४।५। T यायीजयदयोगः ३०।३० उ.।
नवम्बर ११। रमा ११ व्रतं सर्वेषाम्। गोवत्स १२। U निर्वाणदिवस (जैन)। वीर सं. २५१० प्रारम्भः (जैन)।
उत्तरफल्गुन्योर्भौमः ७।१५। प्रदोष १३ व्रतम्। धन १३। यमदीपदानम्।
भ. ४।२३ (दि. ७।५३) उ० ३१।४४ (रा० ६।५०) या०। कन्यायां शुक्रः ८।२०। मास शिवरात्रि १४ व्रतम्। P
विशाखयो बुधः ५५।५८। दर्शः। लक्ष्मीपूजनम्। दीपमालिका। केदारगौरीव्रतम्। कालीपूजा। महावीर U

प्रातः स्टैं. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ श.	० ५ २४ ५४	४ १९ ५४ ५०	५ २८ २१ २६	७ १६ ४७ १७	४ १८ ३६ २१	६ १२ २६ ४८	१ २४ ३९ ५८	७ १३ २० ४६	८ ३ २१ ३
२ र.	० १८ १६ २३	४ २० ३१ २२	६ ० ११ ४८	७ १६ ५८ ५४	४ १९ २९ ११	६ १२ ३६ ५१	१ २४ ३६ ४७	७ १३ २३ ५१	८ ३ २२ २५
३ चं.	१ १ १३ ४५	४ २१ ७ ५१	६ १ ५३ ४४	७ १७ १० ३६	४ २० २२ ४०	६ १२ ४४ ११	१ २४ ३३ ३६	७ १३ २६ ५७	८ ३ २३ ५०
४ मं.	१ १४ ३४ २०	४ २१ ४४ १९	६ ३ ३५ १३	७ १७ २२ २२	४ २१ १६ ४६	६ १२ ५१ २४	१ २४ ३० २६	७ १३ ३० ५	८ ३ २५ १६
५ बु.	१ २८ ० १६	४ २२ २० ४४	६ ५ १९ ११	७ १७ ३४ १२	४ २२ ११ २९	६ १२ ५८ ३७	१ २४ २७ १५	७ १३ ३३ १४	८ ३ २६ ४३
६ गु.	२ ११ ३६ ५७	४ २२ ५७ ८	६ ६ ५६ ४२	७ १७ ४६ ६	४ २३ ६ ५१	६ १३ ५ ५०	१ २४ २४ ४	७ १३ ३६ २५	८ ३ २८ १३
७ शु.	२ २५ २४ ३६	४ २३ ३३ २९	६ ८ ३६ ४२	७ १७ ५८ ५	४ २४ २ ४९	६ १३ १३ ४	१ २४ २० ५३	७ १३ ३९ ३८	८ ३ २९ ४४
८ श.	३ ९ २३ १०	४ २४ ९ ४७	६ १० १६ ११	७ १८ १० ८	४ २४ ५९ २१	६ १३ २० १८	१ २४ १७ ४२	७ १३ ४२ ५२	८ ३ ३१ १७
९ र.	३ २३ ३१ ७	४ २४ ४६ ४	६ ११ ५५ ११	७ १८ २२ १४	४ २५ ५६ २७	६ १३ २७ ३२	१ २४ १४ ३२	७ १३ ४६ ८	८ ३ ३२ ५०
१० चं.	४ ७ ४९ ५६	४ २५ २२ १८	६ १३ ३३ ४१	७ १८ ३४ २४	४ २६ ५४ ६	६ १३ ३४ ४६	१ २४ ११ २१	७ १३ ४९ २६	८ ३ ३४ २५
११ मं.	४ २२ १३ ४१	४ २५ ५८ ३०	६ १५ ११ ४१	७ १८ ४६ ३१	४ २७ ५२ १६	६ १३ ४२ १	१ २४ ८ १०	७ १३ ५२ ४४	८ ३ ३६ १
१२ बु.	५ ६ ३९ ३६	४ २६ ३४ ४०	६ १६ ४६ १३	७ १८ ५८ ५६	४ २८ ५० ५८	६ १३ ४९ १५	१ २४ ५ ०	७ १३ ५६ ५	८ ३ ३७ ४०
१३ गु.	५ २१ २ ८	४ २७ १० ४६	६ १८ २६ १८	७ १९ ११ १८	४ २९ ५० ५	६ १३ ५६ २९	१ २४ १ ४९	७ १३ ५९ २६	८ ३ ३९ १३
३० शु.	६ ५ १५ २८	४ २७ ४६ ५१	६ २० २ ५५	७ १९ २३ ४३	५ ० ४९ ४२	६ १४ ३ ४३	१ २३ ५८ ३८	७ १४ २ २९	८ ३ ४१ ०

कार्त्तिक कृष्ण ८ शनौ अयनांशाः २३।३७।३३



कार्त्तिक कृष्ण ३० शुक्रे अयनांशाः २३।३७।३४



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम)॥ शुक्रः पश्चिमायाम्।

	१ श.	२ र.	३ चं.	४ मं.	५ बु.	६ गु.	७ शु.	८ श.	९ र.	१० चं.	११ मं.	१२ बु.	१३ गु.	३० शु.
तु.	८ ०	७ ५६	७ ५२	७ ४९	७ ४५	७ ४०	७ ३७	७ ३३	७ २९	७ २५	७ २१	७ १७	७ १३	७ ९
वृ.	१० १८	१० १४	१० १०	१० ७	१० ३	९ ५८	९ ५५	९ ५१	९ ४७	९ ४३	९ ३९	९ ३५	९ ३१	९ २७
ध.	१२ २४	१२ २०	१२ १६	१२ १३	१२ ९	१२ ४	१२ १	११ ५७	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	११ ३३
म.	२ १०	२ ६	२ २	१ ५८	१ ५५	१ ५०	१ ४७	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३१	१ २७	१ २३	१ १९
कुं.	३ ४१	३ ३७	३ ३३	३ ३०	३ २६	३ २१	३ १८	३ १४	३ १०	३ ६	३ २	२ ५८	२ ५४	२ ५०
मी.	५ ९	५ ५	५ १	४ ५८	४ ५४	४ ४९	४ ४६	४ ४२	४ ३८	४ ३४	४ ३०	४ २६	४ २२	४ १८
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मे.	६ ४७	६ ४३	६ ३९	६ ३६	६ ३२	६ २७	६ २४	६ २०	६ १६	६ १२	६ ८	६ ४	६ ०	५ ५६
वृ.	८ ४३	८ ३९	८ ३५	८ ३२	८ २८	८ २३	८ २०	८ १६	८ १२	८ ८	८ ४	८ ०	७ ५६	७ ५२
मि.	१० ५७	१० ५३	१० ४९	१० ४६	१० ४२	१० ३७	१० ३४	१० ३०	१० २६	१० २२	१० १८	१० १४	१० १०	१० ६
क.	१ १५	१ ११	१ ७	१ ४	१ ०	१२ ५५	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३२	१२ २८	१२ २४
सिं.	३ ३०	३ २६	३ २२	३ १९	३ १५	३ १०	३ ७	३ ३	२ ५९	२ ५५	२ ५१	२ ४७	२ ४३	२ ३९
कं.	५ ४३	५ ३९	५ ३५	५ ३२	५ २८	५ २३	५ २०	५ १६	५ १२	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५२

कार्तिकस्य त्वमावास्या सूर्यवारेण संयुता। शनिभौमे तथापि तदा लोके भयावहा॥ यदा कार्तिकमासे तु वार्विवृष्टिश्च गर्जनम्। भवत्यन्नसमर्घत्वं सस्यसम्पत्तिरुत्तमा॥ कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ वारिवर्षणम्। तदा समर्घता पौषे सस्यवृद्धिस्तु मध्यमा॥

ता. २३।१०।८३ बु. चं. यो. चं. से गु. १ अं. ४३ क. द. स्टैं. टा. रा. घं. ६ मि. १८ पर।
ता. ३०।१०।८३ बु. गु. परमयुति गु. से बु. ० अं. २६ क. द. स्टैं. टा. रा. घं. १० मि. पर।
ता. ३१।१०।८३ बु. श. यो. श. से बु. १ अं. २७ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ९ मि. ४६ पर।
ता. २।११।८३ मं. च. यो. चं. से मं. ४ अं. ४ क. द. स्टैं टा. दि. घं. ९ मि. ११ पर।
ता. ३।११।८३ गु. चं. यो. चं. से शु. ५ अं. २ क. द. स्टैं. टा. दि. घं. ११ मि. ४५ पर।
ता. ४।११।८३ श. चं. यो. चं. से श. १ अं. ७ क. द. स्टैं. टा. रा. घं. ८ मि. १ पर।

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ कार्तिक शुक्ल पक्षः।

५ नवम्बर से २० नवम्बर १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। दक्षिण गोलः। शरदृतुः G

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	न. घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	यो. घ. प.	स्टैं. टा. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगाः
२७ ३०	१ श.	५० ५३	रा. २ ३१	स्वा ९ ३५	दि. ६ ४८	आ. ७ ५८	दि. ९ २१	कि २२ २४	बव ५० ५३	सिद्धि
२७ २७	२ र.	४० ५	" १ ४८	वि. ० ८	प्रा. ६ १३	सौ. २/४४ ५८/४६	,,/रा ७/४ १५/१४	बा. १९ ४७	कौ. ४० ५	उत्पात
७२ २४	३ चं.	४८ ५८	,, १ ४६	अनु ० १०	" ६ १५	अ. ५५ ४०	,, ४ २७	तै. १८ ३६	ग. ४८ ५८	मानस
२७ २१	४ मं.	५० ३५	" २ २६	ज्ये. १ ५५	दि. ६ १८	सु. ५४ १५	" ३ ५४	व. १६ ३४	भ. ५० ३५	मुद्गर
२७ १८	५ बु.	५४ ०	" ३ ४८	मू. ५ २५	,, ८ २२	धृ. ५४ ८	" ३ ५१	बव २२ ५	बा. ५४ ०	केतु
२७ १५	६ गु.	५८ ४८	प्रा. ५ ४४	पूषा १० २५	,, १० २३	शू. ५५ ५	,, ४ १५	कौ. २६ १५	तै. ५८ ४८	धाता
२७ १२	७ शु.	६० ०	× × ×	उषा १६ ४५	, १२ ५६	गं. ५६ ४८	रा. ४ ५७	गर २१ ३६	व. ६० ०	आनन्द
२७ ९	७ श.	४ ३५	दि. ८ ४	श्रव २३ ५५	,, ३ ४८	वृ. ५८ ५५	प्रा. ५ ४८	व. ४ ३५	भ. ३७ ४२	सुस्थिर
२७ ६	८ र.	१० ५०	" १० ३५	ध. ३१ १८	रा. ६ ४६	ध्रु. ६० ०	× × ×	बव १० ५०	बा. ४३ ५६	मातङ्ग
२७ ३	९ चं.	१६ ५५	" १ २	शत ३८ २३	,, ९ ३७	ध्रु. ० ५५	प्रा. ६ ३८	कौ. १६ ५५	त. ४९ ४४	अमृत
२७ ०	१० मं.	२२ १८	" ३ १२	पूभ ४४ ३५	,, १२ ७	व्या २ ३०	दि. ७ १७	गर २२ १८	व. ५४ ३७	काण
२६ ५८	११ बु.	२६ ३५	सा. ४ ५५	उभ. ४९ ४३	" २ १०	ह. ३ २३	,, १ २१	भ. २६ ३५	बव ५८ ११	लुम्ब
२६ ५५	१२ गु.	२९ २५	[illegible] ६ ४	रेव. ५३ २०	,, ३ ३८	व. ३ १३	,, ७ ३५	बा. २९ २५	कौ. ६० ०	मित्र
२६ ५३	१३ शु.	३० ४५	,, ६ ३७	अ. ५५ २०	,, ४ ३१	सि. १/४७ ४४/१३	,,/प्रा. ७/६ ४/६	कौ. ० १६	तै. ३० ४५	वज्र
२६ ५०	१४ श.	३० ४०	,, ६ ३५	भ. ५६ २०	प्रा. ४ ५१	व. ५५ ५५	रा. ४ ४१	ग. ० १४	व. ३० ४०	ध्वांक्ष
२६ ४७	१५ र.	२९ ८	,, ५ ५९	कृ. ५५ ५३	रा. ४ ४१	वरि ५१ २०	,, २ ५२	भ. ० ४	बव २९/४७ ८/५६	धूम्र

योगाः	रा. मि.	सं. ता.	वं. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा घ प	स्टैं. टा. घ मि	च. अ. स्टैं. टा.	सू. उ. स्टैं. टा.	सू. अ. स्टैं. टा.	र.का.द. घं. प.	स्प. मध्याह्न का. स्टैं. टा.	भा. काल घं. मि. से.	औ. स्पष्ट सू. रा. अं. क. वि.
सिद्धि	१४	५	१९	२९	१५	वृ. ४५ २२	रा. १२ १९	५ ४८	[illegible]	५ १४	१५ २६	११ ४१ ३७	२ ५३ ४४	६ १८ २३ ४८
उत्पात	१५	६	२०	३०	१६	वृ.		६ २८	६ १०	५ १३	१५ ४४	११ ४१ ३९	२ ५७ ४१	६ १९ २४ १
मानस	१६	७	२१	१	१७	वृ.		७ १४	६ ११	५ १२	१६ २	११ ४१ ४१	३ १ ३८	६ २० २४ १४
मुद्गर	१७	८	२२	२	१८	ध. १ ५५	दि. ६ १८	८ ३	६ १२	५ १२	१६ २०	११ ४१ ४४	३ ५ ३४	६ २१ २४ ३०
केतु	१८	९	२३	३	१९	ध.		८ ५५	६ १२	५ ११	१६ ३८	११ ४१ ४८	३ ९ ३१	६ २२ २४ ४६
धाता	१९	१०	२४	४	२०	म. २६ ५०	सा. ४ ५७	९ ४६	६ १३	५ ११	१६ ५५	११ ४१ ५३	३ १३ २७	६ २३ २५ ५
आनन्द	२०	११	२५	५	२१	म.		१० ४३	६ १४	५ १०	१७ १२	११ ४१ ५९	३ १७ २४	६ २४ २५ २६
सुस्थिर	२१	१२	२६	६	२२	कुं. ५७ ३८	रा. ५ १७	११ ३६	६ १४	५ १०	१७ २९	११ ४२ ६	३ २१ २०	६ २५ २५ ४७
मातङ्ग	२२	१३	२७	७	२३	कुं.		१२ ३०	६ १५	५ ९	१७ ४५	११ ४२ १३	३ २५ १७	६ २६ २६ ११
अमृत	२३	१४	२८	८	२४	कुं.		१ २१	६ १६	५ ९	१८ १	११ ४२ २१	३ २९ १३	६ २७ २६ ३६
काण	२४	१५	२९	९	२५	मी. २७ ७	सा. ५ ८	२ १३	६ १७	५ ९	१८ १७	११ ४२ ३०	३ ३३ १०	६ २८ २७ २
लुम्ब	२५	१६	३०	१०	२६	मी.		३ ५	६ १७	५ ८	१८ ३२	११ ४२ ४०	३ ३७ ७	६ २९ २७ २८
मित्र	२६	१७	१	११	२७	मे. ५३ २०	रा. ३ २८	३ ५९	६ १८	५ ८	१८ ४७	११ ४२ ५१	३ ४१ ३	७ ० २७ ५८
वज्र	२७	१८	२	१२	२८	मे.		४ ५४	६ १९	५ ८	१९ २	११ ४३ २	३ ४५ ०	७ १ २८ २९
ध्वांक्ष	२८	१९	३	१३	२९	मे.		५ ५३	६ १९	५ ७	१९ १६	११ ४३ १५	३ ४८ ५६	७ २ २९ ०
धूम्र	२९	२०	४	१४	३०	वृ. ११ १९	दि. १० ५२	६ १०	६ २०	५ ७	१९ ३१	११ ४३ २८	३ ५२ ५३	७ ३ २९ ३४

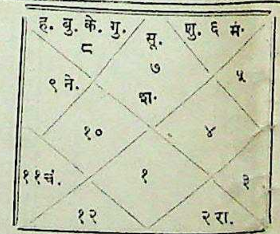
इष्टिः। बलि पूजनम्। गोक्रीडा। सर्वार्थसिद्ध योगः १।३५ या.। यायीजयद योगः १।३५ या.। G राष्ट्रिय कार्तिकः।
चन्द्रदर्शनम्। मु० ३०। फ० समता। विशाखयोरर्कः ३१।५५ (रा. ८।३२)। यम २। त्रिपुष्कर योगः ०।८ या०।
कन्यायां भौमः ४०।२०। सफर २। सर्वार्थसिद्धि योगः ०।१० या०। A सर्वार्थसिद्धि योगः २३।३५ या०। २३
भ० १९।३४ (दि. २।२) उ० ५०।३५ (रा० २।२६) या०। वैनायकी ४। स्थायीजयदयोगः १।५५ या०।
केतु योगः। C उ०सूर्यास्तं यावत्। प्रबोधिनी ११ व्रतं सर्वेषाम्। भीष्मपञ्चकम्। चातुर्मास्यव्रत समाप्तिः। रोहिण्यां राहुः ०।३०।
वृश्चिके बुधः १४।४५। डाला छठ। सूर्य ६। § पं० जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिवस (बालदिवस)।
कल्पादिः ७। अष्टान्हिका प्रारम्भः (जैन)। B मु० ४५। फ० समर्घता। सं. अ. पु. का. १६।१८ दि. १२।४८ C
भ० ४।३५ (दि. ८।४) उ० ३७।४२ (रा ९।१९) या०। अनुराधासुबुधः २२।५३। हस्ते शुक्रः ५३।२८। [illegible] A
अन्नपूर्णा ८। गोप ८। व्य० नि० १५।१३।
शनिरुदयः पूर्वस्याम् ४०।१३। अक्षय्य ९। कृतयुगादिः ९। §
भ० ५४।३७ (रा. ४।८ उ०)। मासान्तः।
भ० २६।३५ (सा. ४।५५ या.)। वृश्चिकेऽर्कः ३२।१८ (रा. ७।१२)। B
तुलसी विवाहः। मन्वादिः १२। सर्वार्थसिद्धि योगः ५३।२० या०।
प्रदोष १३ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धि योगः ५५।३० या.।
भ० ३०।४० (सा० ६।३५) उ०। अनुराधास्वर्कः ५०।३५ (रा. २।३३)। वैकुण्ठ १४। D [illegible]। कार्तिकेय दर्शनम्।
भ० ०।४ (प्रा·६।२२) या०। जेष्ठायां बुधः २०।३०। व्रताय १५। कार्तिक स्नान समाप्तिः। मन्वादिः १५। गुरु नानक D

कल्याणपूर्णं [illegible] प्रदक्षिणा [illegible] कार्यम्। अथ कार्तिक पूर्णिमायां [illegible] योगफलम्। [illegible] ध्रुवम्। [illegible] तस्यामेवाश्विनीयोगः [illegible]। [illegible] रोहिणीयोगो [illegible]।

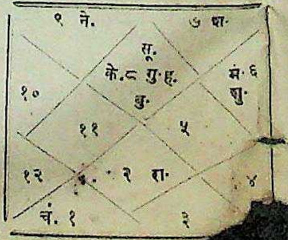
प्रातः स्टैं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पस्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. दि.	हर्षल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ श.	६ १९ १४ ३३	४ २८ २२ ५३	६ २१ ३९ ६	७ १९ ३६ १२	५ १ ४९ ४७	६ १४ १० ५७	१ २३ ५५ २८	७ १४ ६ १२	८ ३ ४२ ४३
२ र.	७ २ ५५ ८	४ २८ ५८ ५२	६ २३ १४ ५२	७ १९ ४८ ४४	५ ३ ५० १७	६ १४ १८ १०	१ २३ ५२ १७	७ १४ ९ ३८	८ ३ ४४ ३४
३ चं.	७ १६ १४ ४४	४ २९ ३४ ४८	६ २४ ५० १४	७ २० १ १८	५ ३ ५१ १३	६ १४ २५ २३	१ २३ ४९ ६	७ १४ १३ ४	८ ३ ४६ ११
४ मं.	७ २९ १२ ४७	५ ० १० ४२	६ २६ २५ १२	७ २० १३ ५८	५ ४ ५२ ३३	६ १४ ३२ ३६	१ २३ ४५ ५१	७ १४ १६ ३२	८ ३ ४७ ५२
५ बु.	८ ११ ५० ३१	५ ० ४६ ३३	६ २७ ५९ ४९	७ २० २६ ३९	५ ५ ५४ १७	६ १४ ३९ ४८	१ २३ ४२ ४४	७ १४ २० १	८ ३ ४९ ४५
६ गु.	८ २४ १० ३५	५ १ २२ २१	६ २९ ३४ ४	७ २० ३९ २३	५ ६ ५६ २३	६ १४ ४७ ०	१ २३ ३९ ३३	७ १४ २३ ३०	८ ३ ५१ ३४
७ शु.	९ ६ १६ ४७	५ १ ५८ ६	७ १ ७ ५८	७ २० ५२ १०	५ ७ ५८ ५२	६ १४ ५४ १०	१ २३ ३६ २२	७ १४ २७ १	८ ३ ५३ २४
७ श.	९ १८ १३ ४५	५ २ ३३ ४८	७ २ ४१ ३३	७ २१ ५ २	५ ९ १ ४३	६ १५ १ २०	१ २३ ३३ १३	७ १४ ३० ३२	८ ३ ५५ १४
८ र.	१० ० ५ ५३	५ ३ ९ २७	७ ४ १४ ४९	७ २१ १७ ५३	५ १० ४ ५५	६ १५ ८ २९	१ २३ ३० १	७ १४ ३४ ५	८ ३ ५७ ८
९ चं.	१० ११ ५८ ३३	५ ३ ४५ ३	७ ५ ४७ ४७	७ २१ ३० ४८	५ ११ ८ २६	६ १५ १५ ३८	१ २३ २६ ५०	७ १४ ३७ ३८	८ ३ ५९ २
१० मं.	१० २३ ५६ २०	५ ४ २० ३७	७ ७ २० २८	७ २१ ४३ ४६	५ १२ १२ १८	६ १५ २२ ४५	१ २३ २३ ३९	७ १४ ४१ १२	८ ४ ० ५६
११ बु.	११ ६ ३ २७	५ ४ ५६ ७	७ ८ ५२ ५३	७ २१ ५६ ४७	५ १३ १६ २६	६ १५ २९ ५१	१ २३ २० २९	७ १४ ४४ ४८	८ ४ २ ५३
१२ गु.	११ १८ २३ २६	५ ५ ३१ ३५	७ १० २५ १	७ २२ ९ ५०	५ १४ २० ५९	६ १५ ३६ ५७	१ २३ १७ १८	७ १४ ४८ २२	८ ४ ४ ५०
१३ शु.	० ० ५८ ५३	५ ६ ७ ०	७ ११ ५६ ५३	७ २२ २२ ५४	५ १५ २५ ४१	६ १५ ४४ १	१ २३ १४ १७	७ १४ ५१ ५६	८ ४ ६ ४७
१४ श.	० १३ ५० १७	५ ६ ४२ २१	७ १३ २८ ३०	७ २२ ३६ २	५ १६ ३० ५२	६ १५ ५१ ४	१ २३ १० ५६	७ १४ ५५ ३६	८ ४ ८ ४७
१५ र.	० २७ ० ५७	५ ७ १७ ४०	७ १४ ५९ ५२	७ २२ ४९ ११	५ १७ ३६ १५	६ १५ ५८ ७	१ २३ ७ ४६	७ १४ ५९ १४	८ ४ १० ४६

कार्तिक शुक्ल ८ रवौ अयनांशाः २३।३७।३५



कार्तिक शुक्ल १५ रवौ अयनांशाः २३।३७।३६



गुरुः पूर्वस्याम ॥ दैनिक लग्न सारिणी (स्टैंण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पूर्वस्याम्।

रा.	१ श.	२ र.	३ च.	४ मं.	५ बु.	६ गु.	७ शु.	७ श.	८ र.	९ चं.	१० मं.	११ बु.	रा.	१२ गु.	१३ शु.	१४ श.	१५ र.
तु.	७ ६	७ १	६ ५७	६ ५४	६ ४९	६ ४६	६ ४२	६ ३७	६ ३४	६ ३०	६ २६	६ २२	वृ.	८ ३६	८ ३२	८ २९	८ २४
वृ.	९ २४	९ १९	९ १५	९ १२	९ ७	९ ४	९ ०	८ ५५	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	ध.	१० ४२	१० ३८	१० ३५	१० ३०
ध.	११ ३०	११ २५	११ २१	११ १८	११ १३	११ १०	११ ६	११ १	१० ५८	१० ५४	१० ५०	१० ४६	म.	१२ २८	१२ २४	१२ २१	१२ १६
म.	१ १६	१ ११	१ ७	१ ४	१२ ५९	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४७	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३२	कुं.	१ ५९	१ ५५	१ ५२	१ ४७
कुं.	२ ४७	२ ४२	२ ३८	२ ३५	२ ३०	२ २७	२ २३	२ १८	२ १५	२ ११	२ ७	२ ३	मी.	३ २७	३ २३	३ २०	३ १५
मी.	४ १५	४ १०	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५५	३ ५१	३ ४६	३ ४३	३ ३९	३ ३५	३ ३१	मे.	५ ५	५ १	४ ५८	४ ५३
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मे.	५ ५३	५ ४८	५ ४४	५ ४१	५ ३६	५ ३३	५ २९	५ २४	५ २१	५ १७	५ १३	५ ९	वृ.	७ २	६ ५८	६ ५५	६ ५०
वृ.	७ ४९	७ ४४	७ ४०	७ ३७	७ ३२	७ २९	७ २५	७ २०	७ १७	७ १४	७ १०	७ ६	मि.	९ १५	९ ११	९ ८	९ ३
मि.	१० ३	९ ५८	९ ५४	९ ५१	९ ४६	९ ४३	९ ३९	९ ३४	९ ३१	९ २७	९ २३	९ १९	क.	११ ३३	११ २९	११ २६	११ २१
क.	१२ २१	१२ १६	१२ १२	१२ ९	१२ ४	१२ १	११ ५७	११ ५२	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	सिं.	१ ४८	१ ४४	१ ४१	१ ३६
सिं.	२ ३६	२ ३१	२ २७	२ २४	२ १९	२ १६	२ १२	२ ७	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५२	कं.	४ १	३ ५७	३ ५४	३ ४९
कं.	४ ४९	४ ४४	४ ४०	४ ३७	४ ३२	४ २९	४ २५	४ २०	४ १७	४ १३	४ ९	४ ५	तु.	६ १८	६ १४	६ ११	६ ६

ता. ५।११।८३ बु. चं. मो.चं. म बु. ०अं. २क. व. स्टैं. टा. दि. घं. ८ मि. ३० पर।
ता. ६।११।८३ ह. चं. मो.चं. मे ह. ०अं. ४२क. व. स्टैं. टा. रा. घं. १ मि. ३२ पर।
ता. ७।११।८३ गु.चं.मो. च.मे गु. ०अं. ११क. उ० स्टैं. टा. दि. घं. १२ मि. २२ पर।
ता. ८।११।८३ मे. चं. मो.चं.मे मे. १अं.१२क. उ० स्टैं. टा. दि. घं. २ मि. १६ पर।
ता. २०।११।८३ बु. ह. मो. ह.से बु. १अं.४०क. द. स्टैं. टा. दि. ६ मि. ५२ पर।

चातुर्मास्यव्रतानां समाप्तौ दानानि नक्तव्रते वस्त्रयुग्मम्। एकान्तरोपवासे गौः। भूशयने शय्या। षष्ठकालभोजने गौः। व्रीहिगोधूमादिधान्यत्यागे सौवर्णं व्रीहिगोधूमादिदानम्। कृच्छ्रव्रते गोयुग्मम्। शाकाहारे गौः। पयोमात्रभक्षणे दधिवर्जने च गौः। मधुदधिघृतवर्जने वस्त्र गौश्च। ब्रह्मचर्ये स्वर्णम्। ताम्बूलवर्जने वस्त्रयुग्मम्। मौने घण्टा घृतकुम्भौ वस्त्रद्वयं च। रंगवल्लीकरणे गौः सुवर्णं [illegible] च। दीपदानव्रते दीपिका वस्त्रद्वयं च। भूमिभोजने कांस्यपात्रं गौश्च। गोग्रासे [illegible]। प्रदक्षिणाशते वस्त्रम्। अभ्यङ्गवर्जने तैलपूर्णघटः नखकेशधारणे [illegible]। यत्र विरुद्धो दानं नोक्तं तत्र स्वर्णं गौश्च। गुडवर्जने गुडपूर्णं ताम्रपात्रम्। एवं लवणवर्जने [illegible]

२४

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	स्टँ.टा. घं.मि.	न. घ.प.	स्टँ.टा. घं.मि.	यो. घ.प.	स्टँ.टा. घं.मि.	क. घ.प.	क. घ.प.	योगः	रा.अं.बं.फा.फ. मि.ता.ता.ता.ता.	चन्द्रः रा.घ.प.	स्टँ.टा. घं.मि.	न.उ. स्टँ.टा.	सू.उ. स्टँ.टा.	सू.अ. स्टँ.टा.	सू.क्रांद. अं.क.	स्प.मध्याह्न का.स्टँ.ट.	साम्पा.का. घं.मि.से.	औदयिकस्पष्टसूर्यः रा.अं.क.वि.
२६ ४५	१	चं.	२६ २८	सा. ४ ५६	रो. ५४ २३	रा. ४ ६	शि. ४५ ५५	रा. १२ ४३	कौ. २६ २८	तै. ५४ ४५	प्रवर्धं	३० २१ ५ १५ १	वृ.		५ ५५	६ २१	५ ७	१९ ४४	११ ४३ ४२	३ ५६ ४९	७ ४ ३० १०
२६ ४२	२	मं.	२२ ५०	दि. ३ ३०	मृ. ५२ ३	,, ३ ११	सि. ३९ ४८	,, १० १७	ग. २२ ५०	व. ५० ५०	रक्ष	१ २२ ६ १६ २	मि. २३ १८	दि. ३ ४१	६ ४७	६ २२	५ ६	१९ ५८	११ ४३ ५७	४ ० ४६	७ ५ ३० ४६
२६ ४०	३	बु.	१८ ३०	,, १ ४६	आ. ४० ८	,, २ १	सा. ३३ ८	,, ७ ३७	म. १८ ३०	बव ४६ ७	मुशल	२ २३ ७ १७ ३	मि.		७ ४५	६ २२	५ ६	२० १०	११ ४४ १३	४ ४ ४२	७ ६ ३१ २२
२६ ३८	४	गु.	१३ ३५	,, ११ ४९	पुन. ४५ ४३	,, १२ ४०	शु. २६ ३	सा. ४ ४८	वा. १३ ३५	कौ ४१ ०	सिद्धि	३ २४ ८ १८ ४	क. ३१ २७	रा. ७ २	८ १७	६ २३	५ ६	२० २३	११ ४४ २९	४ ८ ३९	७ ७ ३२ २
२६ ३५	५	शु.	८ २०	,, ९ ४४	पु. ४२ ५	,, ११ १४	ध. १८ ४३	दि. १ ५३	तै. ८ २०	ग. ३५ ३९	उत्पात	४ २५ ९ १९ ५	क.		९ १२	६ २४	५ ६	२० ३५	११ ४४ ४६	४ १२ २६	७ ८ ३२ ४४
२६ ३३	६	श.	२ ५५ / ५४ ३५	,, ७ ३५ / रा. ५ २५	ज्ये. ३८ २३	,, २ ४६	व्र. ११ २८	,, १० ५६	व. २ ५५	भ. [illegible]	मानस	५ २६ १० २० ६	सिं. ३८ २३	रा. ९ ४६	१० ५८	६ २५	५ ६	२० ४७	११ ४५ ४	४ १६ ३२	७ ९ ३३ २७
२६ ३१	८	र.	५२ ८	,, ३ २६	म. ३४ ४३	,, ८ २८	ऐं. [illegible]	रा. [illegible]	वा. २४ ४८	कौ. ५२ ८	मुद्गर	६ २७ ११ २१ ७	सि.		१२ १	६ २५	५ ६	२० ५९	११ ४५ २३	४ २० २९	७ १० ३४ १०
२६ २९	९	सो.	४६ ५८	,, ११ १३	पूफा. ३१ १३	,, ६ ५५	वि. ४९ ४८	,, २ ९	तै. १९ ३१	ग. ४६ ५८	केतू	७ २८ १२ २२ ८	कं. ४५ २३	रा. १२ ३५	१ ३	६ २६	५ ६	२१ १०	११ ४५ ४३	४ २४ २५	७ ११ ३४ ५६
२६ २७	१०	मं.	४७ ८	,, ११ १८	उफा. २८ ०	,, ५ ३९	प्री. ४२ २०	,, ११ २३	व. १४ २०	भ. ४२ ८	धाता	८ २९ १३ २३ ९	कं.		२ ४	६ २७	५ ५	२१ २२	११ ४६ ३	४ २८ २२	७ १२ ३५ ४४
२६ २५	११	बु.	३७ ४८	,, ९ ३५	ह. २५ १३	दि. ४ ३३	आ. २५ ४८	,, ८ ४७	बव ९ १४	वा. ३७ ४८	आनन्द	९ ३० १४ २४ १०	तु. ५४ ३	रा. ४ ५	३ ४	६ २८	५ ५	२१ ३१	११ ४६ २४	४ ३२ १८	७ १३ ३६ ३४
२६ २३	१२	गु.	३४ ८	,, ८ ७	चि. २३ ३	,, ३ ४१	सौ. २९ ४८	,, ६ २३	कौ. ५ ५२	तै. ३४ ८	चर	१० १ १५ २५ ११	तु.		४ ४	६ २८	५ ५	२१ ४१	११ ४६ ४६	४ ३६ १५	७ १४ ३७ २४
२६ २२	१३	शु.	३१ १५	,, ६ ५९	स्वा. २१ ३८	,, ३ ८	शो. २४ २०	दि. ४ १३	ग. २ ३६	व. ३१ १५	गद	११ २ १६ २६ १२	तु.		५ ४	६ २९	५ ६	२१ ५०	११ ४७ ८	४ ४० ११	७ १५ ३८ १६
२६ २०	१४	श.	२९ १५	,, ६ १२	वि. २१ १०	,, २ ५७	अ. १९ ४५	,, २ २३	भ. ० ७	श. [illegible]	शुभ	१२ ३ १७ २७ १३	वृ. ६ १२	त्रि. ८ ५९	३६ ८	६ ३०	५ ६	२१ ५९	११ ४७ ३१	४ ४४ ८	७ १६ ३९ १०
२६ १८	३०	र.	२८ ३५	रा. ५ १६	अनु. २१ ४५	,, ३ १२	सु. १५ ५८	,, १२ ५३	ना. २८ ३५	कि. १८ ४२	मृत्यु	१३ ४ १८ २८ १४	वृ.		अ५ ५	६ ३०	५ ६	२२ ८	११ ४७ ५५	४ ४८ ५	७ १७ ४० ५

श्रीशुभसंवत् २०४०शके१९०५मार्गशीर्षकृष्णपक्षः।

२८ नव॰ वरसे ४ दिसम्बर सन् १९८३ ई॰ तक। दक्षिणायनम्। दक्षिणगोलः। हेमन्तर्तुः।

इष्टिः। सर्वार्थसिद्धियोगः५४।२३ या.। अमृतसिद्धियोगः ५४।२३ या.। यायीजयदयोगः२६।२८या.। [*] राष्ट्रिय आग्रहायणः।
भ. ५०।५० (रा. २।४१) उ.। **सायनधनुषिचार्कः ५१।८। राष्ट्रियआग्रहायणः।** द्विपुष्करयोगः २२।५० या.।
भ. १८।३० (दि. १।४६) या.। **संकष्ट ४।** चं.उ. घं. ७ मि. ४५।
हस्ते भौमः ३४।४३। सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।४३ या.। अमृतसिद्धियोगः ४५।४३ या.।
चित्रायां शुक्रः ९।४०। चेहल्लुम। वै॰ प्र॰ ५०।४८।
भ. २।५५ (दि. ७।३५) उ. ३०।१३ (रा. ६।३०) या.। **बुधोदयः पश्चिमायाम् २३।४५।** वै॰ नि॰ ८।५।
काल ८। कालभैरवयात्रा। [*] दृश्यते यदा। धनेराच्छादितो भानुस्तदा [illegible]॥
केतू योगः। यायीजयदयोगः ११।१३ उ.। ४८।५५ या.।
भ १४।३० (दि. १२।१५) उ. ४२।८ (रा.११।१८) या.। **मूलेधनुषि च बुधः ५९।३५।**
गुरोरस्तः पश्चिमायाम् ५२।२३। उत्पत्तिः ११व्रतं सर्वेषाम्। आखिरी चहारशम्बा। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]
दिसम्बर १२। तुलायां शुक्रः ६।३३।
भ. ३१।१५ (रा. ६।५९) उ.। **प्रदोष १३ व्रतम्। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्।** स्थायीजयदयोगः [illegible]
भ. ०।७ (प्रा. ६।३३) या.। **ज्येष्ठायामर्कः ०।४८ (प्रा. ६।४९)।**
दर्शः। [× मध्याह्नव्यापिनी युक्ता। दिनद्वयेऽशतः सम्पूर्णायां वा तद्व्याप्तौ पूर्वैव। पारणा तु प्रातरेवेति [illegible] +
[+ मतम्। मार्गमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रन्दति नित्यशः॥ [illegible]

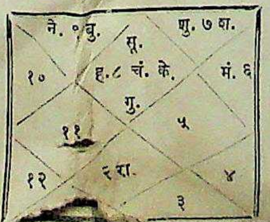
प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति.	वा.	चन्द्रः रा.अं.क.वि.	मं. रा.अं.क.वि.	बु. रा.अं.क.वि.	गु. रा.अं.क.वि.	शु. रा.अं.क.वि.	श. रा.अं.क.वि.	रा. रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.
१	चं.	११ २७ ३०	५ ७ ५२ ५५	७ १६ ३० ५८	७ २३ २ २२	५ १८ ४१ ५५	६ १६ ५ ५	१ २३ ४ ३५	७ १५ २ ५०	८ ४ १२ ४७
२	मं.	१ २४ ७ ४३	५ ८ २८ ७	७ १८ १ ४९	७ २३ १५ ३६	५ १९ ४७ ५१	६ १६ १२ ४	१ २३ १ २४	७ १५ ६ ३	८ ४ ४ ४१
३	बु.	२ ८ ० २७	५ ९ ३ १७	७ १९ ३२ २३	७ २३ २८ ५१	५ २० ५४ ३	६ १६ १९ १	१ २२ ५८ १३	७ १५ १० ११	८ ४ १६ ५२
४	गु.	२७ २२	५ ९ ३८ २४	७ २१ २ ४०	७ २३ ४२ ८	५ २२ ० ३१	६ १६ २५ ५७	१ २२ ५५ २	७ १५ १३ ४१	८ ४ १८ ५५
५	शु.	३ ६ १० २४	५ १० १३ २७	७ २२ ३२ ३०	७ २३ ५५ २७	५ २३ ७ १४	६ १६ ३२ ५२	१ २२ ५१ ५१	७ १५ १७ २६	८ ४ २१ ०
६	श.	३ २० २१ ५४	५ १० ४८ २७	७ २४ २ १६	७ २४ ८ ४८	५ २४ १४ १	६ १६ ३६ ४८	१ २२ ४८ ४०	७ १५ २१ ६	८ ४ २३ १६
८	र.	४ ४ ३४ १७	५ ११ २३ २४	७ २५ ३१ ३८	७ २४ २२ ११	५ २५ २१ २३	६ १६ ४६ ३५	१ २२ ४५ ३०	७ १५ २४ ५०	८ ४ २५ ११
९	चं.	४ १८ ४५ १७	५ ११ ५८ १७	७ २७ ० ३३	७ २४ ३५ ३४	५ २६ २८ ४८	६ १६ ५३ २४	१ २२ ४२ १९	७ १५ २८ ३१	८ ४ २७ १९
१०	मं.	५ २ ५२ ४४	५ १२ ३३ ७	७ २८ २९ २	७ २४ ४९ ०	५ २७ ३६ २७	६ १७ ० ११	१ २२ ३९ ८	७ १५ ३२ १२	८ ४ २९ २६
११	बु.	५ १६ ५४ ३१	५ १३ ७ ५३	७ २९ ५७ ०	७ २५ २ २७	५ २८ ४४ १८	६ १७ ६ ५७	१ २२ ३५ ५७	७ १५ ३५ ५२	८ ४ ३१ ३४
१२	गु.	६ ० ४८ २४	५ १३ ४२ ३६	८ १ २४ २४	७ २५ १५ ५५	५ २९ ५२ २०	६ १७ १३ ४०	१ २२ ३२ ४६	७ १५ ३९ ३४	८ ४ ३३ ४२
१३	शु.	६ १४ ३२ १३	५ १४ १७ १५	८ २ ५१ ९	७ २५ २९ २५	६ १ ० ३७	६ १७ २० २१	१ २२ २९ ३६	७ १५ ४३ १५	८ ४ ३५ ५३
१४	श.	६ २८ ३ ४९	५ १४ ५१ ५०	८ ४ १७ ९	७ २५ ४२ ५६	६ २ ९ ४	६ १७ २७ ०	१ २२ २६ २५	७ १५ ४६ ५६	८ ४ ३८ ४
३०	र.	७ ११ २१ २५	५ १५ २६ २४	८ ५ ४२ १६	७ २५ ५६ २८	६ ३ १७ ४२	६ १७ ३३ ३६	१ २२ २३ १४	७ १५ ५० ३८	८ ४ ४० १७

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ रवौ अयनांशाः २३।३७।३८



मार्गशीर्ष कृष्ण ३० रवौ अयनांशाः २३।३७।३९



पश्चिमास्तःगुरुः(दि. ३०।११।८३)॥ **दैनिक लग्नसारणी (स्टॅण्डर्ड टाइम)** ॥ शुक्रः पूर्वस्याम्।

रा.	१ चं.	२ मं.	३ बु.	४ गु.	५ शु.	६ श.	८ र.	९ चं.	१० मं.	११ बु.	१२ गु.	१३ शु.	१४ श.	३० र.
वृ.	८ २०	८ १६	८ १२	८ ८	८ ४	८ १	७ ५६	७ ५२	७ ४९	७ ४५	७ ४०	७ ३७	७ ३३	७ २९
ध.	१० २६	१० २२	१० १८	१० १४	१० १०	१० ७	१० २	९ ५८	९ ५५	९ ५१	९ ४६	९ ४३	९ ३९	९ ३४
म.	१२ १२	१२ ८	१२ ४	१२ ०	११ ५६	११ ५३	११ ४८	११ ४४	११ ४१	११ ३७	११ ३२	११ २९	११ २५	११ २०
कुं.	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३१	१ २७	१ २४	१ १९	१ १५	१ १२	१ ८	१ ३	१ ०	१२ ५६	१२ ५१
मी.	३ ११	३ ७	३ ३	२ ५९	२ ५४	२ ५२	२ ४७	२ ४३	२ ४०	२ ३६	२ ३१	२ २८	२ २४	२ १९
मे.	४ ४९	४ ४५	४ ४१	४ ३७	४ ३३	४ ३०	४ २५	४ २१	४ १८	४ १४	४ ९	४ ६	४ २	३ ५७
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
वृ.	६ ४५	६ ४१	६ ३७	६ ३३	६ २९	६ २६	६ २१	६ १७	६ १४	६ १०	६ ५	६ २	५ ५८	५ ५३
मि.	८ ५६	८ ५५	८ ५१	८ ४७	८ ४३	८ ४०	८ ३५	८ ३१	८ २८	८ २४	८ १९	८ १६	८ १२	८ ७
क.	११ १७	११ १३	११ ९	११ ५	११ १	१० ५८	१० ५३	१० ४९	१० ४६	१० ४२	१० ३७	१० ३४	१० ३०	१० २५
सिं.	१ ३२	१ २८	१ २४	१ २०	१ १६	१ १३	१ ८	१ ४	१ १	१२ ५७	१२ ५२	१२ ४९	१२ ४५	१२ ४०
कं.	३ ४५	३ ४१	३ ३७	३ ३३	३ २९	३ २६	३ २१	३ १७	३ १४	३ १०	३ ५	३ २	२ ५८	२ ५३
तु.	६ २	५ ५८	५ ५४	५ ५०	५ ४६	५ ४३	५ ३८	५ ३४	५ ३१	५ २७	५ २२	५ १९	५ १५	५ १०

अथ मार्गशीर्षकृष्णाष्टमी कालाष्टमी सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या। मार्गशीर्षासिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ॥ उपोष्य कुर्वन् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ इति काशीखण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। दिनद्वयेऽप्यतो रात्रिव्याप्तावुत्तरैव। भैरवोत्पत्तेः प्रदोषकालीनत्वादिति केचित्, तन्न। शिवरहस्ये मध्याह्ने भैरवोत्पत्तेः श्रवणात्। तथा च तत्रैव। 'नित्यवाताधिके कृत्वा मध्याह्ने संस्थिते रवौ' इत्युपक्रम्य [illegible] उक्तं, तदोत्पन्नोऽमतः श्रीकालभैरवः। आविर्भावितदा श्रीकालभैरवः [illegible]॥ [illegible] उक्तं च तत्रैव. उपोषणं [illegible]मर्घ्यदानमिह स्मृतम्।*

आकाश दर्शन

ता. २९।११।८३ बु. [illegible] यो., [illegible] से बु. ० अं. ३० क. [illegible], स्टँ. टा. दि. घं. ११ मि. ५० पर।
ता. १०।१२।८३ मं. चं. यो., चं. से मं. [illegible] अं. ४५ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. ८ मि. ३ पर।
ता. ३०।११।८३ शु. चं. योग, चं. से शु. २ अं. १८ क. दक्षिण, स्टँ. टा. रा. घं. २ मि. ९ पर।
ता. ४।१२।८३ ह. शु. युति, स्टँ. टा. दि. घं. ८ मि. १७ पर।
ता. ५।१२।८३ श. चं. यो. चं. से श. ० अं. ५३ कला द. स्टँ. टा. दि. घं. [illegible] मि. ५८ पर।
ता. ३।१२।८३ बु. ने. यो. ने. से बु. ३ अं. ३२ कला दक्षिण. स्टँ. टा. दि. घं. १२ मि. १७ पर।
ता. ४।१२।८३ ह. चं. यो. चं. से ह. ० अं ३३ क. दक्षिण, स्टँ. टा. दि. घं. १ मि. ३४ पर।

*तथा जागरणं रात्रौ पूजा यामचतुष्टये॥ सन्ध्यायामपि पूजैवोक्ता। तेन ×

श्री संवत् २०४०शके १९०५मार्गशीर्षशुक्लपक्षः।

५ दिसम्बर से २० दिसम्बर सन् १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। दक्षिणगोलः। हेमन्तर्तुः। A

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टॅ.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टॅ.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टॅ.टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा
२६	१७	१	चं.	२९	८	रा.	६	१०	ज्ये.	२३	३५	दि.	३	५७	धृ.	१३	५	दि.	११	४५	बव	२९	८	वा.	५९	५५	पद्म
२६	१५	२	मं.	३१	३	"	६	५७	मू.	२६	४५	सा.	५	१४	शू.	११	२०	"	११	४	कौ.	३१	३	तै.	६०	०	छत्र
२६	१४	३	बु.	३४	२३	"	८	१७	पूषा.	३१	१८	रा.	७	३	गं.	१०	४०	"	१०	४८	तै.	२	३३	ग.	३४	२३	श्रीवत्स
२६	१३	४	गु.	३८	५८	"	१०	८	उषा.	३७	०	"	९	२१	वृ.	११	०	"	१०	५७	व.	६	३२	भ.	३८	५८	सौम्य
२६	११	५	शु.	४४	२३	"	१२	२३	श्र.	४३	४३	"	१२	३	ध्रु.	१२	८	"	११	२५	बव	११	४०	बा.	४४	३३	धूम्र
२६	१०	६	श.	५०	४८	"	२	५४	ध.	५१	०	"	२	५३	व्या.	१३	५५	"	१२	९	कौ.	१७	३०	तै.	५०	४८	प्रवर्ध
२६	९	७	र.	५७	८	"	५	२६	श.	५८	२५	"	५	५७	ह.	१६	०	"	१२	५९	ग.	२४	०	व.	५७	८	रक्ष
२६	८	८	चं.	६०	०	×	×	×	पूभा.	६०	०	×	×	×	व.	१८	०	"	१	४८	भ.	३०	८	बव	६०	०	कुशल
२६	७	८	मं.	२	५५	दि.	७	४७	पूभा.	५	१५	दि.	८	४३	सि.	१९	२८	"	२	२४	बव	२	५५	बा.	३५	३१	काण
२६	७	९	बु.	७	४८	"	९	४४	उभा.	११	१३	"	११	६	व्य.	२०	१०	"	२	४१	कौ.	७	४८	तै.	३९	४१	लुम्ब
२६	६	१०	गु.	११	१०	"	११	६	रे.	१५	४५	"	१२	५६	व.	१०	४०	"	२	३०	ग.	११	१०	व.	४२	१३	मित्र
२६	५	११	शु.	१२	५०	"	११	४६	अ.	१८	३८	"	२	५	प.	१७	५०	"	१	४६	भ.	१२	५०	बव	४३	२	वज्र
२६	५	१२	श.	१२	३८	"	११	४२	भ.	१९	४३	"	२	३२	शि.	१४	३५	"	१२	२१	बा.	१२	३८	कौ.	४१	५१	ध्वांक्ष
२६	४	१३	र.	१०	३८	"	१०	५५	कृ.	१९	३	"	२	१७	सि.	९	५५	"	१०	३८	तै.	१०	३८	ग.	३१	२	धूम्र
२६	४	१४	चं.	७	३	"	९	२६	रो.	१६	५३	"	१	२५	सा.	४ ५४	५ ३	रा.	८ ५	१० २६	व.	७	३	भ.	३४	४२	प्रवर्ध
२६	४	१५	मं.	२ ५४	५ ०	रा.	७ ५	१० ६	मृ.	१३	२३	"	१२	२	शु.	४१	८	"	२	२०	व.	२	२	बा.	३१ ५४	१० ६	रक्ष

योगा	रा.ता.	अं.ता.	चं.ता.	फा.ता.	फ.ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टॅ.टा.	घं.	मि.	चं.अ. स्टॅ.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	र.क्रां.द. अं.	क.	स्प.मध्याह्नका स्टॅ.टा. घं.	मि.	से.	साम्पा.काल घं.	मि.	से.	औदा.स्प.सू. रा.	अं.	क.	वि.
पद्म	१४	५	१९	२९	१५	ध.	२३	३५	दि.	३	५७	५	५३	६	३१	५	६	२२	१६	११	४८	१९	४	५२	१	७	१८	४१	१
छत्र	१५	-	२०	३०	१६	ध.						६	४४	६	३२	५	६	२२	२४	११	४८	४४	४	५५	५८	७	१९	४१	५८
श्रीवत्स	१६	७	२१	१	१७	म.	४७	३८	रा.	१	३५	७	३७	६	३२	५	६	२२	३१	११	४६	६	४	५९	५४	७	२०	४२	५५
सौम्य	१७	८	२२	२	१८	म.						८	३२	६	३३	५	६	२२	३८	११	४९	३५	५	३	५१	७	२१	४३	५३
धूम्र	१८	९	२३	३	१९	म.						९	२६	६	३४	५	६	२२	४६	११	५०	१	५	७	४७	७	२२	४४	५३
प्रवर्ध	१९	१०	२४	४	२०	कुं.	१७	१९	दि.	१	३१	१०	१९	६	३५	५	७	२२	५०	११	५०	२८	५	११	४४	७	२३	४५	५४
रक्ष	२०	११	२५	५	२१	कुं.						११	१२	६	३५	५	७	२२	५६	११	५०	५५	५	१५	४१	७	२४	४६	५५
कुशल	२१	१२	२६	६	२२	मी.	४८	३६	रा.	२	०	१२	३	६	३६	५	७	२३	१	११	५१	२३	५	१९	३७	७	२५	४७	५६
काण	२२	१३	२७	७	२३	मी.						१२	५४	६	३७	५	७	२३	६	११	५१	५१	५	२३	३४	७	२६	४८	५८
लुम्ब	२३	१४	२८	८	२४	मी.						१	४६	६	३७	५	८	२३	१०	११	५२	१९	५	२७	३०	७	२७	५०	०
मित्र	२४	१५	२९	९	२५	मे.	१५	४५	दि.	१२	५६	२	४०	६	३८	५	८	२३	१४	११	५२	४७	५	३१	२७	७	२८	५१	३
वज्र	२५	१६	३०	१०	२६	मे.						३	३६	६	३८	५	८	२३	१७	११	५३	१६	५	३५	२३	७	२९	५२	६
ध्वांक्ष	२६	१७	१	११	२७	वृ.	३४	४२	रा.	८	३२	४	३६	६	३९	५	९	२३	२०	११	५३	४५	५	३९	२०	८	०	५३	१०
धूम्र	२७	१८	२	१२	२८	वृ.						५	३६	६	४०	५	९	२३	२२	११	५४	१५	५	४३	१६	८	१	५४	१५
प्रवर्ध	२८	१९	३	१३	२९	मि.	४५	१७	रा.	१२	४७	अ६	४४	६	४०	५	१०	२३	२४	११	५४	४३	५	४७	१३	८	२	५५	२०
रक्ष	२९	२०	४	१४	३०	मि.						उ५	२१	६	४१	५	१०	२३	२५	११	५५	१३	५	५१	१०	८	३	५६	२५

इष्टिः। [A राष्ट्रिय आग्रहायणः।

चन्द्रदर्शनम्। मु. ३०। फ. समता। स्वात्यां शुक्रः ५३।२०।

रवीउलव्वल् ३।

भ. ०।३२ (दि. ९।१०) उ. ३८।५८ (रा. १०।८) या। वैनायकी ४। व्य. प्र. ३५।२।

पूर्वाषाढासुबुधः ३६।३०। नाग ५। का. नि. ०।२८। सर्वार्थसिद्धियोगः ४३।४३ या।

चम्पा ६। स्कन्द ६।

भ. ५७।८ (रा. ५।२६) उ.। भानुसप्तमी।

भ. ३०।८ (रा. ६।३९) या.। अन्नपूर्णा ८।

काणयोगः।

कल्पादिः ९।

भ. ४२।१३ (रा. ११।३१) उ.। मासान्तः। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।४५ या.।

भ. १२।५० (दि. १०।४६) या। मूलेधनुषिचार्कः ७।४८ (दि. ९।४५)। मु. ३०। फ. समता। [illegible]

चित्रायां भौमः ५३।१५। प्रदोष १३ व्रतम्। शनिप्रदोषः।

विशाखयोः शुक्रः १८।१५। विमलतीर्थयात्रा। बाराहवफात्।

भ. ०।३ (दि. ९।२६) उ. ३४।४२ (रा. ८।३३) या.। दत्तजयन्ती १५। व्रताय १५। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible] या.।

इष्टिः। [B (दि. ९।४५) उ. २३।४८ (दि. ४।१) या.। मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible] या.।

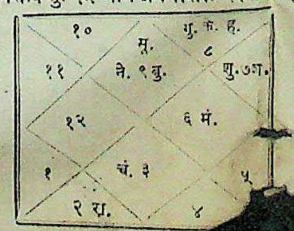
प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि.२९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति.	वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेपच्यून रा.	अं.	क.	वि.
१	चं.	७	२४	२३	४६	५	१५	०	४८	८	७	६	३०	७	२६	१०	०	६	४	२६	३१	६	१७	४०	१०	१	२२	२०	३	७	१५	५४	१९	८	४	४२	२६
२	मं.	८	७	१०	३४	५	१६	३५	२२	८	८	२०	१९	७	२६	२३	३४	६	५	३५	३२	६	१७	४६	४३	१	२२	१६	५२	७	१५	५८	१	८	४	४४	३८
३	बु.	८	१९	४१	५१	५	१७	९	३१	८	९	५०	५३	७	२६	३७	८	६	६	४४	३९	६	१७	५३	१२	१	२२	१३	४१	७	१६	१	४१	८	४	४६	५०
४	गु.	९	१	५९	२	५	१७	४३	४६	८	११	१०	५१	७	२६	५०	४४	६	७	५३	५८	६	१७	५९	३९	१	२२	१०	३०	७	१६	५	२२	८	४	४९	४
५	शु.	९	१४	४	४३	५	१८	१७	५६	८	१२	२८	५८	७	२७	४	१९	६	९	३	२६	६	१८	६	३	१	२२	७	२०	७	१६	९	३	८	४	५१	१७
६	श.	९	२६	१	५२	५	१८	५२	२	८	१३	४४	५६	७	२७	१७	५६	६	१०	१३	४	६	१८	१२	२५	१	२२	४	९	७	१६	१२	४३	८	४	५३	३०
७	र.	१०	७	५४	२०	५	१९	२६	४	८	१४	५९	२४	७	२७	३१	३३	६	११	२२	५०	६	१८	१८	४३	१	२२	०	५८	७	१६	१६	२२	८	४	५५	४५
८	चं.	१०	१९	४६	२६	५	२०	०	२	८	१६	८	५७	७	२७	४५	१०	६	१२	३२	४५	६	१८	२४	५९	१	२१	५७	४७	७	१६	२०	२	८	४	५७	१९
८	मं.	११	१	४२	४९	५	२०	३३	५४	८	१७	१६	९	७	२७	५८	४६	६	१३	४२	४८	६	१८	३१	१२	१	२१	५४	३७	७	१६	२३	४१	८	५	०	१४
९	बु.	११	१३	४८	१४	५	२१	७	४३	८	१८	१९	२७	७	२८	१२	२५	६	१४	५२	५९	६	१८	३७	२२	१	२१	५१	२६	७	१६	२६	१९	८	५	२	२९
१०	गु.	११	२६	७	१३	५	२१	४१	२६	८	१९	१८	१९	७	२८	२६	२	६	१६	३	१८	६	१८	४३	२९	१	२१	४८	१५	७	१६	३०	५७	८	५	४	५४
११	शु.	०	८	४३	४६	५	२२	१५	५	८	२०	१२	०	७	२८	३९	४०	६	१७	१३	४६	६	१८	४९	३३	१	२१	४५	४	७	१६	३४	३४	८	५	७	०
१२	श.	०	२१	४१	३	५	२२	४८	२९	८	२०	५९	५०	७	२८	५३	१७	६	१८	२४	२०	६	१८	५५	३४	१	२१	४१	५४	७	१६	३८	११	८	५	९	१९
१३	र.	१	५	०	५१	५	२३	२२	९	८	२१	४१	०	७	२९	६	५५	६	१९	३५	२	६	१९	१	३१	१	२१	३८	४२	७	१६	४१	४७	८	५	११	३१
१४	चं.	१	१८	४२	२१	५	२३	५५	३३	८	२२	१४	३८	७	२९	२०	३२	६	२०	४५	५२	६	१९	७	२५	१	२१	३५	३२	७	१६	४५	२२	८	५	१३	४६
१५	मं.	२	२	६	४३	५	२४	२९	३	८	२२	३९	५१	७	२९	३४	९	६	२१	५६	४८	६	१९	१३	१६	१	२१	३२	२१	७	१६	४८	५६	८	५	१६	३

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ चन्द्रे अयनांशाः २३।३७।४०



मार्गशीर्ष शु. १५ भौमे अयनांशाः २३।३७।४२



पश्चिमास्तः गुरुः ॥ दैनिक लग्नसारिणी ॥ (स्टॅण्डर्ड टाइम) शुक्रः पूर्वेस्तम्।

रा.	१ चं.	२ मं.	३ बु.	४ गु.	५ शु.	६ श.	७ र.	८ चं.	८ मं.	९ बु.	१० गु.	११ शु.	ल.	१२ श.	१३ र.	१४ चं.	१५ मं.
वृ.	७ २५	७ २१	७ १६	७ १३	७ ९	७ ६	७ १	६ ५७	६ ५४	६ ४९	६ ४५	६ ४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	९ ३१	९ २७	९ २२	९ १९	९ ५	९ २	८ ५७	८ ५३	८ ५०	८ ४५	८ ४१	८ ३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	११ १७	११ १३	११ ८	११ ५	११ १	१० ५८	१० ५३	१० ४९	१० ४६	१० ४१	१० ३७	१० ३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	१२ ४८	१२ ४४	१२ ३९	१२ ३६	१२ ३२	१२ २९	१२ २४	१२ २०	१२ १७	१२ १३	१२ ८	१२ ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	२ १६	२ १२	२ ७	२ ४	२ ०	१ ५७	१ ५२	१ ४८	१ ४५	१ ४०	१ ३६	१ ३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	३ ५४	३ ५०	३ ४५	३ ४२	३ ३८	३ ३५	३ ३०	३ २६	३ २३	३ १८	३ १४	३ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
वृ.	५ ५०	५ ४६	५ ४१	५ ३८	५ ३४	५ ३१	५ २६	५ २२	५ १९	५ १४	५ १०	५ ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	८ ४	८ ०	७ ५५	७ ५२	७ ४८	७ ४५	७ ४०	७ ३६	७ ३३	७ २८	७ २४	७ २१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	१० २२	११ १८	११ १३	११ १०	११ ६	११ ३	१० ५८	१० ५४	१० ५१	१० ४६	१० ४२	१० ३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	१२ ३७	१२ ३३	१२ २८	१२ २५	१२ २१	१२ १८	१२ १३	१२ ९	१२ ६	१२ १	११ ५७	११ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	२ ५०	२ ४७	२ ४२	२ ३९	२ ३५	२ ३२	२ २७	२ २३	२ २०	२ १५	२ ११	२ ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	५ ७	५ ३	४ ५८	४ ५५	४ ५१	४ ४८	४ ४३	४ ३९	४ ३६	४ ३१	४ २७	४ २४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्गशीर्षशुक्लषष्ठी —चम्पाषष्ठी महाराष्ट्रे प्रसिद्धा ॥ अत्र तिथिद्वैधे पूर्वेद्युर्दिने रविवारभौमवारशततारकावैधृतीनां मध्येऽधिकेयोगे सा पूर्वा परा वा मुहूर्तत्रयव्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वयेऽपि योगाभावे परैव त्रिमुहूर्ता ग्राह्या। इयमेव स्कन्दषष्ठी सा पूर्वा ग्राह्या। अत्र मार्गशीर्ष शुक्ल [illegible] ॥ [illegible] व्यापिनीति।

आकाश दर्शन

ता. [illegible] बु.चं.मे, [illegible] ० अं. ४४ क. उ. स्टॅ. टा. दि. घं. ८ मि. [illegible] पर।

ता. ५।१२।८३, ने. चं. यो., चं. से ने. २ अं. १९ क. उ. स्टॅ. टा. रा. घं. १२ मि. ५४ पर।

ता. १४।१२।८३ गु. बु. युति स्टॅ. टा. रा. घं. ६ मि. १७ पर।

ता. १७।१२।८३ शु. श. यो., श. से शु. ० अं. ९ क. उ. स्टॅ.टा. दि. घं. ४ मि. १ पर।

श्री संवत् २०४० शके १९०५ पौष कृष्णपक्षः

२१ दिसम्बर से [illegible] जनवरी सन् १९८३ ई० तक। दक्षिणायनम्। दक्षिणगोलः। हेमन्तर्तुः। [illegible]

२६

वि.मा घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टॅं. टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टॅं. टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टॅं. टा.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः
२६	३	२	बु.	४६	२०	रा.	२	२५	आर्द्रा.	८	५८	दि.	१	५६	ब्र.	४०	४०	रा.	१०	५७	तै.	२२	४५	ग.	४०	२०	मुसल
२६	३	३	गु.	४२	१५	"	११	३६	पुन.	[illegible]	[illegible]	"	[illegible]	[illegible]	ऐं.	३०	५०	"	७	२६	व.	१५	४०	भ.	४२	१५	सिद्धि
२६	३	४	शु.	३५	१०	"	८	४६	श्ले.	३३	१८	"	४	१	वै.	२२	५५	दि.	३	५२	बव	८	४२	बा.	३५	१०	मृत्यु
२६	३	५	श.	२८	१८	"	६	२	म.	४८	२३	"	२	४	वि.	१४	१०	"	१२	२३	कौ.	१	४३	तै.	[illegible]	[illegible]	पद्म
२६	४	६	र.	२२	३	दि.	३	३२	पूफा.	४४	८	"	१२	२२	प्री.	[illegible]	[illegible]	"	[illegible]	[illegible]	व.	२२	३	भ.	४०	१०	छत्र
२६	४	७	चं.	१६	३०	"	१	२०	उफा.	४०	४०	"	११	०	सौ.	५१	०	"	३	८	बव	१६	३०	बा.	४४	६	श्रीवत्स
२६	४	८	मं.	११	५८	"	११	३१	ह.	३८	१५	"	१०	२	शो.	४४	४८	"	१२	३१	कौ.	११	५८	तै.	४०	४	सौम्य
२६	५	९	बु.	८	२५	"	१०	६	चि.	३६	५०	"	९	२८	अ.	३६	२३	"	१०	२१	ग.	८	२५	व.	३७	४	कालदण्ड
२६	५	१०	गु.	५	५८	"	९	८	स्वा.	३६	२८	"	९	२०	सु.	३४	४८	"	८	४०	भ.	५	५८	बव	३५	१०	सुस्थिर
२६	६	११	शु.	४	३८	"	८	३६	वि.	३७	१३	"	९	३८	धृ.	३१	८	"	७	१२	बा.	४	३८	कौ.	३४	२३	मातङ्ग
२६	७	१२	श.	४	२३	"	८	३०	अनु.	३९	०	"	१०	२१	शू.	२८	१८	"	६	४	तै.	४	२३	ग.	३४	४०	अमृत
२६	७	१३	र.	५	१३	"	८	५०	ज्ये.	४१	५०	"	११	२१	ग.	२६	१५	सा.	५	१५	व.	५	१३	भ.	३६	०	काण
२६	८	१४	चं.	७	३	"	९	३५	मू.	४५	३५	"	१	०	वृ.	२५	०	दि.	४	४६	श.	७	३	च.	३८	२५	लुम्ब
२६	९	३०	मं.	१०	०	"	१०	४६	पूषा.	५०	२३	"	२	५५	ध्रु.	२४	३३	"	४	३५	ना.	१०	०	किं.	४१	५०	मित्र

योगाः	रा. मि.	अं. ता.	वं. सौ.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टॅं. टा.	घं.	मि.	न. उ. स्टॅं. टा.		सू. उ. स्टॅं. टा.		सू. अ. घं.	मि.	र. कांद. अं.	क.	स्पष्टमध्याह्न का. स्टॅं. टा.			साम्या. का. घं.	मि.	से.	औदयिकस्प. सू. रा.	अं.	क.	वि.
मुसल	३०	२१	५	१५	१	क.	५०	०	रा.	२	५	६	३[illegible]	६	४१	५	१०	२३	२६	११	५५	४३	५	५५	६	८	४	५[illegible]	३१
सिद्धि	१	२२	६	१६	२	क.						७	४७	६	४२	५	११	२३	२६	११	५६	१३	५	५९	३	८	५	५८	३७
मृत्यु	२	२३	७	१७	३	सिं.	५३	१८	रा.	४	१	८	४८	६	४२	५	११	२३	२६	११	५६	४३	६	२	५९	८	६	५९	४३
पद्म	३	२४	८	१८	४	सिं.						९	५४	६	४३	५	१२	२३	२६	११	५७	१३	६	६	५७	८	८	०	५०
छत्र	४	२५	९	१९	५	कं.	५८	११	रा.	५	५९	११	[illegible]	६	४३	५	१३	२३	२५	११	५७	४३	६	१०	५२	८	९	१	५८
श्रीवत्स	५	२६	१०	२०	६	कं.						१[illegible]	५०	६	४४	५	१३	२३	२४	११	५८	१३	६	१४	४९	८	१०	३	७
सौम्य	६	२७	११	२१	७	कं.						१२	५८	६	४४	५	१४	२३	२२	११	५८	४३	६	१८	४५	८	११	४	१६
कालदण्ड	७	२८	१२	२२	८	तु.	७	२५	दि.	१	४०	१	५७	६	४४	५	१४	२३	१९	११	५९	१३	६	२२	४२	८	१२	५	२५
सुस्थिर	८	२९	१३	२३	९	तु.						२	५६	६	४५	५	१५	२३	१६	११	५९	४२	६	२६	३६	८	१३	६	३५
मातङ्ग	९	३०	१४	२४	१०	वृ.	२१	५६	दि.	३	३१	३	५६	६	४५	५	१५	२३	१३	१२	०	११	६	३०	३५	८	१४	७	४६
अमृत	१०	३१	१५	२५	११	वृ.						४	५[illegible]	६	४५	५	१६	२३	९	१२	०	४०	६	३४	३२	८	१५	८	५७
काण	११	१	१६	२६	१२	ध.	४१	५०	रा.	११	२९	५	५२	६	४५	५	१७	२३	५	१२	१	९	६	३९	२८	८	१६	१०	८
लुम्ब	१२	२	१७	२७	१३	ध.						[illegible]	[illegible]	६	४६	५	१७	२३	०	१२	१	३८	६	४२	२५	८	१७	११	१९
मित्र	१३	३	१८	२८	१४	ध.						×	×	६	४६	५	१८	२२	५५	१२	२	६	६	४६	२१	८	१८	१२	३०

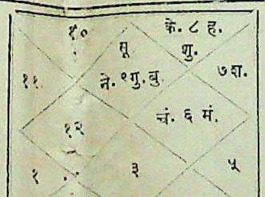
मूलेधनुषि च गुरुः ५४।५। वक्रीबुधः ५८।३५। सोलहकारणव्रतारंभः (जैन)। [illegible] राष्ट्रिय पौषः।
भ. १५।४६ (दि. १।२) उ. ४२।१५ (रा. ११।३६) या.। सायनमकरेऽर्कः २३।१५। राष्ट्रियपौषः। [illegible] [A
संकष्ट ४। चं. उ. घं. ८ मि. ४८।
पद्मयोगः। [A व्य. नि. ३७।२८। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।४३ या.। अमृतसिद्धियोगः [illegible] या.।
भ. २३।३ (दि. ३।३२) उ. ४२।१० (रा. २।२३) या.। (क्रिस्टमसडे) बड़ादिन। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]
वृश्चिके शुक्रः ४३।८। बुधास्तः पश्चिमायाम् ३८।२३। गुरोरुदयः पूर्वस्याम् ५९।५५। [illegible]
सौम्ययोगः। [B योगः [illegible] या.।
भ. ३७।४ (रा. ६।३४) उ.। विशाखयोः शनिः २०।४०।
भ. ५।५८ (दि. ९।८) या.। पूर्वाषाढास्वर्कः १३।८ (दि. १२।० । अनुराधासु शुक्रः [illegible]।
तुलायांभौमः १।३८। सफला ११ व्रतं सर्वेषाम्। स्वामीपार्श्वनाथ का जन्मदिन (जैन)।
प्रदोष १३ व्रतम्। शनिप्रदोषः।
भ. ५।१३ (दि. १८।५०) उ. ३६।० (रा. ९।९) या.। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्। (न्यूईयर्सडे) ई० सन् १९८४ [C
दर्शः। [C प्रारम्भः जनवरी १। ज्येष्ठायांशुक्रः १९।४८। व.ग. मूलेबुधः [illegible]। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]
इष्टिः।

प्रातः स्टॅं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः।

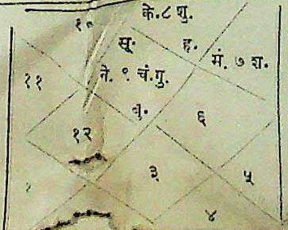
ति.	वा.	चं. रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	ह. रा.	अं.	क.	वि.	ने. रा.	अं.	क.	वि.
२	बु.	२	१७	७	१३	५	२५	२	८	८	२२	५५	४६	७	२६	४७	४७	६	२३	७	५१	६	१९	१९	४	१	२१	२९	१०	७	१६	५०	२८	८	५	१८	१९
३	गु.	३	१	३६	२९	५	२५	३५	१९	८	२३	१	३०	८	०	१	२३	६	२४	१९	१	६	१९	२४	४८	१	२१	२५	५९	७	१६	५६	३	८	५	२०	३५
४	शु.	३	१६	१७	८	५	२६	८	२३	८	२२	५१	२१	८	०	१४	५९	६	२५	३०	१८	६	१९	३०	२८	१	२१	२२	४८	७	१६	५०	३४	८	५	२२	५१
५	श.	४	०	५३	४२	५	२६	४१	२३	८	२२	३१	४२	८	०	२८	३५	६	२६	४१	४१	६	१९	३६	५	१	२१	१९	३८	७	१७	३	५	८	५	२५	७
६	र.	४	१५	२३	२८	५	२७	१४	१८	८	२२	११	१७	८	०	४२	९	६	२७	५३	१०	६	१९	४१	३९	१	२१	१६	२७	७	१७	६	३५	८	५	२७	२३
७	चं.	४	२९	४२	४	५	२७	४७	७	८	२१	३१	१०	८	०	५५	४४	६	२९	४	४५	६	१९	४७	७	१	२१	१३	१६	७	१७	१०	४	८	५	२९	३९
८	मं.	५	१३	४६	४३	५	२८	१९	५०	८	२०	३९	५३	८	१	९	१७	७	०	१६	२७	६	१९	५२	३२	१	२१	१०	५	७	१७	१३	३२	८	५	३१	५४
९	बु.	५	२७	३८	११	५	२८	५२	२८	८	१९	३८	२७	८	१	२२	४९	७	१	२८	१३	६	१९	५७	५४	१	२१	६	५४	७	१७	१६	५७	८	५	३४	९
१०	गु.	६	११	१०	२१	५	२९	२४	५९	८	१८	२८	२८	८	१	३६	२१	७	२	४२	५	६	२०	३	१२	१	२१	३	४३	७	१७	२०	१४	८	५	३६	२५
११	शु.	६	२४	१९	५०	५	२९	५७	२५	८	१७	१२	१	८	१	४९	५२	७	३	५२	२	६	२०	८	२६	१	२१	०	३३	७	१७	२३	४८	८	५	३८	३९
१२	श.	७	७	३३	३३	६	०	२९	४५	८	१५	५१	३२	८	२	३	२१	७	५	४	५	६	२०	१३	३५	१	२०	५७	२५	७	१७	२७	११	८	५	४०	५५
१३	र.	७	२०	२८	२९	६	१	१	२८	८	१४	२९	४२	८	२	१६	४९	७	६	१६	११	६	२०	१८	४०	१	२०	५४	११	७	१७	३०	३३	८	५	४३	१०
१४	च.	८	३	१०	२०	६	१	३४	५	८	१३	९	१६	८	२	३०	१६	७	७	२८	२३	६	२०	२३	४०	१	२०	५१	०	७	१७	३३	५२	८	५	४५	२४
३०	मं.	८	१५	३०	२०	६	२	६	६	८	११	५२	४१	८	२	४३	४३	७	८	४	३९	६	२०	२८	३८	१	२०	४७	४१	७	१७	३७	१०	८	५	४७	३८

पौष कृष्ण ८ भौमे अयनांशाः २३।३।१४३

वक्रीबुधः ८।२३।१६।४९



पौष कृष्ण ३० भौमे अयनांशाः २३।३।५१।४५



गुरोरुदयः पूर्वस्याम् (दि. २६।१२।८३) ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पूर्वस्याम्

रा.	२ बु.		३ गु.		४ शु.		५ श.		६ र.		७ चं.		८ मं.		९ बु.		१० गु.		११ शु.		१२ श.		१३ र.		१४ च.		३० मं.	
ध.	८	२७	८	२४	८	१९	८	१५	८	११	८	८	८	३	७	५९	७	५६	७	५२	७	४[illegible]	७	४३	७	४०	[illegible]	[illegible]
म.	१०	१३	१०	१०	१०	५	१०	१	९	५७	९	५४	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८	९	३३	९	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	११	४४	११	४१	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२०	११	१६	११	१३	११	९	११	४	११	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	१	१२	१	९	१	४	१	०	१२	५६	१२	५३	१२	४८	१२	४४	१२	४१	१२	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१	२	२६	२	२२	२	१९	२	१५	२	१०	२	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	४	४६	४	४३	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२२	४	१८	४	१५	४	११	४	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		[illegible]	
मि.	७	०	६	५७	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३६	६	३२	६	२९	६	२५	६	२०	६	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	९	१८	९	१५	९	१०	९	६	९	२	८	५९	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	३८	८	३४	८	३१	[illegible]	[illegible]
सिं.	११	३३	११	३०	११	२५	११	२१	११	१७	११	१४	११	९	११	५	११	२	१०	५८	१०	५३	१०	४९	१०	४६	[illegible]	[illegible]
कं.	१	४६	१	४३	१	३८	१	३४	१	३०	१	२७	१	२२	१	१८	१	१५	१	११	१	६	१	३	१२	५०	१२	[illegible]
तु.	४	३	४	०	३	५५	३	५१	३	४७	३	४४	३	३९	३	३५	३	३२	३	२८	३	२३	३	२०	३	१६	[illegible]	[illegible]
वृ.	६	२१	६	१८	६	१३	६	९	६	५	६	२	५	५७	५	५३	५	५०	५	४६	५	४२	५	३७	५	३४	५	[illegible]

एकादश्यां नवम्यां च पौषमासे घना यदि। पूर्वस्यां दिशि गर्जन्ति तदा महाविनाशकाः ॥ यदा वै परि-माषायां तदा धान्यविवर्धकाः ॥ कृष्णपक्षे च सप्तम्यां पौषमासे महानिलः। यदा मेघाश्च गर्जन्ति तदा प्रावृषि तोयदाः ॥ पौषस्य [illegible] । तदा सस्यमहर्घत्वं [illegible] ॥ यदा [illegible] सस्यविवर्धिनी। उत्तराषाढसंयुक्ता [illegible] ॥ पौषमासेऽर्कसंक्रान्तिः सूर्यवारे यदा भवेत्। धान्यमूल्यं द्विगु-G

आकाश दर्शन

[illegible]

[G णितं तदा भवति नान्यथा ॥ शनिवारे त्रिगुणितं भूमिपुत्रे चतुर्गुणम्। बुधे भृगौ समत्वं च [illegible] ॥ कुहून्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते। तदा शोभनमारोग्यं श्रावणे वारिवर्षणम् ॥ पौषस्य कृष्णसप्तम्यां [illegible] । स्वात्यां तुषारपातः स्यात् श्रावणे तत्र वर्षणम् ॥ प्रजा भवन्ति मुदिताः सर्वसस्यसमन्विताः ॥ पौषमासस्य कुहून्तं सप्त-म्यां वारिवर्षणम्। प्रावृट्काले तदा वृष्टिर्न स्याद्वारिवर्षणम् ॥

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ पौषशुक्ल पक्षः ।

४ जनवरी से १८ जनवरी १९८४ ई० तक । दक्षिणगोलः । दक्षिणायनम् । B

दि.मा. घं.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टँ.टा. स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगः	रा. मि.	अं. ता.	व. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	सं.अ. स्टँ.	ट.	सू.उ. स्टँ.	टा.	सू.अ. स्टँ.	टा.	र.क्रा.द.	क.	स्प.मध्याह्न का. स्टँ.टा. घ.	मि.	से.	साम्पा.का. घं.	मि.	से.	औदयिक स्प.सू. रा.	अं.	कं.	वि.
२६	१०	१	बु	२३	५३	दि.	१२	२०	उषा	५६	३	रा.	५	१२	व्या	२४	४८	दि.	४	४२	बव	१२	५३	बा.	४६	१२	वज्र	१४	४	१९	२६	१५	म.	६	४४	दि.	९	२९	६	२२	६	४७	५	१६	२२	५०	१२	२	३४	६	५०	१८	८	१९	१३	४२
२६	११	२	गु	१८	४५	,,	२	१७	श्र.	६०	०	,,	×	×	ह.	२५	४८	सा.	५	६	कौ	१८	४५	तै.	५१	२०	केतु	१५	५	२०	१	१६	म.						७	१७	६	४७	५	१९	२२	४४	१२	३	१	६	५४	१४	८	२०	१४	५४
२६	१३	३	शु	२४	२५	,,	४	३३	श्र.	२	३३	दि.	७	४८	व.	२७	२०	,,	५	४३	ग.	२४	२५	व.	५७	३०	धूम्र	१६	६	२१	२	१७	कुं.	३६	४	रा.	९	१३	८	११	६	४७	५	२०	२२	३७	१२	३	२८	६	५८	११	८	२१	१६	४
२६	१४	४	श.	३०	४०	रा.	७	३	ध.	९	४३	,,	१०	४०	सि.	२९	२०	रा.	६	३१	भ.	३०	४०	बव	६०		प्रवर्ध	१७	७	२२	३	१८	कुं.						९	३	६	४७	५	२१	२२	३०	१२	३	५५	७	[illegible]	७	८	२२	१७	१४
२६	१५	५	र.	३७	८	,,	९	३८	श.	१७	१३	,,	१	४०	व्य.	३१	३०	,,	७	२३	बव	२	५४	बा.	३७	८	रक्ष	१८	८	२३	४	१९	कुं.						१०	१	६	४७	५	२२	२२	२३	१२	४	२१	७	६	४	८	२३	१८	२४
२६	१७	६	चं.	४३	२५	,,	१२	९	पूभा	२४	३८	,,	४	३८	व.	३३	३३	,,	८	१२	कौ	१०	३०	तै.	४३	२५	मुशल	१९	९	२४	५	२०	मी.	७	४८	दि.	९	५४	१०	४४	६	४७	५	२२	२२	१५	१२	४	४६	७	१०	१	८	२४	१९	३४
२६	१९	७	मं.	४८	५५	,,	२	२२	उभा	३१	२८	रा.	७	२३	प.	३५	५	,,	८	५०	ग.	१६	१७	व.	४८	५५	सिद्धि	२०	१०	२५	६	२१	मी.						११	३६	६	४८	५	२३	२२	६	१२	५	११	७	१३	५७	८	२५	२०	४४
२६	२०	८	बु.	५३	१५	,,	४	६	रे.	३७	१८	,,	९	४३	शि.	३५	४८	,,	९	७	भ.	२१	१६	बव	५३	१५	उल्लास	२१	११	२६	७	२२	मे.	३७	१८	रा.	९	४३	१२	२८	६	४८	५	२४	२१	५८	१२	५	३६	७	१७	५४	८	२६	२१	५४
२६	२२	९	गु.	५५	५३	,,	५	९	अ.	४१	४०	,,	११	२८	सि.	३५	२३	,,	८	५७	बा.	२४	४८	कौ.	५५	५३	मानस	२२	१२	२७	८	२३	मे.						१	२२	६	४८	५	२४	२१	४९	१२	६	०	७	२१	५०	८	२७	२३	४
२६	२४	१०	शु.	५६	३५	,,	५	२६	भ.	४४	१०	,,	१२	२८	सा.	३३	३०	,,	८	१२	तै.	२६	२९	ग.	५६	३५	मुद्गर	२३	१३	२८	९	२४	वृ.	५९	२१	प्रा.	६	३६	२	१७	६	४८	५	२५	२१	३९	१२	६	२३	७	२५	४७	८	२८	२४	१२
२६	२५	११	श.	५५	१३	,,	४	५३	कृ.	४४	४३	,,	१२	४१	शु.	३०	५	,,	६	५०	व.	२६	९	भ.	५५	१३	केतु	२४	१४	२९	१०	२५	वृ.						३	११	६	४८	५	२६	२१	२९	१२	६	४५	७	२९	४३	८	२९	२५	२०
२६	२७	१२	र.	५१	५०	,,	३	३२	रो.	४३	१५	,,	१२	६	शु.	२५	०	दि.	४	४८	बव	२३	४७	बा.	५१	५०	धाता	२५	१५	१	११	२६	वृ.						४	२२	६	४८	५	२७	२१	१९	१२	७	७	७	३३	४०	९	०	२६	२५
२६	२९	१३	चं.	४६	३५	,,	१	२६	मृ.	३६	५८	,,	१०	४७	ब्र.	१८	२८	,,	२	११	कौ.	१६	२६	तै.	४६	३५	आनन्द	२६	१६	२	१२	२७	मि.	११	५०	दि.	११	३२	५	२७	६	४८	५	२७	२१	८	१२	७	२९	७	३७	३६	९	१	२७	३०
२६	३२	१४	मं.	३९	५०	,,	१०	४४	आ.	३५	८	,,	८	५१	ऐं.	१०	३३	,,	११	१	ग.	१३	२३	व.	३९	५०	चर	२७	१७	३	१३	२८	मि.						अ६	३०	६	४८	५	२८	२०	५६	१२	७	५०	७	४१	३३	९	२	२८	३५
२६	३४	१५	बु.	३२	०	,,	७	३५	पु.	२९	८	,,	६	२७	वै.	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	म.	६	२	बव	[illegible]	[illegible]	गद	२८	१८	४	१४	२९	क.	१५	४३	दि.	१	४	उ५	१९	६	४७	५	२९	२०	४५	१२	८	१०	७	४५	२९	९	३	२९	३९

नीचस्थोऽर्कः । ५४।४३ । चन्द्रदर्शनम् । मु० ४५ । फ. समर्घता । बुधोदयः पूर्वस्याम् २०।२३ ।
रबी उत्पानीं ४ । B हेमन्तर्तुः । राष्ट्रिय पौषः ।
भ० ५७।३३ (रा. ५।४३) उ० । सर्वार्थसिद्धि योगः २।३३ या० ।
भ० ३०।४० (रा. ७।३) या० । वैनायकी ४ ।
रक्ष योगः ।
मुशल योगः ।
भ० ४८।५५ (रा. २।२२) उ. । मार्गी बुधः ४६।३ । गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती । सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]
भ० २१।१६ (दि. ३।१८) या. । अन्नपूर्णा ८ । बुधाष्टमी । उत्तराषाढास्थर्कः १७।४० । स्वात्यां भौमः [illegible]
सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।४० या० । यायीजयदयोगः ४१।४० उ० ५५।५३ या० ।
मासान्तः ।
भ० २६।९ (सा० ५।१६) उ० । ५५।१३ (रा० ४।५३) या० । पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषाम् । मन्वादिः [illegible] A
करिदिनम् । संक्रान्तिजन्यपुण्यकालः १४।० या० । बं. माघः ।
प्रदोषः १३ व्रतम् । सोमप्रदोषः । सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।५८ उ० । अमृतसिद्धियोगः [illegible] या० ।
भ० ३९।५० (रा. १०।४४) उ० । A मकरेऽर्कः [illegible] (रा० ८।१४) मु. [illegible] समर्घता । P
भ० ६।२ (दि. ९।१२) या० । माघस्नानारंभः । P यायीजययोगः [illegible] उ० [illegible] या० ।

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः । तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः ॥

ति.	वा.	चं. रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेप्च्यून रा.	अं.	क.	वि.
१	बु.	८	२७	५८	३५	६	२	३७	५९	८	१०	४२	८	८	२	५७	६	७	९	५२	५८	६	२०	३३	३१	१	२०	४४	३८	७	१७	४०	२६	८	५	४९	५२
२	गु.	९	१०	८	४४	६	३	९	४६	८	९	३०	२२	८	३	१०	२८	७	११	५	२२	६	२०	३८	१६	१	२०	४१	२८	७	१७	४३	४३	८	५	५२	५
३	शु.	९	२२	१०	३४	६	३	४४	२५	८	८	४५	३९	८	३	२३	४९	७	१२	१७	५०	६	२०	४३	३	१	२०	३८	१७	७	१७	४६	५७	८	५	५४	१७
४	श.	१०	४	६	६	६	४	१२	५८	८	८	१	३९	८	३	३७	८	७	१३	३०	२१	६	२०	४७	४२	१	२०	३५	६	७	१७	५०	११	८	५	५६	३०
५	र.	१०	१५	१७	५०	६	४	४०	२४	८	७	२७	४६	८	३	५०	२६	७	१४	४२	५६	६	२०	५२	१६	१	२०	३१	५६	७	१७	५३	२५	८	५	५८	४२
६	चं.	१०	२७	४८	५५	६	५	१५	४१	८	७	३	५७	८	४	३	४१	७	१५	५५	३५	६	२०	५६	४१	१	२०	२८	४५	७	१७	५६	३२	८	६	०	५२
७	मं.	११	९	४३	१२	६	५	४६	५२	८	६	४९	५६	८	४	१६	५४	७	१७	८	१७	६	२१	१	११	१	२०	२५	३५	७	१७	५९	३६	८	६	३	२
८	बु.	११	२१	४५	२	६	६	१७	५४	८	६	४५	१२	८	४	३०	४	७	१८	२१	१	६	२१	५	३०	१	२०	२२	२३	७	१८	२	४६	८	६	५	११
९	गु.	०	३	५३	१२	६	६	४८	४९	८	६	४९	१५	८	४	४३	१३	७	१९	३३	४०	६	२१	९	४५	१	२०	१९	१२	७	१८	५	५३	८	६	७	२१
१०	शु.	०	१६	२०	३३	६	७	१९	३६	८	७	१	२२	८	४	५६	२०	७	२०	४६	४०	६	२१	१३	५६	१	२०	१६	२	७	१८	९	५३	८	६	९	२९
११	श.	०	२९	२३	३२	६	७	५०	२५	८	७	२०	५५	८	५	९	२५	७	२१	५९	३४	६	२१	१८	१	१	२०	१२	५१	७	१८	११	५३	८	६	११	३७
१२	र.	१	१२	४२	१७	६	८	२०	४६	८	७	४७	१३	८	५	२२	२६	७	२३	१३	३१	६	२१	२२	२	१	२०	९	४०	७	१८	१५	५२	८	६	१३	४४
१३	चं.	१	२६	२७	३६	६	८	५१	८	८	८	१९	३६	८	५	३५	२५	७	२४	२५	३०	६	२१	२५	५८	१	२०	६	२९	७	१८	१८	५१	८	६	१५	५०
१४	मं.	२	११	४०	३१	६	९	२१	२३	८	८	५७	३८	८	५	४८	२२	७	२५	३८	३२	६	२१	२९	४७	१	२०	३	१८	७	१८	२०	४३	८	६	१७	५५
१५	बु.	२	२४	१७	५४	६	९	५१	२०	८	९	४०	२८	८	६	१	१६	७	२६	५१	३७	६	२१	३३	३३	१	२०	०	७	७	१८	२३	३५	८	६	२०	०

पौष शुक्ल ८ बुधे अयनांशाः २३।२७।४६



पौष शुक्ल १५ बुधे अयनांशाः २३।२७।४७



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पूर्वस्याम् ।

	१ बु.	२ गु.	३ शु.	४ श.	५ र.	६ चं.	७ मं.	८ बु.	९ गु.	१० शु.	११ श.	रा.	१२ र.	१३ चं.	१४ मं.	१५ बु.
ध.	७ ३२	७ २८	७ २३	७ २०	७ १६	७ १२	७ ९	७ ५	७ ०	६ ५६	६ ५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	९ १८	९ १४	९ ९	९ ६	९ २	८ ५८	८ ५५	८ ५१	८ ४६	८ ४२	८ ३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	१० ४९	१० ४५	१० ४०	१० ३७	१० ३३	१० २९	१० २६	१० २२	१० १७	१० १३	१० ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	१२ १७	१२ १३	१२ ८	१२ ५	१२ १	११ ५७	११ ५४	११ ५०	११ ४५	११ ४१	११ ३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	१ ५५	१ ५१	१ ४६	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३२	१ २८	१ २३	१ १९	१ १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	३ ५१	३ ४७	३ ४२	३ ३९	३ ३५	३ ३१	३ २८	३ २४	३ १९	३ १५	३ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	६ ५	६ १	५ ५६	५ ५३	५ ४९	५ ४५	५ ४२	५ ३८	५ ३३	५ २९	५ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	८ २३	८ १९	८ १४	८ ११	८ ७	८ ३	८ ०	७ ५६	७ ५१	७ ४७	७ ४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सि.	१० ३८	१० ३४	१० २९	१० २६	१० २२	१० १८	१० १५	१० ११	१० ६	१० २	९ ५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	१२ ५२	१२ ४७	१२ ४२	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३१	१२ २८	१२ २४	१२ १९	१२ १५	१२ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	३ ८	३ ४	२ ५९	२ ५६	२ ५२	२ ४८	२ ४५	२ ४१	२ ३६	२ ३२	२ २८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	५ २६	५ २२	५ १७	५ १४	५ १०	५ ६	५ ३	४ ५९	४ ५४	४ ५०	४ ४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौषशुक्लचतुर्थ्यां तु विद्युद्दर्शनमुत्तमम् । तदा विद्युत्घनाच्छन्नं [illegible] ॥ पूर्वे [illegible] निरा [illegible] ।
[illegible] रिक्षेपो गर्जनं वा विद्युदादिर्घवर्षणम् ॥ यदि तत्र प्रजायन्ते तदा वृष्टिरनुत्तमा । [illegible] ॥
पौषे मासे तदा [illegible] कालेऽभ्रवर्षणम् । पौषे मासे [illegible] अदर्शनम् ॥ [illegible] तदा वृष्टिं [illegible] ।
[illegible] हिमवर्षणम् । यदा [illegible] प्राप्ति [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] वृष्टिकरा ॥ अथ कार्यविशेषे महत्वपूर्णं लग्नसारणीयम् । [illegible] O

[illegible] प्रथम- [illegible] । [illegible] अथ केतु कार्येषु जन्म [illegible] भवति [illegible] । [illegible] नगर- [illegible] । [illegible] जन्मचन्द्र- [illegible] वदति [illegible] विहाय ॥

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टँ.टा. घं. मि.	न.	घ. प.	स्टँ.टा. घं. मि.	यो.	घ. प.	स्टँ.टा. घं. मि.	क.	घ. प.	क.	घ. प.	योग	रा. मि.	अं. ता.	ब. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्र: रा.	घ. प.	स्टँ.टा. घं. मि.	च.उ. स्टँ.टा.	सू.उ. स्टँ.टा.	सू.अ. स्टँ.टा	र.क्रां.द. अं. क.	स्प.मध्याह्न का. स्टँ.टा. घं. मि. से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	औद. स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.
२६ ३६	१ गु.	२३ २५	दि. ४ ६	पु.	२२ २५	दि. ३ ४५	प्री.	४१ १८	रा. ११ २२	कौ.	२३ २५	तै.	४० ००	शुभ	२९	१९	५	१५	१	क.			६ ३४	६ ४७	५ ३०	२० ३३	१२ ८ २९	७ ४९ २६	९ ४ ३० ४३
२६ ३८	२ शु.	१४ ३३	,, १२ ३६	श्ले	१५ २५	,, १२ ५७	आ.	३१ ५	,, ७ १३	ग.	१४ ३३	व.	४० ९	मृत्यु	३०	२०	६	१६	२	सि.	१५ २५	दि. १२ ५७	७ ३८	६ ४७	५ ३१	२० २०	१२ ८ ४७	७ ५३ २३	९ ५ ३१ ४७
२६ ४०	३ श.	[illegible]	,, रा. [illegible]	म.	८ ३५	,, १० १२	सौ.	२१ ०	दि. ३ ११	म.	५ ५०	बव	[illegible]	पद्म	१	२१	७	१७	३	सिं.			८ ४१	६ ४७	५ ३१	२० ८	१२ ९ ५	७ ५७ १९	९ ६ ३२ ५०
२६ ४३	५ र.	५० ३३	,, ३ ०	पूफा.	[illegible]	,, रा. [illegible]	शो.	११ २८	,, ११ २२	कौ.	२३ ५९	तै.	५० ३३	छत्र	२	२२	८	१८	४	कं.	१६ [illegible]	दि. १ ११	९ ४९	६ ४७	५ ३२	१९ ५४	१२ ९ २१	८ १ १६	९ ७ ३३ ५२
२६ ४५	६ चं.	४४ ४३	,, १२ ४०	उ.	५३ १०	,, ४ ३	अ.	[illegible]	,, रा. [illegible]	ग.	१७ २७	चं.	४४ ४३	वज्र	३	२३	९	१९	५	कं.			१० ५१	६ ४७	५ ३३	१९ ४१	१२ ९ ३९	८ ५ १२	९ ८ ३४ ५४
२६ ४८	७ मं.	४० २३	,, १० ५५	चि.	५० ४८	,, ३ ५	धृ.	४८ ५५	,, २ २०	म.	१२ २१	बव	४० २३	ध्वांक्ष	४	२४	१०	२०	६	तु.	२१ ४७	दि. ३ २६	११ ५२	६ ४६	५ ३४	१९ २७	१२ ९ ५४	८ ९ ६	९ ९ ३५ ५५
२६ ५०	८ बु.	३७ ४०	,, ९ ५०	स्वा	५० ०	,, २ ४६	शू.	४३ ५३	,, १२ १९	वा.	८ ५०	कौ.	३७ ४०	धूम्र	५	२५	११	२१	७	तु.			१२ ५१	६ ४६	५ ३४	१९ १३	१२ १० ९	८ १३ ५	९ १० ३६ ५६
२६ ५३	९ गु.	३६ ३८	,, ९ २५	वि.	५० ४८	,, ३ ५	ग.	४० ८	,, १० ४६	तै.	६ ५७	ग.	३६ ३८	प्रवर्धं	६	२६	१२	२२	८	वृ.	३५ २८	रा. ८ ५७	१ ५०	६ ४६	५ ३५	१८ ५८	१२ १० २३	८ १७ २	९ ११ ३७ ५६
२६ ५६	१० शु.	३७ ८	,, ९ ३६	अनु	५३ ५	,, ३ ५९	वृ.	३७ ३५	,, ६ ४७	व.	६ ४२	भ.	३७ ८	रक्ष	७	२७	१३	२३	९	वृ.			२ ४९	६ ४५	५ ३६	१८ ४३	१२ १० ३७	८ २० ५८	९ १२ ३८ ५५
२६ ५८	११ श.	३९ ०	,, १० २१	ज्ये.	५६ ३८	,, ५ २४	ध्रु.	३६ ८	,, ९ १२	बव	७ ५४	वा.	३९ ०	मुशल	८	२८	१४	२४	१०	ध.	५६ ३८	रा. ५ २४	३ ४७	६ ४५	५ ३७	१८ २८	१२ १० ४९	८ २४ ५५	९ १३ ३९ ५३
२७ १	१२ र.	४२ ५	,, ११ ३५	मू.	६० ०	× × ×	व्या	३५ ३३	,, ८ ५८	कौ.	१० २८	तै.	४२ ५	सिद्धि	९	२९	१५	२५	११	ध.			४ ४२	६ ४५	५ ३७	१८ १२	१२ ११ १	८ २८ ५२	९ १४ ४० ५०
२७ ४	१३ चं.	४६ ८	,, १ ११	मू.	० १८	दि. ७ १५	ह.	३५ ४५	,, ९ २	गर	१४ १	व.	४६ ८	लुम्ब	१०	३०	१६	२६	१२	ध.			५ ३४	६ ४४	५ ३८	१७ ५६	१२ ११ १२	८ ३२ ४८	९ १५ ४१ ४७
२७ ७	१४ मं.	५० ५५	,, ३ ६	पूषा	६ ४८	,, ९ २७	व.	३६ ३०	,, ६ २०	भ.	१८ २७	श.	५० ५५	मित्र	११	३१	१७	२७	१३	म.	२३ १८	दि. ४ ३	६ ११	६ ४४	५ ३९	१७ ४०	१२ ११ २२	८ ३६ ४७	९ १६ ४२ ४४
२७ १०	३० बु.	५६ २०	,, ५ १६	उषा	२ ५८	,, ११ ५५	सि.	३७ ४५	,, ६ ५०	चं.	२३ ३६	ना	५६ २०	वज्र	१२	१	१८	२८	१४	म.			[illegible] १०	६ ४४	५ ४०	१७ २३	१२ ११ ३१	८ ४० ४१	९ १७ ४३ ४१

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ माघकृष्ण पक्षः।

१९ जनवरी से १ फरवरी १९८४ ई० तक। दक्षिण गोलः। उत्तरायणम्। शिशिरर्तुः। F

इष्टिः। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।२५ उ०। अमृतसिद्धि योगः २२।२५ या०। E राष्ट्रियमाघः।

भ० ४०।९ (रा. १०।५१) उ०। सायनकुम्भेऽर्कः ४९।४५। मूलेधनुषि च शुक्रः ३६।५५।

भ० ५।५० (दि. ९।७) या०। संकष्ट ४। गणेश ४। चं. उ घं. ८ मि. ४१। अभिजिद्गतोऽर्कः ७।८। M

सर्वार्थसिद्धि योगः २।२० उ. ५४।४५ या०। यायीजयद योगः २।२० उ० ५०।३३ या.।

म० ४४।४३ (रा. १२।४०) उ०। M पुनः मार्गगत्यापूर्वाषाढासु बुधः २।१३। स्थायी जयदयोगः ३।५० O

भ० १७।२१ (दि. ११।४२) या.। द्विपुष्करयोग ४०।२३ या०। स्थायीजयदयोगः ४०।२३ या.। श्रवणेऽर्कः २३।४०।

काल ८। अभिजिन्निर्गतोऽर्कः १६।१०। O उ. ८।३५ या.। राष्ट्रियमाघः।

सर्वार्थसिद्धि योगः ५०।४८ उ०। गणतंत्रदिवसः। व्य० प्र० ५४।४५।

भ० ६।४२ (दि. ९।२६) उ. ३७।८ (रा. ९।३६) या. व्य० नि० १०।५३।

षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषाम्।

सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्।

भ० ४६।८ (रा. ३।११) उ.। प्रदोषः १३ व्रतम्। सोमप्रदोषः।

भ० १८।२७ (दि. २।७) या.। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। पूर्वाषाढासु शुक्रः ३०।३३। स्थायीजयदयोगः ६।४८ या.।

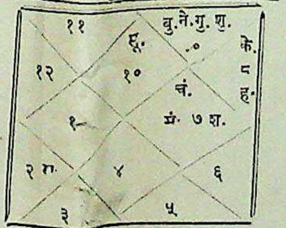
दर्शः। मौनी ३०। फरवरी २।

P गंगायमुनयोर्मध्ये [illegible] मिति। [illegible] कुर्वन्ति स्नानं प्रयागमकरमार्के। [illegible] [illegible]।

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि. २९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चन्द्रः रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्षल् रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून् रा. अं. क. वि.
१ गु.	३ १० १३ १८	६ १० २१ २७	८ १० २८ ७	८ ६ १४ ८	७ २८ ४ ४६	६ २१ ३७ १२	१ १० ५६ ५६	७ १८ २६ २७	८ ६ २२ ४
२ शु.	३ २५ १८ १४	६ १० ५१ १६	८ ११ १९ ३८	८ ६ २६ ५७	७ २९ १७ ५७	६ २१ ४० ४६	१ १० ५३ ४६	७ १८ २९ १८	८ ६ २४ ८
३ श.	४ १० २२ ४८	६ ११ २० ५५	८ १२ १४ ५१	८ ६ ३९ ४१	८ ० ३१ १०	६ २१ ४४ १५	१ १० ५० ३४	७ १८ ३१ २	८ ६ २६ ८
५ र.	४ २५ १७ ३६	६ ११ ५० २५	८ १३ १४ ७	८ ६ ५२ २४	८ १ ४४ २५	६ २१ ४७ ३१	१ १० ४७ २३	७ १८ ३४ ४५	८ ६ २८ ९
६ चं.	५ ९ ५५ ३	६ १२ १९ ४६	८ १४ १४ ४५	८ ७ ५ ४	८ २ ५७ ४४	६ २१ ५० ५७	१ १० ४४ १२	७ १८ ३७ ३९	८ ६ ३० ९
७ मं.	५ २४ १० २६	६ १२ ४८ ५८	८ १५ १८ २०	८ ७ १७ ४०	८ ४ ११ ४	६ २१ ५४ १०	१ १० ४१ १	७ १८ ४० १२	८ ६ ३२ १०
८ बु.	६ ८ २ ५	६ १३ १८ ०	८ १६ २५ २५	८ ७ ३० १५	८ ५ २४ २७	६ २१ ५७ १८	१ १० ३७ ५०	७ १८ ४२ ४७	८ ६ ३४ ७
९ गु.	६ २१ ३० ३१	६ १३ ४६ ५१	८ १७ ३४ १३	८ ७ ४२ ४३	८ ६ ३७ ५३	६ २२ ० २०	१ १० ३४ ३९	७ १८ ४५ २१	८ ६ ३६ ३
१० शु.	७ ४ ३७ ५९	६ १४ १५ ३२	८ १८ ४५ १	८ ७ ५५ १०	८ ७ ५१ २१	६ २२ ३ १६	१ १० ३१ २८	७ १८ ४७ ५६	८ ६ ३८ ०
११ श.	७ १७ २७ ३२	६ १४ ४४ २	८ १९ ५७ ४१	८ ८ ७ ३२	८ ९ ४ ५०	६ २२ ६ ६	१ १० २८ १६	७ १८ ५० २९	८ ६ ३९ ५५
१२ र.	८ ० २ २१	६ १५ १२ २१	८ २१ १२ ४	८ ८ १९ ५२	८ १० १८ २२	६ २२ ८ ५१	१ १० २५ ५	७ १८ ५२ ५४	८ ६ ४१ ४७
१३ चं.	८ १२ २५ ३९	६ १५ ४० २९	८ २२ २८ १	८ ८ ३२ ७	८ ११ ३१ ५५	६ २२ ११ ३०	१ १० २१ ५४	७ १८ ५५ १०	८ ६ ४३ ४०
१४ मं.	८ २४ ३९ ३८	६ १६ ८ २६	८ २३ ४५ २६	८ ८ ४४ १९	८ १२ ४५ २९	६ २२ १४ ४	१ १० १८ ४३	७ १८ ५७ ४४	८ ६ ४५ ३२
३० बु.	९ ६ ४६ २१	६ १६ ३६ ११	८ २५ ४ १३	८ ८ ५६ २७	८ १३ ५९ ७	६ २२ १६ ३२	१ १० १५ ३३	७ १९ ० ६	८ ६ ४७ ५४

माघ कृष्ण ८ बुध अयनांशाः २३।३७।४८



माघ कृष्ण ३० बुध अयनांशाः २३।३७।४०



गुरुः पूर्वस्याम्। ॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टँण्डर्ड टाइम)॥ शुक्रः पूर्वस्याम्

	१ गु.	२ शु.	३ श.	५ र.	६ चं.	७ मं.	८ बु.	९ गु.	१० शु.	११ श.	१२ र.	१३ चं.	१४ मं.	३० बु.
म.	८ १८	८ १४	८ १०	८ ६	८ ३	७ ५८	७ ५५	७ ५१	७ ४६	७ ४३	७ ३९	७ ३४	७ ३०	[illegible]
कुं.	९ ४९	९ ४५	९ ४१	९ ३७	९ ३४	९ २९	९ २६	९ २२	९ १७	९ १४	९ १०	९ ५	[illegible]	[illegible]
मी.	११ १७	११ १३	११ ९	११ ५	११ २	१० ५७	१० ५४	१० ५०	१० ४५	१० ४२	१० ३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	१२ ५५	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४३	१२ ४०	१२ ३५	१२ ३२	१२ २८	१२ २३	१२ २०	१२ १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	२ ५१	२ ४७	२ ४३	२ ३९	२ ३६	२ ३१	२ २८	२ २४	२ १९	२ १६	२ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	५ ५	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ५०	४ ४५	४ ४२	४ ३८	४ ३३	४ ३०	४ २६	४ २१	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
क.	७ २३	७ १९	७ १५	७ ११	७ ८	७ ३	७ ०	६ ५६	६ ५१	६ ४८	६ ४४	६ ३९	६ ३५	६ ३२
सिं.	९ ३८	९ ३४	९ ३०	९ २६	९ २३	९ १८	९ १५	९ ११	९ ६	९ ३	८ ५९	८ ५४	८ ५०	८ ४७
कं.	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ३९	११ ३६	११ ३१	११ २८	११ २४	११ १९	११ १६	११ १२	११ ७	११ ३	११ ०
तु.	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५३	१ ४८	१ ४५	१ ४१	१ ३६	१ ३३	१ २९	१ २४	१ २०	१ १७
वृ.	४ २६	४ २२	४ १८	४ १४	४ ११	४ ६	४ ३	३ ५९	३ ५४	३ ५१	३ ४७	३ ४२	३ ३८	३ ३५
ध.	६ ३२	६ २८	६ २४	६ २०	६ १७	६ १२	६ ९	६ ५	६ ०	५ ५७	५ ५३	५ ४८	५ ४४	५ ४१

आकाश दर्शन।

दि. २६।१।८४ चं. के. योग, चं. के से १ अं. ३६ क. उत्तर स्टँ. टा. मि. घं. २ मि. ११ पर।

दि. २७।१।८४ गु. बु. योग, गु. से बु. ० अं. ४१ क. उत्तर स्टँ. टा. दि. घं. ७ मि. १२ पर।

दि. २९।१।८४ गु. चं. यो. चं. से गु. १ अं. ४१ क. उत्तर स्टँ. टा. रा. घं. ९ मि. ४४ पर।

दि. ३०।१।८४ बु. चं. यो. च. से. बु. अं. २७ क. उत्तर स्टँ. टा. रा. घं. २ मि ४६ पर।

अथ माघस्नानम्—तत्र पौषस्य शुक्लैकादश्यां पौर्णमास्याममावास्यायां वा माघस्नानारम्भः। माघे द्वादशी पूर्णिमादौ समापनम्। यद्वा मकरसंक्रमणप्रभृतिकुम्भसंक्रमणपर्यन्तं स्नानं कार्यम्। अथ स्नानकालः अरुणोदयमारभ्य प्रातः कालावधिः 'उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं च मध्यमम्। सवितर्युदिते भूप! ततो हीनं प्रकीर्तितम्॥ माघमासे रटन्त्यापः किंचिदभ्युदिते रवौ। ब्रह्मघ्नं वा सुरापं वा कं पतन्तं पुनीमहे॥' अत्राधिकारिणः—"ब्रह्मचारी[] गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथ भिक्षुकः। बालवृद्धयुवानश्च नरनारीनपुंसकाः।" जलतारतम्येन फलम्—'तप्तेन वारिणा स्नानं यद्गृहे क्रियते नरैः। षडब्दफलदं तद्धि मकरस्थे दिवाकरे।" वाप्यादौ द्वादशाब्दफलम्, तडागे तद्द्विगुणम्, नद्यां तच्चतुर्गुणम्, गङ्गायां सहस्रगुणम्, P

मा घं. प.	ति. वा.	घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	न. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	यो. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगाः	रा. मि.	अं. ता.	व. ता.	फा. ता.	फ. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅ. टा. घ. मि.	च. अ. स्टॅ. टा.	सू. उ. स्टॅ. टा.	सू. अ. स्टॅ. टा.	र. क्रां. अं. क.	स. मध्याह्न का. स्टॅ. टा.	साम्पा. काल घं. मि. से.	औ. स्पष्ट सू. रा. अं. क. वि.
२७ १३	१ गु.	६० ०	× × ×	श्रव १९ ४३	दि. २ ३६	व्या ३९ २८	ग. १० ३०	कि २९ २५	बव ६० ०	केतु	१३	२	१९	२९	१५	कुं. ५३ २५	रा. ४ १	६ ४	६ ४३	५ ४०	१७ ६	१२ ११ ४०	८ ४४ ३८	९ १८ ४४ ३५
२७ १६	१ शु.	२ १८	दि. ७ ३८	ध. २६ ५३	सा. ५ २८	ह. ४१ २३	,, ११ १६	बव २ १८	बा. ३५ ३६	धाता	१४	३	२०	३०	१६	कुं.		६ ५७	६ ४३	५ ४१	१६ ४०	१२ ११ ४७	८ ४८ ३४	९ १९ ४५ २८
२७ १९	२ श.	८ ३८	" १० ९	शत ३४ २०	रा. ८ २६	वरि ४३ ३५	,, १२ ८	कौ. ८ ३८	तै. ४१ ५१	आनन्द	१५	४	२१	१	१७	कुं.		७ ४९	६ ४२	५ ४२	१६ ३२	१२ ११ ५४	८ ५२ ३१	९ २० ४६ २०
२७ २२	३ र.	१५ ३	,, १२ ४३	पूभा ४१ ४८	,, ११ २५	शि. ४५ ४३	" १२ ५९	गर १५ ३	व. ४८ १५	चर	१६	५	२२	२	१८	मी. २४ ५६	दि. ४ ४०	८ ४०	६ ४२	५ ४२	१६ २४	१२ १२ ०	८ ५६ २७	९ २१ ४७ ११
२७ २४	४ चं.	२१ २३	" ३ १४	उभा ४९ ५	,, २ १९	सि. ४७ ४३	" १ ४६	भ. २१ २३	वव ५४ २६	गद	१७	६	२३	३	१९	मी.		० २०	६ ४१	५ ४३	१५ ५८	१२ १२ ५	९ ० २४	० २२ ४८ ०
२७ २८	५ मं.	२७ १८	सा. ५ ३५	रेव. ५५ ४८	, ४ ५९	सा. ४६ १८	,, २ २३	वा. २७ १८	कौ. ५९ ५६	शुभ	१८	७	२४	४	२०	मे. ५५ ४८	रा. ४ ५९	१० २२	६ ४०	५ ४४	१५ ३७	१२ १२ १०	९ ४ २०	९ २३ ४८ ४७
२७ ३१	६ बु.	३२ २५	ग. ७ ३४	अ. ६० ०	× × ×	शु. ५० ०	,, २ ४०	तै. ३२ २५	ग. ६० ०	मृत्यु	१९	८	२५	५	२१	मे.		११ १२	६ ४०	५ ४५	१५ १९	१२ १२ १३	९ ८ १७	९ २४ ४९ ३४
२७ ३५	७ गु.	३५ ३५	" ९ १	अ. १ २८	दि. ७ १४	शु. ४० ४३	" २ ३२	गर ४ १६	व. ३५ ५५	मानस	२०	९	२६	६	२२	मे.		१२ ७	६ ३९	५ ४५	१५ ०	१२ १२ १६	९ १२ १३	९ २५ ५० १९
२७ ३८	८ शु.	३७ ५०	,, ९ ४७	म. ५ ४०	,, ८ ५५	ब्र. ४८ ०	,, १ ५१	भ. ७ ७	बव ३७ ५०	मुद्गर	२१	१०	२७	७	२३	वृ. २१ २६	दि. ३ १३	१ ४	६ ३९	५ ४६	१४ ४१	१२ १२ १८	९ १६ १०	९ २६ ५१ २
२७ ४१	९ श.	३७ ४८	" ९ ४५	कृ. ८ ५	,, ९ ५२	ऐं. ४४ ४८	,, १२ ३३	बा. ८ ४	कौ. ३७ ४८	केतु	२२	११	२८	८	२४	वृ.		२ ४	६ ३८	५ ४७	१४ २१	१२ १२ १९	९ २० ७	९ २७ ५१ ४३
२७ ४४	१० र.	३५ ३८	" ८ ५२	रो. ८ ३०	" १० १	वै. ३९ ५५	,, १० ३५	तै. ६ ५४	ग. ३५ ३८	धाता	२३	१२	२९	९	२५	मि. ३७ ५५	रा. ९ ४७	३ ६	६ ३७	५ ४७	१४ २	१२ १२ १९	९ २४ ३	९ २८ ५२ २२
२७ ४८	११ चं.	३१ २०	" ७ ९	मृ. ६ ५०	,, ९ २१	वि. ३३ २०	" ७ ५७	व. ३ ४४	भ. ३१/४८ २०/३०	आनन्द	२४	१३	३०	१०	२६	मि.		३ ६	६ ३७	५ ४८	१३ ४२	१२ १२ १८	९ २८ ०	९ २९ ५३ ०
२७ ५१	१२ मं.	२५ १३	दि. ४ ४१	आ. ४/४४ १/०८	,, रा. ७/५ ४४/४५	प्री. २० १८	दि. २ ४४	बव २५ १३	कौ. ५१ २३	चर	२५	१४	१	११	२७	क. ४४ ११	रा. १२ २०	४ ८	६ ३६	५ ४९	१३ २२	१२ १२ १७	९ ३१ ५६	१० ० ५३ ३६
२७ ५४	१३ बु.	१७ ३०	,, १ ३५	पू. ५१ १५	,, ३ ५	आ. १६ ३	,, १ ०	तै. १७ ३०	ग. ४३ ११	मातङ्ग	२६	१५	२	१२	२८	क.		अह ५	६ ३५	५ ४९	१३ २	१२ १२ १५	९ ३५ ५३	१० १ ५४ १२
२७ ५८	१४ गु.	८/४० ११/२३	,, प्रा. १०/६ २/११	श्ले. ४३ ४३	,, १२ ४	सौ. ५/४२ ४३/४	,, रा. ८/४ ४२/१०	व. ८ ३८	भ. ३२/४१ ४/१	अमृत	२७	१६	३	१३	२९	सि. ४३ ४३	रा. १२ ४	३५ १२	६ ३५	५ ५०	१२ ४१	१२ १२ १२	९ ३९ ४९	१० २ ५४ ४७

श्रीशुभ संवत् २०४० शके [illegible] शुक्ल पक्षः।

२ फरवरी से १६ फरवरी १९८४ ई० तक उत्तरायणम्। दक्षिणगोलः। शिशिरर्तुः G

इष्टिः। उत्तराषाढासु बुधः ८।३३। यायीजयद योगः १९।४३ उ०। G राष्ट्रियमाघः।

चन्द्रदर्शनम्। मु० १५। फ० महर्घता।

जमादिउल् अव्वल ५। मकरे बुधः ३४।२५।

भ० ४८।१५। (रा. २।०)। उ०। सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।४८। उ०। A बै० प्र० ४३।१० नि० ५३।१८।

भ० २१।२३ (दि. ३।१४) या०। वैनायकी ४। तिल ४। कुन्द ४। धनिष्ठाष्वर्कः ३१।३३।

वसन्त ५। सर्वार्थामृतसिद्धि योगो ५५।४८ उ०। दशलक्षण व्रतम् (जैन)। C योगो ६।५० या०।

विशाखयोः भौमः ३२।४३। B मु० ३०। फ० समता। सूर्योदयात् ६।५० या० सं. व. पु. क.। सर्वार्थसिद्धियोगः C

भ० ३५।५५ (रा. ९।१) उ०। रथ ७। मन्वादिः ७। अभिजिद्गतः बुधः १३।५३। सर्वार्थसिद्धियोगः १।२८ या०। A

भ० ७।७ (दि. ९।३०) या०। अन्नपूर्णा ८। भीष्म ८। स्थायीजयद योगः ५।४० उ०।

उराषाढासु शुक्रः १९।२८। श्रवणे बुधः २८।२५। सर्वामृतसिद्धि योगो ८।५ उ०। यायीजयदयोगः ८।५ उ०।

मासान्तः। अभिजिन्निर्गतः बुधः ३।५५।

भ० ३।४४ (दि. ८।७) उ० ३१।२० (रा. ७।१) या०। जया ११ व्रतं सर्वेषाम्। कुम्भेऽर्कः [illegible] B

प्रदोष १२ व्रतम्। भौम प्रदोषः। मकरे शुक्रः ५१।२५। बङ्ग फाल्गुनः। त्रिपुष्कर योगः [illegible]

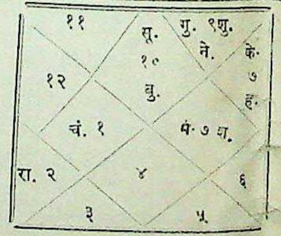
कल्पादिः १३।

भ० ८।३३ (दि. १०।२) उ० ३३।५४ (रा. ८।१) या०। माघस्नानसमाप्तिः। [illegible]

प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पस्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ गु.	६ १८ ४७ १८	६ १७ ३ ४४	८ २६ २४ २५	८ ० ८ ३०	८ १५ १२ ४३	६ २२ १८ ५३	११ ९ १२ २३	७ १९ २ २३	८ ६ ४६ १२
१ शु.	१० ० ४३ ४३	६ १७ ३१ ३	८ २७ ४५ ३०	८ ० २० २६	८ १६ २६ २१	६ २२ २१ ८	११ ९ ९ ११	७ १९ ४ ३८	८ ६ ५० ५८
२ श.	१० १२ ३६ ५३	६ १७ ५८ ११	८ २९ ७ ५३	८ ० ३२ २४	८ १७ ४० २	६ २२ २३ १८	११ ९ ६ १	७ १९ ६ ५१	८ ६ ५२ ४५
३ र.	१० २४ २० १७	६ १८ २५ ७	९ ० ३१ २२	८ ० ४४ १५	८ १८ ५३ ४३	६ २२ २५ २१	११ ९ २ ११	७ १९ ९ ६	८ ६ ५४ ३२
४ चं.	११ ६ १९ ५४	६ १८ ५१ ४८	९ १ ५५ ५३	८ ० ५६ २	८ २० ७ २६	६ २२ २७ १६	११ ८ ५९ ४१	७ १९ ११ १०	८ ६ ५६ १४
५ मं.	११ १८ १४ २२	६ १९ १८ १६	९ ३ २१ २५	८ १ ७ ४३	८ २१ २१ १०	६ २२ २९ ११	११ ८ ५६ ३१	७ १९ १३ १४	८ ६ ५७ ५५
६ बु.	० ० २५ ६	६ १९ ४४ ३२	९ ४ ४७ ५५	८ १ १९ २१	८ २२ ३४ ५४	६ २२ ३० ५६	११ ८ ५३ २०	७ १९ १६ १७	८ ६ ५९ ३७
७ गु.	० १२ २६ ४	६ २० १० ३३	९ ६ १५ २०	८ १ ३० ५४	८ २३ ४८ ४०	६ २२ ३२ ३६	११ ८ ५० १०	७ १९ १७ २१	८ ७ १ १८
८ शु.	० २४ ५१ १६	६ २० ३६ २०	९ ७ ४३ ३१	८ १ ४२ २२	८ २५ २ २०	६ २२ ३४ ९	११ ८ ४७ ०	७ १९ १९ १४	८ ७ २ ५४
९ श.	१ ७ ३७ ३३	६ २१ १ ५३	९ ९ १२ ५५	८ १ ५३ ४५	८ २६ १६ १४	६ २२ ३५ ३७	११ ८ ४३ ४८	७ १९ २१ ६	८ ७ ४ २९
१० र.	१ २० ४७ २९	६ २१ २७ १०	९ १० ४३ ४	८ २ ५ २	८ २७ ३० १	६ २२ ३६ ५७	११ ८ ४० ३८	७ १९ २२ ५८	८ ७ ७ ५
११ चं.	२ ४ २५ २९	६ २१ ५२ १३	९ १२ १४ ५	८ २ १६ १५	८ २८ ४३ ५१	६ २२ ३८ १२	११ ८ ३७ २७	७ १९ २४ ५१	८ ७ ७ ४०
१२ मं.	२ १८ २३ १९	६ २२ १७ २	९ १३ ४६ ०	८ २ २७ २४	८ २९ ५७ ४०	६ २२ ३९ २२	११ ८ ३४ १६	७ १९ २६ ३२	८ ७ ९ १०
१३ बु.	३ ३ ९ ५९	६ २२ ४१ ३४	९ १५ १८ ४७	८ २ ३८ २६	९ १ ११ ३७	६ २२ ४० २४	११ ८ ३१ ६	७ १९ २८ १४	८ ७ १० ३६
१४ गु.	३ १८ ० ५०	६ २३ ५ ५१	९ १६ ५२ २७	८ २ ४९ २३	९ २ २५ २२	६ २२ ४१ २१	११ ८ २७ ५५	७ १९ २९ ५०	८ ७ १२ ९

माघ शुक्ल ८ शुक्रे अयनांशाः २३।३७।५०



माघ शुक्ल १४ गुरौ अयनांशाः २३।३७।५२



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्न सारिणी (स्टॅण्डड टाइम) ॥ गुरुः पूर्वस्याम्।

रा.	१ गु.	१ शु.	२ श.	३ र.	४ च.	५ मं.	६ बु.	७ गु.	८ शु.	९ श.	१० र.	११ चं.		१२ मं.	१३ बु.	१४ गु.
म.	७ २४	७ १९	७ १५	७ ११	७ ७	७ ३	६ ५९	६ ५५	६ ५२	६ ४८	[illegible]	६ ४०	कुं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं.	८ ५५	८ ५०	८ ४६	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ ३०	८ २६	८ २३	८ १९	[illegible]	[illegible]	मी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	१० २३	१० १८	१० १४	१० १०	१० ६	१० २	९ ५८	९ ५४	९ ५१	९ ४७	[illegible]	[illegible]	मे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	१२ ०	११ ५६	११ ५२	११ ४८	११ ४४	११ ४०	११ ३६	११ ३२	११ २९	११ २५	[illegible]	[illegible]	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	१ ५७	१ ५२	१ ४८	१ ४४	१ ४०	१ ३६	१ ३२	१ २८	१ २५	१ २१	[illegible]	[illegible]	मि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	४ ११	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५४	३ ५०	३ ४६	३ ४२	३ ३९	३ ३५	३ ३०	[illegible]	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	[illegible]	रा.	रा.	रा.
क.	६ २६	६ २४	६ २०	६ १६	६ १२	६ ८	६ ४	६ ०	५ ५७	५ ५३	[illegible]	[illegible]	सिं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	८ ४४	८ ४०	८ ३५	८ ३१	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ १२	८ ८	[illegible]	[illegible]	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	१० ५७	१० ५२	१० ४८	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २५	१० २१	[illegible]	[illegible]	तु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	१ १४	१ ९	१ ५	१ १	१२ ५७	१२ ५३	१२ ४९	१२ ४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	३ ३२	३ २७	३ २३	३ १९	३ १५	३ ११	३ ७	३ ३	३ ०	२ ५६	[illegible]	[illegible]	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	५ ३८	५ ३३	५ २९	५ २५	५ २१	५ १७	५ १३	५ ९	५ ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघशुक्लद्वितीया च तृतीया भृगुसंयुता। यदा [illegible] तदा सस्याकुला मही। राजानस्तु सुखिनः प्रजानन्दन्ति नित्यशः॥ पञ्चमी [illegible] शुक्रार्किचन्द्रसंयुक्ता तदा तोयाकुला धरा॥ एते योगा यदा माघे न भवन्ति तदा भृशम्। [illegible] [illegible] माघमासे त्रयोदश्यां यदा [illegible] पृथ्वी [illegible] प्रजाः [illegible] माघमासे च संक्रान्ती यदा वर्षति [illegible] यदा पूर्णो तु R

आकाश दर्शन

[illegible]

R [illegible] माघमासे [illegible] वर्जिता। [illegible] सम्वत्सरे [illegible] च। [illegible] नारि- [illegible] पञ्चमी [illegible] विवर्जिता। [illegible] माघवे मासे [illegible] जायते॥ [illegible] तदा [illegible] मर्मी [illegible] तदा रौद्रगो सूर्य [illegible] न च वर्षति॥

श्री संवत् २०४० शके १९०५ फाल्गुन कृष्णपक्षः।

१७ फरवरी से २ मार्च सन् १९८४ ई० तक। शिशिरर्तुः। दक्षिणगोलः। उत्तरा-

३०

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	न. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	यो. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	क. घ. प.	क. घ. प.	योगाः	रा. मि.	अं. ता.	चं. सौ.	फा. ता.	क. ता.	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅ. टा. घं. मि.	च. उ. स्टॅ. टा.	सू. उ. स्टॅ. टा.	सू. अ. घं. मि.	र. क्रांद. अं. क.	स्पष्टमध्याह्न का. स्टॅ. टा.	साम्पा. का. घं. मि. से.	औदयिकस्प. सू. रा. अं. क. वि.
२८ १	१	शु.	४६ १३	रा. २ १५	म. ३५ ५३	रा. ८ ५५	अ. ४३ ४३	रा. १२ ३	बा. २४ ७	कौ. ४१ १३	काण	२८	१७	४	१४	१	सि.		६ २२	६ ३४	५ ५०	१२ २०	१२ १२ ९	९ ४३ ४६	१० ३ ५५ २०
२८ ५	२	श.	३० ४	" १० २५	पूफा. २८ ८	सा. ५ ४८	सु. ३२ ४८	" ७ ४०	तै. १४ २३	ग. ३० ४०	लुम्ब	२९	१८	५	१५	२	कं. ४१ १५	रा. [illegible] ३	७ ३०	६ ३३	५ ५१	१२ ०	१२ १२ ५	९ ४७ ४२	१० ४ ५५ ५०
२८ ८	३	र.	३० ५५	" ६ ५४	उफा. २१ ३	दि. २ ५७	धृ. २२ २५	दि. ३ ३०	व. ५ ११	भ. ५० ५५ / ५६ ५८	मित्र	३०	१९	६	१६	३	कं.		८ ३५	६ ३२	५ ५२	११ ३८	१२ १२ ०	९ ५१ ३९	१० ५ ५६ १८
२८ १२	४	चं.	२३ २०	दि. ३ ११	ह. १५ ५	" १२ ३३	शू. १३ ३	" ११ ४४	बा. २३ २०	कौ. ५० ५	वज्र	१	२०	७	१७	४	तु. ४२ ३८	रा. ११ ३४	९ ३९	६ ३१	५ ५२	११ १७	१२ ११ ५४	९ ५५ ३६	१० ६ ५६ ४४
२८ १५	५	मं.	१७ १२	" १ २५	चि. १० ३५	" १० ४५	ग. ४ ८ / ५० ४५	" ८ २६ / ५ ४५	तै. १७ १५	ग. ४४ ५५	ध्वांक्ष	२	२१	८	१८	५	तु.		१० ४२	६ ३१	५ ५३	१० ५६	१२ ११ ४८	९ ५९ ३२	१० ७ ५७ १०
२८ १९	६	बु.	१३ ५	" ११ ४४	स्वा. ७ ५५	" ६ ४०	ध्रु. ५२ ५०	" ३ ३८	व. १३ ५	भ. ४१ ४४	धूम्र	३	२२	९	१९	६	वृ. ५२ २३	रा. ३ २७	११ ४३	६ ३०	५ ५३	१० ३४	१२ ११ ४२	१० ३ २९	१० ८ ५७ ३६
२८ २२	७	गु.	१ ५३	" १० ५०	वि. ७ १३	" ९ २२	व्या. ४९ २५	" २ ११	बव १० ५३	बा. ४० ३३	प्रवर्ध	४	२३	१०	२०	७	वृ.		१२ ४३	६ २९	५ ५४	१० १२	१२ ११ ३४	१० ७ २५	१० ९ ५८ ०
२८ २६	८	शु.	१० ४३	" १० ४५	अनु. ८ २०	" ९ ५१	ह. ४७ १०	" २ २०	कौ. १० ४३	तै. ४१ २१	रक्ष	५	२४	११	२१	८	वृ.		१ ४१	६ २८	५ ५५	९ ५०	१२ ११ २६	१० ११ २२	१० १० ५८ २२
२८ ३०	९	श.	१२ २५	" ११ २५	ज्ये. ११ ३०	" ११ ३	व. ४६ २५	" १ १	ग. १२ २५	व. ४३ ५४	मुसल	६	२५	१२	२२	९	ध. ११ ३०	दि. ११ ३	२ ४३	६ २७	५ ५५	९ २८	१२ ११ १८	१० १५ १८	१० ११ ५८ ४१
२८ ३३	१०	र.	१५ ४३	" १२ ४३	मू. १६ ८	" १२ ५३	सि. ४६ ४५	" १ ८	भ. १५ ४३	बव ४७ ४९	सिद्धि	७	२६	१३	२३	१०	ध.		३ ३४	६ २६	५ ५६	९ ६	१२ ११ ९	१० १९ १५	१० १२ ५८ ५६
२८ ३७	११	च.	२० १०	" २ ३०	पूषा. २१ ५३	" ३ १४	व्य. ४७ ४८	" १ ३३	बा. २० १०	कौ. ५२ ४६	उत्पात	८	२७	१४	२४	११	म. ३८ २४	रा. ९ ४८	४ २०	६ २६	५ ५६	८ ४४	१२ १० ५९	१० २३ ११	१० १३ ५९ १०
२८ ४०	१२	मं.	२५ ३३	" ४ ३९	उषा. २८ ३०	सा. ५ ४९	व. ४१ २८	" २ १२	तै. २५ ३३	ग. ५८ ३०	मानस	९	२८	१५	२५	१२	म.		५ ४	६ २५	५ ५७	८ २१	१२ १० ४८	१० २७ ८	१० १४ ५९ २४
२८ ४४	१३	बु.	३१ ३३	रा. ७ १	श्र. ३४ ३८	रा. ८ २०	प. ५१ २८	" २ ५०	व. ३१ ३३	भ. ६० ०	छत्र	१०	२९	१६	२६	१३	म.		५ ४१	६ २४	५ ५७	७ ५९	१२ १० ३७	१० ३१ ५	१० १५ ५९ ३६
२८ ४८	१४	गु.	३७ ४५	" ९ ३०	ध. ४२ ५८	" ११ ३५	शि. ५३ ३८	" ३ ५१	भ. ४ ३८	श. ३७ ४५	श्रीवत्स	११	१	१७	२७	१४	कुं. ९ १७	दि. १० ७	उदे १९	६ २४	५ ५७	७ ३६	१२ १० २६	१० ३५ १	१० १७ ० ३
२८ ५१	३०	शु.	४४ ५	" १२ १	श. ५० २८	" २ ३४	सि. ५५ ४८	" ४ ४२	च. ७ ५५	ना. ४४ ५	सौम्य	१२	२	१८	२८	१५	कुं.		अ५ ४५	६ २३	५ ५८	७ १३	१२ १० १४	१० ३८ ५८	१० १८ ० १५

इष्टिः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।१३ उ.। [(उत्तरा)यणम्। राष्ट्रिय फाल्गुनः।

त्रिपुष्करयोगः २८।२ उ. २६।४० या.। [Bसर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। अमृतसिद्धियोगः २१।१३ उ.। यायीजययोगः २१।३ या.।

भ. ५।११ (दि. ८।३८) उ. ३०।५५ (रा. ६।५४) या.। संकष्ट ४। चं. उ. घं. ८ मि. ३५। सायनमीनेऽर्कः २५।३८।A

धनिष्ठासुबुधः १।३८। राष्ट्रियफाल्गुनः। [A शतभिषज्यर्कः ४३।१८। अभिजिद्गतः शुक्रः २८।२०। B

ध्वांक्षयोगः। व्यतीपातः प्र० २६।३३, नि० ४०।५०।

भ. १३।५ (दि. ११।४४) उ. ४१।४४ (रा. ११।१२) या.। श्रवणेशुक्रः ७।३३। अभिजिन्निर्गतः शुक्रः २२।५०।

काल ८। सर्वार्थसिद्धियोगः ७।१३ उ.। यायीजययोगः ७।१३ उ. १०।५३ या.।

वक्री शनिः ५२।४८। जानकी जन्मदिनम्। पूर्वाषाढासुगुरुः ३५।३०। कुम्भेबुधः ०।१०। यायीजययोगः C

भ. ४३।५४ (रा. १२।१) उ.। [C ८।२८ उ. १०।४३ या.।

भ. १५।४३ (दि. १२।४३) या.।

विजया ११ व्रतं सर्वेषाम्। शतभिषजि बुधः ३६।०।

त्रिपुष्करयोगः २५।३३ या.।

भ. ३१।३३ (रा. ७।१) उ.। प्रदोष १३ व्रतम्। महाशिवरात्रिः।

भ. ४।३८ (दि. ८।१५) या.। मार्च १।

दर्शः। द्वापरयुगादिः ३०।

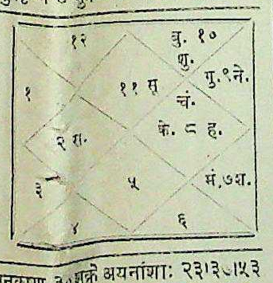
[H [illegible] । एवं दिनद्वये प्रदोषव्याप्त्यभावे निशीथव्याप्तिसत्त्वात् पूर्वैव। [illegible] निशीथव्याप्ती [illegible] निर्णयः। [illegible] तु निशीथेन निर्णय इति।

प्रातः स्टॅ. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः।

ति. वा.	चं. रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	ह. रा. अं. क. वि.	ने. रा. अं. क. वि.
१ शु.	४ ३ २७ ३४	६ २३ २९ ५१	९ १८ २६ ५८	८ १२ ० १४	९ ३ ३० १५	६ २२ ४२ १०	१ १८ २४ ४३	७ १९ ३१ २५	८ ७ १३ ३८
२ श.	४ १८ ५० ८	६ २३ ५३ ३५	९ २० २ २३	८ १२ ११ ०	९ ४ ५३ ९	६ २२ ४२ ५४	१ १८ २१ ३२	७ १९ ३३ ५	८ ७ १५ ३
३ र.	५ ४ ३ ३९	६ २४ १७ ३	९ २१ ३८ ४३	८ १२ २१ ४१	९ ६ ७ ३	६ २२ ४३ ३२	१ १८ १८ २२	७ १९ ३४ ३३	८ ७ १६ २५
४ चं.	५ १९ ० ३८	६ २४ ४० १२	९ २३ १५ ५६	८ १२ ३२ १६	९ ७ २० ५८	६ २२ ४४ ४	१ १८ १५ ११	७ १९ ३६ ४	८ ७ १७ ४८
५ मं.	६ ३ ३२ ४२	६ २५ ३ ५	९ २४ ५४ ४	८ १२ ४२ ४६	९ ८ ३४ ५५	६ २२ ४४ २९	१ १८ १२ ०	७ १९ ३७ ३३	८ ७ १९ ११
६ बु.	६ १७ ३६ ८	६ २५ २५ २९	९ २६ ३३ १०	८ १२ ५३ ९	९ ९ ४८ ५०	६ २२ ४४ ४८	१ १८ ८ ५०	७ १९ ३८ ५०	८ ७ २० २८
७ गु.	७ १ १० ५७	६ २५ ४७ ५४	९ २८ १३ ९	८ १३ ३ २६	९ ११ २ ४३	६ २२ ४५ १	१ १८ ५ ३९	७ १९ ४० ७	८ ७ २१ ४४
८ शु.	७ १४ १६ १६	६ २६ ९ ५०	९ २९ ५४ ८	८ १३ १३ ३७	९ १२ १६ ४७	६ २२ ४५ ८	१ १८ २ २९	७ १९ ४१ २४	८ ७ २३ १
९ श.	७ २७ ४ ५९	६ २६ ३१ २७	१० १ ३६ ४	८ १३ २३ ४३	९ १३ ३० ४६	६ २२ ४५ ९	१ १७ ५९ १८	७ १९ ४२ ४१	८ ७ २४ १०
१० र.	८ ९ ३२ ३४	६ २६ ५२ ४२	१० ३ १८ ५८	८ १३ ३३ ४१	९ १४ ४४ ४४	६ २२ ४५ २	१ १७ ५६ ६	७ १९ ४३ ४५	८ ७ २५ २७
११ च.	८ २१ ४६ २८	६ २७ १३ ३८	१० ५ २ ५३	८ १३ ४३ ३४	९ १५ ५८ ४१	६ २२ ४४ ५१	१ १७ ५२ ५६	७ १९ ४४ ५०	८ ७ २६ ३७
१२ मं.	९ ३ ५० ४१	६ २७ ३४ १३	१० ६ ४७ ४०	८ १३ ५३ १०	९ १७ १२ ३५	६ २२ ४४ ३३	१ १७ ४९ ४५	७ १९ ४५ ५५	८ ७ २७ ४६
१३ बु.	९ १५ ४८ ३०	६ २७ ५४ २५	१० ८ ३३ ४५	८ १४ २ ५७	९ १८ २६ ४६	६ २२ ४४ ९	१ १७ ४६ ३५	७ १९ ४७ ०	८ ७ २८ ५६
१४ गु.	९ २७ ४२ २५	६ २८ १४ १६	१० १० २० ४३	८ १४ १२ ३१	९ १९ ४० ४८	६ २२ ४३ ३८	१ १७ ४३ २४	७ १९ ४७ ५२	८ ७ २९ ५८
३० शु.	१० ९ ३४ ५१	६ २८ ३३ ४३	१० १२ ८ ४४	८ १४ २१ ५७	९ २० ५४ ४९	६ २२ ४३ १	१ १७ ४० १३	७ १९ ४८ ४५	८ ७ ३१ ०

फाल्गुनकृष्ण ८ शुक्रे अयनांशाः २३।३८।५२

वक्री शनिः ६।२२।४५।२७



फाल्गुनकृष्ण ३० शुक्रे अयनांशाः २३।३८।५३



गुरुः पूर्वस्याम्

॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥

शुक्रः पूर्वस्याम्

रा.	१ शु.	२ श.	३ र.	४ चं.	५ मं.	६ बु.	७ गु.	८ शु.	९ श.	१० र.	११ चं.	१२ मं.	१३ बु.	१४ गु.	३० शु.
कुं.	७ ५४	७ ५०	७ ४६	७ ४२	७ ३९	७ ३४	७ ३०	७ २६	७ २२	७ १८	७ १५	७ १०	[illegible]	७ ४	[illegible]
मी.	९ २२	९ १८	९ १४	९ १०	९ ७	९ २	८ ५८	८ ५४	८ ५०	८ ४६	८ ४३	८ ३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	११ ०	१० ५६	१० ५२	१० ४८	१० ४५	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २१	१० १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४१	१२ ३६	१२ ३२	१२ २८	१२ २४	१२ २०	१२ १७	१२ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	३ १०	३ ६	३ २	२ ५८	२ ५५	२ ५०	२ ४६	२ ४२	२ ३८	२ ३४	२ ३१	२ २६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	५ २८	५ २४	५ २०	५ १६	५ १३	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५२	४ ४९	४ ४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
सिं.	७ ४३	७ ३९	७ ३५	७ ३१	७ २८	७ २३	७ १९	७ १५	७ ११	७ ७	७ ४	६ ५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	९ ५६	९ ५२	९ ४८	९ ४४	९ ४१	९ ३६	९ ३२	९ २८	९ २४	९ २०	९ १७	९ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	१२ १३	१२ ९	१२ ५	१२ १	११ ५८	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	११ ३४	११ २९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	२ ३१	२ २७	२ २३	२ १९	२ १६	२ ११	२ ७	२ ३	१ ५९	१ ५५	१ ५२	१ ४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	४ ३७	४ ३३	४ २९	४ २५	४ २२	४ १७	४ १३	४ ९	४ ५	४ १	३ ५८	३ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	६ २३	६ १९	६ १५	६ ११	६ ८	६ ३	५ ५९	५ ५५	५ ५१	५ ४७	५ ४४	५ ३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मासशिवरात्री प्रहरपूजावैशिष्ट्यम्। ॐ नमः शिवाय श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आसनं इत्यादि कथयेत्वा पूर्वा पूजाकार्या। स्त्रीशूद्रश्चेत् ॐ नमः शिवाय इति पञ्चाक्षरस्थाने श्रीशिवाय नमः इति नमोन्तमन्त्रेण पूजयेत्। चतुर्षु यामेषु पूजाचतुष्टये विशेषः —तत्र प्रथमयामे- मूलमन्त्रान्ते श्री शिवाय आसनं इत्यादि श्रीशिवनाम्ना सर्वोपचारसमर्पणम्। द्वितीययामे शिवरात्रौ द्वितीययामपूजां करिष्ये इति सङ्कल्प्य-श्रीशंकराय आसनं इत्यादि श्रीशंकरनाम्ना। ततो महानिशि पूजां करिष्ये इति सङ्कल्प्य पूर्ववत्पूजा। तत तृतीययामपूजां करिष्ये इत्युक्त्वा श्रीमहेश्वराय आसनं इत्यादि श्रीमहेश्वरनाम्ना। एवमेवG

आकाश दर्शन

ता. [illegible] मं. च. यो., मं. से चं. [illegible] अं. १६ क. उत्तर, स्टॅ. टा. रा. घं. [illegible] मि. [illegible] पर।

ता. [illegible] श. चं. यो., चं. से श. [illegible] अं. [illegible] क. उत्तर, स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. २५ पर।

ता. [illegible] गु. चं. योग, चं. से गु. [illegible] अं. [illegible] क. उत्तर, स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. [illegible] पर।

ता. [illegible] शु. चं. यो. चं. से शु. २ अं. १६ क. उत्तर, स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. २ पर।

ता. ३।२।८४ बु. चं. यो. चं. से बु. ३ अं. १० क. उत्तर, स्टॅ. टा. दि. घं. ८ मि. १८ पर।

[G चतुर्थयामे श्रीरुद्राय आसनं इत्यादि श्रीरुद्रनाम्ना। प्रतियामं-नैवेद्यम्-धूपदीपा-र्घ्योदकगुडोदकाभिषेकाः कार्याः।

तन्निर्णयस्तु चतुर्दश्याः प्रदोष-निशीथोभयव्याप्त्यैव। यदा चतुर्दशी-पूर्वेद्युर्निशीथादूर्ध्वं प्रवृत्ता परेद्युश्च निशीथादर्वागेव समाप्ता तदा परेद्यु-H

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	क	घ.	प.	क.	घ.	प.
२८	५१	१	शा.	५०	२०	रा.	२	३०	पूर्वा.	५७	५०	रा.	५	३०	सा.	५७	५८	रा.	४	३३	किं.	७	१४	बव	५०	२०
२८	५९	२	र.	५६	२०	"	४	५३	उ.भा.	६०	०	×	×	×	शु.	५९	५३	प्रा.	६	१८	बा.	२२	२२	कौ.	५६	२०
२९	२	३	चं.	६०	०	×	×	×	उ.भा.	५	०	दि.	८	२०	शु.	६०	०	×	×	×	तै.	२९	१३	ग.	६०	०
२९	६	३	मं.	१	५८	दि.	७	६	रे.	११	४३	"	११	०	शु.	१	३३	दि.	६	५६	ग.	१	५८	व.	३१	३३
२९	१०	४	बु.	६	५३	"	९	३	अ.	१७	४३	,,	१	२३	ब्र.	२	४०	,,	७	२२	भ.	६	५३	बव	३१	०
२९	१४	५	गु.	१०	४८	,,	१०	३६	भ.	२२	४८	,,	३	२४	ऐं.	३	५	,,	७	३१	बा.	१०	४८	कौ.	४२	१८
२९	१७	६	शु.	१३	२५	"	११	३८	कृ.	२६	३०	,,	४	५२	वै.	२	३३	,,	७	१७	तै.	१३	२५	ग.	४४	१०
२९	२१	७	श.	१४	२८	,,	१२	२	रो.	२८	४०	सा.	५	४३	वि.	[illegible]	[illegible]	प्रा./रा.	[illegible]	[illegible]	व.	१४	२८	भ.	४४	१७
२९	२५	८	र.	१३	३८	,,	११	४२	मृग.	२९	०	,,	५	५०	आ.	५३	३	,,	३	२९	बव	१३	३८	बा.	४२	३१
२९	२८	९	चं.	१०	५५	,,	१०	३५	आर्द्रा.	२७	२१	दि.	५	११	सौ.	४६	५५	,,	१२	५९	कौ.	१०	५५	तै.	[illegible]	[illegible]
२९	३२	१०	मं.	[illegible]	[illegible]	,,/प्रा.	[illegible]	[illegible]	पुन.	२४	०	,,	३	४८	शो.	३०	१८	,,	९	१५	ग.	६	१५	व.	[illegible]	[illegible]
२९	३६	१२	बु.	५२	०	रा.	२	५९	पु.	१८	५१	,,	१	४५	अ.	३०	२५	सा.	६	२१	बव	२६	४	बा.	५२	०
२९	४०	१३	गु.	४३	५	,,	११	२४	श्ले.	१२	३३	,	११	११	सु.	२०	३०	दि.	२	२२	कौ.	१७	३१	तै.	४३	५
२९	४३	१४	शु.	३३	३३	,,	७	३४	म.	[illegible]	[illegible]	दि./रा.	[illegible]	[illegible]	धृ.	[illegible]	[illegible]	,,/प्रा.	[illegible]	[illegible]	ग.	८	२२	व.	[illegible]	[illegible]
२९	४७	१५	श.	२३	५०	दि.	३	४०	पू.फा.	४९	५०	,,	२	४	ग.	४८	५	रा.	१	२२	बव	२३	५०	बा.	४९	४

योगा	रा.ता.	अं.ता.	वं.ता.	फा.ता.	फ.ता.	चन्द्रः रा.	घ.	प.	स्टँ.टा.	घं.	मि.	चं.अ. स्टँ.टा.		सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	र.क्रा.द घं.	प.	स्प. मध्याह्न का स्टँ.टा.			साम्पा. काल घं.	मि.	से.	औद. स्प. सू रा.	अं.	क.	वि.
कालदण्ड	१३	३	१९	२९	१६	मी.	४०	५९	रा.	१०	४६	६	३६	६	२२	५	५०	५	५०	१२	१०	२	१०	४२	५४	१०	१९	०	२५
सुस्थिर	१४	४	२०	३०	१७	मी.						७	२६	६	२१	५	५९	६	२७	१२	९	४९	१०	४६	५१	१०	२०	०	३२
गद	१५	५	२१	१	१८	मी.						८	१६	६	२०	६	०	६	४	१२	९	३६	१०	५०	४७	१०	२१	०	२६
शुभ	१६	६	२२	२	१९	मे.	११	४३	दि.	११	०	९	८	६	१९	६	०	५	४१	१२	९	२२	१०	५४	४४	१०	२२	०	३८
मृत्यु	१७	७	२३	३	२०	मे.						१०	१	६	१८	६	१	५	१७	१२	९	८	१०	५८	४०	१०	२३	०	३९
पद्म	१८	८	२४	४	२१	वृ.	३८	५२	रा.	९	५०	१०	५६	६	१७	६	१	४	५४	१२	८	५३	११	२	३७	१०	२४	०	३८
छत्र	१९	९	२५	५	२२	वृ.						११	५४	६	१६	६	२	४	३०	१२	८	३८	११	६	३३	१०	२५	०	३५
श्रीवत्स	२०	१०	२६	६	२३	मि.	५०	४	प्रा.	५	५३	१२	५३	६	१५	६	२	४	७	१२	८	२३	११	१०	३०	१०	२६	०	३०
सौम्य	२१	११	२७	७	२४	मि.						१	५४	६	१४	६	३	३	४३	१२	८	७	११	१४	२६	१०	२७	०	२२
कालदण्ड	२२	१२	२८	८	२५	मि.						२	५४	६	१३	६	३	३	२०	१२	७	५१	११	१८	२३	१०	२८	०	१३
सुस्थिर	२३	१३	२९	९	२६	क.	१०	२	दि.	१०	१३	३	४५	६	१२	६	४	२	५६	१२	७	३४	११	२२	२०	१०	२९	०	३
मातङ्ग	२४	१४	३०	१०	२७	क.						४	४१	६	११	६	४	२	३२	१२	७	१७	११	२६	१६	१०	२९	५९	५०
अमृत	२५	१५	१	११	२८	सि.	१२	३३	दि.	११	११	५	२८	६	१०	६	४	२	९	१२	७	०	११	३०	१३	११	०	५९	३४
काण	२६	१६	२	१२	२९	सि.						अ६	११	६	९	६	५	१	४५	१२	६	४३	११	३४	९	११	१	५९	१५
उत्पात	२७	१७	३	१३	३०	कं.	१०	३६	दि.	१०	२२	उ६	१२	६	८	६	५	१	२१	१२	६	२६	११	३८	६	११	२	५८	५३

श्री संवत् २०४०शके१९०५ फाल्गुनशुक्लपक्षः।

इष्टिः। धनिष्ठासु शुक्रः ३६।२०। त्रिपुष्करयोगः ५०।२० उ. ५७।५० या.। [A [illegible] फाल्गुनः।

चन्द्रदर्शनम्। मु. ४५। फ. समर्घता। पूर्वभाद्रपदास्वर्कः ५९।२८। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्।

जमादिउस्सानी ६। यायीजयदयोगः यावद्दिनम्। वैधृतिः प्र० ३।२३, वै नि. २५।३०।

भ. ३४।३३ (रा. ८।८) उ.। वैनायकी ४। वृश्चिके भौमः ४०।३५। पूर्वभाद्रपदासु बुधः १।१२। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]।

भ. ६।५३ (दि. ६।३) या। अथवेडनेसडे।

यायीजयदयोगः १०।४८ या.।

कुम्भे शुक्रः २३।२८।

भ. १४।२८ (दि. १२।२) उ. ४४।०७ (रा. ११।५८ या.)। सर्वार्थामृतसिद्धियोगो २८।४० या.। यायीजयदयोगः [illegible] या.।

अन्नपूर्णा ८। मीने बुधः २५।३३। [E दाह ४६।७ (रा. १२।३६) उ. ४९।७ (रा. १।४८) या.। [illegible] १५।

कालदण्डयोगः। [B पद्मासु बुधः ७।२३।

भ. ३३।१५ (रा. ७।२०) उ.। ५९।१० (प्रा. ६।८) या.। आमलकी ११ व्रतं स्मार्तानाम्। [illegible]

आमलकी ११ व्रतं वैष्णवानाम्। मीनेऽर्कः ०।१० (प्रा. ५।२५) मु. ३० फ. समता। [illegible] C

प्रदोष १३ व्रतम्। वङ्कचैत्रः। यायीजयदयोगः २२।३३ या.। [C पा. सं० बु० का०। शतभिषायां शुक्रः [illegible]।

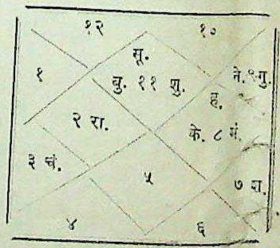
भ. २३।२३ (रा. ७।३४) उ. ५८।४१ (रा. ५।३०) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible] D

मन्वादिः १५। उत्तरभाद्रपदास्वर्कः २१।१२। यायीजयदयोगः २३।२० या.। [D २३।२२ या.। [illegible]होलिका E

प्रातः स्टँ. टा. घं. ५ मि.२९ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

ति.	वा.	चन्द्रः रा.	अं.	क.	वि.	मं. रा.	अं.	क.	वि.	बु. रा.	अं.	क.	वि.	गु. रा.	अं.	क.	वि.	शु. रा.	अं.	क.	वि.	श. रा.	अं.	क.	वि.	रा. रा.	अं.	क.	वि.	हर्शल रा.	अं.	क.	वि.	नेपच्यून रा.	अं.	क.	वि.
१	शा.	१०	२१	२६	५०	६	२८	५२	४७	१०	१३	५७	४६	८	१४	३१	१६	९	२२	८	५१	६	२२	४२	१८	१	१७	३७	३	७	१९	४९	३७	८	७	३२	२
२	र.	११	३	१९	४५	६	२९	११	२८	१०	१५	४७	४२	८	१४	४०	२७	९	२३	२२	५३	६	२२	४१	२९	१	१७	३३	५२	७	१९	५०	२९	८	७	३३	४
३	च.	११	१५	१४	५८	६	२९	२९	४४	१०	१७	३९	०	८	१४	४९	३१	९	२४	३६	५५	६	२२	४०	३४	१	१७	३०	४२	७	१९	५१	८	८	७	३३	५०
३	मं.	११	२७	१४	६	६	२९	४७	३६	१०	१९	३१	१०	८	१४	५८	२८	९	२५	५०	५७	६	२२	३९	३३	१	१७	२७	३१	७	१९	५१	४८	८	७	३४	५३
४	बु.	०	९	१९	१९	७	०	५	२	१०	२१	२४	२१	८	१५	७	१९	९	२७	५	०	६	२२	३८	२६	१	१७	२४	२०	७	१९	५२	२७	८	७	३५	४८
५	गु.	०	२१	३३	३०	७	०	२२	२	१०	२३	१८	२८	८	१५	१६	१	९	२८	१९	२	६	२२	३७	११	१	१७	२१	१०	७	१९	५३	६	८	७	३६	४३
६	शु.	१	४	०	१०	७	०	३८	३५	१०	२५	१३	३३	८	१५	२४	३५	९	२९	३३	३	६	२२	३५	५२	१	१७	१७	५८	७	१९	५३	३२	८	७	३७	३०
७	श.	१	१६	४३	२२	७	०	५४	४३	१०	२७	९	३०	८	१५	३३	३	१०	०	४७	५	६	२२	३४	२८	१	१७	१४	४८	७	१९	५३	५८	८	७	३८	१७
८	र.	१	२९	४७	२३	७	१	१०	२३	१०	२९	६	१८	८	१५	४१	२२	१०	२	१	७	६	२२	३२	५७	१	१७	११	३७	७	१९	५४	२५	८	७	३९	४
९	च.	२	१३	१२	४	७	१	२५	३५	११	१	३	४८	८	१५	४९	३३	१०	३	१५	९	६	२२	३१	२०	१	१७	८	२६	७	१९	५४	५१	८	७	३९	५१
१०	मं.	२	२७	११	१७	७	१	४०	१८	११	३	१	५५	८	१५	५७	३७	१०	४	२९	११	६	२२	२९	३८	१	१७	५	१६	७	१९	५५	५	८	७	४०	३०
१२	बु.	३	११	३६	९	७	१	५४	३३	११	५	०	३१	८	१६	५	३४	१०	५	४३	१३	६	२२	२७	५०	१	१७	२	५	७	१९	५५	१८	८	७	४१	०
१३	गु.	३	२६	२५	३६	७	२	८	१८	११	६	५९	२८	८	१६	१३	२१	१०	६	५७	१५	६	२२	२५	५७	१	१६	५८	५४	७	१९	५५	३१	८	७	४१	४८
१४	शु.	४	११	२४	२०	७	२	२१	२९	११	८	५८	२९	८	१६	२०	५९	१०	८	११	१५	६	२२	२३	५७	१	१६	५५	४३	७	१९	५५	४५	८	७	४२	२७
१५	शा.	४	२६	५२	४८	७	२	३४	१६	११	१०	५७	२५	८	१६	२८	३०	१०	९	२५	१७	६	२२	२१	५३	१	१६	५२	३२	७	१९	५५	५९	८	७	४२	५६

फाल्गुन शुक्ल ८ रवौ अयनांशाः २३।२७।५४



फाल्गुनशुक्ल१५ शनौ अयनांशाः २३।२७।५५



गुरुः पूर्वस्याम् ॥ दैनिक लग्नसारिणी ॥ (स्टॅंडर्ड टाइम) शुक्रः पूर्वस्याम्।

रा.	१ श.	२ र.	३ च.	३ मं.	४ बु.	५ गु.	६ शु.	७ श.	८ र.	९ च.	१० मं.	१२ बु.	रा.	१३ गु.	१४ शु.	१५ श.
कुं.	६ ५६	६ ५२	६ ४८	६ ४४	६ ४०	६ ३६	६ ३२	६ २९	६ २५	६ २०	६ १७	६ १३	मी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी.	८ २४	८ २०	८ १६	८ १२	८ ८	८ ४	८ ०	७ ५६	७ ५२	७ ४८	७ ४५	७ ४१	मे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	१० २	९ ५८	९ ५४	९ ५०	९ ४६	९ ४२	९ ३८	९ ३५	९ ३०	९ २६	९ २२	९ १९	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	११ ५८	११ ५४	११ ५०	११ ४६	११ ४२	११ ३८	११ ३४	११ ३१	११ २६	११ २२	११ १९	११ १५	मि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	२ १२	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५२	१ ४८	१ ४५	१ ४०	१ ३६	१ ३३	१ २९	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	४ ३०	४ २६	४ २२	४ १८	४ १४	४ १०	४ ६	४ २	३ ५८	३ ५४	३ ५१	३ ४७	सिं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	६ ४५	६ ४१	६ ३७	६ ३३	६ २९	६ २५	६ २१	६ १८	६ १३	६ ९	६ ६	६ २	कं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं.	८ ५८	८ ५४	८ ५०	८ ४६	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ ३१	८ २६	८ २२	८ १९	८ १५	तु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु.	११ १५	११ ११	११ ७	११ ३	१० ५९	१० ५५	१० ५१	१० ४८	१० ४३	१० ३९	१० ३६	१० ३२	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	१ ३३	१ २९	१ २५	१ २१	१ १७	१ १३	१ ९	१ ६	१ १	१२ ५७	१२ ५४	१२ ५०	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध.	३ ३९	३ ३५	३ ३१	३ २७	३ २३	३ १९	३ १५	३ १२	३ ७	३ ३	३ ०	२ ५६	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म.	५ २५	५ २१	५ १७	५ १३	५ ९	५ ५	५ १	४ ५८	४ ५३	४ ४९	४ ४६	४ ४२	कुं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश दर्शन

[illegible]

अथ फाल्गुनपौर्णमास्यां होलिका—सा च सायाह्नव्यापिनी ग्राह्या। सायाह्ने होलिका कुर्यात् पूर्वाह्णे [illegible]। इति वचनादिति निर्णयामृते उक्तम्। ज्योतिर्निबन्धे तु 'प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा। संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा [illegible]म्। प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा। तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे॥ इति [illegible] [illegible]। [illegible] च 'तस्यां निशागमे पार्थ संरक्ष्याः शिशवो गृहे। गोमयेनोपलिप्ते च सचतुष्के गृहाङ्गणे॥' [illegible] पूर्वाह्णे [illegible] 'भावना [illegible] [illegible]। पूर्वविद्धैव कर्तव्या, [illegible]

निरयणलग्नसारिणी

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	स्टॅं.टा. घं.मि.	न.घ.प.	स्टॅं.टा. घं.मि.	यो.घ.प.	घं.मि.	क.घ.प.	क.घ.प.	योगः	रा.अं. बं. फा. फ. (मि. ता. ता. ता. ता.)	चन्द्रः रा. घ. प.	स्टॅं.टा. घं.मि.	च.उ. स्टॅं.टा.	सू.उ. स्टॅं.टा.	सू.अ. स्टॅं.टा.	सू.क्रांउ. अं.क.	स्प.मध्याह्न का. स्टॅं.ट.	साम्पा.का. घं.मि.से.	औदयिकस्पष्टसूर्यः रा.अं.क.वि.
०९ ५१	१	र.	१४ २५	दि. ११ ५३	ह. ४२ ४५	रा. ११ १३	वृ. ३७ ४३	रा. ९ १२	कौ. १४ २५	तै. ४० ०	मानस	२८ १८ ४ १४ १	कुं.		७ १८	६ ७	६ ६	द. ५८	१२ ६ ०	११ ४२ १	११ ३ ५८ २९
२९ ५५	२	चं.	५ ४० / ५२ ३८	,, ८ २६	चि. ३६ ४५	,, ८ ४८	ध्रु. २८ १०	दि. ५ २२	ग. ५ ५०	व. ३१/५८ ४८/२८	मुद्गर	२९ १९ ५ १५ २	तु. ९ ३७	दि. ९ ४५	८ २३	६ ६	६ ६	३४	१२ ५ ५१	११ ४३ ५८	११ ४ ५८ ५
२९ ५८	४	मं.	५२ ४१	,, ३ १	स्वा. ३२ १३	,, ६ ५८	व्या. १९ ४८	” २ ०	बव २५ २३	वा. ५२ ४५	केतु	३० २० ६ १६ ३	तु.		९ २७	६ ५	६ ७	० १०	१२ ५ ३३	११ ४६ ५४	११ ५ ५७ ३९
३० २	५	बु.	४८ ५८	,, १ ३९	वि. २० ३०	सा. ५ ५२	ह. १२ ५०	,, ११ १२	कौ. २१ ३७	तै. ४८ ५८	धाता	१ २१ ७ १७ ४	वृ. १४ ११	दि. ११ ५६	१० ३०	६ ४	६ ७	उ० १३	१२ ५ १५	११ ५३ ५१	११ ६ ५७ १२
३० ६	६	गु.	४७ १५	,, १२ ५७	अनु. २८ ४८	दि. ५ ३४	व. ७ २८	,, ९ २	ग. १७ ५१	व. ४७ १५	आनन्द	२ २२ ८ १८ ५	वृ.		११ ३२	६ ३	६ ८	० ३७	१२ ४ ५७	११ ५७ ४८	११ ७ ५६ ४२
३० १०	७	शु.	४७ ४०	,, १ ६	ज्ये. ३० ३	सा. ६ ३	सि. ३ ५०	,, ७ ३४	भ. १७ १३	बव ४७ ४०	चर	३ २३ ९ १९ ६	ध. ३० ३	सा. ६ ३	१२ ३२	६ २	६ ८	१ १	१२ ४ ३९	१२ १ ४४	११ ८ ५६ ९
३० १३	८	श.	५० ३	,, २ २	मू. ३३ ३०	रा. ७ २५	व्य. १ ५०	,, ६ ४५	बा. १८ ३८	कौ. ५० ३	गद	४ २४ १० २० ७	ध.		१ २७	६ १	६ ९	१ २४	१२ ४ २१	१२ ५ ४१	११ ९ ५५ ३५
३० १७	९	र.	५४ ३	,, ३ ३७	पूषा. ३८ ३०	,, ९ २४	व. १ १८	,, ६ ३१	तै. २१ ५२	ग. ५४ ३	शुभ	५ २५ ११ २१ ८	म. ५५ २	रा. ४ १	२ १८	६ ०	६ ९	१ ४८	१२ ४ ३	१२ ९ ३७	११ १० [illegible] १
३० २१	१०	चं.	५९ १८	प्रा. ५ ४१	उषा. ४४ ५०	,, ११ ५४	प. १ ५८	,, ६ ४५	व. २६ ३३	भ. ५६ १८	मृत्यु	६ २६ १२ २२ ९	म.		३ ३	५ ५८	६ ९	२ ११	१२ ३ ४५	१२ १३ ३४	११ ११ ५४ २४
३० २४	११	मं.	६० ०	× × ×	श्र. ५१ ५८	” २ ४४	शि. ३ ३०	,, ७ २१	बव ३२ १५	बा. ६० ०	लुम्ब	७ २७ १३ २३ १०	म.		३ ४४	५ ५७	६ १०	२ ३५	१२ ३ २६	१२ १७ ३०	११ १२ ५३ ४४
३० २८	११	बु.	५ २०	दि. ८ ४	ध. ५९ २८	प्रा. ५ ४३	सि. ५ ३५	,, ८ १०	बा. ५ २०	कौ. ३८ ३०	मित्र	८ २८ १४ २४ ११	कुं. २५ ४१	दि. ४ १२	४ २०	५ ५६	६ १०	२ ५८	१२ ३ ८	१२ २१ २७	११ १३ ५३ २
३० ३२	१२	गु.	११ ४०	,, १० ३५	श. ६० ०	× × ×	सा. ७ ५८	,, ९ ६	तै. ११ ४०	ग. ४४ ५१	वज्र	९ २९ १५ २५ १२	कुं.		४ ५४	५ ५५	६ ११	३ २२	१२ २ ५०	१२ २५ २४	११ १४ ५२ २०
३० ३६	१३	शु.	१७ ५८	,, १ ५	श. ७ ३	दि. ८ ४३	शु. १० १८	,, १० ११	व. १७ ५८	भ. ५१ ०	सौम्य	१० ३० १६ २६ १३	मी. ५७ ३५	रा. ४ ५६	५ २५	५ ५४	६ ११	३ ४५	१२ २ ३२	१२ २९ २०	११ १५ ५१ ३६
३० ३९	१४	श.	२३ ५८	,, ३ २८	पूभा. १४ २३	,, ११ ३८	शु. १२ २५	,, १० ५१	श. २३ ५८	च. ५६ ४३	कालदण्ड	११ ३१ १७ २७ १४	मी.		उ५ ५५	५ ५३	६ १२	४ ९	१२ २ १४	१२ ३३ १७	११ १६ ५० २०
३० ४३	३०	र.	२९ २८	,, ५ ३९	उभा. २१ १५	,, २ २२	ब्र. १४ १५	,, ११ ३४	ना. २९ २८	किं. ६० ०	सुस्थिर	१२ १ १८ २८ १५	मी.		अ६ १३	५ ५२	६ १२	४ ३२	१२ १ ५६	१२ ३७ १३	११ १७ ५० २

श्रीशुभसंवत् २०४० शके १९०५ चैत्रकृष्णपक्षः।

१८ मार्च से १ अप्रैल सन् १९८४ ई० तक। वसन्तर्तुः। दक्षिणगोलः। उत्तरायणम्। राष्ट्रिय ●

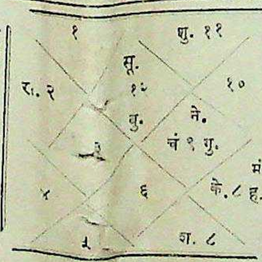
इष्टिः। वक्रीहर्षल् ९।२८। करिदिनम्। वसन्तोत्सवः। चतुःषष्ठीयात्रा। सर्वार्थामृतसिद्धियोगौ ४२।४५ या। +
भ. ३१।५८ (रा. ६।३३) उ. ५८।२८ (रा. ५।२९) या.। कल्पादिः ३। रेवत्यांबुधः ३७।१८। यायीजयदयोगः ३६।४२ उ. C
संकष्ट४।चं.उ.घं.९मि.२७। अङ्गारकी४। सायन अश्विन्योर्मेषेचार्कः २४।३३। यायीजयदयोगः ३३।१३ उ.५२।१३ या.।
रङ्ग ५। अनुराधासु भौमः ५९।२८। सर्वार्थामृतसिद्धियोगौ २६।३० उ.। राष्ट्रिय चैत्रः। [C: २।३८ या.।
भ. ४७।१५ (रा. १२।५७) उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।४८ या.। [● चैत्रः।
भ. १७।१३ (दि. १२।५५) या। [+ द्विपुष्करयोगः ४२।४५ उ. यायीजयदयोगः [illegible] या.।
काल ८। शीतला ८।
पूर्वभाद्रपदासु शुक्रः ३८।३०। यायीजयदयोगः ३८।३० उ. ५४।१ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।३० उ.।
भ. २६।३३ (दि. ४।३३) उ. ५९।१८ (प्रा. ५।४१) या.।
अश्विन्योर्मेषे च बुधः १८।४३।
पापमोचनी ११ व्रतं सर्वेषाम्। { Bनादिना ग्रहणादिपर्वनुसारकरणम्। शनिवारयुता महावारुणी। G
प्रदोष १३ व्रतम्। वारुणीपर्वम् ११।४० उ.। { Gशुभयोगशनिवारशततारकायुता महामहावारुणी।
भ. १०।५८ (दि. २।५) उ. ५१।० (रा. २।१८) या.। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्। वारुणी पर्वम् [illegible] या.। [illegible]
कालदण्डयोगः। वैधृतिः प्र. २३।०, नि० ३४।४०। [[illegible] रेवत्यामर्कः ४८।५८। यायीजयदयोगः [illegible] उ.।
दर्शः। मन्वादिः ३०। सर्वार्थसिद्धियोगः २०।१२ या.।

प्रातः स्टॅं. टा. घं. ५ मि. २६ कालिकाः स्पष्टग्रहाः। तत्र दिनद्वयान्तरं गतिः॥

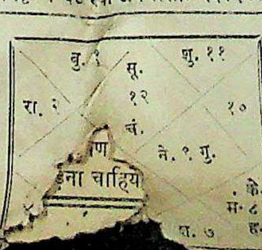
ति. वा.	चन्द्रः रा. अं. क. वि.	मं. रा. अं. क. वि.	बु. रा. अं. क. वि.	गु. रा. अं. क. वि.	शु. रा. अं. क. वि.	श. रा. अं. क. वि.	रा. रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.
१ र.	५ १२ ९ ३५	७ २ ४६ २८	११ १२ ५६ ०	८ १६ ३५ ५३	१० १० ३९ १९	६ २२ १९ ४२	१ १६ ४९ २१	७ १६ ५६ १३	८ ७ ४३ ३०
२ चं.	५ २७ १४ ६	७ २ ५८ ९	११ १४ ५४ ५	८ १६ ४३ ७	१० ११ ५३ २१	६ २२ १७ २७	१ १६ ४६ १०	७ १६ ५६ ५	८ ७ ४४ १
४ मं.	६ १० ५६ २१	७ ३ ९ १६	११ १६ ५० ५२	८ १६ ५० १३	१० १३ ७ २३	६ २२ १५ ६	१ १६ ४३ ०	७ १६ ५५ ४८	८ ७ ४४ ३२
५ बु.	६ २६ १० ५७	७ ३ ११ ५१	११ १८ ४६ २०	८ १६ ५७ ६	१० १४ २१ २४	६ २२ १२ ४१	१ १६ ३९ ४९	७ १६ ५५ २८	८ ७ ४४ ५७
६ गु.	७ ९ ५५ ५०	७ ३ २० ५०	११ २० ४० २२	८ १७ ३ ५६	१० १५ ३५ २६	६ २२ १० १५	१ १६ ३६ ३८	७ १६ ५५ ५	८ ७ ४५ १९
७ शु.	७ २३ १२ ०	७ ३ ३० १४	११ २२ ३२ ८	८ १७ १० ३८	१० १६ ४९ २९	६ २२ ७ ३३	१ १६ ३३ २८	७ १६ ५५ ३	८ ७ ४५ ४२
८ श.	८ ६ २ ३७	७ ३ ४८ ३	११ २४ २१ २०	८ १७ १७ ६	१० १८ ३ ३१	६ २२ ४ ५२	१ १६ ३० १७	७ १६ ५५ २	८ ७ ४६ ६
९ र.	८ १८ ३२ ६	७ ३ ५६ १५	११ २६ ७ ३३	८ १७ २३ ३०	१० १९ १९ ३३	६ २२ २ ६	१ १६ २७ ७	७ १६ ५४ ३७	८ ७ ४६ २१
१० चं.	९ ० ४४ १७	७ ४ ५ ४०	११ २७ ५० २०	८ १७ २९ ४२	१० २० ३१ ३४	६ २१ ५९ १४	१ १६ २३ ५५	७ १६ ५४ १३	८ ७ ४६ ३६
११ मं.	९ १२ ४७ १	७ ४ १० १५	११ २९ २९ १६	८ १७ ३५ ४४	१० २१ ४१ ३६	६ २१ ५६ १०	१ १६ २० ४४	७ १६ ५३ ४८	८ ७ ४६ ५७
११ बु.	९ २४ ४१ ४०	७ ४ १६ १२	० १ ३ ५७	८ १७ ४१ ३७	१० २२ ५९ ३७	६ २१ ५३ १८	१ १६ १७ ३४	७ १६ ५३ २४	८ ७ ४७ ७
१२ गु.	१० ६ ३२ १७	७ ४ २२ ४०	० २ ३३ १८	८ १७ ४७ २२	१० २४ १३ ४०	६ २१ ५० १३	१ १६ १४ २३	७ १६ ५२ ४८	८ ७ ४७ १४
१३ शु.	१० १८ २३ ५४	७ ४ २७ ३८	० ३ ५७ ०	८ १७ ५२ ५०	१० २५ २७ ४०	६ २१ ४७ ३	१ १६ ११ १३	७ १६ ५२ ११	८ ७ ४७ २१
१४ श.	११ ० १६ ५१	७ ४ ३१ ५४	० ५ १८ ४०	८ १७ ५८ २०	१० २६ ४१ ४२	६ २१ ४३ ४०	१ १६ ८ २	७ १६ ५१ ३५	८ ७ ४७ २८
३० र.	११ १२ १३ ४०	७ ४ ३५ ३०	० ६ ३२ ४२	८ १८ ३ ३७	१० २७ ५५ ४३	६ २१ ४० ३०	१ १६ ४ ५१	७ १६ ५० ५८	८ ७ [illegible]

चैत्र कृष्ण ८ शनौ अयनांशाः २३।३७।५५

वक्री हर्शल ७।१६।५६।१३



चैत्रकृष्ण ३० रवौ अयनांशाः २३।३७।५५



गुरुः पूर्वस्याम्। ॥ दैनिक लग्नसारणी (स्टॅण्डर्ड टाइम) ॥ शुक्रः पूर्वस्याम्।

रा.	१ र.	२ चं.	४ मं.	५ बु.	६ गु.	७ शु.	८ श.	९ र.	१० चं.	११ मं.	११ बु.	१२ गु.	१३ शु.	१४ श.	३० र.
मी.	७ २५	७ २१	७ १८	७ १४	७ १०	७ ६	७ २	६ ५८	६ ५३	६ ४९	६ ४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे.	९ ३	८ ५९	८ ५६	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३२	८ २८	८ २४	८ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ.	१० ५९	१० ५५	१० ५२	१० ४८	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	१ १३	१ ९	१ ६	१ २	१२ ५८	१२ ५४	१२ ५०	१२ ४६	१२ ४२	१२ ३८	१२ ३४	१२ ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क.	३ ३१	३ २७	३ २४	३ २०	३ १६	३ १२	३ ८	३ ४	२ ५९	२ ५५	२ ५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं.	५ ४६	५ ४२	५ ३९	५ ३५	५ ३१	५ २७	५ २३	५ १९	५ १५	५ ११	५ ७	५ ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कं.	७ ५९	७ ५५	७ ५२	७ ४८	७ ४४	७ ४०	७ ३६	७ ३२	७ २७	७ २३	७ २०	७ १६	७ १२	७ ८	७ ५
तु.	१० १६	१० १२	१० ९	१० ५	१० १	९ ५७	९ ५३	९ ४९	९ ४५	९ ४१	९ ३७	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २१
वृ.	१२ ३४	१२ ३०	१२ २७	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ ११	१२ ७	१२ ३	११ ५८	११ ५५	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ४०
ध.	२ ४०	२ ३६	२ ३३	२ २९	२ २५	२ २१	२ १७	२ १३	२ ९	२ ५	२ १	१ ५७	१ ५३	१ ५०	१ ४६
म.	४ २६	४ २२	४ १९	४ १५	४ ११	४ ७	४ ३	३ ५९	३ ५५	३ ५०	३ ४७	३ ४३	३ ३९	३ ३५	३ ३२
कुं.	५ ५७	५ ५३	५ ५०	५ ४६	५ ४२	५ ३८	५ ३४	५ ३०	५ २५	५ २१	५ १८	५ १४	५ १०	५ ६	५ ३

धूलिवन्दविधिः—प्रतिपत् उदयव्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वये व्याप्तौ पूर्वा। तत्र आधिव्याधिपरिहाराय [illegible] स्नायात्। ततो नित्यकर्म विधाय [illegible] लोकिकाविभूतिं वंदयेत्॥ तत्र मन्त्रः वंदितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहि नो देवि भूतेभूतिप्रदा भव॥ **वसन्तोत्सवविधिः**—[illegible] तैलाभ्यंगपूर्वकं मंगलस्नानं विधाय रंगत्यादिशोभिते [illegible] सर्वचन्दनाभकुसुम [illegible] तत्र [illegible] सर्वकामार्थसिद्धये॥ ततः वसन्तोत्सवनिमित्तं [illegible] O

आकाश दर्शन

ता. २०।३।८४ श. चं. यो. चं. से श. २ अं. १० क. उत्तर, स्टॅ.टा. दि. घं. ८ मि. १८ पर।
ता. २४।३।८४ मं. चं. यो. चं. से मं. १ अं. ३१ क. उत्तर, स्टॅ. टा. दि. घं. [illegible] मि. ४४ पर।
ता. २७।३।८४ गु. चं. यो. चं. से गु. २ अं. ४१ क. उत्तर, स्टॅ.टा. रा. घं. २ मि. ४० पर।
ता. ३०।३।८४ बु. चं. यो. चं. से बु. ३ अं. ४१ क. उत्तर, स्टॅ.टा. प्रा. घं. ६ मि. ५ पर।

O ब्राह्मणभोजनादि कुर्यात्॥

शीतलाष्टमीपूजाविधिः—चैत्र कृष्णाष्टमीमारभ्य आषाढकृष्णाष्टमीपर्यन्तं प्रतिकृष्णाष्टमीषु शीतलापूजनं **आचारात्** सर्वत्र कुर्वन्ति॥ अष्टमी च उदयव्यापिनी ग्राह्या[illegible]चारात्। चैत्रकृष्णत्रयोदशी शततारकानक्षत्रयुता **वारुणी** संज्ञका स्ना-B

संख्या १ श्री काश्यां निरयणलग्नसारिणीयम् ।

लग्नांशाः	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे. ०	घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
	पल	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५४	२	१०	१८	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५६	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६
वृ. १	घ.	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
	प.	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२७	३६	४६	५५	५	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१५	२५	३५	४६
मि. २	घ.	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	५६	७	१८	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९
क. ३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
	प.	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५
सिं. ४	घ.	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
	प.	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१
कं. ५	घ	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
	प.	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१४
तु. ६	घ.	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६
	प.	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६
वृ. ७	घ.	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
	प.	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०
ध. ८	घ.	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७
	प.	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	२	१३	२३	३४	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६
म. ९	घ.	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२
	प.	६	१५	२५	३४	४४	५३	२	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२
कुं. १०	घ	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
	प.	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५७	४	११
मी. ११	घ.	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०	१७	२५	३२	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२

संख्या २ निरयणदशमभावसारिणीयम्

लग्नांशाः	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे. ०	घटी	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	पल	०	६	१६	२८	३८	४७	५७	६	१६	२५	३५	४५	५४	४	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
वृ. १	घ.	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०
	प.	५३	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१६	२६	३७	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९	०
मि. २	घ.	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५
	प.	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५
क. ३	घ.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०
	प.	३६	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	११	२१	३१
सिं. ४	घ.	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५
	प.	४१	५०	०	१०	१९	२९	३९	४८	५८	७	१७	२६	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५१	०	९	१८	२८	३७	४६	५६	५	१४
कं. ५	घ	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९
	प.	२३	३२	४१	५१	०	९	१८	२७	३६	४६	५६	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१
तु. ६	घ.	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४
	प.	०	९	१९	२८	३८	४७	५७	६	१६	२५	३५	४५	५४	४	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
वृ. ७	घ.	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	५३	३	१४	२४	३४	४५	५५	५	१६	२६	३७	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९	०
ध. ८	घ.	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	प.	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५
म. ९	घ.	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
	प.	३६	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	११	२१	३१
कुं. १०	घ	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	प.	४१	५०	०	१०	१९	२९	३९	४८	५८	७	१७	२६	३६	४५	५४	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४
मी. ११	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	२३	३२	४१	५१	०	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१

[illegible]न्त्यथ महामृत्युञ्जयजपविधिः ॐ

आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठं सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा ॥ सङ्कल्पः- अमुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ-वासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पत्स्यमानाखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यताप्राप्तये मृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये ॥ ऋष्यादिन्यासः ॥ वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः मूर्ध्नि ॥ पङ्क्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि वक्त्रे ॥ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायैनमः हृदि ह्रींशक्तयेनमः लिंगे ॥ श्रींबीजायनमः पादयोः ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ ॥ अस्यश्रीमहामृत्युञ्जयमंत्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः पङ्क्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रींबीजं महामृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं जपेविनियोगः ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवतेरुद्रायशूलपाणयेस्वाहा हृदयायनमः ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवतेरुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसेस्वाहा ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमोभगवतेरुद्राय चन्द्रशिरसेजटिनेस्वाहा शिखायैवषट् ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवतेरुद्रायत्रिपुरान्तकाय ॐ ह्रांह्रीं कवचायहुं ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमोभगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय नेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवतेरुद्राय ॐ अग्नित्रयायज्वलज्ज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय अस्त्रायफट् ॥ इति षडङ्गन्यासः ॥ त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धि नेत्रयोः । पुष्टिवर्द्धनं मुखे । उर्वारुकं गण्डयोः । एव हृदये । बन्धनात् जठरे । मृत्योः लिंगे । मुक्षीय ऊर्वोः । मा जान्वोः । अमृतात् पादयोः । इति पदन्यासः ॥ मूलेनव्यापकंकृत्वा ध्यानंकुर्यात् ॥ अथ ध्यानं ॥ हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ । अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥ १ ॥ चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम् । सूर्येन्दुग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्कुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॥ ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पंसमर्पयामि ॥ ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि ॥ ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि ॥ ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यंसमर्पयामि ॥ ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पंसमर्पयामि ॥ मन्त्रस्तु ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों सः जूं ह्रौं ॐ ॥ ततो जपानंतरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत् ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवत्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ १ ॥ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ॥ जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥ २ ॥ अर्पणं--अनेनमहामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम ॥ इतिविज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकम् ॥ जपनिवेदनम् । जपसांगतासिद्ध्यर्थं यथाकामनाद्रव्येण तद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्ततिलादिभिर्होमः तद्दशांशमार्जनं तद्दशांशतर्पणं तद्दशांशब्राह्मणभोजनं कुर्यात् ॥ इति ॥

इष्टकालीन निरयणलग्नानयनविधि

इष्ट कालीन स्पष्ट राश्यादि सूर्य के राशि के सामने और अंश के नीचे कोष्ठक के कोष्ठ में जो घटी पल होंगे उनमें सूर्य के कलाविकला सम्बन्धि अनुपातागत पलादि फल जोड़ना चाहिये । जैसे इष्ट राशि के सामने और इष्ट अंश के नीचे जो कोष्ठक लिया हो उसका और उसके आगे के कोष्ठक का जो अन्तर होगा उसमें सूर्य की कला विकला को गुणकर उसमें ६० का भाग देने से लब्धि पल निकल आवेंगे उनको सूर्य के राशि और अंश के कोष्ठक के घटी पल में जोड़कर योग फल में घट्यादि इष्ट काल जोड़ना चाहिये । इसमें घटी योग ६० से अधिक होने पर उनमें से ६० घटाकर शेष घटी पल सारणी में जिस राशि के सामने के तथा अंश के नीचे के कोष्ठक के घटी पल के आसन्न मिलेंगे उतने राशि और उतने अंश लग्न होंगे । अब लग्न की कला विकला लाने के लिये इस कोष्ठक के पूर्व साधित घटी पलों को इष्ट काल के घटी पल से घटाकर जो फलादि शेष बचेगा उसी को ६० से गुणा करना चाहिये । तब इस गुणनफल में लग्न के राशि और अंश लग्न कोष्ठक और उसके आगे का कोष्ठक इन दोनों के अन्तर से भाग देने पर लब्धि कला आयेगी और शेष को ६० से गुणाकर गुणनफल में उक्त कोष्ठान्तर का भाग देने से लब्धि विकला आवेगी । इस तरह लग्न के राशि अंश कला विकला होंगे ।

उदाहरण–सू. २ रा. ४ अं. २० क. २५ वि. है और इष्ट काल २५ घटी ४० पल है तो निरयण लग्न क्या होगा ? इसके उत्तर में २ राशि के सामने के और ४ अंश के नीचे के कोष्ठ में ९ घटी ३९ पल हैं इसका तथा अग्रिम कोष्ठक ९ घटी ५० पल जो अन्तर ११ पल है इसमें सूर्य की २० कला २५ विकला को गुणा किया तो २२०।२७५ हुआ इसमें ६० का भाग देने पर ३ प. ४४ विप. ३५ प्रतिविप. लब्ध हुआ ! इसको पूर्व घट्यादि फल ९ घ. ३९ प. में जोड़ने से ९ घ. ४२ प. ४४ विप ३५ प्रतिविप हुआ । इसमें इष्ट काल जोड़ने ३५ घ. २२ प. ४४ विप. हुआ । इसको सारिणी में देखने से यह ६ राशि के सामने के और २० अंश के नीचे कोष्ठक के घटी पल के आसन्न हैं । अतः लग्न के ६ राशि और २० अंश हुए । अब ३५ घ, २२ प. ४४ वि. और ३५ प्रतिविप. में से कोष्ठकांक ३५ घ. १२ प. घटाने से १० प. ४४ वि[illegible] प्रतिविप. शेष रहा, इसमें १० को ६० से गुणाकर ४४ विपल जोड़ने से ६४४ विपल हुए इसको कोष्ठकान्तर ११ से भाग देने पर ५८ कला लब्ध हुई और शेष ६ को ६० से गुणाकर प्रतिविपल ३५ जोड़ने से ३९५ प्रतिविपल हुए, इसमें कोष्ठान्तर ११ का भाग देने पर ३६ विपला लब्ध हुई । इस प्रकार निरयण लग्न [illegible] ५८ क ३६ वि. हुआ । इसी प्रकार दशम लग्न सारिणी से स्पष्ट सूर्य और इष्टकाल के स्थान पर नतकाल को मानकर पूर्व प्रकार से जो लग्न बनेगा वह दशम लग्न होगा । इसमें विशेष यह है कि पूर्वनत हो, तो सारिणी के घट्यादि फल में पूर्वनत के घट्यादि फल को घटाना तथा पश्चिमनत हो तो जोड़ना चाहिये [illegible] नतमन के समान करने से दशम लग्न स्पष्ट राशि अंश कलाविकलात्मक होगा ।

... अथ गण...

अथ होडाचक्रम् ॥ वरकन्ययोर्भस्य मेलापकविचारोपयोगीदम् ।

राशयः	मे.	मे.	१ मे. ३ वृ.	वृ.	२ वृ २ मि.	मि.	३ मि. १ क.	क.	क.
भानां वर्णाः	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ ई उ ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को ह ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि.१ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र
वश्यम्	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु. २ द्विप. २	द्विपद	द्विप.३ जल.१	जलचर	जलचर
योनिः	अश्व	गज	छाग	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जा.	छाग	मार्जा.
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीशाः	भौमः	भौमः	भौमः १ शुक्रः ३	शुक्रः	शुक्रः २ बुधः २	बुधः	बुधः ३ चन्द्रः १	चन्द्रः	चन्द्रः
गणभे.	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

राशयः	सि.	सि.	१ सि. ३ कं.	कं.	२ कं. २ तु.	तु.	३ तु. १ वृ.	वृ.	वृ.
भानां वर्णाः	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू
नक्षत्राणि	मघा	पूर्वा फाल्गु.	उत्तरा फाल्गु.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि.१ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र
वश्यम्	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु १ द्विप. ३	द्विपद	द्विपद	द्विपद	द्विप. ३ कीट १	कीट	कीट
योनिः	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	हरिण	हरिण
वैरम्	मार्जा.	मार्जा.	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान
राशीशाः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्य १ बुध ३	बुध	बुधः २ शुक्र. २	शुक्रः	शुक्रः ३ भौमः १	भौमः	कुजः
गणभे.	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

राशयः	ध.	ध.	१ ध. ३ म.	म.	२ म. २ कुं.	कुं.	३ कुं. १ मी.	मी.	मी.
भानां वर्णाः	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
नक्षत्राणि	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वा भाद्रप.	उत्तरा भाद्रप.	रेवती
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि.१ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	ब्राह्मण	ब्राह्मण
वश्यम्	मनुष्य	द्विप.॥ चतु३॥	चतुष्पद	जलचर	ज.च.२ द्विप. २	द्विपद	द्विप. ३ ज.च.१	जलचर	जलचर
योनिः	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
वैरम्	मृग	छाग	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशाः	गुरुः	गुरुः	गुरुः १ शनिः ३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः ३ गुरुः १	गुरुः	गुरुः
गणभे.	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१ वर्णगुणज्ञानाय चक्रम् वरस्य

कन्यायाः ।

व. ४	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्रा.	१	०	०	०
क्ष.	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणज्ञानाय चक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

वश्याः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतु.	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	०
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

३ तारायाः गुणबोधकचक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अथ मेलापके विशेषस्त्वमाह ।

अज्ञातजन्मनां नृणां नामभे परिकल्पयेत् ॥ तेनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ॥१॥ जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् । व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति ॥ २ ॥

४ अथात्र योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जा.	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	१
गज	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०
मेष	२	२	४	२	३	२	२	२	२	१	२	२	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	३	२	२	१	१	२	२	१	०	१	१	१
मार्जा.	२	२	२	१	१	२	०	२	२	१	२	२	१	१
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	१	२
गो	२	२	२	२	२	२	२	४	३	०	२	२	२	१
महिष	२	२	२	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	१	२	०	१	२	१	१	२	२
मृग	२	२	२	२	०	१	२	२	२	१	४	२	२	१
वानर	२	२	२	२	१	२	२	२	२	१	२	४	२	१
नकुल	२	२	२	०	१	१	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	२

७ राशिकूटस्य गुणबोधकचक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	[illegible]	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	[illegible]	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	[illegible]	[illegible]	७	७	०	७	०	७	७	०
धन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	७	७	०	७	०	७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	७	७	०	७	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	७	७	०	७

८ नाडीकूटस्य गुणज्ञानम् । वरस्य

कन्यायाः ।

नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

गुणानामैक्येन ग्राह्याग्राह्यविचारः

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमं विंशतिर्यावत् । श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावदतःपरमुत्तमम् ॥ सद्भकूटे इति चैवं बुधकूटेऽस्य कथ्यते ॥ नित्यं गुणैक्यातिरिक्तैर्यं वाणाधिकैर्मतम् । ऊर्ध्वं च पञ्चविंशत्या श्रेष्ठं श्रेष्ठतरं ततः ॥

नैसर्गिकमैत्रीचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं. मं. गु.	सूर्यः बुधः	सू. चं. गुरुः	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं. मं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं. गु. शु. श.	शुक्रः शनिः	मं. गु. शनिः	शनिः	भौमः गुरुः	गुरुः	समाः
शुक्रः शनिः	०	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं. मं.	शत्रवः

अथात्र युञ्जिभचक्रमिदम् ।

रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा	आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य ऽऽश्ले. मघा पू. फा. उ. फा. हस्त चित्रा स्वा. विशा. अनु.	ज्ये. मू. पू. षा. उ. षा. श्र. ध. श. पू. भा. उ. भा.
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ६
पतिः श्रेष्ठः	द्वयोः प्रीतिः	कन्या श्रेष्ठा

५ ग्रहमैत्रीगुणज्ञानायचक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

ग्रहाः	सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्यः	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	॥	॥
भौमः	५	४	५	॥	५	३	॥
बुधः	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरुः	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्रः	०	॥	३	५	॥	५	५
शनिः	०	॥	॥	४	३	५	५

६ गणकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रम् । वरस्य

कन्यायाः ।

गणाः	देवता	मनुष्य	राक्षस
देवता	६	६	६
मनुष्य	०	६	६
राक्षस	६	०	०

अथ ग्रहमेलापकः ।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः । कन्याया भर्तृनाशाय भर्तुः पत्नीविनाशकृत ॥ इदं लग्नेन्दुभ्यां विचार्यम् ॥ एवं कन्याजन्मकुण्डल्यां लग्नचन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु [illegible] स्थितेऽतदाप्यनिष्टं । [illegible] ॥ [illegible] वरकुण्डल्या परिहारः ॥ जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ॥ अष्टमे द्वादशेवापि भौमदोषविनाशकृत् । [illegible] तादृशो भवेत् ॥ तेनैव भवनेनैव भौमदोषविनाशकृत् ॥ एवं [illegible] पापग्रहः कन्याया नेष्टस्थाने स्थिता भवेयुस्तावत्त एव तत्तोऽधिका वा वरस्यापि कुण्डल्यां दृष्ट्वा शुभदा वाच्याः नान्यथा । [illegible] ॥

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम् ।

रवि	चन्द्र	गुरु	[illegible]	[illegible]
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	[illegible]	[illegible]
१।२।५।७ ९	१।२ ५।६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४ ८।१२	४ ८।१२	४ ८।१२	[illegible]	[illegible]

विवाहे दशदोषाः ।

१	लत्ता
२	पातः
३	युति
४	वेधः
५	जामित्रम्
६	बाणपञ्चकम्
७	एकार्गलः
८	उपग्रहः
९	क्रान्तिसाम्यम्
१०	दग्धातिथि

अथ जन्मलग्नमहत्त्वात् मेलापकविचारः ॥

तत्रकन्या जन्मादिन्दोर्वा १।४।७।८।१२ एषामन्यतमस्थाने भौमश्चेत् परिहारयोगः ॥ वरे तथैव परुषश्चेत् । [illegible] विलयम् । यद्युभयत्रतुल्यौ भौमतुल्यौ भौमवरस्याश्चेत् शुभोद्वाहः । तत्र सप्तमाष्टमस्थभौमस्य परिहारः सप्तमाष्टमस्थभौम एव ॥ अथैवमन्येषां पापानां च सप्तमाष्टमस्थतौ चेत्तर्हि शुभोद्वाहः । तत्र कन्यायाः जन्मलग्नादिन्दोर्वा १।४।७।८।१२ एषां तेनैव क्रमेण पापग्रहेऽपि ग्रहाश्चेत्तर्हि परिहारो भवतीति पूर्वोक्तानुसारेण ग्रहमेलापकं सुविचार्य विवाहः कर्तव्यो नान्यथेति शम् ॥ इति ॥

* अथ गणनागुणैक्यबोधकचक्रम् *

वरस्य नक्षत्राणि

कन्याया नक्षत्राणि	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा. १	उ. फा. ३	ह.	चि. २	चि. २
अ.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१६	२३॥	२१॥	२८	२१	२५	१५॥	११	१०	१३	२२॥
भ.	३४	२८	२६	१६	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३१॥	२३॥	२५॥	२०	१८	२६	२१॥	२०	५	१४॥
कृ. १	२७॥	२६	२८	१८	११	१७॥	२१	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१४॥	१८	२०	१५॥	१५॥	१८	२७॥
कृ. ३	१८॥	२०	१६	२८	२१	२७॥	१८॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२०	२२	२१	२१	२३॥	२२॥
रो.	२३॥	२३॥	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	२०॥	२४॥	२६	२५	२६	२०	१६
मृ. २	२३॥	१४॥	१६॥	२८॥	३५	२८	१६	२४	२३॥	२७	२०	२२	१६॥	१५॥	२३॥	२२॥	२६	१३	१२
मृ. २	२७	१८	२३	२०॥	२७	२०	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५	२३॥	१६॥	२७॥	३०॥	३४	२१	१४
आ.	१६	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१२॥	२०	१३	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७	२०
पु. ३	१६	२६	२३	२१॥	२३॥	२४॥	२२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥	१६॥
पु. १	२१॥	२८॥	२५॥	२२	२६	२६	१६	१०॥	१४॥	२८	३५	२६॥	२६॥	२०॥	१५॥	१७	१८	२०	१६॥
पु.	२०॥	२१॥	२६॥	२३	२६	१६	१२	१८	२१॥	३५	२८	३०	२७॥	१३॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥
श्ले.	२५	२३॥	२२॥	१६	१२	२०	१५	१२	१५	२८॥	२६	२८	२५	१५॥	१७॥	२०	२०	२५	२४॥
म.	१६	१६	२५॥	१६॥	६॥	१७॥	२१॥	२१॥	२०॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१५॥	१५॥	२१॥	२४॥
पू. फा.	२५	१७	१६	२०	२३॥	२५॥	१६॥	२७॥	२६॥	२२॥	१६॥	१६॥	२०	२८	३४	२३	२१॥	७॥	१०॥
उ. फा. १	१६॥	२५	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१७	१६	१३॥	१६॥
उ. फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	२०॥	२३॥	२३॥	१६	२८	२१	२६॥	२४	१८	२८	२७	२४॥	१६॥
ह.	११	२०	१७॥	२२	२५	२६	२३	२२॥	२३॥	१६	२८	२२	१७॥	२१॥	१६	२६	२८	२८	२०
चि. २	१३	५	१६	२३॥	२०	१२	१६	२६	२४॥	२०	१२	२६	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२७	२८	२०
चि. २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	१६॥	१३॥	२६॥	२५॥	१३॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२८
स्वा.	२८॥	२६॥	१७॥	२३॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८	२७॥	१३॥	२३॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८
वि. ३	२२॥	२३॥	२०॥	१५॥	२०॥	१८॥	१६॥	२०	२०	२१	२१	१७	१७॥	१६॥	२७॥	१७॥	१८॥	२७॥	२४॥
वि. १	१६॥	१७॥	२४॥	१६	२४॥	२२॥	१२	१३॥	१३॥	१८	१८	१४॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१६	२८	२२॥
अ.	२४॥	१४॥	१६॥	२४॥	२७॥	२०॥	१०	१६	२०॥	२५	१८	२०	२४॥	२०॥	२६॥	२६	२६	१२	७॥
ज्ये.	२२	१७॥	२४॥	२६॥	२२॥	२२॥	२२	३	५	६॥	२०	२५	११	२३॥	१६॥	२३	१२	२५	२०॥
मू.	१२	२०	२४॥	२६॥	१३	१३	२१	२५	२४	८	१७	२३॥	२४	२८	६॥	२३	१३	२६	२६
पू. षा. ॥	२६	१६	१८	२२॥	१६	२१	१६	१७	२७	२३	१३	१७	१६	१७	२५	२८॥	२७	१२	२२
पू. षा. ३॥	२७	२०	१६	२३॥	२०	१२	१८	२६	२५	२३॥	१३॥	२०॥	१६	१७	२५	२७॥	२६	११	११
उ. षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	२१॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	६॥	६॥	२५	२६	२८॥	२७॥	२०	२०
उ. षा. ३	२८	२६॥	२४॥	१४	२७	२३॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	२३	४॥	२०	२१	२६	२५	१७॥	२३॥
ध. १॥	२८	२८	२४॥	२१	२८	२७	२४	२१॥	२२॥	२७	२५	२४	५॥	१७॥	१६	२४	२५	१६	२६
ध. २॥	२७	२७	२३॥	११	२७	२६	२३॥	२१	२२	२८	२६	२५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२५	१८॥	२६
ध. २	२०	११	२६	२३॥	२०	१२	६॥	२६॥	२६	२२	२६	२८	२८॥	४॥	२२॥	२६	२६॥	१६॥	२४
ध. २	२०	११	२६	२०॥	२७	१६	१२	१२	२५॥	२३॥	४॥	२६॥	२५॥	२०॥	२८॥	२७॥	२१	१८	१६
श.	२५	२१	२८	१२॥	२५॥	२७	२०	१२	१३	८	१४॥	२०॥	२६॥	२०॥	१२॥	११॥	६॥	२५	२६
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	२१॥	२१॥	२४॥	२७	१८	१३	२०	१३॥	१८॥	२४॥	१६॥	२५॥	२७॥	१८॥	१६॥
पू. भा. १	१७॥	२२॥	२५॥	१६	२६	२६	२५॥	१८	१६	१८	२५	१८॥	२६॥	२२॥	१४॥	२६॥	२६॥	२०	२६
उ. भा.	२५॥	२४॥	२८॥	२१	२५	२७	२६॥	२५॥	२७	२६	१६	२०	१७॥	२५॥	२५॥	२७॥	२७	६॥	३॥
रे.	२६	२८॥	२६॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२४॥	२७	२४	१६॥	२६॥	२३॥	२५॥	२७	१०॥	१३॥

कन्याया नक्षत्राणि	स्वा.	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	पू. षा.	उषा. १	उषा. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू. भा. ३	पू. भा. १	उ. भा.	रे.
अ.	२७॥	२२॥	१८॥	२५॥	१४	१३	२५	२६	२४॥	२६	२७	२६	२०	२०	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भ.	२६॥	२२॥	१८॥	१६॥	१८॥	२०	१६	२०	२७	२८॥	२७	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२६॥
कृ. १	१५॥	१६॥	१५॥	१६॥	२५॥	२४॥	१७	१६	१४	१५॥	१२॥	११	२५	२५	२७	१६	१७॥	१६॥	११॥
कृ. ३	१०॥	१४॥	२०॥	२४॥	३०॥	२०	१३	१४॥	६॥	२४	२२	१०	२३॥	२६॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
रो.	१५॥	६॥	१५॥	२६॥	२३॥	१४	१६॥	२१	१२॥	१७	१६	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१६
मृ. २	२५	१८॥	२४॥	२१॥	२४॥	१५	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२६	१२	१६	२७	२६॥	२६	१७	२७
मृ. २	२७	२०॥	१५	१२	१५	२३	१६	१८	२४	२०॥	२५	२४॥	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१६॥	२६॥
आ.	२७	२०	१४॥	१८	४	१६	२८	२७	२७	२३॥	२३॥	२३	२७॥	१६	१२	१७	१६	२५॥	२६॥
पु. ३	२७	२१	१५॥	२०॥	७	१४	२७	२६	२६	२२॥	२३॥	२३॥	२८॥	१६॥	१३	१७	१६	२७	२६॥
पु. १	२७	२१	१६	२५	१०॥	८	३१	२१॥	२१॥	२५	२६	२७	२२	१३॥	७	११	१७	२५	२४॥
पु.	२६॥	२१	१६	१८	२१	१७	११	११॥	२३॥	२६	२४	२५	२३	४॥	[illegible]	१८	२४	१८	२७
श्ले.	११॥	१६॥	१४॥	१६	२५	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१२	१२	२७	१८॥	[illegible]	[illegible]	१८॥	२०	१२
म.	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	२२	२४	१६	१६	६॥	३॥	३॥	४॥	१७॥	२४॥	२५॥	२८॥	१७॥	१८॥	१२
पू. फा.	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	२८	१७	१७	२५	१६	२७॥	२८॥	३॥	२०॥	१६॥	२७॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ. फा. १	२५॥	१६॥	२२॥	१७॥	६॥	२५	२५	२८	२०	१६	२०	११॥	१८॥	११॥	[illegible]	१५॥	२५॥	२६॥	२४॥
उ. फा. ३	२५॥	१६॥	२६	२८	१४	१४॥	२६॥	२८॥	२६॥	२६	२५	२४॥	१६	१६॥	२०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२६॥
ह.	२६॥	१८॥	२१	२७	२४	१५	२७	२६	२७॥	२४	२५	२४॥	२०॥	११	६॥	१४॥	२८॥	२६॥	२७॥
चि. २	१६	२४॥	१६	१२	२७	२७	१३	१२	२१	१७॥	२८	१७॥	१७	१७	२४	१७॥	२०॥	१०॥	२०॥
चि. २	२७	३४॥	२४॥	८॥	२३॥	२७	१३	१२	२१	२५॥	२६	२५॥	२४॥	१६	२६	१६॥	१३॥	३॥	१६॥
स्वा.	२८	२०	२०	२२॥	१७॥	२३	२७	२६	१८	२३॥	२३॥	२३॥	२८॥	२२	२१	२७	२१	१६॥	१२॥
वि. ३	१६	२८	१८	१८	२२॥	२७	२१	२०	१३	२७॥	१६॥	२७॥	३१	१५॥	२६	[illegible]	१५	१३	५॥
वि. १	८	१७	२८	२८	३२॥	२२॥	१५॥	१६॥	६॥	१२	११	१२	२६	२६	२६॥	२१॥	२०	१८	१०॥
अ.	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१३॥	१४॥	२२॥	२५	२६	१६	१३	२३	[illegible]	२६॥	२५	१८	२६
ज्ये.	१५॥	२०॥	२१॥	३०	२८	२५	१६॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२६	१६	१२	१०॥	२१	२०
मू.	२१	२६	२३॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	२५	२०	२८॥	२२॥	[illegible]	२६	२५	२६॥
पू. षा. ॥	२७	२०	१७॥	१६॥	१७॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८	२६॥	२३॥	[illegible]	२२	२३	३२॥
पू. षा. ३॥	२६	१६	२७॥	१६॥	१८॥	२७	२६॥	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	८॥	२५॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३॥	२३॥
उ. षा. १	१८	१२	१०॥	२४॥	२८	२५॥	२३॥	३५	२८	२८	२६	२५	२५॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३॥	२३॥
उ. षा. ३	२२॥	१६॥	१३	२७	२१	१६॥	२४॥	२६	१६	२८	२६	२५	२५॥	२७॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१॥
ध. १॥	२२॥	१६॥	१३	२७	२२	१७॥	२३	२४॥	१६	२५	२८	२७	२६	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२॥
ध. २॥	२२	१६॥	१३	२७	२२	१७	२३	२३॥	१५	२४	२७	२८	२०	२०॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३॥
ध. २	२६॥	२०॥	२७	१३	२७	२१	६	८॥	१६॥	२५॥	२७	२८	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२॥
ध. २	२२	२५॥	२७	१३	२७	२६॥	१७॥	१५॥	२३	१८॥	२०	२६॥	२६॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४
श.	२०	२६	२७॥	२२	२०	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पू. भा. ३	२८	२१	२३॥	२८॥	१६	१५॥	१३॥	२६॥	२६॥	२४	२४॥	२४॥	२०	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पू. भा. १	२१	१४॥	२०	२६	१०॥	१५	२१	३०॥	२०॥	२८॥	२८॥	२६॥	२५॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उ. भा.	१६॥	१३॥	१८	१६	२१	२४	२२	२३॥	११॥	२६॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रे.	११॥	५॥	१६॥	२६	२१	१७	१०	२६॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गुणैक्यज्ञानप्रकारः—ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां [illegible] तथा वधूनाम् । संपातकोष्ठे ह्युभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तद्धृतितो १८ धिक यत् ॥

उदाहरणम्—गणपतिसरस्वत्योर्गणनाविचारे शतपदचक्रानुसारेण गणपतिऋक्षं धनिष्ठा सरस्वतीऋक्षं शततारका, उभयोः संपातकोष्ठे गुणैक्यं २५ अर्हाद्वूर्ध्वं गुणैक्यं शुभम् । इति राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्म तथैव । नाडीदोषो नो गणाना च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् । इत्यादिविचारः ॥

अथ हीनवर्णपरिहार—हीनवर्णो यदा राशि राशीशो वर्ण उत्तम । तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत् ॥ इति ।

अथ दुष्टयोनिपरिहारवाक्यम्—अत्रि—एकयोनिषु संपत्ती दंपत्योः संगमः सदा । भिन्नयोनिषु मध्यं स्यादरिभावो न चेत्तयोः ॥ योनेरभावे नोद्वाह कृते सति वियोगदः । राशिसख्यं न यत्रास्ति कारयेन्न तु दोषभाक् ॥ एकयोनिषु कलहो गजयोः सिंहयो शुनो । महद्वैरस्य समता महिषस्य कपेस्तथा ॥ सद्भकूटे योनिवैरं मृत्युद न परित्यजेत् । तत्र चेद्ग्रहयोः सख्यं नातिदुष्टं विदुर्बुधाः । योनिवैरं सदा त्याज्य स्त्रीपुंसोर्भिन्नलिंगयोः । एकलिंगजयो प्रोक्तं मध्यमं नातिदोषदम् । सति तद्राशिकूटेऽपि योनिवैर न दोषकृत् । यदि स्यादबलायोनेः पुंसो योनिर्बलीयसी ॥ इति ॥

अथ ग्रहमैत्रीपरिहारः—वसिष्ठ—द्विर्द्वादशे वा नवपंचमे वा षट्काष्टके राक्षसयोषितो वा । एकाधिपत्ये भवनेशमैत्र्या शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम् । शौनकः—वर्गवैरं योनिवैरं गणवैरं नृदूरकम् । दुष्टकूटफलं सर्वं ग्रहमैत्र्या च नश्यति ॥ यथेशयोर्मिथो भावो दंपत्योस्तादृशो भवेत् । दुष्टकूटं शुभं मैत्र्या सद्भकूटेति शस्यते ॥

अथ गणकूटपरिहारः—केशवः—रक्षोगणो यदि नरो नृगणा कुमारी षडाशिकूटसमगमैत्रियोनिशुद्धि । यद्यस्ति तत्र शुभदं करपीडनं च वामभ्रुवा खलु यदा न हि नाडिवेध ॥ सद्भकूटे योनिशुद्धिर्ग्रहसख्यं गुणत्रयम् । एष्वेकतमसद्भावे नारीरक्षोगणा शुभा ॥ इति ॥

अथ दुष्टकूटपरिहारः—राशिनाथे विरुद्धेऽपि मित्रत्वे चांशनाथयो । विवाहं कारयेद्धीमान् दंपत्योः सौख्यवर्द्धनम् ॥

अथ नाडीपरिहारः, नारदः—चतुर्नाडी त्वहल्यायां पांचाले पंचनाडिका । त्रिनाडी सर्वदेशेषु वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ इति ॥

अथ वरवरणम्—पूर्वात्रितयमाग्नेयमुत्तरात्रितयं तथा । रोहिणी तत्र वरणे कन्याभ्राता द्विजोऽथवा । वरस्य वरणं कुर्यात्सौम्यवारे विधोर्दिने । शुभयोगे सुलग्ने च विवाहर्क्षे न रिक्तके ।

अथ कन्यावरणम्—पूर्वाभयं श्रवणमित्रभवैश्वदेवहोतासवासवसमीरणदेवतेषु । द्राक्षाफलेक्षुकुसुमाक्षतपूर्णपाणिरभ्रांतशांतहृदयो वरयेत्कुमारीम् ।

अथ वाग्दानोत्तरं वरमरणे विशेषः—अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतोर्ध्वं वरो यदि । न च मन्त्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा ।

देशान्तरगमने तु कत्यायनः—वरयित्वा तु यः कश्चित्प्रणश्येत्पुरुषो यदा । [illegible] ऋत्वागमांस्त्रीनतीत्य कन्यान्यं वरयेत्पतिम् ।

याज्ञवल्क्यः—दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत् ।

[illegible]—कुलशीलविहीनस्य षण्ढादिपतितस्य च । अपस्मारी विधर्मस्य [illegible] । दत्तामपि हरेत्कन्यां सगोत्रोढां तथैव च ॥

[illegible] पुरुषाणां तु तज्ज्ञेयं वामभागे मृगीदृशाम् ।

स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्रुवं विजयः	कण्ठकूप.	ऐश्वर्यलाभः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	सर्वसिद्धिः	[illegible]	रिपुभयम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पृष्ठकूप.	युद्धे पराजयः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कपालकूप.	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मुखकूप.	मित्रप्राप्तिः

[illegible] शुभाशुभफलज्ञानाय

पाद विचारः ।

षडेकादशगते हैमो राजतोऽद्रिद्विपञ्चमे । त्रिसप्तदशगे ताम्रो लौहोऽष्टव्ययतुर्यगे ॥ चन्द्रे पादो भवेदस्मिन् जन्मराशि विचे- तुमहुः । हेम्नि चिन्ता त्रिभवलाभे रौप्येऽर्थो आयसे क्षतिः ॥

अथ क्षेमार्थं शान्तिमुहूर्तविचारः—

तत्र हस्त अश्वि. पुष्य. अभि. रे. उत्तरा ३. रो. स्वा. ध. श. श्र. पुन. अनु. म. मृग ज्ये । शुभानां वारे । सत्तिथौ चोत्तमः । परन्तु सिनीवाल्योरस्तादिदोषरहिते । आवश्यके अस्तादावपि । ४ तिथौ १० रवौ १ जीवे ८।१२ पापैरहिते चोत्तमः ॥

अथ जन्मकालाद्दीर्घादि ३ भेदानामत्रचरादिराशिवशादायुर्बोधक-चक्रमिदम् ।

दीर्घायुः	मध्यायु	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेश स्थिरगे २ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः ॥	मध्यायुः ॥	अल्पायुः ॥
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विदेहभे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेश चरभे १ रन्ध्रेश.	स्थिरभे २ लग्नेशः स्थिरभे २ रन्ध्रेश.
दीर्घायुः ॥	मध्यायुः ॥	अल्पायुः ॥
द्विदेहभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विदेहभे ३ लग्नेशः द्विदेहभे ३ रन्ध्रेशः	द्विदेहभे ३ लग्नेश चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुर्निर्णयचक्रानुसारेण जन्मलग्नाष्टमलग्नेशाभ्या लग्नचन्द्राभ्या (लग्ने सप्तमे वा चन्द्रे स्थिते तदा लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यामागतायुषः प्रामाण्यम् । "पतृलाभगे चन्द्रे मन्दचन्द्राभ्याम्" इति सूत्रात् ।) लग्नहोरालग्नाभ्या चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णेतव्यम् । त्रिधाप्येकरूपायुष्यागते तदेव ग्राह्यम् । एवं विसम्वादे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । त्रयाणां विसम्वादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् । एवं विसम्वादे लग्नसप्तमयोरन्यतमेचन्द्रेलग्नचन्द्रायुर्ग्राह्यम् । पूर्वप्रकारत्रये शनौ योगकर्ता तदा कक्षाह्रास । दीर्घायुषिमध्यायुः । मध्यायुषिहीनायुः । हीनायुषि न किञ्चिदिति । स्वराशौ उच्चे शनौ अथवा पापदृष्टियोगरहिते शनौ शुभयोगदृष्टिसहिते न कक्षाह्रास इति । तथा लग्ने सप्तमगे गुरौ वा पापदृष्टियोगरहिते शुभदृष्टियोगसहिते गुरौ कक्षावृद्धि लग्नसप्तमयोरष्टमनाथयोर्योबली तस्य केन्द्रस्थितत्या दीर्घायु । पणफरस्थितत्या मध्यायु । आपोक्लिमस्थितत्या हीनायुरेव । कारकस्थितस्थानात्तत्सप्तमाच्चाष्टमनाथयोर्यो बलवांस्तेनापि निर्णेतव्यम् ।

आयुरुदाहरणम् । कस्यचिज्जन्मेष्टम् ५५।५९ जन्मलग्नम् ९।५।४८।३६ होरालग्नम् ८।१५।५६।१२ लग्नेश शनि ११।२१।४८।२२ अष्टमेशाङ्क १०।४।८।१२ चन्द्रः ७।६।३४।१६ । अत्र जन्मलग्नाष्टमलग्नेशाभ्या दीर्घायुः । किन्त्वत्र शनियोगकर्तृत्वान्मध्यायुः । लग्नचन्द्राभ्या मध्यायु । लग्नहोरालग्नाभ्यामल्पायुः । एवमत्र मध्यायु प्रमाणसिद्धम् । अत्र शनिसूर्ययोरंशयोगदलम् १२।५८।२२ अंशाना वर्षादिफलम् १२।९।१८ कलाना मासादि १२।११।१२ विकलाना दिनादि २।२०।४८ तेषामेकैकापचितस्थानयोगाद्वर्षादि १३।१०।१।२२।४८ मध्यायुषि ६४ त. शुद्धं स्पष्टमायुर्वर्षादिकम् ५०।१।२८।२७।१२ एवमेव लग्नचन्द्राभ्या मन्दचन्द्राभ्या वा, जन्मलग्नहोरालग्नाभ्या पूर्वोक्ता क्रिया कार्या । अत्र उभाभ्यां योगसत्वाद् द्वयोर्योगार्धमायुः । द्वाभ्यां द्विकाभ्यामायुर्निर्णये तु चतुर्णां योगस्य चतुर्थांशमायुः । त्रिभिर्द्विकैरायुर्निर्णये षण्णां योगस्य षडंशमायुरिति । एवमत्रायुरानयनं भोग्यांशानुक्रमात्प्रत्येकयोगकारकग्रहांशादिवशात् । एवं मन्दचन्द्राभ्यामित्यस्य सूत्रस्यार्थान्तरात् भवन्ति बहवो भेदाः, विस्तृतिभयान्नात्र लिखिताअपि बुद्धिमद्भिर्गणकवरैस्त्रिस्कन्धपारीणैरनुचिन्तनीया इति ।

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने अंशफलज्ञानाय सारणीयम् ॥

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने कलाफलज्ञानाय सारणीयम् ॥

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने विकलाफलसारणीयम् ॥

विक.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विक.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

अथ मारकस्थानायुःस्थानयोर्ज्ञानमाह—अष्टमर्क्षं तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् ॥ द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ क्वचिद् रोगेशव्ययेशाष्टमेशदशास्वपि मारकसम्भवः । परस्परषष्ठाष्टमेशयोर्दशाऽन्तरश्च न [illegible]नम् । मारके मारकान्तरान्तरं न शोभनम् । व्ययद्वितीयेशौ सम्बन्धतः फलप्रदौ । लग्नेशदशाऽनिष्टदसम्बन्धरहिता न रोगकारिणी ॥ क्वचिच्छुभानां च दशास्वष्टमेशदशासु च । केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित् ॥ षष्ठाष्टमव्ययेशाश्च राहुः केतुस्तथैव च । एषां यो लाभलग्नपः सोपि मारकवद्भवेत् ॥

अथ चरकारकाः—सर्वेभ्योऽपि स्फुटग्रहेभ्यो राशिं विहाय योऽधिकांश स [illegible]कः, तदल्पोऽमात्यस्ततः क्रमात् भ्रातुः पित्रोः पुत्रस्य ज्ञातेर्दाराणां कारका भवन्ति ।

अथ होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता भ शेष च पलीकृतम् [illegible] रवौ होरोदयो भवेत् ॥ इति होरालग्नम् । 'विषमेऽङ्के रवौ योज्य समेऽङ्के लग्नभादिषु' इति केषां चिन्म[illegible] -होरा-घटी-लग्नानामानयनम्— जन्मेष्टकाले नयनामृतांशुभि (१२) स्तर्कैं (६) र्नभोवह्निभि (३०) राहत [illegible] पुतोऽर्यमा भवेद्धोरातनुर्भावतनुर्घटीतनु. ॥ सूर्योदये खलु जन्मभाव-होरा-घटीलग्नानि तुल्य[illegible]नोदयमानेन भिन्नान्युदन्ति । यस्माल्लग्नानां सूर्योदयात्प्रवृत्तिस्तस्मात्सूर्याद्गणना युक्तिसङ्गता । [illegible]न्देन होरालग्नम् । यद्यपि भावलग्न घटीलग्नयोरपि तादृक्त्वं परमत्र वृद्धवाक्याद्धोरालग्नमेव [illegible]

राशिः कलेशः त्रातिः चिन्ता विपुत्रः सुलाभः व्याधिभयम् पुत्रार्थसुखलाभः शोकादिभयम् जयसुखं धर्मार्थ सुव्ययः

अथ ग्रहाणां विशोत्तरीयमहादशाऽन्तर्दशाविज्ञानार्थं चक्रम् ।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				श.दशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ. चि. ध.				आर्द्रा स्वा. शत.				पुन.वि. पू.भा.				पुष्य.अ.उ.भा.				आश्ले. ज्ये. रे.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भर.			
अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सु.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

अथ योगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम् ।

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	गु.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
उ	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
सि	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
अ. आर्द्रा चि.			भ. पुनर्वसु स्वाति			कृ. पुष्य विशाखा			अश्वि.ऽऽश्ले. अनु.पू.भाँ.			भरणी मघा ज्ये. उ भा.			कृत्ति. पूफा. मू. रे.			रोहि.उ.फा. पू. षा.			मृगशि.हस्त उ. षा.		

अथ योगिनीदशानयनम्—[illegible] जन्मभसंख्या[illegible] एकादिशेषतो ज्ञेया मङ्गला पूर्विका [illegible] ॥ मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा उल्का सिद्धा सङ्कटा च [illegible] ॥ चन्द्र सूर्यो गुरुर्भौमो बुधो मन्दो भृगुस्तथा ॥ [illegible] ॥ [illegible] अन्त- [illegible] ॥ [illegible] अनुभूतो [illegible] कामिनी- [illegible] सुखप्रदा ॥ पिङ्गलादशाफलम्—[illegible]रोगकारिणी पिङ्गला परममानहारिणी । व्यग्रताहितविषादकारिका बन्धिनामिहबलापहारिका ॥ धान्यादशाफलम्—धराधीशद्वारे जनयति महत्त्व च नितरां जनानामापि[illegible] विजयकरिवादे तनुभृताम् ॥ धनं धान्यं धन्या तरुणतरुणीभोगमतुलं यशोवृद्धिं सिद्धिं सुखम[illegible]लङ्कारनिकरैः ॥ भ्रामरीदशाफलम्—गति दूरेऽनय कल्पयति भयेन क्षितिभृता रतिं दुष्टैरपि कलिविधानं बनिमताम् । अरातेरातङ्कं सकलहृतकलङ्कं चपलता दधीय भ्रामर्या हरिपदसपर्याविमुखताम् ॥ भद्रिकादशाफलम्—अरातेरल्पत्वं नरपतिसमत्वं बनियता गुणानामाधिक्यं द्रविणगणमुक्ताकुसुमम् । सदा गर्जद्दन्तावलविमलकान्तातुलमलं यशो भद्रं भद्रा वितरति समुद्रावधि भृशम् ॥ उल्कादशाफलम्—नराणामुल्का कलयति विवादं बलवता कलत्राद्वै कष्ट तनयतनयाद्वै च सततम् । चलत्वं वित्तानामरिजनविरोधेन मलिना सदा चोल्काख्या योगिन्यपि विषमदेशाधिवसतिम् ॥ सिद्धादशाफलम्—

वर्षप्रवेशसारिणीयम्— जन्मकालेष्टघटीषु प्रतिवर्षं क्षेप्यको वाराद्धिः।

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३३	५६	१९	४२	५	२८
विपल	५७॥	५५	५२॥	५०	४७॥	४५	४२॥	४०	३७॥	३५	३२॥	३०	२७॥	२५	२२॥	२०	१७॥	१५	१२॥	१०	७॥	५	२॥	०	५७॥	५५	५२॥	५०	४७॥	४५
गतवर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	४२॥	४०	३७॥	३५	३२॥	३०	२७॥	२५	२२॥	२०	१७॥	१५	१२॥	१०	७॥	५	२॥	०	५७॥	५५	५२॥	५०	४७॥	४५	४२॥	४०	३७॥	३५	३२॥	३०
गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४
पल	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६
विपल	२७॥	२५	२२॥	२०	१७॥	१५	१२॥	१०	७॥	५	२॥	०	५७॥	५५	५२॥	५०	४७॥	४५	४२॥	४०	३७॥	३५	३२॥	३०	२७॥	२५	२२॥	२०	१७॥	१५

ग्रहाणामुच्चनीचदीप्तांशहर्षस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	१	९	५	३	११	६	उच्च.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	रा. अं.
६	७	३	११	९	५	०	नीच.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	रा. अं.
४	१२	८	७	९	७	९	दीप्ता.
०	३	६	३	११	५	१२	हर्ष.

हर्षबलानयनम्

उपर्युक्तभावेषु प्रथमम्। यो ग्रहः स्वोच्चस्थः स्वराशौ सोऽपि हर्षबलाधिकारी द्वितीयम्। लग्नात् त्रित्रिस्थानेषु स्त्रीणां पुंग्रहाणाञ्च हर्षबलं तृतीयम्। दिवा वर्षप्रवेशे नृणां रात्रौ स्त्रीणां बलं भवतीति चतुर्थम्॥ ताजिके सू. मं. बृ. पुरुषग्रहाः शेषाः स्त्रीग्रहा ज्ञेयाः॥

उच्चबलानयनं नीचग्रहान्तरं कार्यं षड्भादल्पं यथा भवेत्। तदंशा नवभिर्भक्ताः स्पष्टमुच्चबलं भवेत्।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिद्वादशभावस्थग्रहाणां फलं ताजिकोक्तम्।

भाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	क्लेशः चिन्ता च	शोकः नृपाद्भीतिः	पराक्रमी धनलाभः	हानिः पीडाभयं	रोगभयं पुत्रनाशः	सौख्यम् शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टं पीडाभयम्	शोककष्टादिभयम्	धर्मवृद्धिः राज्यप्रदः	सुखाप्तिः राज्याप्तिः	सुखार्थलाभः	उद्वेगः पीडा च
चन्द्रः	कफज्वरः पीडा	नेत्रपीडा धनप्राप्तिः	धनप्राप्तिः हर्षश्च	सुखं शत्रुनाशः	सुखं सुमतिश्च	अन्नपीडा व्ययः	ज्वरार्तिः भयम्	विविधकष्टभयम्	पुण्योदयः धनागमः	सुकर्म जयाप्तिः	यशोर्थलाभः	व्ययः नेत्रपीडा
भौमः	वातार्तिः व्रणश्च	हृच्छोरुक् वित्तनाशः	नैरुज्यं द्रव्यलाभः	व्यसनं रुग्भयम्	पुत्रार्तिः दुर्मतिः	सुखं शत्रुनाशः	स्त्रीनाशः कष्टम्	ज्वरार्तिः व्रणाश्च	पुण्योदयः धनाप्तिः	राज्यार्थलाभ	धनादिलाभः	विरोधः कर्णपीडा
बुधः	सौख्यम् धनलाभः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखं सुमानश्च	सुखं द्रव्यलाभः	पुत्रवित्तसुखाप्तिः	रोगभयं कलहश्च	धनागमः सुखम्	व्यग्रता कफार्तिः	धन कीर्त्याप्तिः	मानसुखादिलाभः	सुखं जयाप्तिः	शत्रुरोगादिभयं
गुरुः	सुखयशोर्थलाभः	कीर्तिधनादिलाभः	जयः सौख्यञ्च	वाहनप्राप्तिःसुखं	पुत्राप्तिः सुखञ्च	शत्रुरोगादिभयम्	सुखम् वित्तप्राप्तिः	कठिनरुग्भयम्	सुखं भाग्यादिवृ.	राज्यार्थलाभः	सुतार्थलाभः	शोकरोगादिभयं
शुक्रः	सुमानः धनलाभः	धनाप्तीराज्यसुखम्	कीर्तिवृद्धिः अर्थागमः	सुखार्थलाभः	धनागमः सुखम्	रिपोर्भीतिः कष्टम्	कलत्रसौख्य	ज्वरपीडादिभयम्	धर्मधनागमः	मानजयादिलाभः	क्षेमार्थलाभः	व्ययः नो लाभः
शनिः	रिपोर्भयम् वातार्तिः	पीडाभय विरोधः	धनाप्तिः जयश्च	सुखार्थनाशःकष्टं	सुतहानि पीडा च	धनाप्तिः अर्तिनाशः	स्त्रीकष्ट कलिः	दुःखरोगादिभयम्	भाग्यवृद्धिः शत्रुनाशः	धनहानिः पीडाभयं	धनाप्तिः पुत्राप्तिः	क्लेशः चिन्ता च
राहुः	शिरोर्तिः कलहः	नृपभयं पीडा च	शत्रुनाशः शुभश्च	वातार्तिः दुःखञ्च	बुद्धिनाशः अधनो	रिपुक्षयः आरोग्यम्	पीडाभयं धनक्षयः	धनक्षयः रुग्भयम्	धनधर्मवृद्धिः	वाहननाशजयः	विपुत्रः सुलाभः	व्याधिभयम्
केतुः	पीडाभयं चिन्ता च	क्लेशः धनक्षयः	आरोग्यं धर्मनाशः	कष्ट नृपाद्भयं	पीडाभयं दुर्मतिः	सुखं धनागमः	क्लेशः रुक् च	ज्वरपीडादिभयम्	भाग्ययशोर्थला.	कीर्त्यर्थलाभः	पुत्रार्थसुखलाभः	शोकादिभयम्
मुन्था	सौख्यम् शत्रुनाशः	सुयशः अर्थागमः	कार्यपुष्टिः धनम्.	अंगपीडा दुःखश्च	सुबुद्धिः सुखाप्तिः	रोगभयं अर्थनाशः	रोगभयं व्यसनम्	दुर्व्यसनम् रोगभयश्च	भाग्योदयः [illegible]	राज्यसुखं [illegible]	धर्मार्थ[illegible]	सुख[illegible]

अथाग्रहद्दाचक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं. स्वा.
बृ.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	शु.	शु.	
६	६	[illegible]	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं. स्वा.
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	बु.	बृ.	
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं. स्वा.
बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	
५	५	७	७	७	७	७	५	५	४	५	९	अं. स्वा.
मं.	श.	मं.	बृ.	बृ.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	
५	[illegible]	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं. स्वा.
श.	मं.	[illegible]	[illegible]	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	

गता[illegible]प्रमाणं जन्मर्क्षसंख्यायुक्तं द्व्यूनं विधाय नवतष्टे शेषे [illegible]पतिः। अथवर्षे मुद्दादशाचक्रम्।

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	पतयः
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मासाः
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिनानि

मेषादिराशीनामत्र द्रकाणचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
१०	[illegible]	[illegible]	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
मं.	[illegible]	[illegible]	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	पतयः
२०	[illegible]	[illegible]	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अंशाः
र.	[illegible]	[illegible]	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	पतयः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंशाः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	पतयः

अथात्र नवमांशचक्रम्

मे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	३	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६	४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु.	[illegible]	गु.	बु.	गु.	गु.	गु.	बु.	१०	००
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चं.	[illegible]	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	१३	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६	४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु.	बु.	गु.	गु.	२०	००
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चं.	मं.	श.	२३	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श.	२६	४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	००

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्—सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषांके जन्मनि गताचंद्रराशेरिमं न्यसेत्॥ शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेद्। त्रिपताके वर्षलग्नादौ तत्र विधुर्यदा॥ शुभैर्विद्धः शुभफलं पापैः पापफलप्रद इति॥

अथात्र त्रिराशिपाः।

लग्न।	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्री	गु.	चं.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	बु.	मं.	गु.	चं.

अथ होराचक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	अंशाः
र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	१५
चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	चं.	र.	१५
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	अंशा

अथ द्रेष्काणचक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अंशाः
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	१० प.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अंशाः
र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	२० प.
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अंशाः
बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	३० प.

अथ त्रिंशांशचक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	अंशाः
मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	स्वामी
५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	अंशाः
श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	स्वामी
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	अंशाः
बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	स्वामी
७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	अंशाः
बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	स्वामी
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	अंशाः
शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	स्वामी

सप्तमांशचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंशादयः		
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४	१७	८
मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.			
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८	३४	१७
शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.			
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२	५१	२५
बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.			
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७	८	३४
चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.			
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१	२५	४२
र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.			
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५	४२	५१
बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.			
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०	०	०
शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.			

द्वादशांशचक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	२	३०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्षे मुन्थानयनम्

गतवर्षेषु जन्मलग्नं संयोज्य १२ हृते वर्षे मुन्था स्यात्।

पञ्चाधिकारिणः।

१	जन्मलग्नपतिः	४	मुन्थापतिः
२	वर्षलग्नपतिः	५	दिवा रविभपः
३	त्रिराशिपतिः	६	रात्री चन्द्रभपः

110

स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने श्रेष्ठमासादयः ।

श्रेष्ठमासाः	वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।
" पक्षः	शुक्लः ।
" तिथयः	१ । २ । ३ । ५ । ७ । १० । ११ । १३ । १५
" वाराः	चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र ।
" नक्षत्राणि	अश्वि., रो., मृ., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., स्वा. अनु., श्र., ध., श., रे.।
" लग्नानि	२ । ३ । ४ । ६ । ७ । ९ । १२ शुभैर्दृष्टे ।

ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्तविचारः ।

श्रेष्ठनक्षत्राणि	अ., रो., मृ., उत्तरा ३, ह., स्वा., अनु., ज्ये., ध., शुभतिथौ, सद्वारे, सत्तनौ ।

गर्भाधानमुहूर्तविचारः ।

रो., मृ., उत्तरा ३, ह., स्वा., अनु., श्र., ध., श., एषु भेषु ।
लग्नात् १ । ४ । ५ । ७ । ९ । १० । शुभैः ।
लग्नात् ३ । ६ । ११ पापैः ।
र., मं., गु., षष्ठलग्ने विषमराशिनवांशके चंद्रे शुभम् ।
६ । ८ । १० । १२ (युग्म) रात्रौ गर्भाधानं शुभम् ।
अ., पुन., पुष्य, चि., एषु भेषु मध्यमम् ।

त्रिविधं पण्डान्त्यम्, निधनताराम्, जन्मताराम्, अश्वि., भ., म., मू., रे. । ग्रहणदिनम्, वैधृतिः, व्यतीपातः, पित्रोः श्राद्धदिनम्, परिघपूर्वार्द्धं, उत्पातहतनक्षत्रम्, जन्मराशितः अष्टमभं, पापग्रहभवनम् भद्रापर्वदिनानि, ४।६।९।१४ तिथिषु, सन्ध्यायाम्, र.मं.श. वासरान् रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रिपर्यंतं त्यक्त्वा गर्भाधानं सत्यात् ।

पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्तविचारः ।

शुभतिथयः—१ । २ । ३ । ५ । ७ । १० । ११ १३ । पूर्वाह्णे
शुभवारा —र., मं., गु., वा चं., शु. । चन्द्रताराशुद्धौ
शुभनक्षत्राणि—रो., मृ., पुन., पुष्य, उत्तरा ३ ह., मू. श्र., रे.
लग्नशुद्धिः—लग्नात् १ । ४ । ५ । ७ । ९ । १० एषु शुभैः ।
" ३ । ६ । ११ " पापैः
चन्द्रे १ । ६ । ८ । १२ वर्जिते श्रेष्ठम् ।
५ । ८ । १२ [illegible]कोऽव्यसत् ।
संस्कारद्वय पुरुषग्रहलग्ने नवांशे च श्रेष्ठम् ।

सूतिकायाः सूतिगृहप्रवेशमुहूर्तविचारः ।

तिथयः—रिक्ता (४ । ९ । १४) ६ ८ वर्जिताः ।
वारा —चं., बु., गु., शु. ।
नक्षत्राणि—अ., रो., मृ., पुन., पु., उत्तरा ३, ह., चि., स्वा., अनु. श्र., ध., श. ।
लग्नानि—शुभे लग्ने, लग्नतः १ । ४ । ७ । १० स्थानेषु शुभेषु ।
३ । ६ । ११ पापेषु । शुभांशे सति उत्तमः ।

कालातिक्रमणे जातकर्ममुहूर्तविचारः ।

सत्तिथयः—१ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । १० । ११ । १२ । १३ ।
सद्वारा—चं. बु. गु. शु. ।
सन्नक्षत्राणि—अ., रो., मृ., पुन., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., स्वा., अनु. श्र., ध., श. रे. ।
संक्रान्तिभद्राव्यतिपातादिदोषरहितासु शुभतिथिषु ।
जन्मदिनादेकादशद्वादशान्यतरदिनयोः सत्तनौ चायं शुभः ।

स्तनपानमुहूर्तविचारः ।

शुभतिथौ, अ., रो., मृ., पुन., पु., उत्तरा ३, ह., च., अनु., श्र., ध., श., रे. एषु भेषु स्थिरलग्ने स्तनपानं शुभं स्यात् ।

चैत्रादिद्वादशमासनामानि ।

मासाः	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.
नामानि	वैकुण्ठः	जनार्दन	उपेन्द्रः	यज्ञपुरुषः	वासुदेव	त्रिविक्रमः	योगीशः	पुण्डरीकाक्षः	कृष्णः	अनन्तः	अच्युत	चक्रधर

बालकस्य खट्वारोहणमुहूर्तविचारः ।

जन्मदिनात् १० । १२ । १६ । २२ एषु दिनेषु ।
अश्वि., रो., मृ., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., अनु., अभि., रे., एषु नक्षत्रेषु रिक्तामा (४।९।१४।३०) रहिततिथौ प्राक्शीर्षं बालकं तत्र विन्यसेत् ।

सूतीस्नानमुहूर्तविचारः ।

सत्तिथय—१ । २ । ३ । ५ । ७ । १० । १३ । १५ ।
सद्वाराः—र. मं. गु. ।
सन्नक्षत्राणि—अश्वि., रो., मृ. उत्तरा ३, ह., स्वा.,

अथ रोगार्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम् । तिथिवारश्च नक्षत्र लग्न यामश्च संयुतम् । वसुभिस्तु हरेद्भाग शेषे बाधा विनिर्दिशेत् ॥ द्वे ७ त्रौ ३ देवबाधा स्यात् पितृणा [illegible] १।८ । षड्ग्निभि[illegible]तिबाधा ६।४ ग्रहाणामेकपञ्चके १।५ ॥ भक्ते द्वादशभि शेषे जीवन मरण वदेत् ॥ रामबाणा रसाष्टौ न नंदरुद्राश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति एक १ पक्षो २ युगा ४ मस दशा ७।१० कं १२ नाश जीवति ॥ **अन्यदपि राजमार्तण्डे ॥** वारर्क्षं तिथिदिशापरिमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेन फल च नाग ८ नयने २ शेष विलुनीन्यथा । मन्दे ७ रामामिते ३ सुरस्य विदितं तन्नौ ६ क्ष ५ [illegible] तथा प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे च बाणाधिके ॥ लब्धाङ्कं त्रि ३ गुण तथा वसुयुत वेदेन गुण्य ततः सप्ताप्तेऽर्वाधिक तथा विधुमित कोल्ये च दोष वदेत् । [illegible] राजकुलजं मा[illegible]छकुजं पंक्तिज शून्ये व्योमभव तथाऽस्य विविधोपायैश्च शान्ति वदेत् ॥ कोल्ये होमद्विजार्चने शुभकरं याम्यं चतुष्कोणके होम [illegible] [illegible] वा ॥ [illegible] तथाप्याकृते शक्तिक्रियादानतो गायत्रीजपतो हि पंक्तिविषये चाकाशजो दीपत ॥ **सर्पदंशने भेषजम् ।** गोमूत्रेनं मूत्रैर्वा पुराणेन घृतेन वा । हारिद्रापत्रमात्रेण विष हन्ति [illegible] ॥ [illegible] पुराणमिति कथ्यते । गोक्षीरे रजनीक्वाथ पिबेत्सर्वविषापहम् ॥

नक्षत्राणां स्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा								नक्षत्रस्य पादवशाच्च कष्टावलोकनचक्रम्							नष्टवस्तुज्ञानाय सलोचनादिसंज्ञा ।				
								ज्वरादरोगोत्पत्तौ		अथ भस्य पादवशादत्र दिनसंख्या									
नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	जातिव्य.	संज्ञा	मुखम्	घ. उ. ने.	यात्रादोहम्	द. स.	दानादि	१च	२च	३च	४च	जपार्थमंत्राः ॥	संज्ञा	न.वस्तु	लाभालाभ	[illegible]	[illegible]
अश्विनी	अश्वनीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल	द. ९	भोजन	६	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः	मन्द	द	[illegible]	[illegible]	[illegible]
भरणी	[illegible]ः	नाशकः	चाण्डालः	उ. क्रू.	अध	२४	साक्षतमाषः	द.११	गोऽन्नादि	०	८०	४०	११	यमायत्वेतिमंत्रः	मध्य	प	दूरश्रव.	२	[illegible]
कृत्तिका	[illegible]लः	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि. सा.	अध	३०	गव्यम्	द. ९	स्वर्णदान	६	११	१६	२८	अग्निर्मूर्धेतिमंत्र	सुलोचन	उ	अलाभ	[illegible]	[illegible]
रोहिणी	[illegible]ा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु· स्थि.	ऊर्ध्व	४०	गव्यम्	द. ७	घृतदान	७	६	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमंत्रः	अन्ध	पू	शीघ्र ला.	[illegible]	[illegible]
मृगशिरा	[illegible]द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुमै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्	मा. १	तिलदान	६	५	७	१०	इमं देवेतिमंत्रः	मन्द	द	यत्न ला.	[illegible]	[illegible]
आर्द्रा	शिव.	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती. दा.	ऊर्ध्व	२१	दुग्धम्	मृतिः	गोदान	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रमन्त्र	मध्य	प	दू. श्र.	[illegible]	[illegible]
पुनर्वसु	आदितिः	शुभम्	वैश्यः	च. च.	तिर्यक्	३०	हरणमांसम्	दि. ७	पित्तल	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौर्मंत्रः	सुलोचन	उ	अला.	[illegible]	[illegible]
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल. क्ष.	ऊर्ध्वः	२०	मृगरक्तम्	दि. ७	तैलान्न	७	७	२०	२१	बृहस्पतेतिमन्त्रः	अन्ध	पू	शी. ला.	[illegible]	बाणाकृति
आश्लेषा	सर्प	अशुभम्	चाण्डालः	ती. दा.	अध	३२	पायसम्	मृतिः	गोऽन्नादि	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेतिमंत्र.	मन्द	द	य. ला.	[illegible]	चक्राकारम्
मघा	[illegible]रः	शोकद	शूद्रः	उग्र क्रूर	अध.	३०	चाषमांसम्	द.२०	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइतिमंत्र	मध्य	प	दू. श्र.	[illegible]	[illegible]
पू. फा.	[illegible]	अशुभम	ब्राह्मणः	उग्रक्रूरः	अधः	२०	मृगमांसम्	मृतिः	भोजन	०	१५	०	३०	भगप्रणेतिमंत्रः	सुलोचन	उ	अलाभ.	[illegible]	मंचकाकृति
उ. फा.	[illegible]	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु· स्थ.	उर्ध्वः	१८	शशकमांसम्	द. ७	अन्नदा.	७	१४	७	६०	अर्यमणमंत्रः	अन्ध	पू	शी. ला.	[illegible]	[illegible]
हस्त	[illegible]	शुभम्	वैश्यः	ल क्षि.	तिर्यक्	२१	साठी	द.१५	तिलदान	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवे मंत्र	[illegible]	द	य. ला.	५	हस्ताकारम्
चित्रा	[illegible]	शुभम्	कृषकः	मृ. मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगु	द. ११	दुग्धदान	११	६	६	१६	त्वष्टातुरीयेतिमं.	मध्य	प	दू. श्र.	१	मौक्तिकाकारम्
स्वाती	[illegible]	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	अधः	१४	अपूप.	मृतिः	गोघृत	६०	१७	३०	०	वायो[illegible]तिमंत्र	सुलोचन	उ	अला.	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	[illegible]	अशुभम्	चाण्डालः	मि. सा.	अधः	१४	नानापक्षिणः	द.१५	गोस्वर्ण	१५	०	४	१३	इन्द्राग्नि इतिमंत्र	अन्ध	पू	शी. ला.	४	तोरणसमम्
अनुराधा	[illegible]	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्	स्वरः	गोघृत	६०	१२	३६	६०	नमोमित्रेतिमंत्र	मन्द	द	य. ला.	३	[illegible]
ज्येष्ठा	[illegible]	अशुभम्	कृषकः	ती. दा.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्	मृतिः	तिलदान	५९	६	६	४	त्रातारमिन्द्रेतिमं	मध्य	प	दूरश्रव.	१	कुण्डलाकृति
मूलं	[illegible]	क्षयः	क्रूरजातिः	ती. दा.	अधः	५६	सारकमांसम्	द. ६	रौप्यपात्र	०	६	१५	६	[illegible]तिमंत्र.	सुलोचन	उ	अला.	११	सिंहपुच्छवत्
पू. षा.	[illegible]	हानि	ब्राह्मणः	उग्रक्रूरः	अधः	२४	गोधकमांसम्	मृतिः	गोमुक्ता	०	१५	२४	१०	आपो[illegible]तिमंत्रः	अन्ध	पू	शी. ला.	२	गजदन्तसमम्
उ. षा.	[illegible]	हानि.	क्षत्रियः	ध्रु· स्थि	ऊर्ध्वः	२०	शल्यमांसम्	मा. १	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेतिमंत्रः	मन्द	द	य. ला.	२	मंचकसदृशम्
[illegible]	[illegible]त्रिः	[illegible]	चाण्डालः	च. च.	ऊर्ध्वः	१०	कृशरान्नम्	दि.११	श्रीफल	६०	२४	६	६	विष्णोरराटेतिमंत्र	सुलोचन	उ	अला.	३	विमानसदृशम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]म्	कृषक.	च. च.	ऊर्ध्वः	१०	मुद्गमोदकम्	दि.१५	अश्वान्न	१५	४	२०	२१	वसो पवित्रेतिमं.	अन्ध	पू	शी. ला.	४	मृदङ्गाकृति
[illegible]	[illegible]	[illegible]म्	[illegible]रजाति	च. च.	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्	दि.११	भोजनान्न	०	४५	३	२२	वरुणस्येतिमंत्र	मन्द	द	य. ला.	१००	वर्तुलम्
[illegible]	[illegible]	शुभम्	ब्राह्मणः	उ. क्रूर.	ऊर्ध्वः	१६	मत्स्यान्नम्	मृतिः	भोजन	०	१२	२१	१६	अहिर्बुध्न्येतिमंत्र	मध्य	प	दूरश्रव	२	मंचकाकारम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	क्षत्रियः	ध्रु· स्थ.	ऊर्ध्व[illegible]	२४	चित्रितान्नम्	दि. ७	अन्नदान	१०	६	६	१५	अहिर्बुध्न्यइतिमंत्रः	सुलोचन	उ	अलाभ	२	यमलासदृशम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]तिम	[illegible]	पू	शी.ला.	[illegible]	[illegible]